ओकर गर्जना चारू कात प्रतिध्वनित होइत छैक । मुदा घरसँ क्यो नहि बहराइत छैक ।

रतना फेर गरजैत अछि– ''हम आखिरी बेर कहैत छिऐक, जे क्यो अछि एहि आङनमे, बाहर निकलि आबओ नहि तँ हम घरमे पैसि जयबैक ।''

मुदा एहि बेर रतनाक गर्जना समाप्त होयबासँ पूर्वे एकटा युवती घरसँ बहराकऽ आङनमे आबि जाइत छैक आ झट अपन मुँहपरसँ आँचर हँटा कहैत छैक– 'ले, देखि ले आ चीन्हि ले । की देखऽ चाहैत छेँ, देखऽ चाहैत छेँ तोहर स्त्री छियैक, कि मिसरक ? ले, फेर देखि ले, आ बाज, छियैक तोहर स्त्री ? लऽ चलबेँ अपन घर ?''

ओहि स्वस्थ पिण्डश्याम स्त्रीक साहसपर आशंकित भऽ उठलहुँ । रतना कोनो काण्ड कऽ देतैक आइ एहि आङनमे । सभक सामने बलात्कार कऽ देतैक वा घिसियाकऽ आङनसँ बाहर लऽ जयतैक ।

मुदा से सभ किछु नहि भेलैक । रतना मूड़ी आ कन्हा झुकौने ठाढ़ रहल । जीवनमे पहिल बेर हम ओकरा लज्जित आ पराजित देखि रहल छलिऐक ।

कनियेँ काल बाद ओ घूरल । हमरा घूरन मिसरक संग ठाढ़ देखि हँसऽ लागल— ''तोहूँ आबि गेल छेँ ? अनेरे लोकसभ गप्प उड़ाकऽ माथ खराब कऽ देने छल । एहनो कतहु संभव छैक ? अनेरे एकरा सभकेँ तंग कयलिऐक । माफ करब घूरनजी !'' आ बिदा भऽ गेल जेना किछु भेले नहि होइ । ओ फेर अपन परिचित चालिसँ जा रहल छल— दुनू पंजापर बेराबेरी झुलैत आ माथपर लटकि आयल केशकेँ बेर-बेर ऊपर झटकैत ।

हम स्टेशन दिस बिदा भेलहुँ । हम बूझि गेलिऐक जे रतना एखन आर तरक्की करत । ओ आब आर बुझनुक भऽ गेल अछि । ओ एसेम्बलीक लेल अगिला चुनाव अबस्से जीति जायत ।

मुदा हम ? हम की करब ? एहिना गाम आ पटनाक बीच डोलैत रहब पेण्डुलम जकाँ । कहियो स्थिर नहि भऽ सकब । आनन्द, रमण, रतना सभ तँ आगू बढ़ल जा रहल अछि । हमहीँ ठाढ़ भेल तमाशा देखि रहल छी ।

एकाएक जेना सभ टा नस तड़तड़ा उठैत अछि, रक्तक वेग तेज भऽ जाइत अछि आ सौंसे देह उत्तेजनासँ काँपऽ लगैत अछि । हम लाइनपरसँ पाथर उठा-उठाकऽ बताह जकाँ बिजलीक खम्भापर मारऽ लगैत छी । मारने चल जाइत छी— अनधुन ।

●

हमरा लग रहब ?

पहिल भाग

रूसल जाइत सुग्गी रानी

सभसँ पहिने मामी। एहि लेल नहि जे माय नहि छलैक, मामिए पोसि पालिकऽ पैघ कयलकै। एहि लेल जे अपन सम्पूर्ण जीवनमे स्नेहक छाहरि लेल घुरिकऽ तकलापर प्रणवकेँ एक्केटा नाम भेटैत छलैक। अइ लेल जे मोन पाड़बा लेल जे पहिल नाम ओकर दिमागमे अबैत छलैक, मामिएक छलैक। ओकर बितलाहा जिनगीकेँ कहुना, कतहुसँ शुरू कयल जाय, पहिल नाम हरदम मामिएक रहतैक। ओकर कथा मामे-गामसँ शुरू होइत छैक।

मामा-गाम माने विलासपुर गाम जकर पूब, उत्तर आ दक्षिणमे बागमतीक धार छलैक आ पश्चिममे छलैक रेलवे लाइन। रेलवे स्टेशन नहि, ओ तऽ छलैक धारक ओइ पार— एक मीलसँ कम्मेपर, दक्षिण दिस। धारक कछेरक टिल्हापरसँ स्टेशन तऽ नहि, मुदा सिगनल ओहिना देखाइत छलैक। सोझ ठाढ़ तऽ यात्रीक डेग असकतायल आ नीचाँ खसल तऽ खसैत-पड़ैत धार पारकऽ यैह ले, वैह ले...! सिगनल लग दौड़िकऽ पहिने पहुँचि गेल तऽ पौ बारह, आ गाड़ी पहिने सिगनल पार कऽ गेलैक तऽ इंजिन जकाँ धक-धक करैत करेजकेँ शान्त करबा लेल हताश यात्री गुमतिएपर बैसि जाइत छल— अगिला गाड़ी फेर साँझे! दिन भरिमे दुइये टा गाड़ी छलैक दरभंगा लेल— नौ बजे भोर कि पाँच बजे साँझ। गुमती लग झंडा लेने ठाढ़ बिहारी मण्डल लोटाक लोटा पानि पिआ जरैत कण्ठकेँ शान्त करैत छलैक।

मुदा प्रणवकेँ कोन मतलब छलैक ट्रेन वा दरभंगासँ! ओ तऽ गाड़ीपर

चढ़लो नहि छल ताधरि । ओ तऽ भोरे महीँस खोलि पछबारी बाधमे निकलि जाइत छल— मामा-मामी सुतले रहैत छलथिन, तखने ! पस्सरक बेर, झलफल इजोत आ भुतहा बाध । मुदा बाधसँ पहिने छलैक मुर्दघट्टी, गामक पछबरिया-दछिनबरिया कोनपर, एकदम बागमतीक धारसँ सटल । तकर उत्तरमे कच्ची सड़क आ सड़कक उत्तरसँ पसरल भुतहा बाध । मुर्दघट्टीमे दू टा पीपरक, एक टा बड़क झमटगर गाछ आ एक टा आमक विशाल सुखायल गाछ छलैक । जखन कखनो मुर्दा जराबऽ लोक मुर्दघट्टी अबैत छलैक, अही गाछसँ जारनि काटि लैत छलैक । अइ मुर्दघट्टी लग दने महीँस लेने सड़कपर जाइत प्रणव सभ दिन सिहरि जाइत छल । झट महीँसकेँ सड़कसँ उतारि बाधमे टपा लैत छल । मुदा सड़कक कातमे बाधसँ पहिने कल्लू चौधरीक बड़का गाछी छलनि— सुच्चा कलमी आमक । आ अइ गाछीमे मुनराकेँ भूत पटकि देने छलैक । लुकरासँ चुड़ैल चून-तमाकू मँगने छलैक । भुट्टाकेँ तऽ बान्ह तक खेहारने रहैक भूत, बान्हेपर बेहोश भऽ गेल छल । रौद उगलापर चरबहबासभ उठाकऽ गाम अनने छलैक आ घूरन मिसर झाड़-फूक कयने छलथिन।

मुदा मुर्दघट्टीमे तऽ अड्डे छलैक— भूत-चुड़ैलक । घूरन मिसर कहैत छलथिन सभकेँ जे अन्हरिया रातिमे पीपर आ बड़क गाछपर भूत-जिन आसन जमौने रहैत छैक आ नीचाँ श्मशानमे डाइन चुड़ैलसभ नँगटे नचैत छैक । पयरक उन्टा पंजा आ नकियाइत स्वर । घूरन मिसर तऽ महाष्टमीक राति सेहो श्मशान सधैत छलाह— डाइन-जोगिन वशमे छलनि, भूत डरे बाट छोड़ि दैत छलनि । हुनके डरे गामोक बेशी लोककेँ तंग नहि करैत छलैक भूत-प्रेत ।

मुदा प्रणवकेँ बड़ डर होइत छलैक । बेशी अन्हारमे महीँस नहि खोलैत छल । झलफल इजोत भेलापर महीँस खोलि पहिने सड़के-सड़क मुर्दघट्टी धरि आस्ते-आस्ते लबैत छल, आ मुर्दघट्टी लग अबिते महीँसकेँ जोरसँ दौड़ा दैत छलैक बाधमे । तैयो सभ टा रोइयाँ भुलकि जाइत छलैक, लगैत छलैक जेना क्यो पाछाँसँ खेहारने अबैत होइ !

मुदा बाधमे अबैत देरी निश्चिन्त भऽ जाइत छल । मुर्दघट्टीसँ सटल रहबाक कारणेँ भुतहा-बाध नाम पड़ि गेल छलैक, मुदा छलैक एकदम सुद्धा बाध— ने भूत-प्रेतक डर, ने चोर-डाकूक खतरा । एकसर रखबार खोपड़ी बना रातिमे रहि लैत छल । कहियो किछु ने अभरैत छलैक । जे किछु डर से मुर्दघट्टी आ कल्लू चौधरीक गाछीमे । प्रणव दुनूसँ पड़ायले रहैत छल ।

मुदा सभसँ बेशी डेराइत छल ओ स्कूलसँ । भूतोसँ बेशी रोइयाँ भुलकैत

छलैक ओकरा नेंगरा गुरुजीक नामसँ । एकदम कसाइ छलैक गुरुजी । खजूरक मोटका छड़ीसँ सौंसे देह दागि दैत छलैक, ललबिठुआसँ सौंसे देह चकता जकाँ उगि जाइत छलैक, बिसबिसाइत रहैत छलैक । देहमे ने गंजी, ने अंगा, उघार देह ! मैल-फाटल पैण्टकेँ सेहो समेटि कऽ पोनोपर चकता उगा दैत छलैक गुरुजी । आ ओ छनछनाइत देह लेने घरमे मामीसँ नुकायल फिरैत छल । मुदा मामी देखिए लैत छलैक—"आइ फेर कसैया मारलकौ तोरा, हरहरी बज्र खसतैक ओकरापर ! गरीबक आहि जरा देतैक निर्दैयाकेँ । कोना कसाइ जकाँ नेनाकेँ मारलक-ए हौ दैव !" मामी ओकरा करेजसँ सटा लैत छलैक । हाथ लगलासँ फूटल देह आर छनछना उठैत छलैक, मुदा मामीक आँखिक नोर आ देहक शीतलता सभ टा छनछनीकेँ लगले कम्म कऽ दैत छलैक ।

आ नाहक डँटा जाइत छलाह बेचारे मामा ! आँगनमे पयर दितहि मामी बमकि उठैत छलथिन—" अहाँ अइ कसैया गुरुजीकेँ किछु कहबैक से नहि होइए ? सभ दिन नेनाक देह फुला दैत अछि आ मौनी बाबा जकाँ अहाँ हमर बात सुनि गुम्म रहि जाइत छी । आइ नहि जायब अहाँ तऽ हमहीँ कहबै ओइ राक्षसकेँ । एक टा टांग टुटले छैक, दोसरो तोड़ि देबैक ।"

"एना नहि बाजी"—कोनो दिन मामाक बकार फुटैत छलनि—"गुरु देवताक रूप होइत छैक, पिता-समान होइत छैक । ओकरा लेल अपशब्द नहि बाजी । नेनाक नीके लेल मारने हेथिन ।"

मामी चिकरि उठैत छलीह—"ओइ कसैयाकेँ देवता कहैत छिऐक ? कथीलेल मारैत छैक, हम नहि बुझैत छिऐक ? शनीचरी नहि लऽ जाइत छैक, तकर तामस सबकक नामपर उतारैत छैक । आ सबक कोना याद करौ हमर नेना ? एक्को टा किताब छैक ? एक टा फुटलाहा सिलेट आ गाबिश लऽकऽ आइ पाँच बरखसँ स्कूल जाइ-ए । तैयो ककरोसँ कम्म अछि हमर नेना ? करथिन क्यो मोकाबिला बाबू-भैयाक नेना जिनका एक झोरा कौपी-किताब रहैत छनि ? अइ गुरुजीक कप्पार फोड़ि देबैक हम एक दिन खापरिसँ ।"

प्रणवकेँ कपार फोड़बाक बातपर हँसी लागि जाइत छलैक आ ओकरा हँसैत देखि मामियोक क्रोध बिला जाइत छलनि । ओहो हँसऽ लगैत छलथिन । मामा मौका देखि किम्हरो ससरि जाइत छलाह ।

मुदा मामी ओकरा नहि छोड़ैत छलैक । अपने हाथे खुआ-पिआ संग सुता लैत छलैक । देहमे सटौने सौंसे देहपर आस्ते-आस्ते हाथ फेरैत छलैक । बहुतरास

खिस्सासब कहैत छलैक, मनियरबा दैत्यवला खिस्सा, हक्कलि डाइनवला खिस्सा । मुदा प्रणवकेँ निम्न नहि होइत छलैक । ओ कहैत छलैक–"सुग्गी रानीक खिस्सा कहू मामी !"

आ मामी कहैत छलैक–

सुग्गी रानी सुग्गी रानी कतऽ जाइ छी ?
सायँ-पूत मारलक-ए रुसल जाइ छी ॥
हमरा लग रहब ?
रहब ने किएक ?
खाय की देब ?
सुक्खा रोटी ।
सूतय की देब....?
शीतलपाटी ।

सुग्गी रानी नहि रुकैत छलीह, सुक्खा रोटी खेनाइ आ शीतलपाटीपर सुतनाइ हुनका मंजूर नहि होइत छलनि । मुदा मामीक संग शीतलपाटीपर पड़ल प्रणव सुक्खो रोटी खाकऽ सुग्गी रानीक खिस्सा सुनैत सूति रहैत छल । निभेर सुतैत छल आ झलफल इजोतमे महीँस खोलि भुतहा बाधमे निकलि जाइत छल ।

बाधसँ घुरि पोखरिसँ नहा अबैत छल आ हाथमे सिलेट गाबिश लऽ मामीकेँ कहैत छलनि— स्कूल जाइ छी मामी !

मामी दौड़िकऽ बाहर अबैत छलथिन आ ओकर पैण्टक पाकिटमे कहिओ मकैक लाबा, तऽ कहियो तमहा चूड़ा, आ कहिओ-कहिओ मुरही दऽ दैत छलथिन आ ओ फँकैत स्कूल दिस दौड़ि जाइत छल ।

मुदा कोनो-कोनो दिन ओ दू बेर-तीन बेर चिचिआइत छल–"मामी, जाइत छी ।" मुदा मामी घरसँ नहि बहराइत छलथिन । ओ बुझि जाइत छल आ फेर चिचिआकऽ कहैत छलनि–"आइ हम जलखै नहि करब, भूख नहि अछि ।"

मुदा स्कूलसँ घुरलोपर मामी सामने नहि अबैत छलथिन । सामने पड़लोपर दोसर दिस चल जाइत छलथिन । मामा घरसँ निपत्ता । दूधक उठौनावला सभ पाइ नहि देलकनि कहिकऽ । तगेदामे बौआइत हैताह । आ, जा धरि मामा किछु लऽकऽ नहि घुरथिन, मामी ओकरासँ नहि बजतैक, ओकरा दिस नहि तकतैक ।

एक टा मौनी लऽकऽ प्रणव दौड़िकऽ चुन्नूक पुतऽहु लग चल जाइत छल– थोड़े मुरही दे चुन्नूक पुतऽहु !

चुन्नूक पुतऽहु मोलायम स्वरमे कहैत छलैक–"कोनो बेचा हउ बौआ ?"

–"नहि, आइ किछु नहि अछि । ओहिना दे । दोसर दिन दऽ देबौक । मामीकेँ नहि कहियहिक ।" –प्रणव कने अधिकारसँ कहैत छलैक । चुन्नूक पुतऽहु ओकरा मानैत छलैक । अपन छोटकी मौनीसँ दू-तीन मौनी मुरही दैत छलैक आ प्रणव भागिकऽ आँगन अबैत छल । मौनी मामीक आगू बढ़ा कहैत छलैक-'मामी !' तखन मामी घुरिकऽ तकैत छलैक ओकरा दिस । मुदा दुनू आँखि नोरसँ भरल ! भटभट खसऽ लगैत छलैक ओकरा अपने हाथे मुरही खुअबैत काल ।

मुदा गुरुजीकेँ कनियो दया-माया नहि होइत छलैक ओकरा डेंगबऽ काल ! शनि दिनकेँ सभ चटिया लाइनमे ठाढ़ होइत छलैक । एक टा चटिया आगू-आगू पढ़ैत छलैक आ सभ दोहरबैत चलैक—

गणेश जी महाराजा चढ़िये तुरंग
नौ सौ मोती झलके अंग
एक मोती हरि तालम ताला
गुरु पढ़ावे पण्डित बाला
पण्डित बाला देहु आशीष
जिओ लड़का लाख बरीस !

मुदा गुरुजी लाख वर्ष जीबाक आशीष देबाक बदला खजूरक मोटका छड़ी लऽ लाइनमे ठाढ़ चटियासभक मुँह देखैत नेंगरा टाँगकेँ इम्हरसँ उम्हर घिसियबैत छलैक । जिनकर शनिचरी कम्म रहलनि हुनका चट एक छड़ी–"ठीक से पढ़ो !" आ प्रणव लग आबि आँखि रंगि जाइत छलनि, कारी झरकल मुँह लाल भऽ जाइत छलनि– सभ शनिक वैह हाल ! ने एक्को टा पाइ, ने एक्को कनमा चाउर ! लाइनसँ घीचि लैत छलथिन बाहर आ चटपट छड़ी मारि देह फुला दैत छलथिन–"ठीक से लाइनमे खड़ा होना नहीं आता ?' उच्चारण एकदम भ्रष्ट ! कौपी किताब किधर है ?" असहाय मारि खाइत प्रणव आ डेरायल ठाढ़ बाँकी चटियासभ । मुदा दू गोटे खिलखिलाकऽ हँसैत छलैक प्रणवकेँ मारि लगलापर सभ दिन । जेना बड़ आनन्द आबि रहल होइ– खिल-खिल खिल-खिल ।

गुरुजीकेँ साहस नहि छलनि जे दुनूकेँ टोकथिन–"एना हँसैत किएक

छैँ ?" उघार देहपर अनवरत छड़ी बरिसैत छलैक– चटचट-चटचट आ दुनू छौंड़ी लगातार हँसैत छलैक– खिलखिल...खिलखिल...

ओ हँसी मालाक छलैक, शीलाक छलैक ! कल्लू चौधरीक बेटी– माला आ शीला ! पुरखा अइ स्कूलक घर आ मैदान लेल जमीन देने छलथिन । माँटिक ई भीत आ फूसक चार कल्लुए चौधरीक दिआओल छलनि । गुरुजी कल्लू चौधरीक संग हुनकर दुनू बेटियोकेँ सरकारे कहैत छलथिन । दुनूक सीट फराक लगैत छलैक- एक कात । घरसँ आसन अबैत छलैक । बस्ता लेने नौकर अबैत छलैक आ आसन बिछा जाइत छलैक । कतेको दिन गुरुजी अपनेसँ आसन बिछा अपन मैलका गमछासँ ओकर गर्दा झाड़ि दैत छलथिन । शनि दिनकेँ सेर भरि शनिचरी भेटि जाइत छलनि ।

गामक पूब धारक कछेरमे स्कूलक घर छलैक–राधाकृष्णक मन्दिरोसँ पूब । अइ मन्दिरक पश्चिममे महादेवक मन्दिर छलैक । दुनू मन्दिर कल्लुए चौधरीक पुरखाक बनाओल छलनि । तकर एबजमे मन्दिरक पुजेगरी आइयो हुनका सरकार कहैत छलनि । पुजेगरीकेँ भगवानक भोग लेल दान कयल जमीन छलैक आ मन्दिरक चारू कात फुलबारी, जाहिमे लताम अरड़नेबाक संग आम–लीची आ बेलक गाछ सेहो छलैक । भगवानक मन्दिरक भीतरी गेटपर कल्लू चौधरी आ हुनकर बापक फोटो सेहो टाँगल छलैक ।

आ गामक बीचोबीच कल्लू चौधरीक हवेली छलनि–दुमहला । पहिने तिनमहला छलनि । 1934क भूकम्पमे उपरका हिस्सा ढनमना गेलनि, दू-तीन टा जानो लेलकनि, मुदा बाँकी हिस्सा आइयो सुरक्षित छलनि । पलस्तर जहाँ-तहाँ झड़ि गेल छलैक, मुदा हवेलीक भव्यता अखनो बरकरार छलैक ।

हवेलीक आगूमे एक टा बड़की पोखरि आ पोखरिक भीड़पर चारूकात बसल लोकसभक घर । किछु खपरैल आ बाँकी सभ पक्का, कल्लू चौधरीक देयाद सभक । गामक बाँकी लोकसभ आन-आन टोलमे । उतरबारि टोल आ दछिनबारि टोल हिनकेसभक भगिनमानक आ पछबारि टोलमे किछु दियाद आ बेशी पुरना जमींदारीक लगुआ-भिड़ुआ लोकसभक परिवार, भनसिया-जिरतिया सभक । ओही टोलमे प्रणवक मामाक टाटक एक टा घर । घरमे एक टा कोठी, दू चारि टा

थारी-बाटी ! ओसारापर एक टा दुचुल्हिया भानसक लेल । बाड़ीमे एक टा लताम, एक टा अरड़नेबा, एक टा दाड़िम । आ एकटा बिज्जू आमक खूब झमटगर गाछ । ओही बाड़ीमे छाँह तर बान्हल महीँस आ करचीक टाटसँ घेरल आँगनमे एक टा तुलसीक गाछ, बीचमे आ टाटक कातेकात गेना आ बेलीक गाछ । टाटपर किछु लत्ती । आँगन ओसारा खूब चिक्कन, नीक जकाँ नीपल ।

अइ घर-घराड़ीक अलावा मुन्नर झाकेँ, प्रणवक मामकेँ, दस कट्ठा जमीन छलनि बाधमे, सेहो कल्लू चौधरीक बापेक देल । मुन्नर झाक बाप दरबारमे भनसिया छलथिन; सवा बीघा जमीन भेटल रहनि । हुनकर मुइलाक बाद पन्द्रह कट्ठा छीनि लेलथिन कल्लू चौधरी, आ आब बचलोहो दस कट्ठापर आँखि गड़ल छलनि ।

मुदा दुनू बहिनिक आँखि तऽ ओइसँ बेशी गड़ल छलैक प्रणवपर । स्कूलमे पाँच बरखसँ ओकरे क्लासमे छलैक दुनू, आ ओकर उपहास करबाक कोनो अवसर छोड़ऽ नहि चाहैत छलैक । खलिए देहे स्कूल आओत प्रणव, दुनू बहिन आँखि चिआरिकऽ देखतैक आ फेर खिलखिलाकऽ हँसतैक । आरो कैक टा छौंड़ा खाली देहे स्कूल अबैत छलैक मुदा कहाँ क्यो हँसैत छलैक ओकरापर ? मुदा माला-शीला तऽ ओकरा हीन भावसँ ग्रस्त कऽ देने छलैक । दुनूसँ पड़ायल फिरैत छल प्रणव, मुदा ओ दुनू अरबद्धि कऽ ओकर सभटा गतिविधिकेँ ठिकियौने रहैत छलैक । किताब लेल मारि लगौक– तऽ खिलखिल, शनीचरी ले' मारि लगौक–तऽ खिलखिल !

मुदा काज पड़लापर दुनू एकदम मोलायम बनि जाइत छलैक । स्कूलक हातामे जखन मोंछ तोड़बाक हेतैक, दुनू बहिन संगहि घेरि लेतैक–"थोड़े हमरो ले' तोड़ि दे...।" आ प्रणवकेँ सभ बिसरि जाइत छलैक आ कटहरक फुनगीपर चढ़िकऽ दुनू लेल मोंछ तोड़ि दैत छलैक, स्कूलक पछुआड़मे जे तेतरिक गाछ छलैक, ताहिपर चढ़ि तेतरि तोड़ि दैत छलैक । मुदा काज निकलैत देरी दुनू छौँड़ी ढंगे बदलि लैत छलैक ? एक बेर हाथमे तेतरि दैत काल बाँहि छुआ गेलैक मालाक । एकदम गोरि आ मोलायम गोल-गोल हाथ-पयरवाली छलैक माला— मक्खन सन चिक्कन ! बाँहि छुआइत देरी चटाक दऽ चाट मारि देलकै गालपर– सऽख ने देखू ! हमर देह छूता ! मखानक पातसँ मुँह पोछि आ पहिने ।"

तहियासँ डेरा गेल प्रणव । माला तऽ चण्ठ छलैके, शीलो कम्म नहि । ओना देखबामे दुब्बरि-पातरि छलैक शीला, रंगो कने बड़की बहिनसँ कम्मे आ हाथो-पयर ओहन गुलगुल नहि । पातर-छरहर हाथ-पैर, मुदा आँखि बड़ पैघ-पैघ, कोआ सन डगडग करैत । पातर ठोर आ कनेक उठल सन नाक ! बड़की बहिनक

केश छोट-छोट मुदा घुघरू सन, आ छोटकीक केश बेश घनगर आ पैघ ! लग अयलापर गमकौआ सुगन्धि लगलापर कतेको बेर प्रणवक इच्छा भेलैक जे पुछैक जे की लगबै छै केशमे ? मुदा फेर गालपर लागल चाट मोन पड़लैक आ डर भेलैक जे दोसर बचलोहो गालपर छोटकियो तेहने चाट लगा देतैक।

राधाकृष्णक मन्दिरक पुबारि कात ठीक स्कूलक हाताक बाहर दक्षिणमे एक टा बड़का बड़क गाछ छलैक– एकदम चतरल । क्यो ऊपर चढ़िकऽ भीतर झोंझमे बैसि रहय तऽ पतो भेटनाइ मस्किल । बीचोबीच, ठीक जड़िक सोझमे एक टा दुकन्हा छलैक– छोट-छीन स्नानी चौकी जकाँ । जखन कखनो प्रणवक मोन उदास होइत छलैक आ एकसर सुतबाक मोन होइत छलैक, ओही दुकन्हापर सूति रहैत छल । ओहू दिन ओतहि जा पड़ि रहल । मुदा आन दिन जकाँ निन्न नहि भेलैक । आँखि मुनने पड़ल रहल । कतेक बेर कनबो कयलक । अपनो कोनो कारण नहि बुझयलैक । एक चाटमे कोन एहन दुनिया उनटि गेलैक ? गुरुजी तऽ सभ दिन खलड़ी ओदारबे करैत छलथिन ।

दस बरखक प्रणव लेल ओहि दिन मात्र एकान्तमे नुकाकऽ कानि लेबाक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नहि छलैक । गुरुजीकेँ कहलापर एक चाटक संग पचीस-पचास छड़ी सेहो सहऽ पड़तैक । मामा सऽ कहलापर सेहो किछु नहि हेतैक । सभ टा सुनि मामा बौक बनल ठाढ़ रहथिन, कल्लू चौधरीक दरबज्जापर जा उपराग देबाक साहस नहि हेतनि– बचलो-खुचल दस कट्ठा उसराह जमीन जे देने छथिन सेहो छिना जयतनि, गाममे रहब मस्किल भऽ जयतनि । मामी सुनिकऽ छाती पिटथिन, चुप्पो ने रहथिन, कल्लू चौधरीक समस्त खानदानकेँ गारि-सरापसँ तर कऽ देथिन, मुदा अपने अंगनासँ ! अइसँ नीक तऽ यैह छलैक जे चाट खाकऽ चुपचाप बड़क गाछक दुकन्हापर सूतल रहय, मोनक तामस आ आगिकेँ मिझबैत रहय !

मुदा मामी भरि गाम घोल मचा देलथिन–"नहि जानि नेना कतऽ चल गेल ? अबस्से कसैया गुरुजी फेर डेंगौने हेतैक आ हमर नेना दुखसँ बताह भेल किम्हरो पड़ा गेल हैत ।" अपनो घरे-घर तकलथिन आ मामोकेँ चारू कात दौड़ौलथिन । धारो कात धरि अयलथिन मामा । हुनका गेलापर ओ चुपचाप गाछपरसँ उतरल आ अपन आँगनमे जा ठाढ़ भऽ गेल मामीक सोझाँ–"कहाँ गेल छलैं दिन भरि ?" मामीक चिन्ता तामसमे बदलि गेल छलनि । प्रणव चुप्प, घेँट झुकौने ठाढ़ ।

"आइयो मारलकौ नेंगरा ?" मामी लग आबि गेलैक ।

प्रणव जोरसँ मूड़ी झँटलक । मामीक स्वर आर तमसा गेलनि– ''तखन

कहाँ छलैं दिन भरि भूखल-पिआसल ? अन्देशासँ अखनो कोंढ़ धड़धड़ा रहल अछि।''

प्रणव बौक ठाढ़ रहल । आब मामीकेँ बेसी चिन्ता भेलनि । एकदम सटि हाथसँ देह छुबैत पुछलथिन– मोन खराब छौ ?

"नै" अइ बेर प्रणवक बोल फुटलैक– "एक टा संगीक संग धारक ओहि पार चल गेल रही, ओ अपन घर बजौने छल । ओतहि खा लेलिऐ आइ ।" नहि जानि किएक झूठ बाजि गेल ओ ? मुदा मामीकेँ जेना विश्वास नहि भेलनि । जिरह करैत पुछलथिन–"खयने-पीने छैं तऽ एना मुँह किएक सुखायल छौ ?"

प्रणव जबर्दस्ती हँसल–"दिने खेलिऐ से की पेटमे धयले अछि ? साँझ भेलै । किछु दिअऽ ने खाय ले' !''

ओकरा हँसैत देखि मामीक चिन्ता जेना दूर भऽ गेलैक । जलखै देलकै आ भानस-भातमे लागि गेलैक । मुदा प्रणवक मोन ओहि दिन कथूमे नहि लगलैक । गरमी मास छलैक । अँगनेमे पटिया बिछा इजोरियामे पड़ि रहल । हवो सिहकैत रहैक । तैयो प्रणव कछमछाइत रहल । ओकरा बेर-बेर मोन पड़ैत रहलैक अपन देहपर बजरैत छड़ी आ आर्त्तनादक स्वरकेँ दबा पसरैत खिल-खिल हँसी । आ तकर बाद गालपर एक टा समधानल चाट आ चाटक संग आगि सन बोल-"सऽख ने देखू, हमर देह छूता, पहिने मखानक पातसँ मुँह पोछि आ !"

ओना प्रणवक मुँह एकदम पोछल-पाछल आ चिक्कन छलैक । भुभुक्का गोराइ आ नमगर देह । मुँह-कान खूब निखरल । मामी कहैत छलथिन– रंगल-ढौरल, लिखल-पढ़ल मुँह । टेमीसँ लिखल ।

ओना मुन्नर झाक मुँह सेहो रंगले-ढौरल छलनि– एकदम पकिया रंगसँ । कारी आ चाकर मुँह । नाक सेहो चतरल । गस्सल बाँहि आ चौड़ा छातीमे सौंसे केश, एकदम कण्ठ धरि आ पीठपर सेहो दुनू कात । कान आ हाथ-पैरक आंगुरपर सेहो पैघ-पैघ केश । मुदा माथक केश अधिक काल अस्तुरासँ मुड़बा लैत छलाह । कारी-कारी झमटगर केश छलनि, गर्मी माससे सौंसे माथोमे घम्हौरी भऽ जाइत छलनि, देहक कथे कोन ? देहक उपाय नहि छलनि, मुदा माथ छिलबा लैत छलाह ।

मुन्नर झाक बहिन, प्रणवक मायो एकदम गोर भुभुक्का छलैक । देखबामे सेहो तेहने सुन्नरि । पन्द्रह वर्ष छोट छलैक मुन्नर झासँ, मुदा बिआह पहिने ओकरे भेलैक; चौदहम बरखमे । धनिक घर आ सुन्नर वर । जमींदारक खनदान छलैक, कल्लू चौधरीक कोनो नोत-पतापर आयल छलथिन प्रणवक बाप । मुन्नर झाक बहिनकेँ देखलथिन आ अपन जेठ भाइ लग जिद धऽ लेलथिन । कल्लू चौधरीक भनसियाक बेटी, मुन्नर झाक बहिन चम्पा एक टा बड़का घरमे पुतऽहु बनि गेलीह– कल्लू चौधरीसँ पैघ जमींदारक घर ।

मुदा भोग नहि भेलनि । छबे मासक बाद बिधवा भऽ गेलीह । कनिये ज्वर भेलनि आ वैह काल भऽ गेलनि । उपचार-इलाज, झाड़-फूक किछुओ नहि सुनलकनि आ चम्पा पाँच मासक पेट लेने सीथ पोछि नैहर घुरि अयलीह । घुरि नहि अयलीह, जबरदस्ती निकालि देल गेलीह । भैंसूरकेँ मौका भेटि गेलनि– अलच्छ डाइन कहि नैहर बिदा कऽ देलथिन ।

बूढ़ बापकेँ ई दुख बर्दास्त नहि भेलनि आ ओहो दुइए मासमे अइ लोकसँ विदा भऽ गेलाह । तकर तेसरे मास प्रणवक जन्म भेलैक । मुन्नर झा दौड़ल कुसुमपुर गेलाह–चम्पाक सासुर । दरबज्जोपर नहि चढ़ऽ देलथिन श्रीमन्त चौधरी, चम्पाक भैंसुर–"साहस कोना भेल गाममे पयर देबाक अहाँक ? नहि जानि ककर पापकेँ हमर कुलक नाम देबाक लोभमे दौड़ल आयल छी ! दू मास पहिने नेना भेल आ आइ खबरि देबऽ आयल छी । आ विवाहक आठमे मास नेना भेल कोना ? अही पापकेँ लादऽ लेल तऽ हमर मदनकेँ फँसौने छलियनि अहाँसभ । प्राणसँ प्रिय छलाह हमरा, जिद मानि लेलियनि । मुदा हुनके संग ओ खिस्सा खतम । फेर नाम लेब अइ कुलक कहियो तऽ जीह काटि लेब ।"

अपमानित आ हताश मुन्नर झा घुरिकऽ अपन गाम अयलाह । ककरो किछु नहि कहलथिन, चम्पोकेँ नहि । मुदा चम्पा सभ बूझि गेलैक । सौरीसँ बहार नहि भेलैक, छठिहारो नहि देखलकै नेनाक ।

मुन्नर झाक काकी पोसलथिन बिन मायक नेनाकेँ पाँच वर्ष । मुन्नर झा सभ साल सभा दौड़लाह, मुदा कोनो कन्यागत ध्यान नहि देलकनि । पाँच वर्ष बाद चम्पाक सभ गहना बेचि दू हजार गनलनि आ पन्द्रह वर्षक मीनाकेँ विआह-द्विरागमनक बाद अँगना अनलनि । पैंतीस वर्षक मुन्नर झाक पन्द्रह वर्षक कनियाँ मीना । कमलपुरवाली कनियाँ– मीना । जे देखलकै अकचका कऽ रहि गेल । कारी-भुजुंग, भृट्ट आ चाकर मुन्नर झाक आँगनमे एहन सोन सन कनियाँ । सोन सन रंग आ चान

सन मुँह । मुदा हाथ-पयर फूल सन होइतो ओहन कोमल नहि छलैक, एकदम सक्कत आ कर्मठ छलैक । अबैत देरी सभ टा सम्हारि लेलकै– उजड़ल घर-गृहस्थी आ बिन मायक प्रणव । गहना बेचलासँ बाँचल किछु टाका छलनि, जकरा मुन्नर झा हरदम डाँड़मे खोसने रहैत छलाह । टाका देखा नबकनियाँक मनौन करैत छलाह–साड़ी आ गहनाक प्रलोभन दैत छलथिन । सभ टा टाका लऽ लेलकनि मीना आ कीनि देलकनि एकटा लगहरि महीँस । मुन्नर झाकेँ चारि कैंचा कमैबाक ब्योंत भेलनि तऽ आँखि खुजलनि । खूब मेहनति करऽ लगलाह– बाड़ी-झाड़ी आ दस कट्ठा खेतमे आ महीँसक पोसमे ।

आ मीना ओइ उजड़ल-बिलटल आँगनकेँ फेरसँ चमका लेलनि । पोछि-पाछि नीपि-नापि ओइ टाटक घरकेँ चमकौलनि आ हरदम पोटा बहबैत माटि-कादोमे ओंघराइत प्रणवकेँ सेहो तेल-कूड़ दऽ अपन ममता-भरल हाथसँ चमका देलथिन ।

प्रणव तऽ मामी लेल जान देबऽ लागल । हरदम ओकरे लग सटल रहय । मुन्नर झा खौंझाइतो छलथिन । मुदा मीना हरदम सटौने रहैत छलैक अपना संग । मुन्नर झाक खौंझी बढ़ऽ लगलनि आ प्रणव छौ बरखक भऽ गेल, तऽ एक दिन स्कूल पठा देलकै ओकरा । गामक अपर प्राइमरी स्कूल, जकरा गामक छौंड़ासभ नेंगरा गुरुजीवला स्कूल कहैत छलैक । नेंगरा गुरुजीक ललबिठुआ आ छड़ी नामी छलनि । जकरा एक ललबिठुआ दैत छलखिन, सात दिन तक ओतुक्का माँउस आ चमड़ी लहरैत रहैत छलैक आ खजूरक छड़ी हरदम हाथेमे रहैत छलनि । मारि सटकीसँ देह फुला दैत छलथिन ।

मीनाकेँ पहिने किछु नहि बूझल छलैक । जहिया पहिल दिन कनैत घर अयलैक प्रणव, तहिए बुझलकै ओ । बिशनपुरवाली काकी आ भोजपरौलवाली दियादनी कहलकै ओकरा जे केहन कसाइ छैक नेंगरा गुरुजी ! एक बेर एक टा छौंड़ाक मुँहमे कण्ठ तक छड़ी घुसिया देने रहैक आ एक बेर गलफरमे आंगुर दऽ चीरि देने रहैक । मीना सुनिकऽ डरे बेहाल भऽ गेल । प्रणवकेँ स्कूल पठौनाइ बन्न कऽ देलकै । मुदा मुन्नर झा बिगड़ि गेलथिन– "एना तऽ छौंड़ा अबण्ड भऽ जायत । चारि आखर पढ़ऽ दिऔ, नै तऽ हमरे जकाँ महीँस चरबैत रहि जायत इहो ।"

बात मीनाकेँ लागि गेलैक । महीँस चरा घरे-घर दूध बेचैत छलथिन मुन्नर झा से ओकरो पसिन्न नहि छलैक । मुदा ओ अपने महीँस कीनि देने रहनि, बाट सुझौने रहनि । बाप कल्लू चौधरीक भनसिया छलथिन । भरि गाम भोज-भातमे मोनक मोन अन्न रान्हि दैत छलथिन । आइयो-काल्हि मुन्नर झा पकड़ा जाइत

छलाह। तीमन-तरकारीक लूरि तेहन नहि छलनि, मुदा भात तऽ पसा लैत छलाह, कठमस्त देह छलनि। मुदा से सभ मीनाकेँ नीक नहि लगैत छलैक। प्रणव स्कूल जयतैक, अबस्से पढ़तैक, एहन सोन सन छौंड़ा भनसिया नहि बनतैक, महीँस नहि चरौतैक... किन्नहु नहि...

आ प्रणव स्कूल जाइत रहल, मामीक स्नेहक छाहरितर बढ़ैत रहल। क्यो पुछैक– "बिआह करबैं प्रणव ?"

झट कहैक– 'हँ'।

–"ककरासँ ?"

"मामीसँ।" प्रणव सभ बेर एक्के जवाब दैत छलैक। सुनिकऽ मीना हँसऽ लगैत छलैक आ फेर हँसैत-हँसैत गम्भीर भऽ दुनू हाथे ओकर मुँह धऽ कहैत छलैक–"अबस्स करब अहाँ संग बिआह। एहन राजकुमार सन बर हमरा कतऽ भेटत ?" आ फेर हँसिकऽ कहैत छलैक "कने जल्दी-जल्दी पैघ होउ नहि तऽ बूढ़ भऽ जायब हम। तखन बुढ़िया कनियाँसँ बिआह करऽ पड़त।"

आ सत्ते जल्दी-जल्दी बढ़ि गेल प्रणव। दस वर्षक होइत-होइत, पँचमा क्लासमे पहुँचैत-पहुँचैत एकदम सचेष्ट भऽ गेल ओ। तखन मामी पुछैक–"हमरा संग बिआह करब ? आब तऽ मोछो पम्ह देने जाइऐ !"

"धत्" प्रणव एकदम लजाकऽ कहैक–"मामीक संग कतौ बिआह भेलै–ए !"

''देखू, आब अपन बात बदलि रहल छी अहाँ ? बुढ़िया कनियाँ मुदा पिण्ड नहि छोड़त।''

आ प्रणव हँसऽ लागय आ हँसैत देखय जे अइ पाँच बरखमे मामीक रंग जेना आर चमकि गेल होइ, देह आर गमकि गेल होइ ! ओइ आंगनवाली नानी हरदम कहैक प्रणवकेँ–"तोहर माय एहने छलौक, अनमन तोरे मामी सन, एहने सुन्नर आ एहने बुझनुक।" प्रणव मामीक चेहरामे मायकेँ तकैत बाजय–"माय-बेटाक कतौ बिआह भेलै–ए ? अहाँ मामी थोड़े छी हमर– अहाँ तऽ माय छी...

आ मीना करेजसँ सटा लैक ओकरा। ओइ स्पर्शक नरमी आ ओइ देहक सुगन्धिमे डूबल प्रणव ठाढ़ रहि जाय। जोरसँ धड़धड़ाइत मामीक छातीक स्वर ओकर कानमे बजैक, मुदा कोनो अर्थ नहि लगैक।

मुन्नर झा देखि लेथिन तऽ डँटबो करथिन कतेक बेर–"किएक एना दूरि कऽ रहल छिऐ एकरा ? कोनो बच्चा अछि आब जे एना कोरामे लेने रहैत छियैक !"

मीना हँसिकऽ टारि दैक।

मुदा माला तऽ अतत्तह कऽ देलकै ओइ दिन। कने हाथ छुआ गेलैक तऽ समधानिकऽ चाट लगा देलकै–"सौऽख ने देखू ! हमर देह छूता ? मखानक पातसँ मुँह पोछि आ पहिने।"

आ प्रणव दिन भरि दुकन्हापर सूतल रहि गेल। रातियोकेँ आंगनमे पटियापर पड़ल-पड़ल मालाक चाट आ ओकर बात ओकरा अशान्त कयने रहलैक। नेंगरा गुरुजी कतेको बेर बेंतसँ देह फुला देने छलैक, ललबिठुआसँ सौंसे देह लहरा देने छलैक, मुदा मालाक चाट आ बातक लहरि ओहिसँ बढ़िकऽ छलैक। किएक मारलक एना हमरा ? मामीक देहसँ चिक्कन देह छैक ओकर ? बेशी सुन्नर अछि मामीसँ ? आ हमर हाथ कोनो कारी खोरनाठ अछि जे दाग लागि जेतैक ? बड़का लोकक बेटी अछि तऽ अपना घर। कोनो हम खुशामद करऽ गेल छलिऐक ? अपने मोंछक झक्का आ तेतरिक चटनी लेल जान देत, हाथ-पैर जोड़त आ काज निकललापर एहन ऐंठी ? आब हमहूँ मजा चिखा देबनि दुनू बहिनकेँ। लाख मनौन करतीह, नहि देबनि तोड़िकऽ, नहि चढ़बनि गाछपर। बजबो नै करबैक दुनूसँ। दुनू ऐंठिलाहि अछि। जेहने पढ़ऽमे भुसकौल, तेहने लूरिमे। गोबरक चोत अछि दूनू। हमरा कथीक खुशामद ? देखा देबनि आब ! नेंगरा गुरुजीक बलें खिलखिलाइत छथि– खिलखिलाइत रहथु। परवाहि ककरा छैक ? जे दुनूसँ बाजय से गीदड़क नेँड़ी खाय...

सत्ते, नहि बजलैक दुनू बहिनसँ पाँच वर्ष। अपर प्राइमरीसँ हाइ स्कूलमे आबि गेल, दसमा पास कऽ मैट्रिकक तैयारीमे लागि गेल, मुदा अपन सप्पत मोन रहलैक प्रणवकेँ। माला तऽ तीने वर्षक बाद स्कूल छोड़ि देलकैक। नवेँमे छलैक कि बिआह भऽ गेलैक। वर एकदम बुढ़ाँठ छलैक— चालीस-पैंतालीस वर्षक, माथक आधा केश पाकल। कारी रंग आ एक टा दाँत ऊँच। कोनो बड़का जातिवाला छलैक– महादेव झा पाँजि– बादमे ओ बुझलकै। जाति लेल ओइ दरिद्र आ कुरूप वरकेँ उठा अनने छलथिन। कतबो क्यो मना कयलकनि, नहि मानलथिन–"पुरुषक कतहु रूप देखल गेलैक अछि ! आ सम्पत्ति हम दऽ देबैक, सय-पचास बीघाक कोन गणना छैक ? मुदा केहन वरकेँ अनलहुँ अछि से ने देखू ! महादेव झा पाँजि...।"

मुदा प्रणवकेँ ओहि वरकेँ देखि हँसी लागि गेलैक । जोरसँ हँसल । इच्छा भेलैक जे ओतबे जोरसँ खिलखिला कऽ हँसय जतेक जोरसँ ओकर देहपर बेंत लगलापर माला हँसैत छलैक । मुदा ओकर हँसी बिला गेलैक । मोन पड़लैक जे बेँत लागल देह कोना ओहि खिलखिल हँसीसँ लहरि उठैत छलैक ! भेलैक जे आइ माला ओहिना छटपटा रहल हेतैक । एहन वरकेँ देखि ओकर मोन आ देह अहिना छटपटा रहल हेतैक । ओकरा मोन भेलैक जे आइ अप्पन सप्पत तोड़ि दिअय आ मालासँ पुछैक– "तोरो दर्द होइत छौक ?"

मुदा माला हवेलीक भीतर कनियाँ बनलि बैसलि छलैक । दरबज्जापर बरियातीक संग दँतउच्चू बुढ़ाँठ वर बैसल छलैक । आ बेहाल अपस्याँत कल्लू चौधरी छलाह । ओकर साहस नहि भेलैक जे भीतर जा कने मालाकेँ देखैक । कतेक दिन धरि उदास रहि गेल प्रणव ।

मुदा विवाहक किछु दिनुका बाद मालाकेँ देखलकै तऽ अवाक् रहि गेल । विवाहक बाद स्कूल गेनाइ छोड़ि देने छलैक माला । ओइ दिन मन्दिर लग देखलकै प्रणव तँ अपनापर तामस भेलैक । अही माला लेल उदास छल ओ ! ओ तऽ जेना खुशीसँ आर गुदगरि भऽ गेल छलैक । रङल ठोर आ मुँह-कान आ सौंसे देह गहना । जड़ीदार साड़ीमे खुशीसँ चमकैत आकृति । आँखिमे वैह दुष्टताभरल हँसी आ ओइ हँसीमे मिलि गेल एक टा आमंत्रण । प्रणवकेँ अपन भावुकतापर क्रोधक संग-संग लाजो भेलैक ।

आ बिआहक बाद लाज-धाखकेँ एकदम ताखपर राखि देलकैक माला । बाट-घाट भेँट भेलापर तेना मुसकिया उठैत, ततेक आक्रामक मुद्रामे झपटैक जे प्रणवकेँ पहिनेसँ बेशी डर भऽ जाइक ? गाममे अधिक काल बौआइते रहैत छलैक माला आ ओकर छाँहसँ छीह कटैत रहैत छल प्रणव । नहि जानि कतेक डर पैसि गेलैक ओकर मोनमे ?

मुदा शीला स्कूल जाइत रहलैक । कहुना पास करैत मैट्रिक धरि पहुँचि गेलैक । बीचमे माला एक बेर द्विरागमनमे नाम लेल सासुर गेलैक आ नवे दिनमे घुरिकऽ जे अयलैक से फेर सासुर जयबाक नाम नहि लेलकै । बहुत रास खिस्सा पसरि गेलैक ओकर बारेमे ! प्रणवोक दोस्त-महिम, सभ टा गामेक छौंड़ासभ, छौंड़ नहि, जुअनको-बुढ़बोसभ अइ खिस्सामे रस लेबऽ लगलैक । खिस्सा नमरैत गेलैक ।

मुदा शीला दोसरे रंगक बहरेलैक । प्रणवसँ वर्ष-दूवर्ष छोटे छलैक ओ । माला ओकरे बतारी रहैक । मुदा देहसँ दुब्बरि-पातरि भैयोकऽ शीला अपन बयससँ पैघ लगैक । एकदम गम्भीर आ शान्त । पिण्डश्याम मुदा चमकैत रंग । पातर लाल ठोर, कनेक उठल सन छोट नाक । पैघ-पैघ डबडब करैत आँखि । हँसैक तऽ एकदम छोट नेना सन भऽ जाइक आकृति, मुदा अधिक काल ठोरसँ ठोर सटल । शलवार-फ्राकक बदलामे हाइ स्कूल अबैत देरी साड़ी पहिरऽ लागल रहैक, से आर पैघ लगैक ।

प्रणवकेँ ओहिसँ बेसी नीक तऽ वैह शीला लगैत छलैक जे ओकर पीठपर बेंत लगलासँ खिलखिला कऽ हँसैत छलैक । ओहि शीलासँ ओतेक डर नहि होइत छलैक ओकरा । मुदा अइ शान्त गुमसुम शीलासँ ओकरा बड़ डर होइत छलैक । क्लासमे ओकरा दिस तकबाक साहसे नहि होइ छलैक ।

ओना कखनो काल धोखा-धोखीसँ यदि ओम्हर दृष्टि चलि जाइक तऽ कैक बेर लगैक जेना ओ ओकरे देखि रहल छलैक आ ओकर सटल ठोरपर कने मुस्की छलैक । मुदा फेर गऽरसँ देखलापर लगैक जेना ओकर भ्रम छलैक, ओ तऽ ओहिना गम्भीर आ शान्त छलैक आ ठोरपर ठोर साटल छलैक !

ओना प्रणवकेँ देखिकऽ हँसबाक आब कोनो कारण नहि छलैक । मोटे कपड़ाक मुदा देह झँपबा जोगर पाजामा-कुरता देहपर रहैत छलैक हरदम । कपड़ा उघारिकऽ बेंतसँ देह फुलबऽवला नेंगरा गुरुजी नहि छलैक आब ! क्लास टीचर मिर्जा साहेब आ हेडमास्टर साहेब दुनू बड़ मानैत छलैक ओकरा । स्कालरशिप भेटैत छलैक, फीस माफ छलैक । क्लासमे फर्स्ट करैत छल, मुनीटर छल । सभपर धाख छलैक ओकर । मुदा कम्मे वयसमे शीलाक जे धाख ओकर मोनपर जमलैक से आइयो छलैक । भरिसक से नहि छलैक । ओकर अहंकारे ओकरा रोकैत छलैक । दुनू बहिनसँ नहि बजबाक जे सप्पत खयने छल से ओकरा बिसरल नहि छलैक । गीदड़क नेंड़ी खयबाक सप्पत खयने छल ओ ।

मुदा सप्पत तोड़ि देलकै शीला एक दिन । मैट्रिकक टेस्ट परीक्षा होमऽवला छलैक । स्कूलसँ घुरैत काल शीला टोकि देलकै ओकरा–"कने अपन अंग्रेजीक कौपी दियऽ तऽ !''

प्रणवकेँ विश्वास नहि भेलैक जे ओकरे टोकने छलैक ! मुदा लगपास आर क्यो नहि छलैक । तैयो पुछलकै–'हमरा कहैत छी ?' शीला हँसलैक–"आर दोसर के ठाढ़ अछि एतऽ ?"

प्रणवकेँ ओ हँसी आ हँसैत शीला नीक लगलैक । मुदा दोबारा सोझ देखबाक साहस नहि भेलैक । कौपी दऽ देलकै ।

किछु दिनक बाद हिन्दीक, फेर विज्ञानक कौपी मँगलकै शीला । गप्प-सप्प होबऽ लगलैक कखनो काल, दू-चारि दिनपर । मुदा प्रणवकेँ सभ दिन प्रतीक्षा रहऽ लगलैक जे आइ फेर टोकतैक । कौपीसभ सजाकऽ लिखऽ लागल जे फेर मँगतैक ।

एक बेर एक सप्ताह धरि नहि किछु मँगलकै शीला । प्रणवकेँ कोनादन लागऽ लगलैक । ओइ दिन स्कूलसँ घुरैत काल वैह माँगि बैसलैक–"कने रैपिड रीडिंगवला किताब देब 'दी गुड एण्ड दी ग्रेट' हमरा नहि अछि ।"

शीला किताब नहि अनने छलैक । ओकरा गामेपर बजौलकै साँझमे । प्रणवकेँ नहि जानि किएक खुशी भेलैक । गामपर अपन कौपी-किताब राखि साँझ होइते दौड़ल कल्लू चौधरीक घर दिस । शीला दरबज्जेपर ठाढ़ि छलैक किताब लेने । मुदा प्रणवक हाथमे किताब देबा लेल हाथ उठले छलैक कि आंगनसँ बहराइत कल्लू चौधरी टोकलथिन– के अछि ?

"हम छी प्रणव, मुन्नर झाक भागिन ।" सकपकाइत बाजल ओ आ शीला डरे सिकुड़िकऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक ।

"एना अन्हारमे किएक आयल छेँ, कोन काज छौ ?" कल्लू चौधरीक स्वर रुच्छ छलनि । प्रणव आरो सकपकाइत बाजल–"किताब लेबऽ आयल रही, शीला बजौने छलि !"

"चुप्प निर्लज्ज ! बजैत लाज नहि होइत छौ ! आ तोँ की ठाढ़ छैं एतऽ, भाग अँगना ।" कल्लू चौधरी गरजलाह । शीला अँगना पड़ा गेलैक । प्रणव काठ भेल ठाढ़ रहल । अपमान आ भयसँ मुँह स्याह भऽ गेलैक आ डेग लोथ ।

"एना गाछ जकाँ ठाढ़ किऐ छेँ ? भाग जल्दी । आ खबरदार जे फेर दरबज्जापर पयर देलैं, हाथ-पयर तोड़बा देबौ ।" कल्लू चौधरी फेर गरजलाह ।

प्रणव भारी डेग उठबैत बिदा भेल । किम्हरो क्यो नहि छलैक, नहि तऽ लाजे आरो मरि गेल रहैत । पूब मुँहक दरबज्जासँ हँटिकऽ हवेलीक पछुआर दने अपन पछबारि टोल दिस बिदा भेल । मुदा बाड़ीक पछिला गेटपर क्यो टोकलकै–"किताबे बदला-बदलीमे डाँट सुनि गेलैं च च्च च...!"

अन्हारोमे मालाक स्वर चिन्हलकै प्रणव । बाड़ीक दरबज्जाक चौखटिपर डाँड़पर दुनू हाथ रखने ठाढ़ि छलैक । ओकरा डेग आगू बढ़बैत देखि फेर टोकलकै– "अहू घरसँ अजीब सम्बन्ध छौक तोहर ! कने देह छूलापर हम चाट मारि देने रहियैक आ आइ कने किताब मँगलापर बाबूजी दरबज्जेसँ खेहारि देलथुन ।"

प्रणव तैयो कोनो उत्तर नहि देलकै । आगू बढ़ऽ चाहलक तऽ माला आर लग सहटि अयलैक–"मुदा आइ चाट नहि मारबौक हम । छू ले ! छू कऽ देख ने ! हल्लो ने करबौक । ककरो ने कहबैक । आ ने...!"

प्रणवकेँ लगलैक जेना हाथ पकड़ि खीचि लेतैक माला । कल्लू चौधरीक डाँट सुनि जे डेग लोथ भऽ गेल छलैक, फेरसँ जोर मारलकै ! पड़ायल-पड़ायल अपन अँगनेमे आबिकऽ ठाढ़ भेल !

दौड़ल हकमैत अबैत देखि मामी टोकलकै–"की भेल बाउ ? एना पड़ायल किएक अयलौं ?"

प्रणव कोनो जवाब नहि देलकै । की जवाब दितैक ? चुप्पे रहल ।

मुदा गामक लोक चुप्प नहि रहलैक । सभ टोलमे फुसफुस, फुसफुस । फेर घोल मचि गेलैक– माला पड़ा गेलैक । तीन दिन भऽ गेलैक ! झाँप-तोप कयने छैक, तक्का-हेरी भऽ रहल छैक ।

रूदल चौधरी तऽ दलानमे सभक सामने पूछि बैसलथिन–"किदन सभ सुनैत छी भाइ ? मालाक कोनो पता लागल ?"

कल्लू चौधरीक मुँह लाल भऽ गेलनि तामसे । दियादी काटक लेल रूदलकेँ यैह अवसर भेटलनि । बेटी-पुतऽहुक इज्जति झँपबाक चीज थिकैक, ओकर एना बजारमे इश्तहार नहि बाँटल जाइत छैक । पुछबेक छलनि तऽ एकसरमे पूछि लितथि । कोनो आन तऽ नहि छथि रूदल, अपने पितिऔत थिकाह । बेटी सन छनि माला...

मुदा मालाक नाम मोन पड़ैत देरी तामसक स्थान लाज आ ग्लानि लऽ लेलकनि । एहन बेटीक बाप भेलासँ आइ सभक सोझाँ गरदनि झुकि गेलनि । जनमिते मरि गेलि रहितनि तैयो एहन क्लेश नहि होइतनि । बेटाक अभावमे कहिओ मुँह मलिन नहि भेलनि । माला आ शीलेकेँ सभ दिन बेटा जकाँ रखलथिन । सासुरो नहि जाय पड़ैक तेँ दरिद्र आ कुलीन जमाय तकलनि जे गाममे जथा आ बासक जमीन दऽ बसा देथिन । मुदा माला तऽ सभटाकेँ अजाड़ि, सभपर करिखा पोति निपत्ता भऽ गेलि छलनि ।

सोमना अहिल्या स्थानक मेलामे बदरीक संग देखने छलैक । मुदा बदरिया दोसरे दिन मेलासँ घुरि आयल । कतबो डेरा-धमकाकऽ क्यो पुछलकै, किछु नहि गछलकै । नम्बरी पाजी आ लम्पट अछि बदरिया ! ओकर थाह भेटब मस्किल ।

मुदा पुलकितकेँ थाह लागि गेल छलनि–"सभ टा बूझि गेलियऽ हौ भाइ ! ई बदरिया भारी हीरो अछि । छौँड़ीकेँ फुसलाकऽ मेला लऽ गेलैक आ फेर ककरो हाथ बेचि अपने घुरि आयल ।"

बेसी लोकककेँ ई बात संगत बुझयलैक । मुदा बदरिया चुप्प बैसऽवला लोक नहि छल । ओहो अपना दिससँ प्रचार शुरू करबौलक–"हम किएक बेचबै ककरो ? कोनो कमी देने छथि भगवान ! ओकर कोनो हमहीं टा छलिऐक ? एक छौँड़ीक सात लगवार ! नहि जानि ककर संग अलोपित भेल ।"

मुदा गामक आ अगल-बगलक गामक क्यो लापता नहि छलैक । आ माला एकसर गामसँ बहरायति से क्यो मानऽ लेल तैयार नहि छलैक । अबस्से क्यो फुसला कऽ गामसँ बाहर लऽ गेलैक आ ककरो हाथे बेचि-बिकिन लेलकै ।

भगिनमान टोलमे मालाक संगी छलैक रेणू— पलटू झाक बेटी । ओ स्त्रिगण सभकेँ जोर दऽकऽ कहलकै जे बदरियेक संग भगबाक प्रोग्राम छलैक–हमरो कहने छलि मेला चलऽ । मुदा हम नहि गेलिऐक । दक्षिणबारि टोलमे मालाक संगी छलैक मंगला । ओकरा बदरीपर नहि, इन्नरपर सन्देह छलैक । दुनूकेँ धारक कातमे, बाड़ी-झाड़ीमे फुसुर-फुसुर करैत देखने छलैक मंगला । अधिक काल चौकीदारीमे वैह ठाढ़ि रहैत छलैक । किम्हरोसँ कोनो आहटि होइ कि खखसि दैक ।

खाली शीला चुप्प छलैक । ओकरा जेना किछुओ नहि बूझल छलैक ! दुनू बहिनमे बड़ कम्म गप्प होइत छलैक, कोठलियो फराक-फराक छलैक । किताबवला घटनाक बाद शीलोक स्कूल गेनाइ बन्न करबा देने छलथिन कल्लू चौधरी । खाली टेस्ट परीक्षा दिया देलथिन आ फेर दरभंगा सेन्टरसँ मैट्रिकोक परीक्षा दिया देलथिन । मुदा ओइ दिनुका घटनाक बाद ओहिना शान्त रहऽवाली शीला आर अधिक गम्भीर आ शान्त भऽ गेलि छलि । दिन-भरिमे दू-एक शब्द बाजय । फेर अप्पन कोठलीमे बन्न । माय छलैक नहि । घरमे खाली नौकर-चाकर आ दलानपर कड़ा पहरा देने बैसल बाप ।

मुदा मालाक लेल ओ पहरा बेकार छलैक । दिन-रातिमे जखन मोन होइ लापता भऽ जाइ, शीला कहिओ ध्यान नहि दैक । ध्यान जयबो करैक कखनो तऽ कोनो महत्त्व नहि दैक–गेल हेतैक किम्हरो !

एक दिन शीलाक कोठलीमे आबि गेलैक माला–"की हरदम घरमे गुमसुम घुसिआयल रहैत छैँ ? चल किम्हरो घूमऽ !"

–"नै, तोँही जो ! हमरा नै नीक लगैत अछि ।"

–"तऽ जे नीक लगैत छौक तकरे लग जो !" माला मुसकिया उठलैक ।

शीला तेना तकलकै जेना किछु नहि बुझने होइ । माला साफ-साफ कहि देलकै–"प्रणवसँ भेँट कऽ आ, ओ तोरा नीक लगै छौ ने ! ओकरा बाबूजी डँटलथिन से तोरा अधलाह लगलौक । मुदा तोँ निश्चिन्त भऽकऽ जो, बाबूजीकेँ भनकियो नहि लगतनि ।"

शीला बड़की बहिनकेँ डाँटि लेलकै–"एहनो बात बजै-ए क्यो ? क्यो सुनत तऽ अटल-बिटल अर्थ लगाओत । हम किएक जयबै ककरो लग ? एहन निर्लज्ज हम नहि छी ।"

माला ओहिना कहलकै–"माला ठीक बात बाजलि तऽ निर्लज्जि भेलि ! तऽ रहऽ घरमे मुँह फुलौने बैसल ! अइ हवेलीमे आबिकऽ तोरासँ भेँट करतौक तेहन बहादुर आ साहसी नहि छौक तोहर हीरो !" शीला आरो खिसिया गेलैक–"आब बेजाय बात भऽ जेतौक जौँ एक्को शब्द बजलैँ । हमर हीरो किएक रहत क्यो ? हमरा ककरोसँ कोन मतलब...? तोरा बड़ अखरैत छौक तऽ तोँही चल जो !"

"हम तऽ दौड़ले चल जयबौ, मुदा तोहर ओ आदर्श-चरित नायक हमरा दिस आँखियो उठा नै तकतौ ।ताकि तऽ ओकरा तोरो दिस नहि हेतैक मुदा हम जनैत छियौ, ओकरा नीक लगैत छही तोँ ।" माला ओकर क्रोधपर बिन ध्यान देने कहैत गेलैक आ मुसकिआइत रहलैक । आ फेर एकाएक गम्भीर होइत बजलैक–"हमर पसिन्न आ नापसिन्नक कोन अर्थ छैक गे ? जखन ऊँच दाँत आ भभकैत मुँह आ खुरदुर हाथ-पैरवाला तोहर करिलुट्टू ओझोकेँ पसिन्न करऽ पड़ैए तखन आर के नापसिन्न हैत ? जैह भेटि जाय...''

शीला एकदम बिगड़ि उठलैक–"ओझाजी लेल एहन बात बजैत लाज नहि होइ छौ ? तोहर स्वामी छथुन ।"

माला फेर हँसऽ लगलैक–"स्वामी छथि, तेँ मास-दू-मास, कहियो दसो दिनमे आबिकऽ अपन हिस्सा लऽ जाइ छथि–एकदम अधिकारपूर्वक ! हमहूँ विरोध करैत छियनि ? कतबो असह्य हो सभ टा सहि जाइ छी–ओ दुर्गन्ध, ओ खुरदुर स्पर्श आ ओ थाकल चुकती भेल पौरुष । जाहि दिन पहिल बेर ओ सभ सहने रही, सौंसे

आत्मा आ देह विद्रोह कऽ देने छल । फेर सभ टाकेँ अभ्यास भऽ गेल, सभ टा सहि जाइ छी आब ! जहिया नहि सहि हैत, किम्हरो बिदा भऽ जायब, किम्हरो, ककरो संग ।"

शीलाकेँ डर भेलैक । अपन अइ पैघ बहिनकेँ भरिसक ओ नहि चीन्हि सकलैक । ओकरा होइत छलैक जे अइ सुन्न आ पैघ हवेलीमे मात्र वैह टा दुखी अछि । आब लगलैक जेना माला ओकरासँ बेसी एकसरि आ दुखी छलैक, मोनमे एक टा बड़का बिरड़ोकेँ दबौने छलैक ।

"एना नहि बाज माला ! कतहु जयबाक गप्प नहि कर, हमरा डर होइ-ए । बाबूजी लेल सोचहुन । तोरा कतहु जाय नहि पड़ौ, तेँ ने एहन जमाय अनलनि जे तोरा एतऽ रहऽ दौक-अपन घर लऽ जयबाक जिद नहि करौक ! एतेक सम्पत्ति छनि बाबूजीक, सभ तोरे सभक छौक, अही गाममे बसबैं, नव गाम, नव लोकक बीच कहियो जाय नहि पड़तौक । बिआहो भेलापर सासुरक अनुभव नहि हेतौक ।"

–"ठीके कहलैँ तोँ, बिआह भेलोपर हमरा सासुरक अनुभव नहि हैत ! हमरा वरक काज नहि छल, बाबूजीकेँ जमाय चाहैत छलनि, बड़का पाँजि वला, से लऽ अनलनि ! आ तोरो ओझाजीकेँ घर-गृहस्थी चलबऽ लेल कनियाँ नहि चाहियनि— ने घर छनि ने गृहस्थी । एक टा मौगीक देह चाहियनि आ चाहियनि जातिक दाम, से भेटि जाइत छनि । मासे-मास आबि जाइत छथि । खोआक संग हमरो सिसोहि लैत छथि आ फेर एक मासक खर्च-वर्च लऽ किम्हरो ससरि जाइत छथि । घी-मलिदो खा यदि चाम कनेक चिक्कन होइतनि...पानो-इलाइचीसँ यदि मुँहक दुर्गन्ध कनियो कमितनि...तोँ नहि बुझबहिक शीला, अखन तोँ किछु नहि बुझबहिक..."

माला चल गेलैक । मुदा शीला बुझलकै— सभ टा बुझलकै, आ ओकरा डर होबऽ लगलैक । आब मालाक बाहर आबऽ-जायपर ओ ध्यान देबऽ लगलैक, कहिओ कनिओ देरी होइ घुरबामे तऽ डरे कोँढ़ धड़कऽ लगैक । हरदम एक टा आशंकासँ त्रस्त रहऽ लागलि । बहिन लग बेसी सटल रहऽ लागलि !

माला बूझि गेलैक आ एक दिन हँसि कऽ कहलकै— ई पहरा बेकार छौ शीला ! हमरा जयबाक मोन हैत तऽ क्यो रोकि नहि सकत । गेलापर घुरि आबी तेहन कोन आकर्षण छैक एहि घरमे ? खाली तोरा लेल दुख हैत । तोँ मोन पड़बैँ । तोरा एकसर अइ कालकोठलीमे छोड़ि जयबाक अपराध-भावनो रहत । मुदा अपन अइ बहिनकेँ, अइ दुखी संगीकेँ माफ कऽ दिहैं, ओकरासँ घृणा नहि करिहैं..."

आ सत्ते माला जखन चल गेलैक, तऽ शीलाकेँ कोनो तामस नहि भेलैक, घृणो नहि भेलैक । दिन भरिक तक्का-हेरीक बाद जखन बापकेँ चिन्तामे निमग्न कारी-झामर भेल मुँह देखय तऽ दुख होइक आ इच्छा होइ जे कहनि छोड़ू ई तक्का-हेरी ! जाय दियौक ओकरा अपन बाटपर...। मुदा कहि नहि होइ । बाबूजी लेल दुख होइ, मुदा बाबूजी अपन सुख-दुख ककरो संग बँटबाक अभ्यासिये नहि छलथिन । किछुओ भऽ जयतनि, नहि कहथिन । मुदा दलानमे आ कोठलीमे एकसर, अपमानित आ दुखसँ कातर भेल बापकेँ देखि कऽ ओकर इच्छा होइ जे लगमे बैसय, कोनो बात करय । मुदा साहस नहि होइ । बाबूकेँ चिन्ता आ दुख, माला लेल नहि, अपन इज्जति आ मर्यादा लेल छलनि–सेहो ओ बुझैत छलि । मालाक लेल ओकर चिन्ता बेसी छलैक, नहि जानि ककरा संग गेलैक, कोम्हर गेलैक ! एहन स्थितिमे कोनो ठेकनगर लोक नहिये भेटतैक, सभ ओकर स्थितिक फायदा उठा छोड़ि देतैक...! मुक्तिक लेल घरसँ बाहर पैर देलक अछि... भगवान करैक, ओ मुक्त भऽ जीबि सकय...!

मुदा गामक लोक आ स्त्रिगणसभ प्राण आजिज कऽ देलकै । किम्हरो जाय, वैह चर्चा–"माला घुरलौ ?" जेना सभकेँ बड़ चिन्ता होइ ! मुदा असलमे सभ आनन्द लैत छलैक । जहिया पित्ती भऽ रूदल चौधरी दरबज्जा पर सभ टा घोषणा कऽ गेलथिन तहियासँ एहन-एहन घोषणा सभ ठाम सभ टोलमे होइत रहैत छलैक । रूदल चौधरी जकाँ सामने आबि ओकर बाबूजीकेँ क्यो नहि पुछैत छलैक, मुदा शीलाकेँ तऽ जकरा मोन होइ छलैक, टोकि दैत छलैक । ओहो बाबूजीसँ किछुओ नहि कहैत छलनि, अनेरो काण्ड भऽ जयतैक । स्कूल गेनाइ छुटले छलैक, दरभंगा जा परीक्षो दऽ आयलि छलि । दिन भरि कोनो काज नहि रहैत छलैक । एकसरि घरमे पड़लि-पड़लि आरो गुम्मा भऽ गेलि शीला ! बापसँ कै कै दिन गप्पो नहि होइत छलैक । सोझा-सोझी भेलि आ फेर अपन-अपन कोठली चल गेलि । घरक वातावरण मालाकेँ चल गेलासँ एकदम दमघोंटू आ भयावह भऽ गेल छलैक ।

आ एक दिन प्रणवोकेँ गाम छोड़िकऽ जाय पड़लैक ।

जाय नहि पड़लैक, ओ स्वयं जयबाक निश्चय कयलक । मैट्रिकक परीक्षामे जखन स्कूलक संग ओ जिलोमे फर्स्ट आबि गेल तऽ हेडमास्टर साहेब गदगद भऽ छातीसँ लगा लेलथिन–"हमर स्कूलक मान बढ़ौलैं तोँ । आरो आगू

बढ़ ! हमरालोकनिक माथ ऊँच रहत ।" हरदम शान्त आ कठोर सन लागऽवला हेडमास्टर साहेबक आकृति एकदम कोमल भऽ गेलनि आ आँखि सेहो गील । मुदा क्लास टीचर मिर्जा साहेब तऽ नीक जकाँ कानऽ लगलथिन–"मैं जानता था, तुम जरूर हमारा नाम रौशन करेगे बेटे ! हमारी दुआयें तुम्हारे साथ है, आगे की मंजिल भी आसान होगी ।"

मुदा मामीकेँ मनायब आसान नहि भेलैक । सुनितहि अन्न-पानि त्यागि देलथिन–"नहि, किन्नहुँ ने जाय देबैक गामसँ ।"

मुन्नर झा स्नेहसँ डँटलथिन–"एना क्यो बताहि जकाँ गप्प करय ? बाहर नहि जैत तऽ आगू पढ़त-लिखत कोना ? ...एनाहे सभ दिन गाममे अपना लग रखने रहबैक आ आगू लिखत-पढ़त नहि तऽ मैट्रिक धरि पढ़लक किएक ? गाममे रखबाक छल तऽ थम्हा दितियैक हमरे जकाँ नेन्नेमे भानसक कड़छु आ पैघ भेलापर महींसक पगहा ।

बात मीनाकेँ लगलैक । अही दिन लेल तऽ लड़ि-झगड़िकऽ प्रणवकेँ स्कूल पठबैत छलैक । ओकरे इच्छा छलैक जे प्रणव पढ़य-लिखय, बड़का लोक बनय । मुदा ताहि लेल एतेक दूर कलकत्ता ! नहि ! किन्नहु नहि !

कलकत्ताक बात तऽ प्रणवोक मनमे नहि अबितैक । मुदा पछिला साल कामेश्वर भाइ गाम आबि ओकरा एक टा बाट देखा देलथिन । मैट्रिक पास कऽ कामेश्वर भाइ कलकत्ते चल गेलाह आ बीस वर्षसँ ओतहि छथि । दिन-राति ट्यूशन । बड़ा-बजारमे एक टा कोठलीमे तीन गोटे संग बास आ खा-पी कऽ मासमे पाँच-सात सयक बचत । मुदा प्रणवकेँ कामेश्वर भाइ जकाँ बचत नहि करबाक छलैक, ओकरा तऽ आगू पढ़बाक छलैक । बचतैक तऽ सय-पचास गामो पठा देतैक मामा-मामीकेँ ।

सुनिएकऽ भड़कि गेलैक मीना–"नहि चाही तोहर सय-पचास । एतेक दिन नहि कमाकऽ देलैं तऽ गुजर भेल की नहि हमरालोकनिक ? ओहिना सोलह वर्षक भऽ गेलैं, आइ पढ़ि-लिखिकऽ बड़का-बड़का बात करऽ जोगर भेलैं । से सभ किछु नहि हेतौक...दरभंगेमे पढ़बैं...सभ दिन गामसँ जयबैं...

प्रणव मामीक मनौन करऽ लागल–"एतऽसँ सभ दिन कालेज गेलापर सभ दिन क्लास छूटत...पढ़ाइ-लिखाइक बदला सभ दिन खाली ट्रेनक सवारी हैत । आ डेरा लऽकऽ दरभंगामे रहब तऽ कमसँ कम सय सवा सय चाही रहबाक लेल । स्कालरशिपक टाकाक कोनो ठेकान नहि, जतबो भेटत, सेहो समयपर नहि ।

साल-छओ मासमे एक बेर । दरभंगामे ट्यूशनक कोनो तेहन सुविधा नहि छैक...जे छैको तकरा लेल पैरवी चाहिऐक । हमर पैरवी के करत ? कलकत्तामे...

मुदा मीना तैयो अड़लि रहलैक सात दिन धरि । प्रणवसँ बजबो नहि करैक । प्रणवो उदास रहय...दोसर कोनो बाट नहि सुझैत रहैक । मुदा एक दिन मामी अपनेसँ कहलकै–"एना सदिखन मुँह की बिधुओने रहैत छैं ? जयबाक सभ टा ब्योंत भऽ गेल छौ । किरायाक टाका, नाम लिखैबाक फीस आ एक मासक खर्च । ओतऽ जाइत देरी क्यो काज लेने बैसल तऽ नहि छौक ? ओ काज भेटबो करतौक तऽ मास पूरऽसँ पहिने के टाका देतौक ? कहिया जयबैं ? ठक्कू पण्डितजी परसुक्का दिन नीक कहैत छथुन...फेर एक बेर सौराठवला पण्डितजीसँ देखा ले, हुनकर ताकल दिन नीक होइत छनि । ठक्कू पण्डितक कोनो भरोस नहि ।"

प्रणव अवाक् मामीक मुँह देखैत रहि गेल । ई मुँह जेना कहिओ पुरान नहि होइत छलैक...सभ दिन नवे भेल जाइत छलैक । जहिना रूप छिड़िआइत छलैक चारू कात, तहिना स्नेह आ कर्मठता । छब्बीस वर्षक मामी आइयो ओहिना छलैक जेना दस वर्ष पूर्व एहि गाममे अयलापर छलैक । एहि दस वर्षक भीतर मुन्नर झा एकदम बुढ़ाँठ भऽ गेल छलाह । पैंतालिसमे वर्षमे साठि सन लगैत छलाह । केश लगभग सभ टा उज्जर, तमाकूक कृपासँ अगिला दूनू दाँत निपत्ता आ कारी देहक चिकनै एकदम रुक्ख आ असर्ध सन भऽ गेल छलनि । मुदा मामीकेँ तकर कोनो चिन्ता नहि । कखनो मुँह मलिन नहि होइत छलनि ।

मुदा मामीक चमकैत आकृति देखैत काल प्रणवक आकृति पहिने खुशीसँ चमकि फेर एकदम मिझा गेलैक । मामीक गरा एकदम सुन्न छलैक । जहियासँ प्रणव मामीकेँ देखलकै, गरामे एक टा मटरमाला सेहो झुलैत देखलकै । दू-एक बेर तऽ झिक्का-तीरीमे ओकरा तोड़िकऽ छिड़ियाइओ देने छलैक । मामा फेर गँथबा अनने छलथिन । मुदा से मटरमाला गरासँ निपत्ता छलैक ।

ओकरा ओना गरदनि दिस तकैत आ मुँह म्लान होइत देखि मामी बजलैक– "एना की तकैत छैं रे ? तोरे मायक तऽ छलौक...कोनो हमर बाप देने छलाह की तोहर मामा कीनि देने छलाह ? आ फेर आब एतेक टा बेटावाली बुढ़ियाकेँ ई गहना-गुड़िया कोनो नीक लगैत छल ? ओनाहो तऽ तोरे कनियाँ केँ दितिअनि एक दिन । कमाकऽ मुँहदेखाइ देबऽ ले' एकटा दोसर कीनि दिहें आब...।

प्रणव अंगनासँ पड़ा आयल । लगलैक जेना अंगनामे रहत तऽ कानऽ लागत । अपनो कानत आ मामियोकेँ कना देतनि संग-संग ।

मुदा गाममे जेना सभ क्यो ओकरा कनैबाक ओइ दिन नियार कयने छलैक। टोलेमे 'ओइ आंगन वाली नानी' देखितहिँ टोकलथिन– "आब अइ पाकल आमक कोन भरोस, नहि जानि कहिया तूबि जायत। फेर देखबो करबौ कि नहि...?"

अपन कोरामे खेला पोसने छलथिन नानी। बालविधवा नानी। देऔरक परिवारक संग रहली नानी सभ दिन। अप्पन क्यो नहि छलनि। नैहरमे हेबो करनि तऽ ककरो बूझल नहि छलैक। सभ दिन एहिना देखलकनि नानीकेँ लोक। देहपर एक टा कोरा धोती मात्र ! आर कोनो वस्त्र नहि। जाड़, गरमी, बारहो मास ! बारहो मास प्रातःस्नान, मुदा देहपर एक धोती छोड़ि आर कोनो वस्त्र नहि ! ओइ धोतीमे तीन–चारि चिप्पी ! माथमे कैंचीसँ काटल छोट–छोट केश। गोर दीप्त आकृति। कहियो कोनो उलहन–उपराग नहि— ने अप्पन कप्पारक, ने लोकक व्यवहारक ! अप्पन आंगनक भानस–भात, लोकक आंगनमे अवसरपर सभ टा काज, गीत–नाद, अरिपन–चुमाओनक इन्तजाम ! नानीक बिना ककरो काज नहि चलैत छलैक। आ सभक घर सभ टा काज करैत, सभ टा भार उठबैत नानी सदिखन हँसैत रहैत छलीह– कखनो कोनो निराशा नहि ! मुदा सैह नानी प्रणवकेँ कहलथिन–फेर देखबो करबौक कि नहि...।

आ तकर बाद चुन्नूक पुतऽहु। के छलैक चुन्नू आ कोना ओ ओकर पुतऽहु छलैक आ किएक लोक ओकरा चुन्नूक पुतऽहु कहैत छलैक– से प्रणवकेँ कहियो बूझल नहि भेलैक। चुन्नूक पुतऽहुक स्वामी छलैक रोगिआह–दिन राति पड़ल हकमैत रहैत छलैक। धीया–पूता छलैक पैंच–पैंच, मुदा से रहैत छलैक धारक ओइ पार, इस्लामपुर बजार लग। कहियो माय–बापकेँ देखऽ आयल होइ ओकर दुनू बेटा–से गाममे ककरो मोन नहि छलैक। मुदा चुन्नूक पुतऽहु अपन आ अपन रुग्ण स्वामीक खर्च अपने चला लैत छलि। बोलीमे मधु छलैक आ हाथमे गुण। जेहने नीक मुरही, तेहने स्वादिष्ट झिल्ली–कचरी। गामक चरबाहसभ हरदम भीड़ कयने रहैत छलैक आ धीया–पूता सभ दौड़ि–दौड़िकऽ आंगनसँ बेचा आनि वस्तु–जात लऽ जाइत छलैक।

मुदा चुन्नूक पुतऽहु प्रणव लेल कहिओ बेचाक हिसाब नहि कयलकै। देलकै तेयो ठीक, नहि देलकै तैयो ठीक। कलकत्ता जयबाक बातपर जेना एकदम कातर भऽ उठलैक–"बड़ दूर चल जाइछी बौआ, ई दुखनी बुढ़िया मोन रहत ?"

मोन कोना नहि रहतैक प्रणवकेँ ? बिसरबाक अर्थ हेतैक अइ गामकेँ बिसरब। अइ नग्रकेँ बिसरब। बिसरि जायब नदीक कछेर आ बागमतीक स्वच्छ

जलक धारकेँ। बिसरि जायब धारक बालुपर लेटायल नेनपन आ स्कूलक माटिपर बितल शैशवकेँ। बिसरि जायब नेनपन आ शैशवक कौतुकपूर्ण खेल आ ओइ खेलक संगीकेँ...।

खेलक संगी छलैक ओकर मुरली। जखन अपर प्राइमरीमे रहय तऽ दुनू खूब क्रिकेट खेलाय। मन्दिरक कातवला मैदानमे तीनटा सौंस ईंटा जोड़ि विकेट बनाओल जाइक आ टेनिसक गेंदसँ बौलिंग कयल जाइ। बौलिंगमे तेज रहैक कमलू। हाथ ऊपर उठा गेंद फेकऽवाला बौलिंग नहि। हाथकेँ नीचे राखि जोरसँ फेकल गेंद ! एकदम घास धऽ लैक ओ गेंद आ झट विकेट खसा दैक। मुदा प्रणव आ मुरलीक आगू ओकर बौलिंग फीका भऽ जाइक। कतबो घास धैने बौल अबैक, एकदम चौका मारि दैक ! गेंद मैदान–पारक बागमतीक पानिमे चल जाइक– बालुमे घुसिया जाइक। आ यदि कोनो बौल कने घास छोड़ि दैक तऽ एक्के बेर छक्का– एकदम पीपरक गाछक ओइ कात अकाशे दने...।

मुदा से छलैक अपर प्राइमरी स्कूलक गप्प, नेंगरा गुरुजीक स्कूलमे। हाइ स्कूल अबैत देरी दूनूक सौख बदलि गेलैक। दूनू फुटबौल खेलाय लागल। मुरली खेलाइ लेफ्ट आउटसँ। गेंद भेटैत देरी लुत्ती जकाँ पड़ाइ गोल दिस आ बीचमे सेन्टर फारवर्ड प्रणव। तेहन ने जगह लैक जे मुरलीक फेकल गेंद चाहे माथसँ हो, चाहे पयरसँ किक आ गोल। दूनू पयर एक्के रंग चलैक आ हवामे माछ जकाँ कूदि लपकिकऽ हेड कऽ दैक। सौंसे इलाकामे जोड़ी नामी भऽ गेलैक....कमतौल स्कूलकेँ हरौलक...महिसाजानकेँ हरौलक, दरभंगाक नामी स्कूलसभकेँ हरौलक।

मुदा मुरली छलैक पढ़ऽमे भुसकौल। कहुना घीचि–घाचि कऽ मैट्रिक धरि तऽ पहुँचलैक मुदा परीक्षामे फेल ! विवाह नवमे क्लासमे पढ़ैत छलैक तहिये भऽ गेल छलैक। बाप एक टा छोट–छीन दोकान खोलि देलकै इस्लामपुर बजारमे। ओही ठाम बैसऽ लागल मुरली। कलकत्ता जयबाक बातपर जेना ओहो बड़ भावुक भऽ उठलैक–"संग तऽ छुटबैक छल। तूँ पढ़ाकू आ हम भुसकौल। मुदा दरभंगे रहितैं तऽ होइत जे लगेमे छैं, हमहूँ संग छिऔक।"

बताह छलैक मुरली ! दूर भेलासँ कतहु संग छुटैक ? मोन लग रहबाक चाहिऐक–दूरी कोना व्यवधान बनतैक ? मुदा मुरली तऽ मुरली, सौंसे गाम जेना बताह भऽ गेल छलैक। जैह सुनलकै सैह उदास भऽ गेलैक। भरि गाम संगिये छलैक प्रणवक– अप्पन टोलक भोलू, दक्षिणवारि टोलक कालू, दक्षिणवारिये टोलक सुन्दर आ उतरवारि टोलक बिलट आ बिलास।

मुदा सभसँ आफत केलकै दुसधटोलीक मुनेसरा ! ओहो पढ़ैत छलै प्रणवक संग– मैट्रिकमे फेल भऽ गेलै । मुदा मैट्रिको फेल, आ साक्षर वैह टा छल अप्पन टोलमे । बाप छलैक चौकीदार । जिद ठानि देलकै– बेटाकेँ अबस्स पढ़ायब । मैट्रिक धरि पहुँचि गेलैक मुनेसरा । मुदा अंग्रेजीमे सभ दिन कमजोर छलैक, मैट्रिक पास नहि कऽ सकलैक । प्रवणक कलकत्ता जयबाक गप्पपर एकदम कानऽ लगलैक– "नहि जाय देबौक तोरा । फेल भऽ गेलहुँ तऽ संगी छूटि गेल । दरभंगेमे ट्यूशनक जोगार भऽ जयतौक ।"

मुदा सभसँ पहिने जिद ठानऽवाली आ रुसिकऽ मुँहाबज्जी बन्द करऽ वाली मामी सभसँ पहिने मानि गेलैक । किराया आ फीसक इन्तजाम कयलकै । एक टा नव पैजामा–कमीज बनबौलकै, संग ले' चूड़ा-आदिक व्यवस्था केलकै आ पण्डितजीसँ दिन तका जयबाक दिनो निश्चित कऽ देलकै । तेइस तारीख !

23 जून 1957 ।

प्रणवक डायरीमे ओ दिन लिखल छलैक– गाम छोड़बाक दिन । डायरी लिखबाक प्रणवकेँ कहियो अभ्यास नहि छलैक । मुदा जहिया गाम छोड़ि कलकत्ता आयल, एकटा डायरी कीनि अनलक आ सभसँ पहिल पेजपर जतऽसँ लिखब शुरू कयलक, लिखल छलैक–23 जून 1957 । छओ मास धरि लिखैत रहल । फेर डायरी भरि गेलैक आ डायरी लिखबो छुटि गेलैक !

23 जून 1957 ।

ओ दिने जेना बड़ उदास छलैक । भोरेसँ मामीक आँखि रहि-रहि झहरऽ लगैत छलैक । चीज-वस्तु सरिअबैत काल, मानस-भात करैत काल कखनो बरसि जाइत छलैक । सोलह-सतरह वर्षक प्रणव पाँच वर्षक नेना जकाँ मामीक कोरामे नुका हिचुकि–हिचुकिकऽ कानऽ चाहैत छल । मुदा नहि जानि किएक से नहि कऽ भेलैक ? आ जखन अँगनामे रहि मामीकेँ देखबाक साहस नहि भेलैक, तऽ अँगनासँ बाहर चल आयल ।

बाटपर नेंगरा गुरुजी भेटलथिन । कान्हपरक मैलका गमछाक छोरमे कने टा पोटरी लटकल छलनि । नाँगड़ पयरकेँ जबर्दस्ती घिसटैत आबि रहल छलाह । प्रणवकेँ देखि ठाढ़ भऽ गेलथिन–"आइये जाइ छैं ? जो...खूब तरक्की कर...।"

एतबा कहि गुरुजी जेना आगू बढ़ऽ चाहलनि । मुदा नहि जा भेलनि जेना ! ठाढ़े रहि गेलथिन । किछु काल चुप्प रहलाक बाद कहलथिन– अइ अभागल गुरुजीकेँ माफ कऽ दिहैं बौआ ! पेटक लेल...लोभक लेल...बड़ अन्याय कयने छौक तोरा संग ! गुरुजी माने की ? आठ टाका मास कमायवला जानवर । मुदा ओहो आठ टाका नीक छल बाउ ! स्वतंत्रता बादक चालीस टाका तऽ ओहूसँ बत्तर ! भरोस दरमाहाक नहि । ओहो चालीस टाका कहिया भेटत, कोनो भरोस नहि । भरोस शनीचरीक चाउरक, आना दू-आना कैंचाक । आ ओही लोभमे शिक्षा देबऽवाला गुरु, बापक दर्जा राखऽवाला गुरु, राक्षस बनि जाइत छल । ओकरा माफ कऽ दिअहिक बाउ...किछु मोन नहि रखिहैं । ओकरा सजाय भेटि गेलैक । शनीचरीक मोटगर मोटरीक लोभी राक्षसकेँ आब भिक्षो नहि भेटैत छैक ।" गुरुजी गमछामे बान्हल नन्हिकी पोटरी डोलाकऽ देखबऽ लगलथिन ।

गुरुजी रिटायर भऽ गेल छलथिन । दुनू बेटी सासुर बसैत छलनि आ एकमात्र बेटा पटनामे नौकरी करैत छलनि । अपन परिवारक संग रहैत छलनि । ओइ परिवारमे गुरुजीक लेल स्थान नहि छलनि । गुरुजी गामे-गाम माँगि-चाँगि गुजर करैत छलाह । गुरुजीक पैर छुबैत प्रणव कहलकनि–"आशीर्वाद दियऽ गुरुजी ! अहीँक आशीर्वादसँ मनुक्ख हैब । पहिला अक्षर सिखौने छी अहाँ ।"

कल्लू चौधरीक हवेली लग आबि ओकर पयर थकमका गेलै । बड़ इच्छा भेलैक शीलाकेँ देखबाक, ओकरासँ गप्प करबाक । मैट्रिकक परीक्षा देने छलैक आ पासो भऽ गेल छलैक शीला । मुदा लड़की सभक सेन्टर दोसर छलैक । जाहि दिन किताब लेबऽ जाऽकऽ कल्लू चौधरीसँ डँटायल छल प्रणव...तहियासँ कहिओ गप्प नहि भेलैक । टेस्ट परीक्षामे देखने छलैक प्रणव, मुदा लग जा गप्प करबाक साहस नहि भेलैक । शीला सेहो कहिओ चेष्टा नहि कयलकै । ....आँखि उठा देखबो नहि कयलकै कहिओ ।

मुदा गाम छोड़ि जाइत काल बड़ इच्छा भऽ रहल छलैक प्रणवक जे शीला बाहर अबैक आ ओकरा देखैक आ गप्प करैक । मुदा कल्लू चौधरीक हवेलीक ऊँच देबालक पाछाँ नहि जानि कतऽ निपत्ता छलैक शीला ! हवेलीक बड़का फाटक बन्न छलैक । ओहि बन्न फाटक लग अनेरो किछु काल ठाढ़ रहल ओ आ फेर आगू बढ़ि गेल ।

मुदा रूदल चौधरीक बेटा बंकू देखि लेलकै । आगू आबिकऽ बाट छेकि लेलकै । बंकू अपर प्राइमरीमे संगे पढ़ैत छलैक, मुदा अपरो पास नहि भऽ सकलैक । छोड़ि देलकै पढ़ाइ । जा धरि स्कूलमे रहलैक, प्रणवकेँ अनेरो मारि बैसैक ।

मालिकक बेटा, कल्लू चौधरीक दियादक बेटा-बंकू...। गाम भरि डेराइत छलैक । कने पैघ भेलैक तऽ आर उद्दण्ड भऽ गेलैक– रस्ता-पेड़ा बाड़ी-झाड़ी...घाट-खरिहान कतहु अवंच नहि रहलैक ओकर उत्पात सँ ! कोनो छौंड़ी एकसर कतहु अभरि गेलैक तऽ आफत ! बंकू बाज जकाँ दबोचि लैत छलैक । जे धनक लोभे चुप्प रहलैक से बड़ बढ़ियाँ, नहि तऽ आतंके । मजाल जे क्यो हल्ला करतैक ! पितिऔते बहिन तऽ छलैक माला, ओकरो छोड़लकै ? बेसी लोक आब कहैत छलैक जे बंकूये कतहु छोड़ि-बेचि आयल छलैक ओकरा ।

–"हबेली लग की हुलुक-बुलुक करै छैँ रे ?" बंकू बाट छेकैत कहलकै ।

"तोरा मतलब ?" प्रणवो कने रुच्छ स्वरमे कहलकै ।

"अबस्स मतलब अछि हमरा। हमर काकाक आँगनमे तोँ एना हुलुकी-बुलकी देबैं, आ हम देखिकऽ छोड़ि देबौ ! पहिने जेठकी बहिनकेँ भगौलही आ आब छोटकीपर आँखि गड़ल छौ ।"

प्रणवक इच्छा भेलैक जे तेहन चाट दैक मुँहपर जे सभ दिनक ओलि सधि जाइ, फेर दोबारा एना उटपटांग बजबाक अभ्यासे छुटि जाइ । मुदा गामसँ जयबाक दिनमे ओ कोनो अप्रिय घटना नहि करऽ चाहैत छल– सेहो कल्लू चौधरीक हवेलीक सामने । लोक दस तरहक अँटकर लगौतैक आ पचास तरहक खिस्सा पसारतैक । ओ आगू बढ़ि गेल ।

बंकू पाछाँसँ सुनाकऽ बजलैक "मैट्रिक पास कयलासँ कोनो ओहदा नहि बढ़ैत छैक । खवरदार जे एम्हर टपलैं तऽ टांग तोड़ि देबौक ।"

प्रणवक मोन तीत भऽ गेलैक ! गामसँ जाइत काल एहन अप्रिय घटनाक स्मृति संग लऽ जयबाक कोनो इच्छा नहि छलैक । मुदा जतेक ओइ बातकेँ अनठाकऽ, ओकरा बिसरिकऽ कोनो आर बात सोचबाक चेष्टा कयलक, ततबे बंकूक बात ओकरा पछुअबैत रहलैक आ ओ अकच्छ भऽ आंगन घुरि आयल । मुदा तैयो अपन अकारण अपमानक दंश ओकरा छटपटबैत रहलैक ।

ओही राति मामीकेँ कनैत छोड़ि ओ कलकत्ता बिदा भऽ गेल ।

मुदा मुन्नर झा तऽ जाइत काल कानहो नहि देलथिन मीनाकेँ ।

एकदम प्रसन्न मोने बहरायल छलाह घरसँ । प्रणवकेँ कलकत्ता गेना चारि बरख लगिचियलैक, कहियो कोनो छुट्टियोमे गाम नहि अयलैक । ओकरा टाकाक चिन्ता छलैक, अपन पढ़बाक संग गाममे बैसल मामा-मामीक चिन्ता छलैक– मासे-मास पचास टाका मनीआडरो करैत छलैक । मीना कतेको बेर लिखलकै मुदा प्रणव सभ बेर एक्के जबाब लिखलकै । आब तऽ पढ़ाइयो लगचिआयल छलैक... बी.ए.क परीक्षा दऽ गाम ओतैक अगिला मास । चिट्ठी आयल छलैक ।

मुन्नर झा गुमसुम रहऽवला लोक । चिट्ठी भेटलोपर किछु बाजल नहि छलाह । मुदा मोनक प्रसन्नता आकृतिपर पसरि गेल छलनि । मीना तऽ भरि राति खुशीसँ जगले रहि गेल छल, मुन्नरो झाकेँ सूतऽ नहि देलकनि ।

मुदा रतिजग्गाक बादो भोरे प्रसन्न छलाह मुन्नर झा आ प्रसन्न मोने बहरायल छलाह अन्हरोखे महीँस लऽ । भोरुकवामे एकसरि मीनाक आँखि लागि गेलैक । स्वामी चल गेल छलैक आ अन्हरोखे दोसरकेँ उठा तंग कयलापर गारि-सराप सुनऽ पड़ितैक । चुपचाप पड़ि रहल आ झट आँखि लागि गेलैक ।

आंगनमे गर्द सुनि आँखि खुजलैक । नीक जकाँ रौद पसरि गेल छलैक आ सौंसे आंगनमे सेहो लोक पसरि गेल छलैक । ककरो बीच आंगनमे सुतौने छलैक आ चारू कातसँ लोक ओतहि मुड़िआरी दऽ रहल छलैक । मीनो कोठलीसँ निकलि ओसारापर आयल, कने माथपर आँचर खिचलक । आंगनमे सभ तरहक लोक छलैक ।

ओकरा ओसारापर देखितहि ओइ आंगनवाली बाबी हाक्रोश करैत लग अयलथिन आ अपन बूढ़ हाथे ओकर दुनू हाथक चूड़ी फोड़ऽ लगलथिन । मीना अवाक् आ सन्न ! लाज-धाख छोड़िकऽ आंगन आयल । सभकेँ ठेलि देखलक– बीच आँगनमे स्वामी पड़ल छलैक; चित्त आ पपनी बन्न कयने । जेना राति भरिक जगरनाक कारणे अंगनामे सूति रहल होथि ! सिरमा आ पौथान दिस गामक दुनू प्रसिद्ध मती महगू चमार आ सटहा धानुक बैसल छलैक एकदम हताश आ थाकल । चाटी मारि-मारिकऽ पैर फुला देने छलैक दुनू मिलिकऽ आ हारिकऽ बैसि गेल छल । जहर सौंसे देह पसरि गेल छलैक आ निर्जीव देह आंगनमे पड़ल छलैक । मीनोक देह सुन्न भऽ ओही ठाम आंगनमे ओंघरा गेल छलैक ।

होश भेलैक तऽ किछु स्त्रिगण सभ घेरने छलैक— टोलक दू चारिटा स्त्रिगण ! मुन्नर झाकेँ लोक उठाकऽ लऽ गेल छलनि ! आंगनमे एक्कोटा पुरुष नहि छलैक । आंगन एकदम सुन्न छलैक आ रौद माथपर आबि गेल छलैक ।

मीनाक हाथ महँक बचलो-खुचल चूड़ी क्यो फोड़ि देने छलैक आ माथक केश छिड़िआयल छलैक ।

मीना उठिकऽ बैसि रहल । सुन्न आँखिये चारू दिस तकलक । ओकरा उठिकऽ बैसैत देखि टोल-पड़ोसक स्त्रिगण फेरसँ कानऽ लगलैक । मुदा मीनाक आँखिमे एक्को ठोप नोर नहि छलैक । एकदम सुखायल आँखि, आ पथरायल आकृति ! स्त्रिगण सभ अपन नोर निरर्थक जाइत देखि बेराबरी ससरि गेलैक । मीना ओहिना बैसलि रहल एकदम पाथरक आकृति सन !

लोक सभ श्मशानसँ घुरलैक । भातिजक गरामे उतरी छलैक । अपन भाइ तऽ छलनि नहि, पितिऔतक बेटा बीरन । लोक सभ दरबज्जापर पैर धोलकै, लोह छुलकै, की की सभ भेलैक, मीनाकेँ जेना कथुक सुधि नहि रहैक । ने आँखिमे नोर आ ने मुँहमे बकार ।

मुदा गामक लोकके़ँ सभ बातक चिन्ता रहैक । भातिजक गरामे उतरी छलैक, ओ कोना मुक्त हैत ? ओकरो घरक हालति तऽ तेहने छलैक, एगारहोटा खुआओत तकरो जुटान असंभव छलैक । आ जुटबो करतैक तऽ से किएक करत ? स्त्री जीवित छथिन, सभटा हुनके करऽ चाहियनि ? स्वामी नहि रहलथिन मुदा दस कट्ठा जमीन छलनि, तीन कट्ठाक बाड़ी-झाड़ी छलनि । कोनो तेहन बेजाय हालति तऽ नहि छलनि ! आ भागिन मासे-मास पचास टाका पठबैत छलनि, ताहू महक टाका हेतनि । फेर लिखथुन, काजसँ पूर्व टाका-पैसा लऽ पहुँचि जयतनि । मुदा पहिने बाजथु तऽ जे विचार की छनि ? भरि गाम वा पुरुखे दिस आ कि एगारहेटामे उतीर्ण भऽ जयतीह ! स्वामी तऽ हुनके छलथिन । सभटा सोचऽ तऽ हुनके पड़तनि ।

मुदा मीना किछु बाजय तखन ने ! ओ तऽ स्वामीक लाश आंगनमे देखि जे गुम्म भेल से गुम्मे छल । लोक सभमे फुसुर-फुसुर गप्प होमऽ लगलैक—केहन कठोर करेज छनि, स्वामी चल गेलथिन आ आँखिमे एक्को बुन्न नोर नहि । चूड़ी फूटि गेलनि, सींथ धोआ गेलनि— तैयो एक्को बुन्न नोर नहि ! धन्न कही एहन करेजकेँ !

मुदा मीना ककरा की कहितैक ? के छलैक गाममे जे सुनितैक ? प्रणवकेँ लिखितैक ? परीक्षा छलैक, छोड़ि-छाड़ि चल औतैक । साल बरबाद । नहि, ओ ओकरा किन्हु नहि लिखतैक । अपने कोनो जोगार करऽ पड़तैक ।

पहिल गप्प रूदल चौधरीक कनियाँसँ भेलैक । जिज्ञासामे आँगन आयल छलथिन । मीनाक दशा देखि दया आबि गेलनि । दसो कट्ठा जमीन भरना लेबऽ लेल तैयार भऽ गेलथिन— पचास रुपैए कट्ठा । 'कहुना काज निबहि जाउ, हम

की करब जमीन भरना लऽ कऽ, कोनो कमी अछि ? अहाँ लेल मना लेब हुनका, नहि तऽ ओ एहि भरना-तरनाक झंझटमे नहि पड़ैत छथि कहिओ ।'

आ सत्ते ओ अपना स्वामीकेँ मना लेलथिन । भरना मुदा रजिस्ट्री हैत । काज भरि तऽ मीना नहि जा सकतीह कमतौल रजिस्ट्री आफिस । मुदा द्वादशाहक प्रात सभटा लिखि देबऽ पड़तनि । काज लेल टाका ताबे दऽ देथिन ।

मुदा रूदल चौधरीक टाकासँ पहिने खेतमे कल्लू चौधरीक हरबाह पहुँचि गेलनि भोरे । कल्लू चौधरी दरबज्जेपरसँ गरजलाह-"हमर जमीन भरना लेताह रूदल, एहन मजाल ? मुन्नरक स्त्री के छथि जमीन भरना राखऽवाली ? गाम महराजी आ बाँट करय बक्खो ! जमीन हम्मर बाप मुन्नरक बापकेँ देने छलथिन— जा जिलाह भोग कयलनि । मुन्नरक दशा देखि हम बापक मुइलोपर पन्द्रहे कट्ठा लेलियनि, दस कट्ठा भोग करऽ देलियनि, कहुना गुजर करथु । मुदा आब हुनकर स्त्री हमर जमीन भरना रखतीह से हम कोना बर्दास्त करबनि ?"

सभटा खेत जोताकऽ तैयार करा लेलथिन कल्लू चौधरी आ भरि गाम चुप्प रहल । निसाफक बात छलैक, न्याय कल्लू चौधरीक पक्षमे छलनि । तीस बरख धरि हुनकर बापक भनसिया छलथिन मुन्नरक बाप, दस बरख हुनको अमलदारीमे रहलथिन । दरमाहा नहि छलनि एक्को पाइ । बुतात आ सवा बीघा जमीन । मुदा कोनो पकिया रजिस्ट्री तऽ नहि छलनि, ओहिना देने छलथिन । जा जीलाह सोलहो आना भोग कयलनि । बेटोकेँ दस कट्ठा छोड़ि देलथिन । दया-मायाबला छलाह । आब भरना कोना राखऽ देथिन ? निसाफक बात छलैक ।

मुदा मीना ककरासँ निसाफ माँगैत ? जाहि जमीनकेँ अपन बुझैत छल, जकरा दऽ स्वामियो नहि कहियो कहलथिन जे ककरो कृपापर भोग कऽ रहल छथि, सेहो अप्पन नहि रहलैक । यदि भीखे छलनि तऽ सेहो भीखदाता वापस लऽ लेलथिन । निसाफक बात छलैक । ओ ककरासँ मदति माँगैत ?

स्वामी हँसैत घरसँ गेलथिन आ घुरिकऽ नहि अयलथिन । अयलनि मुर्दा देह । प्रणवकेँ ओ बजबऽ नहि चाहैत छल आ गामक लोककेँ निसाफ पसिन्न छलैक-ओकर मदति किएक करितैक ? बेर पर सभ मदति कम्म नहि करैत छलैक । मुदा ई तऽ स्वामीक परलोकक प्रश्न छलैक । एगारहोटा ब्राह्मण नहि खयतैक से कोना हेतैक ?

आ मीनोक चिन्ता तऽ सैह छलैक । कोना उऋण हैत ? स्वामी नहि

रहलथिन मुदा गामक लोक आ रीति-रिवाज तऽ छलैक। दसो-बीस लोक मुँह नहि ऐंठौतनि आँगनमे, किछुओ दान-पुन्न नहि हेतनि से कोना हेतैक ? मुदा उपाय ? एकटा रास्ता छलैक सेहो कल्लू चौधरि बन्न कऽ देलथिन। एकटा बुढ़िया महीँस छलैक आ दू टा पड़रू, मुदा तकरा एखन के लेतैक ? लैयो लेतैक तऽ के उचित दाम देतैक ? आ फेर अपना लेल की हेतैक ? उठौनावला सभकेँ दूध जाइत रहतैक तऽ चारि पाइक आस रहतैक। कोनो दोसरे इन्तजाम करऽ पड़तैक।

आ ओही इन्तजामक चेष्टामे मीना ओइ राति घरसँ बहरायल। राति कोनो बेशी नहि भेल छलैक। मुदा साँझ बीति गेल छलैक आ अन्हरियामे डूबल गामक लेल राति भऽ गेल छलैक।

आ मीनाक डेग ओही अन्हारमे आगू बढ़ि रहल छलैक। नवम दिन छलैक। काल्हि नह-केश हेतैक। परसू हेतैक एकादशाह। कोनो इन्तजाम भेनाइ जरूरी छलैक। बीरनक बाप लोहछल छलैक। भैंसुरो-भावहुक ध्यान नहि रहैत छलैक। बेर-बेर अँगना आबि सुना जाइत छलैक– "हमर बीरन तऽ गरामे फाँसे लगा लेलक। ई तऽ खूब भेल ! परोपकार करू आ दण्ड भरू।"

कल्लू चौधरीक दलानमे एकदम अन्हार छलैक। आब क्यो नहि रहैत छलैक आँगनमे। मालाक तऽ पते नहि लगलैक, निपत्ता भेलैक से अलोपे भऽ गेलैक। दू वर्षसँ शीलो सासुरे छलैक। एकसर कल्लू चौधरी दलानमे पड़ल रहैत छलाह आ हवेलीक फाटकपर ताला लटकल रहैत छलैक। नौकर-चाकर सभकेँ छुट्टी भेटि गेल छलैक। दलानेमे एकटा छोट-छीन कोठली छलैक, ताहीमे भानस कऽ दैत छलथिन फूदन, भोर-साँझ।

मुदा तखन दलानमे एकदम अन्हार छलैक आ हवेलीक फाटक खूजल छलैक। अन्हारमे ठाढ़ छायापर दलानक कुकुर भुकलैक आ डेरायल मीना खूजल फाटकसँ हवेलीमे पैसि गेल।

सामनेक कोठलीसँ इजोत आबि रहल छलैक। मीना ओम्हरे लपकल। कोठलीमे पलंगपर पड़ल किछु पढ़ि रहल छलाह कल्लू चौधरी। मीना एकदम चौखटि लग जा ठाढ़ भऽ गेल।

कल्लू चौधरीकेँ जेना आहटि लगलनि। डेराकऽ चौंकलाह– के...के अछि ?

मीना आर आगू बढ़ि आयल। मुँहपर घोघ छलैक— हम छी... परसू श्राद्ध हमरे आँगनमे अछि।

कल्लू चौधरीक स्वर अपन स्वाभाविक हुंकारीक संग बहरयलनि–"ओ, मुन्नरक स्त्री थिकहुँ ! एना एतेक रातिमे एकसर ? ड्यौढ़ीमे पहिने तऽ नहि आयल छलहुँ कहिओ ?"

मीना बीचहिमे बाजलि–"आब आर कोनो उपाय नहि रहि गेल तेँ संकोच छोड़ि आबऽ पड़ल। परसूए श्राद्ध छैक, कोनो व्यवस्था नहि भेल अछि। अपनेसँ कोन लाज ? पितातुल्य छी। ससुरक जिनगी भरि परवरिश कयलियनि। हमरो सभपर एतेक दिन दया रखलहुँ। मुदा आइ हुनकर नहि रहलापर अइ अभागलि विधवापर अपने किएक एतेक कठोर भऽ गेलिऐक ? भरनादार टाका लऽ उपस्थित छल आ अपने खेत जोतबा लेलिऐक। यैह अवसर भेटल अपनेकेँ अधिकार जनैबाक ?"

कल्लू चौधरी बमकलाह–"अहाँ मदति मांगऽ आयल छी कि उलहन देबऽ ? आबहुँ चुप्प रहितहुँ तऽ दोसर कोन अवसर भेटैत अपन हक लेबाक ? भरनादार जमीन लऽ बैसि जाइत। छोड़ैत कहिओ आ सेहो रूदल ! चिन्है नहि छियनि हम ?"

–"तऽ अपनहि दया कयल जाओ। अपनेक जमीन अपने लग रहत, हमरा पाँच सय टाका दऽ देल जाओ।"

–"इहो बेस कहल। अपन जमीन अपने भरनापर लियऽ आ तकर पाँच सय टाको गनू। एहन बुधियारी तऽ क्यो ने सिखौने छल हमरा !"

–हम तऽ भीख माँगऽ आयल छी, अपनेकेँ हम की सिखायब ?

कल्लू चौधरी किछु क्षण चुप्प रहलाह, जेना सोचमे पड़ि गेल होथि ! फेर बजलाह–"टाका अहाँकेँ भेटि सकैत अछि। भरना हम राखि लेब, मुदा अपन जमीन नहि, अहाँक घर-घराड़ी। अहाँकेँ अइ संकटसँ बचेबाक हेतु हम ई निरर्थक जंजाल लऽ लेब। मंजूर अछि ?"

मीना किछु सोचमे पड़ल। 'स्वामी गेलाह, दस कट्ठाक आस छल, सेहो नहि रहल। आ आब घर-घराड़ी सेहो।' मुदा बेसी सोचबाक अवसर नहि छलैक। मूड़ी उठा कहलकनि–"मंजूर अछि, दियऽ टाका।"

कल्लू चौधरी एकटा सादा कागज आगू बढ़ा मोसि देखबैत कहलथिन–"पहिने औँठा-छाप दऽ दियऽ। काज पक्के रहय सैह नीक। भरना रजिस्ट्री भऽ जायत तऽ ई कागज घुरा देब।"

मीनाक मोनमे भेलैक जे कागज फेकि घुरि जाय । नहि हेतैक ब्राह्मण भोजन । कऽ दौक लोक अजाति । एहन समाजमे रहले पर की हेतैक ? मुदा मोन मारिकऽ मोसि औँठापर लगा कागजपर छाप दऽ देलकै ।

तखने लालटेन नहि जानि कोना जमीनपर खसि मिझा गेलैक । एकदम अन्हार-गुज्ज । मीना डरे थरथरा गेल । मुदा साहस करैत बाजल–"टाका दियऽ । गामेपर गनि लेब, नहि तऽ दियासलाइ दियऽ, लालटेन बारि दैत छी ।"

मुदा तखने एकटा मजबूत पंजा ओकर मुँह दबा देलकै । जोर लगा चिचिआय चाहलक मुदा शब्द नहि बहरयलैक । अन्हारमे जेना छिटकिल्ली लगैबाक ध्वनि भेलैक । मीना जोरसँ छुटबाक प्रयास कयलक, मुदा दोसर बलिष्ठ हाथ ओकरा समेटिकऽ बिछौनपर धऽ देलकै । बड़ी काल धरि ओकर मुँहसँ गों-गों शब्द बहराइत रहलैक आ ओ हाथ-पयर पटकैत रहल । फेर सौँसे शरीर क्लान्त आ सुन्न भऽ निश्चेष्ट भऽ गेलैक !

बाहर दलान लग कुकुर कानि रहल छलैक ।

प्रणव दौड़िकऽ अँगना पहुँचि मामीक पैर छूबऽ चाहैत छल । मामाक आशीर्वद लेबऽ चाहैत छल । गामक लोकक आशीर्वाद लेबऽ चाहैत छल ।

ट्रेनमे लोक कोच्चल छलैक । भरि राति एक्के टाँगपर ठाढ़ रहल । मुदा तैयो देह ने थाकल लगैत छलैक, ने अलसायल । ओ तऽ उल्लास आ उमंगमे दौड़ चाहैत छल ।

मुदा दौड़िकऽ आब जयबाक बयस नहि छलैक । गाम भरिक लोक अकचका कऽ देखतैक— एक्कैस वर्षक जवान नेना कोना दौड़ल जा रहल छलैक ! सभकेँ हेतैक जे कलकत्तामे रहिओकऽ रहि गेल प्रणब्बा भुच्चरक भुच्चरे ।

ओना ओ पूरा बाबू बनल छल । देहपर नीक पैण्ट-कमीज आ पयरमे कीमती मोजापर चमकैत जूता । हाथमे बैग । आगू-आगू सूटकेस आ बेड होल्डर लेने कुली । स्टेशनपर तऽ कतेको चिन्हारो लोक ओकरा देखिकऽ आगू बढ़ि गेलैक । चिन्हबे नहि कयलकै ।

मुदा ओ तऽ सभकेँ चीन्हि रहल छलैक । कुलीकेँ सोर पाड़लकै— रे मण्टू, सामान उठा ।"

मण्टू अकचकयलैक आ फेर चिन्हैत बजलै– "अहाँ छी बौआ ! हम तऽ चिन्हबे नहि कयली ।" नहि जानि किएक ओ गुम्म भऽ गेलैक आ गुम्मे ठाढ़ रहलैक ।

ओ फेर टोकलकै–"एना गुम्म किए भेलेँ ? उठा सामान आ चल आंगन । सभ ठीक छैक ने गाममे ?"

"सभ ठीके है बौआ, चलू ।"

मण्टू सामान उठा आगू बढ़लैक । ओ चाहैत छल जे कने संग चलैक आ ओ गप्प करैत रहय । मुदा ओ आगुए-आगुए चलि रहल छलैक, गुम्म-सुम्म, नहि जानि किएक ?

गुमतीपर बिहारी मण्डल चिन्हलकै–"बहुत दिनपर गाम मोन पड़ल बौआ !" नहि जानि किएक ओहो एतबे बाजि गुम्म आ उदास भऽ गेलैक । प्रणवकेँ मोन आशंकित होमऽ लगलैक । नहि जानि की बात छैक ?

धारमे हेलाव पानि छलैक, नाव नहि छलैक । मण्टू पार भऽ गेलैक आगू । ओकरा जूता-मोजा खोलिकऽ पार करऽमे समय लगलैक । मन्दिर लग पहुँचल तऽ मण्टू ओतहि ठाढ़ छलैक । प्रणव खौँझाइत कहलकै– "एना किएक ठाढ़ छैँ, अंगना नहि देखल छौक की ?"

मण्टू आगू गेलैक । ओ राधाकृष्ण मन्दिर आ शिव मंदिर दुनू ठाम गोड़ लागि आयल । सामने मखना धानुखक दलानमे चुन्नू-पुतऽहुक दोकान छलैक । मुदा बाँसक फट्टक लागल छलैक आ ओतऽ क्यो नहि छलैक । फेर कखनो– यैह सोचैत प्रणव आगू बढ़ल ।

गामक लोक सभ अभरऽ लगलैक– प्रणव सभकेँ गोड़ लगलकै । मुदा जेना सभक मोन उदास भऽ जाइत होइ ओकरा देखि । ककरो मुँहमे बकार नहि । प्रणव एकदम डेरायले जकाँ अपन घरक बाट धयलक ।

सामने मण्टू ठाढ़ छलैक । मुदा घर कहाँ छलैक ? ई तऽ जोतल खेत छलैक । ने आमक गाछ, ने अँगनाक टाट । कहाँ गेलैक सभटा ? प्रणवक कोँढ़ आशंकासँ धड़धड़ाय लगलैक ।

मण्टू बजलैक– "कहाँ चलू बौआ ? किनका हियाँ ठहरब ?"

किनका हियाँ ठहरब ? दोसरक ओहि ठाम किएक ठहरब हम ? हमरा

मामा-मामी छथि-अपन घर अछि। प्रणव मण्टूक हाथ पकड़ैत बाजल-"मामा कहाँ गेला मण्टू ? बाज नहि तऽ बेजाय बात भऽ जेतौक।"

"आब की बाजू बौआ हम ? मामाकेँ साँप कटलक आ काल भऽ गेल। आब तऽ महीनासे ऊपर हो गेल...।"

"आ मामी...?" प्रणव जोरसँ हाथ दबबैत पुछलकै। मुदा मण्टू चुप्पे रहलैक। प्रणव ओकरा जोरसँ झकझोरैत कहलकै-"बाज ने मण्टू, कहाँ गेल हमर मामी ?"

"आब से हम की जाने गेली बौआ ? नह-केश से एक दिन पहिले रातिमे निपत्ता हो गेलन। कल्लू बाबूकेँ हाथ घर-घराड़ी बेचि हजार रुपया लेलनि आ राते-रात निपत्ता हो गेलन। मुदा नीमन नै कयलनि बौआ ! श्राद्धो ने भेल रहै अहाँक मामाक...आ ओ...

"चुप्प !" प्रणव जोरसँ गरजल। "के बजैत अछि एना ? कने हमर सामने तऽ बाजौ। छाउर लगा जीह घीचि लेबैक।"

-"ककर-ककर जीह घिचबहिक प्रणव ?" बगलक आँगनसँ बीरन बहरेलैक। "हमरे गरामे तऽ उत्तरी छल। पित्तीक उतरी गरामे आ पितिआइन निपत्ता, की की ने कहलक लोक। ऊपरसँ दण्ड। एगारहटा लोककेँ खुऔलियैक हम आ घराड़ी दऽ गेल छलथिन कल्लू चौधरीकेँ। सभटा पहिनेसँ ठीक कयने छलीह ककरो सङ्ग।"

"चुप्प रह बीरन ! लाज नहि होइत छौक ? कहैत छहुन पितिआइन आ हुनका लेल एहन गप्प !"

"लाज तऽ होइत अछि बाउ ! मुदा सत्तकेँ के छिपा सकैत छैक ? आब तऽ सभ जानि गेल छैक।" ओइ आँगनवाली नानी बहरयलथिन। प्रणव पयर छूबैत कहलकनि-"अहूँ सैह कहैत छी नानी ! हमर मामी एहन कऽ सकैत छथि, अहाँ विश्वास करै छी ? सभ झूठ बाजि रहल अछि। अहीँ तऽ कहने रही जे तोहर मामी देवी छथुन-साक्षात् लक्ष्मी। तोहर मायो एहने छलथुन' आ आइ कहैत छी जे हमर सैह मामी स्वामीक मृत्युक नवमे दिन घर छोड़ि ककरो संग पड़ा गेलीह ! नै नानी, नै, एहन बात कमसँ कम अहाँ नहि कहियनु नानी !"

"कोना ने कहियनु बाउ ! यदि सभ टा झूठ छैक तऽ कतऽ अलोप भऽ गेलीह ? स्वामीक श्राद्धो भरि नहि रुकलीह ? रातुक अन्हारमे नहि जानि किम्हर मुँह कारी कयलनि। छिः छिः छिः ...!

प्रणव आगू किछु नहि बाजल। बजबा लेल किछु छलैको नहि। चारू कातसँ लोक जुटि गेल छलैक। मण्टू मोटरी जमीनपर राखि ठाढ़ छलैक। एक बेर सभकेँ देखि मण्टूकेँ कहलकै-"उठा मोटरी मण्टू ! चल फेर स्टेशने।"

ओइ आँगनवाली बाबीक झुकल डाँड़ जेना एक्के बेर सोझ भऽ गेलनि-"की बजले तोँ ? स्टेशन जयबेँ ? मामी नहि छौक, तेँ ? मुदा, तहिया छलौक मामी जहिया पाँचे दिनुका छोड़ि माय चल गेलौक ? के पोसने छलौक तहिया ? यैह बुढ़िया नानी ने ! गरीब छौक, मुदा तेँ की तोरा लेल दू मुट्ठी अन्न नहि जुटा सकैत छौक ? अपन घर नहि छैक ओकरा, मुदा ओकरा कोरामे जगह छैक तोरा लेल।"

प्रणव दौड़िकऽ हुनका भरि पाँज पकड़ि कानऽ लागल, फेरसँ पाँच दिनुका नेना बनि गेल। एतेक कालसँ रुकल नोरक धार बहि गेलैक। टूगर छल, माय-बाप नहि छलैक, मामा-मामी पोसलकै, आइ ओहो नहि रहलैक। दुनियामे एकदम एकसर भऽ गेल।

नहि जानि मुरलीकेँ कोना खबरि लागि गेल छलैक ? बिगड़ले अयलैक-"खूब दोस्त बहरयलेँ तोहूँ ? बाबी नहि रोकितथुन, तऽ हमरालोकनि देखबो नहि करितियौक तोरा। बाबी, आइ हमरे ओहि ठाम रहऽ दियौक एकरा, चारि वर्ष पर आयल अछि, आइ हमरो दोकान बन्न। दुनू दोस्त खूब घूमब, गप्प-सप्प करब, लऽ जइयौक बाबी ?"

बाबी हँसिकऽ मूड़ी डोला देलथिन आ मुरली मण्टूकेँ धयलक "उठा, जल्दी चल हमरा ओइठाम।"

मुरलीयोक बाप मारि गेल छलैक, अपने मालिक छल आब। अपन बाहरवला कोठलीमे ओकर रहबाक इन्तजाम कऽ आँगन गेल। लगले चाह, फेर जलखइ, फेर भोजन। मुरली एकदम मोस्तैद छलैक सभ तरहेँ। प्रणवकेँ लगलैक जेना अखनो क्यो छलैक गाममे— ओकर नानी छैक, मुरली छैक आ मुनेसरा।

मुनेसराक ध्यान अबिते टोकलकै मुरलीकेँ— "मुनेसराकेँ खबरि नहि देलहिक मुरली ?"

-"ओ कहाँ छौक गाममे ? रेलबेमे नौकरी करैत छौक" मुरली जवाब तऽ देलकै मुदा प्रणवकेँ लगलैक जेना ओकर प्रश्न मुरलीकेँ नीक नहि लगलैक।

अपने बजलैक मुरली-"तोहीँ दोस्त बनौने रहैत छलहिक ओकरा। छोटका लोककेँ एतेक चढ़ायब नीक नहि होइत छैक। चारि पाइ कमाइत अछि तऽ

नेता बनि गेल अछि– दुसधटोलीक लोक सभकेँ भड़कबैत रहैत छैक, जन-मजदूर भेटब लोककेँ मस्किल भऽ गेल छैक । शहरक रेट चाहिऐक, बेगार नहि करत, रेटसँ मजदूरी दियऽ ।

प्रणव अनठा देलकै, जवाब नहि देलकै । लगलैक जेना एहिमे मुरलीक कोनो दोष नहि छलैक । शिक्षाक अभावक दोष छलैक । पढ़ि-लिखि नहि सकलैक मुरली । बनियागिरी सीखि गेल छलैक । नफा-नोकसान खूब बुझैत छलैक । मजदूरक उचित मजदूरीसँ ओकरा कोनो सरोकार नहि छलैक । ओकरा तऽ चारि कैंचा बचयबासँ मतलब छलैक, से चाहे कनमा-आध कनमा कम जोखिकऽ होइ, तेलमे फेंट-फाँट कऽकऽ होइ वा ककरो मजदूरी काटिकऽ होइ । दुनियाँमे सभ सुखी-सम्पन्न लोक एहिना सोचैत अछि । अलाय-बलाय सोचबा लेल तऽ बहुत रास लोक छैक ? ओकरा कलकत्ताक अपन मोहल्ला आ ओइ मोहल्लाक मजदूर आ बेकार नौजवान सभ मोन पड़लैक, ओकर सभक गप्प मोन पड़लैक । मुदा ओ चुप्पे रहल ।

ओकरा चुप्प देखि मुरली बजलैक "मुनेसराक निन्दा तोरा अधलाह लगलौक ? खास दोस्त छौक तोहर । मुदा तोँ गाममे नहि रहैत छेँ, गामक समस्या नहि जानल छौक तोरा । पुछही सभसँ, केहन उत्पात कयने अछि मुनेसरा !"

"मुनेसरा की की उत्पात करैत छौ, से तऽ हम सत्ते नहि जनैत छियौ, मुदा गाममे आरो लोक सभ छौक जे नित्य उत्पात करैत छौक, तकरापर क्रोध नहि होइत छौ ?" प्रणव मुरलीकेँ कनेक उकसौलकै ।

मुदा मुरलीपर कोनो असरि नहि भेलैक । ओ आक्रामक फुटबौल खिलाड़ी, आब बुझनुक दुनियादार लोक भऽ गेल छलैक । क्रोध आ प्रतिक्रिया नफा-नोकसानक हिसाबसँ व्यक्त करऽ लागल छलैक । गाममे दस बीघा खेती छलैक, दोकान छलैक । खेतीमे बेगार चाहिऐक, सस्त मजदूर चाहिऐक, मुनेसरा सभकेँ भड़कौतैक तऽ की हाल हेतैक ? क्रोध वाजिब छलैक । मुदा कल्लू चौधरी कोनो मोसम्मातक घराड़ी जोति लेलथिन ताहिमे ओ किएक बाजत ? चाहे ओ मोसम्मात नेनपनक दोस्त प्रणवक मामियेक किएक ने होथुन ? आ फेर कोनो जबर्दस्ती दखल तऽ छलैक नहि । सादा कागजपर औंठा-छाप । हजार टाका लऽ नहि जानि किम्हर निपत्ता भऽ गेलीह ?

मुदा प्रणव आर उकसौलकै–"हम कल्लू चौधरीक गप्प करैत छियौक । घराड़ी जोतिकऽ राहड़ि उपजा लेलनि आ तोँ सभ चुप्प रहलैँ ! ओ सादा कागजक निशानक कोन भरोस ? नहि जानि ककर छैक ?"

मुदा मुरली ओहिना तटस्थ रहलैक–"सैह तऽ हमहूँ कहैत छियौक जे

निशान ककर छैक से के कहतैक ? कहाँ छथुन तोहर मामी ? के फैसला करतैक ? जे कहथिन जे हमर निशान नहि अछि, पहिने हुनके ताकि ला ने !" प्रणव चुप्प भऽ गेल । मुरलियो कने सकपका गेल । भरिसक बेशी अधलाह बात बजा गेलैक । चारि वर्षसँ ऊपरपर बालसंगी गाम आयल छलैक, एहन अप्रिय बात ओकरा नहि कहबाक चाही । बात टारबाक लेल कहलकै–"आब छोड़ ओ गप्प । एहि गाममे बसबेँ तऽ हम तोरा घराड़ीक जमीन देबौक । तोँ गुणी छेँ, एहन-एहन कतेक घराड़ी कमाकऽ खरीद लेबेँ । छोड़ ओकर गप्प, किछु काल आराम कर । हमहूँ आँगनसँ भेने अबैत छी ।"

मुरली आँगन चल गेलैक । मुदा प्रणव ओहिना बैसल रहल । पड़बाक वा आराम करबाक कनियो इच्छा नहि भेलैक । मोन उद्विग्न छलैक, भीतर किछु कछमछा रहल छलैक । ओ कोठलीक दरबज्जा भिड़कबैत बाहर बाटपर चल आयल । दुपहरिया बीति गेल छलैक । मुदा रौदमे तैयो धाही छलैक । प्रणवक मोनक धाही सभसँ जोरगर छलैक । ओ बिना कोनो बातपर ध्यान देने आगू बढ़ल गेल । डेग अनायासे कल्लू चौधरीक दलान दिस बढ़ि गेलैक ।

विशाल हवेली किछु आर पुरान आ बदरंग भऽ गेल छलैक । दूरसँ दुमहलाक सभ टा कोठलीक बन्द दरबज्जा-खिड़की देखि लगैत छलैक जेना ऊपर क्यो नहि रहैत होइ । हवेलीक अहाताक छहरदेबाली ततेक ऊँच छलैक जे आँगन आ दुमहलाक हिस्सा देखब मस्किल छलैक । हवेलीक फाटकपर ताला लटकल छलैक ।

मुदा छहरदेवालीक बाहर दलानमे चौकीपर एक टा बड़का मसलंगक संग ओंगठल बैसल छलाह कल्लू चौधरी । प्रणव धड़धड़ायल दलानपर चढ़ि गेल आ चौकी लग पहुँचि गेल ।

ओकर मुँह देखिते जेना डेरा गेलाह कल्लू चौधरी । मुदा अपन घबराहटिकेँ नुकबैत कनेक रुच्छ स्वरमे बजलाह–"तोँ फेर किएक अयलैँ एतऽ ? तोरा एक दिन मना कयने छलियौक । अइ दलानपर चढ़बाक साहस कोना भेलौक ?"

प्रणव आरो लग अबैत बाजल–"अहाँकेँ एक टा विधवाक घराड़ी जोति लेबाक साहस भेल, अहाँकेँ एक टा नकली औंठाछाप देखा गाम भरिकेँ ठकबाक साहस भेल, तऽ हमरा सुपत बात लेल अहाँक दलान वा कोनो ठाम जयबाक साहस किएक नहि हैत ? तेँ अहाँकेँ कहि दैत छी जे ओ घराड़ी छोड़ि दियऽ ने तऽ हम किछुओ उठा नहि राखब, सत्त-झुठ के देखार कऽ छोड़ब ।"

प्रणवक रंग-ढंग देखि जेना सकपका गेलाह कल्लू चौधरी । मुदा ऊपरसँ

ओहिना कड़कैत बजलाह–"बेश, तऽ कऽ लिहैं सत्त-झूठक फैसला जेना करबाक होउ । मुदा एखन निकल एहि दरबज्जासँ आ फेर दोबारा पयर नै दिहैं एतऽ ।"

प्रणवकेँ नहि जानि किएक माला मोन पड़लैक । कहने छलैक-'विचित्र सम्बन्ध छौक तोरा अइ हवेलीसँ । एक दिन कने हाथ छूलैं हमर तऽ चाट मारि देलियौ । आइ किताब मँगलहिक शीलासँ, दरबज्जेसँ खेहारि देल गेलैँ ।" आइ ओ रहितैक तऽ फेर खिलखिलाकऽ हँसितैक-"फेर निकालल गेलैं । आइ मामा-मामीक घराड़ी माँगऽ आयल छलैं । बिसरि गेलौ जे एहन-एहन कतेक घराड़ी जोतिकऽ ई बड़का हवेली आ जमींदारी ठाढ़ भेल छलैक ? जमींदारी चल गेलैक तेँ कि दलानपर चढ़िकऽ क्यो हक मँगतैक ?" मुदा तखन खिलखिलाकऽ हँसऽवाली माला वा गम्भीर गुमसुम शीला क्यो नहि छलैक ।

ओकरा गुमसुम देखि कल्लू चौधरीक जोश बढ़लनि–"हद निर्लज्ज छैँ तोहूँ ! एतेक कहलोपर दरबज्जेपर ठाढ़ छैँ । बजाउ लोकसभकेँ की जयबैँ अपने !"

प्रणवक ध्यान टुटलैक । ई की सोचऽ लागल ओ ? ओ तऽ अपन जोतल घराड़ी आ निपत्ता मामीक खोज लेबऽ आयल छल । ई माला-शीला कहाँसँ आबि गेलैक बीचमे ? ओ दलानसँ नीचाँ उतरैत कठोर स्वरमे बाजल–"एकर परिणाम ठीक नहि हैत । अइ घराड़ीकेँ ओना नहि छोड़ब हम, से कहि दैत छी । आइ जाइत छी हम, मुदा एक दिन अधिकारपूर्वक ई घराड़ी अहाँसँ लेब आ संगहि लेब ओइ सभ अपमानक बदला जकर हिसाब हमरा लग अछि । दिन गनैत रहू ।"

प्रणव गामक पश्चिम दिस बढ़ल । ओकर डेग तेज भऽ गेलैक । ओ झगड़ा करबाक नेयारसँ हवेली दिस नहि गेल छल । मुदा कल्लू चौधरीकेँ देखि आ हुनकर बात सुनि क्रोध आबि गेलैक । ओकर दुनू गोटेक गप्प सुनि अगल-बगलसँ लोक जमा भऽ गेल छलैक, मुदा प्रणव बिनु ककरो देखने आगू बढ़ि गेल ।

धनुकटोली आ दुसधटोलीक धीया-पुता आ स्त्रिगण सभ ओकरा चिन्हबाक चेष्टा करैत निहारऽ लगलैक । पुरुषसभ चीन्हिकऽ हाथ जोड़लकै आ प्रत्युत्तर दैत आगू बढ़ैत गेल प्रणव । मुनेसराक घर लग आबि सोर पाड़लकै । कोनो उत्तर नहि भेटलैक । ओकर स्वर सुनि अगल-बगलसँ बदरा, हजरा आ सिबुआ बाहर आबि गेलैक । बदरा कहलकै–"मुनेसरा तऽ खाली रविएकऽ गाम अबै है ! ओकरा रेलबइ के नौकरी हइ । अहाँ की करै छियै बौआ ?"

"पढ़ै छी, कलकत्तामे" प्रणवक उत्तरपर तीनूकेँ बड़ आश्चर्य भेलैक

"अभीले पढ़िते छियै बौआ ? अहाँक संगी मुनेसरा त चारि सालसँ कमाइ है...खूब पाइ होइ छै...।

"आ तोहर सभक की हाल छौ ?"

"हमरा सभकेँ की हाल रहत बौआ ? जेहिनती रहली, ओहिनती छी । दुनिया बदलि गेलै, मुदा हमरा सभकेँ कुच्छो ने बदलल । अढ़ाइ सेर मड़ुआ काल्हियो बोनि मिलै छल, आइयो मिलै है । धान नहि, गहूम नहि– खाली मड़ुआ, खेसारी आ अल्हुआ । गरीबकेँ तऽ इहे जान है बौआ, एकरे आस । हप्तामे तीन दिन ओहीनती बुलाहट हवेली सभसँ, कने बाड़ी कमा दे, कने हाट जो । ने बोनि ने बुतात । तीन दिन-चारि दिन काज कयली घूम-फिरिकेँ, ताहू लेल नाराज मालिक । सभ दिन बेगारी करू तऽ खाउ की ? आ बोलू तऽ खाल खिचा जायत । हे देखि लू बेंतक निशान, काल्हिये रूदल बाबू बेकसूर छड़पिटा देलनि ।

सिबुआ एतेक काल चुप्प छल । बाजल-"देहक मारि, भूखक मारि तऽ सहिते छी बौआ ! ऊपरसे इज्जतिपर हमला । हमरा आरके बहु-बेटीकेँ इज्जति नहि है–जखन मोन भेल घोंकि देलौं । काल्हिये साँझमे हमर बहिन इमिरतीकेँ बंकू बाबू छूरा देखा देलन गाछी लग । भगमान रच्छा कयलकै, स्कूलिया छौँड़ासभ ओही बाटे जाइत रहलै । भागि गेला । मुदा कहिया धरि बौआ हम सब एहिना सहबै ? रमेसरा ठीक कहै है, हमरा आर जानवर छी, हमरासभकेँ एहिना जोतल जैत, पीटल जैत । हमरा सभक बहु-बेटीकेँ गाछी-बिरछीमे पटकल जैत ।"

मुरलियो यैह कहने छलैक । मुनेसरा लोक सभकेँ किछु कहैत छैक । सिबुओ कहैत छैक– "मुनेसरा ठीके कहने छल ।" मुनेसरा बुझनुक भऽ गेल अछि– गामक दस लोक ओकर चर्चा करैत छैक । ओकरासँ भेँट करबाक बड़ मोन भऽ रहल छलैक प्रणवकेँ । मुदा तकर कोनो उपाय नहि छलैक ।

प्रणव एक बेर फेर दुसधटोली दिस तकलक । टोलक नक्शामे कोनो परिवर्तन नहि भेल छलैक । करीब पचासेक घर, छोट-छोट सटल-सटल । मस्किलसँ तीन हाथ ऊँच । घरक टाटक फाँकसँ सभ-किछु झलकैत । एकाध टा घर माटिसँ लेबल । बाकी नांगट टाट आ उजड़ल सन चारपर लत्तीसभ । दरबज्जा सभपर कतहु-कतहु गाय-महीँस ।

कारी-कारी धीया-पुता दसो-बारह बरखक छौंड़ासभ नांगट बाटपर ओंघराइत । मुनेसराक घर सभसँ फराक आ चिक्कन लागि रहल छलैक । फूसेक, मुदा दू टा

पैघ-पैघ घर । बाहरक ओसारा चाकर आ नीपल । आगूमे गाय-महीँस दुनू । बाड़ी दिस केरा आ लतामक गाछ । टोलक पहिल मैट्रिक फेल नौकरिहाराक घर । रेलवेक सरकारी नौकरी ।

प्रणव स्कूल दिस बढ़ि गेल । हेडमास्टर साहेबक पैर छुलकनि तऽ गद्गद् भऽ गेलथिन । मिर्जा साहब तऽ दौड़िकऽ छातीसँ लगा लेलथिन । बाँकिओ मास्टर सभ आबि गेलथिन । छुट्टी भऽ गेल छलैक ।

—"और क्या सब हो रहा है बेटे, कुछ हमें भी सुनाओ ।"

प्रणव सभ टा कहलकनि । आइ.ए. मे नीक फर्स्ट डिवीजन आबि गेल छलैक । अंग्रेजीमे आनर्स रखने छल । परीक्षा नीक भेल छलैक । फर्स्ट क्लास भेटबाक चाहिऐक । एम.ए. करत, प्रतियोगितामे बैसत ।

हेडमास्टर आ मिर्जा साहेब एक संग कहलथिन— "तोँ अबस्स कम्पीट करबेँ । हमरा विश्वास अछि । तोहर सन विद्यार्थी ने पहिने छल ने तोहर बाद आयल ।" प्रणव बड़ी काल धरि स्कूलेमे रहि गेल ।

साँझ भऽ गेल छलैक । झलफल अन्हार । इजोरिया तावत नहि छिटकल छलैक । स्कूलसँ घुरैत काल फेर ओकर मोन अशान्त आ उद्विग्न भऽ गेलैक— मामा नहि रहलाह, मामी नहि जानि कतऽ छथि ? घराड़ी कल्लू चौधरी जोति लेलनि । आब अइ गाम आ अइ गामक लोकसँ सभ टा सम्बन्ध छूटि जायत । भरिसक ई अन्तिम यात्रा थिक अइ गामक ।

तखने चुन्नूक पुतऽहु मोन पड़लैक । भोरमे अबैत काल ओकर दोकान खाली देखने छलैक । मुरलीक घरसँ अबितो काल ओकर दोकान खाली देखने छलैक । मुरलीसँ पुछबो बिसरि गेलैक—एक बेर भेँट करबाक चाही । देखी चिन्हैत अछि कि नहि ?

मुदा ओइ घरक फट्टक ओहिना बन्न छलैक । ने कोनो चिरागबत्ती, ने कोनो उचाबच्च । एकदम शान्त छलैक घर, जेना क्यो नहि होइ । भीतर अँगना दिससँ किछु इजोत आ स्वर आबि रहल छलैक । मुदा ककरा पुछितैक ? क्यो नहि अभरि रहल छलैक ।

ओ आगू बढ़िकऽ शिव-मन्दिरक प्रांगणमे आयल । अन्हारमे किछुओ नहि सुझैत छलैक । सामने राधा-कृष्णक मन्दिरक भनसाघरमे इजोत छलैक । बाँकी सभ अन्हार । धारक कछेर, मन्दिरक प्रांगण— सभ अन्हारमे डूबल । प्रणव घुरऽ लागल ।

तखने लगलैक जेना शिवमन्दिरक चबूतरापर क्यो होइ, कोनो वस्तु हिललैक । प्रणव कनेक लग अबैत पुछलकै—"के अछि ?"

बड़ी काल धरि कोनो उत्तर नहि भेटलैक । प्रणव फेर टोकलकै । अइ बेर थरथरायल स्वर अयलैक—"हमरा नहि चीन्है छी ?" आर के रहत एतऽ अन्हारमे ?

ई तऽ चीन्हल स्वर छलैक— चुन्नूक पुतऽहु ! एतऽ अन्हारमे की कऽ रहल छलैक एकसरि ? प्रणव एकदम लग जा बैसि गेलैक—"हमरा नहि चिन्हलैँ ? हम छी प्रणव ।"

चुन्नूक पुतऽहु कसिकऽ पकड़ि लेलकै ओकर देह—"सेहे तऽ कहली जे ई के आबि गेल नव अइ गाममे जे हमरा टोकि रहल है । कहिआ अयलहुँ बौआ ? अहाँकेँ तऽ भगमान सर्वनाश कऽ देलनि । की करबै ? ओहे फेर सभ ठीक कऽ देता । मुदा गामवलाकेँ बातपर नै जैब, अहाँक मामी देवी छली । ओ मरि जयती मुदा कहीँ ऐन्ने-ओन्ने नहि जयती ।"

प्रणवकेँ नीक लगलैक । चुन्नुक पुतऽहु मामीकेँ चिन्हैत छलैक । गाममे खाली वैह टा चिन्हैत छलैक । ओ धाही जे भोरसँ ओकर मोनकेँ धधकौने छलैक, शान्त भऽ गेलैक । गाममे क्यो छलैक जे ओकर मोनक बात बुझैत छलैक, ओकर मामीकेँ चिन्हैत छलैक ।

प्रणव बड़ी राति धरि ओही ठाम चुन्नूक पुतऽहुक सङ्ग शिव-मंदिरक चबूतरापर बैसल रहि गेल । बुढ़बा मरि गेलै, रोगियो छलैक तऽ पुरुष छलैक । आसरा छलैक । एकसर छोड़ि गेलैक । बापक क्रियाकर्ममे बेटा सभ अयलैक मुदा माय तऽ बोझ छलैक, ओकरा क्यो नहि लऽ गेलैक । चून्नूक पुतऽहु ओतहि रहि गेल । मुदा आब ओकर मुरही आ झिल्ली-कचरी लोककेँ स्वादिष्ट नहि लगैत छलैक । गाममे नव-नव दोकान खुजि गेल छलैक— चाह बिस्कुट भेटैत छलैक, प्लेटमे कचरी आ मसाला मिलाकऽ मुरही भेटैत छलैक । चुन्नूक पुतऽहु माँगि-चाँगिकऽ गुजर करैत छल । भिखमंगनीकेँ के घर दितैक ? मन्दिरक ओसारापर पड़ल रहैत छल । आब तऽ गाममे भीखो नहि भेटैत छलैक, गामे-गाम बौआइत छल, थाकल-ठेहिआयल साँझ कऽ मन्दिरक ओसारापर पड़ि रहैत छल । एक दिन भोला बाबा शरण देथिन, तकरे आस छलैक ।

प्रणव सुनिते रहि गेल । मामी नहि रहलैक । मामीकेँ चिन्हऽवाली चुन्नूक पुतऽहु सेहो नहि रहतैक बेसी दिन । एक दिन अही चबूतरापर शान्त पड़ि रहतैक ।

गामवला सभ ओहि पार बेटासभकेँ खबरि करतैक । भरिसक कोनो बेटा आगि दऽ दैक, भरिसक गामक लोकसभ मिलि धारमे बहा दैक । के देखतैक ?

प्रणवकेँ लगलैक जेना चारि वर्ष पहिने गाम छोड़बाक ओकर निश्चये अइ सभक जड़िमे छलैक । ने ओ गाम छोड़ैत, ने ई सभ होइतैक । ओ गाममे रहैत, मामीक रक्षा करैत...चुन्नूक पुतऽहुकेँ देखितैक । आब ओ की करत पढ़ि-लिखिकऽ ? ककरा लेल पढ़त, ककरा देतैक कमाकऽ ?

चुन्नूक पुतऽहु बड़ी राति धरि ओकरा बुझबैत रहलैक । ओकर संग कनैत रहलैक । नहि जानि कतेक राति बितलैक । सौंसे गाम निसबद्ध भऽ गेल छलैक । चुन्नूक पुतऽहुक बूढ़ देह चबूतरापर पसरि गेलैक, आँखि लागि गेलैक । प्रणव उठल । पाकिटमे किछु टाका छलैक, मामीकेँ दितैक । मामी नहि छलैक, आब ककरा देतैक ? ओ सभ टा टाका चुन्नूक पुतऽहुक खूँटमे बान्हि देलकै ।

इजोरिया उगि गेल छलैक । ओ गाम दिस नहि गेल । फेर धारक कातेकात बान्हपर दने पश्चिम दिस बढ़ल । घाटपर मलाह नावमे सूतल नहि छलैक । खाली नाव बान्हल छलैक । घाटपरक ठुट्ठ पीपरक डारिपात इजोरियामे एक टा विचित्र आकृति बना रहल छलैक, जेना गाछपर एकटा विशाल आकृति ठाढ़ होइ ! रामबाबू-गाछीक भीतर इजोरियोमे अन्हार छलैक– तेहन झमटगर गाछी छलनि । लग दने जाइत काल लोककेँ डर होइत छलैक, जेना क्यो गाछीक अन्हारसँ बहरा नरेटी दबा देतैक ! सामने ओइ पार बँसबिट्टी छलैक । हवामे बाँस हिलैत छलैक आ बँसबिट्टीसँ किछु आवाज होइत छलैक आ देह सिहरि जाइत छलैक । चारूकात पसरल इजोरियामे एकटा भयावहता छैक । श्मशानक गाछक पातसभ हवामे सिहकैत छलैक आ रोइयाँ भुलकैत छलैक । एही ठाम मामाक सारा हेतनि । प्रणव चिन्हबाक चेष्टा कयलक । मुदा चारू कात सारासभ छलैक– नव-पुरान । चिन्हब कठिन भऽ गेलैक । ओही ठाम श्मशान लग बान्हपर बैसि गेल ओ ।

किम्हरोसँ हवामे कोनो ध्वनि भेलैक आ सभटा रोइयाँ ठाढ़ भऽ गेल छलैक । यत्र-तत्र हड्डी आ मुण्डसभ पड़ल छलैक । ओकरा घूरन मिसरक बात मोन पड़लैक । अही श्मशानक गाछपर भूत-प्रेत आ अही जमीनपर डाइन-जोगिन नँगटे नचैत छलैक । कहाँ गेलैक ओसभ ? यदि ओ सभ एकाएक सामने आबि जाइ ? सोचिए कऽ देह सर्द होबऽ लगलैक । उठबाक चेष्टा कयलक, मुदा लगलैक जेना मुण्ड सभ हिलऽ लागल होइ ! ओ जोरसँ चिचिआय लागल, मुदा कण्ठसँ बकार नहि फुटलैक ।

तखने एकटा उज्जर नूआ पहिरने मौगी धारक घाट लग नहि जानि कहाँसँ आबि गेलैक ? अबस्से पंजा उनटल हेतैक, ककरो घेरिकऽ चून-तमाकू मंगतैक । मुदा ओ तऽ नाव लऽ ओहि पार विदा भऽ गेलैक । ओइ पार पहुँचैत देरी नाव लग भुक्क दऽ इजोत उगलैक आ फेर मिझा गेलैक । फेर भुक्क दऽ उगलैक, फेर मिझा गेलैक । फेर उगलैक आ फेर सभ मिझा गेलैक । ओ उज्जर साड़ियो निपत्ता भऽ गेलैक । राकस आ डाइन !

प्रणवक सर्द हेमाल देहमे ठाढ़ हेबाक ताकति सेहो नहि छलैक । लागि रहल छलैक जेना क्यो बेर-बेर सोर पाड़ि रहल होइ ! अबस्से कोनो भूत हेतैक । ओकरा घुरियोकऽ देखबाक साहस नहि भऽ रहल छलैक ।

ओ स्वर समीप आबि गेलैक । लालटेन लेने मुरली आ ओकर हरबाह मंगना छलैक । ओकरा श्मशानमे बैसल देखि मुरली आतंकित भऽ गेलैक– "की भेलौ रे ? एना एतऽ किएक बैसल छेँ ? हम तऽ सौंसे गाम ताकिकऽ हारि गेलियौक । एम्हर कोना अयलैँ ?"

प्रणवक बकार फुटलैक "नहि जानि किएक अयलहुँ, आबिकऽ बैसियो रहलहुँ । फेर उठले नहि गेल । बैसिले रहि गेलहुँ ।"

मुरली पुछलकै– "किछु देखलहिक ?" प्रणव सभ टा कहलकै । इहो कहलकै जे कोना घाटपर एकटा नूआवाली आ फेर एक टा भुकभुक करैत इजोत अयलैक । कोना दुनू निपत्ता भऽ गेलैक ।"

मुरली जोरसँ हँसलैक–"तखन तऽ तोँ सत्ते राकस आ डाइन देखलेँ । ओ डइनियाँ छलौ–मधु । नहि चिन्हलहिक ? भोला झाक बेटी माधुरी, आ राकस छलौ मिसर । ओइ पारक पलटू मिसर । राति भरि दुनू एहिना बुलैत अछि धारक कातमे । चल-चल, भरि घर अन्देसामे पड़ल अछि ।"

ओइ राति प्रणवक आँखि एक्को मिनटक लेल बन्न नहि भेलैक । भरि राति जगले रहि गेल । दू बजे रातिमे तऽ श्मशानेसँ घुरल छल । मुरली पकड़ि अनने छलैक । खयबाक कनियो इच्छा नहि छलैक मुदा ओ नहि मानलकै ।

आ फेर घर भरि सूति रहलैक । मुदा प्रणव जागल रहल । मोन भऽ रहल

छलैक जे भरि गाम फेर बौआय, के जानय यैह अन्तिम होइ ! आब के रहि गेल छैक गाममे, ओ तऽ भोरे घुरि गेल रहैत । मुरली नहि मानलकै ।

मुदा मिसर आ मधुक जे खिस्सा श्मशानसँ घुरैत काल मुरली कहलकै सेहो मानि लेबाक ओकरा इच्छा नहि भऽ रहल छलैक । यद्यपि अइमे ओकर इच्छा-अनिच्छाक प्रश्न नहि छलैक । सत्य छलैक, मुरली जनैत छलैक, गामक सभ लोक जनैत छलैक ।

आ, प्रणव की नहि जनैत छलैक ? चारिये वर्ष तऽ गाम छोड़ना भेल छलैक आ मधुक खिस्सा तऽ बड़ पुरान छलैक । बारहमेमे विवाह भेलैक आ पन्द्रहममे माय बनि गेल । प्रणवसँ पाँच वर्ष पैघ छलैक मधु । जहिया प्रणवकेँ होश भेलैक, मधुक कोरामे एकटा बेटी छलैक । मुदा मधुक देह ओहिना कुमारि लगैत छलैक आ आकृति छलैक एकदम गोर-दकदक आ सुन्नर । जे देखैक, देखिते रहि जाइ ।

मुदा प्रणव ओकर वरकेँ देखिते रहि गेलैक । गाममे रहैत छलैक-घरजमैया जकाँ । बड़ धनिक नहि छलथिन मधुक बाप, मुदा गरीबो नहि छलथिन । दस बीघा धनहर जमीन छलनि, आ छलनि एकटा सोन सन बेटी मधु । मुदा जमाय लऽ अनलाह एकदम असर्ध । बयसमे मधुसँ बीस बरख जेठ, रंग कारी, आकृति बेढंग । प्रणव मालाक वरकेँ देखि जतेक नहि चौँकल छल, ओइसँ पहिने मधुक वर देखि दुःख भेल छलैक । माला सुन्नरि छल, मुदा मधु तऽ छल एकदम अद्वितीय । जेहने रङ्ग, तेहने देह, तेहने गढ़नि ।

लोक सभ नहि जानि की सभ कहैत छलैक ? दस वर्षक छल प्रणव तऽ गामक एकटा भौजी मामीकेँ कहैत रहथिन जे मधु वर लग नहि जाइत छलैक । चतुर्थियो राति नहि गेलैक । जे सभ घर देबऽ गेलैक, सभकेँ दाँते काटि लेलकै । वर हाथ पकड़ि भीतर घिचलकै तऽ ओकर धोती फाड़ि देलकै । धकेलि कऽ भागि गेलैक । मुदा आब सन्तान होनिहारी छलैक ओकरा ।

नहि जानि की भेलैक जे सन्तान हेबाक बात सुनि जे ओकर वर निपत्ता भेलैक, से निपत्ते रहलैक । पहिल बेटी भेलैक । दू बरखक बाद बेटा भेलैक आ तकर तीन बरखक बाद बेटी । वरक कोनो पता नहि छलैक ।

मुदा गामवलाकेँ सभ पता छलैक । पहिलक बाप छलैक रतन । कल्लूए चौधरीक भातिज । जमींदारक बेटा । भाग भोला झाक, नतिनी भेलनि । जमाय निपत्ता छलथिन, तैयो लोक किछु नहि कहलकनि ।

दोसर छलनि नाती, दुइये वर्षक बाद आ जमाय अढ़ाइ वर्षसँ निपत्ता छलथिन । पता ओहू बेर लोककेँ छलैक । बसन्त बेशीकाल ओम्हर जाइत छल, राति-बिराति एकसरुआ छल, ने जोरू ने जाता । गाममे कने-मने कलमल भेलैक मुदा फेर शान्त । एना तऽ होइते रहैत छैक । गर्द भेलासँ आर बदनामी, चुप्पे नीक ।

मुदा तेसर बेर हँगामा भऽ गेलैक । पाँच बरखक बाद दोसर बेटी भेल छलैक आ वर साढ़े पाँच बर्षसँ निपत्ता छलथिन । पता अहू बेर लोककेँ छलैक, मुदा बजरंगी बिआहल छल । तीनटा धीयापुता छलैक । कनियाँ गर्द मचा देलकै आ भोला झाक आंगन पैसि तीन पुश्तक उद्धार कऽ देलकनि ।

मधुओ किछु उठा नहि रखलकनि । ककरोसँ दबऽवाली नहि छल । मुदा भोला झा चुप्प भेलाह से चुप्पे रहलाह । जेना बकझर लागि गेलनि । दोसरे मास ओहिना गुमसुम विदा भऽ गेलाह– दरबज्जापर भोरमे ठण्डा देह पड़ल छलनि ।

मुदा मधु लहकैत चल गेल । संख्या बढ़ैत गेलैक लोक सभक । प्रणवकेँ आश्चर्य होइ मधुकेँ देखि । बीस बरखक वयसमे तीन सन्तानक माय बनि गेल छलैक, पाँच बरख जेठ छलैक ओकरासँ । मुदा लगैक जेना पन्द्रह वर्षक छौंड़ी होइ, ओकरोसँ छोट । एकदम सुकुमारि आ अक्षत ।

मुदा डर तऽ ओकरो होमऽ लागल छलैक । गाममे तीनिए टा मौगीसँ डर होइत छलैक ओकरा । एकटा माला जे विवाहक बाद तेहन घातक भऽ गेल छलैक जे जहाँ भेटैत छलैक बाज जकाँ झपटैत छलैक । दोसर मधु जे ओकरा सहटिकऽ जाइत देखि बाट छेकि लैत छलैक-"हमरासँ डर होइ छौ, खा जेबौ ?" प्रणव निरीह जकाँ हँसैत छल आ मधु बाट छोड़ि दैत छलैक । तेसर चुमकी । स्कूल जाइत काल धनुकटोली लग सभ दिन बाट घेरि लैक-"अहाँ नहि बजबै छी कहियो ! लाज होइ-ए ?"

–"लाज किएक हैत गे तोरासँ ? मुदा कथी ले' बजैबो तोरा ? कोन काज अछि हमरा ?" प्रणव खिसियाकऽ कहैत छलैक ।

चुमकी खूब हँसैत छलैक आ कहैत छलैक–"अहाँ तऽ तेना काज पुछै छी जे हमरे लाज होइ-ए । काज तऽ सभकेँ एक्के रहैत छै, अहाँकेँ नहि अछि ?"

प्रणव बुझलक । तामस भेलैक आ डाँटिकऽ कहलकै–"लाज नहि होइ छौ ? जे बजबै छौ, सभ लग चल जाइ छैँ । तोरासँ नीक तऽ कुकुरो-बिलाड़ि अछि ।" चुमकी एकदम गम्भीर भऽ गेलैक–"ठीक कहलौँ अहाँ । हम तऽ

पिलिओसँ गेल गुजरल छी– सभ लग अपने मोने पसरि रहै छी । मुदा नहि पसरब तऽ की हैत ? उठाकऽ लऽ जैत, घिसियाक लऽ जैत । ई गाम मालिक–मोख्तारक छैक, रैयतकेँ के पुछतैक ? चाहे मोनसँ जाइ, चाहे जबर्दस्ती, फर्क की छैक ?"

प्रणवकेँ चुप्प आ अवाक् देखि चुमकी हँसऽ लगलैक–"मुदा अहाँ जबर्दस्तियो उठाकऽ लऽ जायब तऽ हम किछु नहि बाजब, सप्पत खाइ छी ।"

तहियासँ प्रणवकेँ आरो डर होबऽ लगलैक ओकरासँ ।

प्रणवक जिनगीमे तहिया दुइये तरहक स्त्री छलैक । मामी, ओइ आंगनवाली नानी, चुन्नूक पुतऽहु । कारी खोरनाठ वयसाहु मामक स्त्री मामी, बालविधवा ओइ आंगनवाली नानी, रोगिआह स्वामीक लेल दिनराति व्यस्त चुन्नूक पुतऽहु । एहि तरहक स्त्री सभ प्रणवकेँ स्नेह करैत छलैक । प्रणवकेँ हिनका सभसँ डर नहि होइत छलैक । हिनका सभक कोरामे ओ अपनाकेँ सुरक्षित अनुभव करैत छल । दोसर तरहक स्त्री छलैक माला, मधु आ चुमकी । इहो सभ प्रणवकेँ मानैत छलैक, मुदा प्रणवकेँ एकरा सभसँ डर होइत छलैक । हरदम पड़ायले रहैत छल एकरा सभसँ । आ एकटा छैक शीला । नेनपनमे ओकरोसँ डर होइत छलैक । मुदा समयक संग ओ बदलैत गेलैक । ओ प्रणवक लेल मामी, ओइ आंगनवाली नानी आ चुन्नूक पुतऽहुवला श्रेणीमे चल अयलैक । ओकरासँ ओकर डर खतम भऽ गेलैक । मुदा ओ प्रणवकेँ मानैत छलैक की नहि, से ओ नहि बूझि सकल । आब बुझियो नहि सकत । फेर कहियो भेंटो नहि हेतैक भरिसक ।

मुदा जे-किछु मुरलीसँ बूझि सकल प्रणव, ताहिसँ ग्लानिसँ भरि गेल । मधुसँ घृणा नहि भेल छलैक कहियो । डर होइत छलैक । गाम छोड़बासँ पूर्व ई बुझबा जोगर तऽ भैये गेल छलै प्रणवकेँ जे मधुक सन्तानक पिता के छलैक । मुदा तैयो नहि जानि किएक ओकर मोन ओकरासँ घृणा नहि कयने छलैक । मुदा आइ घृणा भऽ रहल छलैक । दस-बारह वर्षक बेटी छलैक, विवाह जोगरि छलैक । सात-आठ बरखक बेटा आ पाँच वर्षक छोट बेटी छलैक आंगनमे । सभकेँ छोड़ि धारक कातमे अनगौंआक संग राति-बिराति बौआइत छल मधु । आ मिसरक हाल देखू । बेटाक विआह भेलैक, पुतऽहु बसैत छलैक । ओना देहसँ कठमस्त छल पलटू मिसर । देहमे एक्कोटा रोइयाँ नहि, एकदम चिक्कन रंग, पिण्डश्यामो नहि, कारिये सन ! माथपरक केश उड़ल आ कप्पारपर बड़का त्रिपुण्ड । किछु दिन पहिने धरि मोटका धोती ठेहुन धरि आ जोलहा कपड़ाक जेबीवाला गंजी देहपर रहैत छलैक । पयर खाली मुदा गप्प तैयो पैघ-पैघ करैत छल मिसर । फेर नहि जानि कतऽसँ रुपैया

हाथ लगलैक ! गामक कोनो मौगीक कोशलिया परि लगलैक कि कतौ खसल-पड़ल पूजी भेटि गेलैक, पलटू मिसर पलटू सेठ बनि गेल । बड़का दोकान खोलि लेलक आ गाम भरिक लोकक उधार-खाता खुजि गेलैक ओइ दोकानमे, जाहिमे प्रत्येक मास प्रत्येक पन्नापर सूदि जोड़ा जाइत छलैक । बड़का-बड़का लोकक बैसारी होबऽ लगलैक दोकानमे ।

आ ताहीमे एकटा बैसारी मधुक भेलैक । उधार-खाता खुजलैक तऽ खुजले रहि गेलैक । खाता नमरैत गेलैक आ दोकानमे मधुक बैसारो नमरैत गेलैक— दुपहरिया-राति-विराति कखनो । आ मिसरक दुनिया बदलि गेलैक । ठेहुन तक ऊँच धोती नमरिकऽ माटिपर ओँघराय लगलैक । जोलहा जेबीवला गंजीक बदला मलमलक कुर्ता, कुर्तामे सोनाक बटन । हाथमे छड़ी, पैरमे चमकैत चप्पल आ हाथमे दामी घड़ी । चानन-ठोप कनेक बेसी ध्यानसँ कयल । चेहरो जेना पालिस कयल- एकदम चमकैत !

मुदा जवान बेटा सभ हल्ला मचा देलकै । एकटा मौगीक राति-बिराति दोकानपर बैसनाइ, ओ सभ नहि सहलकै । मायकेँ कहलक । माय आँगनमे अट्ठाबज्जर खसा देलकै, मिसरकेँ आँगन पयर देनाइ मस्किल भेलनि तऽ मधुयेक आँगनमे डेरा जमा देलनि । गामक लोक मधुकेँ छोड़ि देने छलैक, मुदा एकटा अनगौआँक एना खुल्लम-खुल्ला घरमे रहब लोककेँ अखरऽ लगलैक । टोलक लोक बजलैक आ फेर सौँसे गाम बाजऽ लगलैक । मिसरकेँ रंगढंग नीक नहि बुझयलनि । आब बितली रातिमे धारक कात एकटा टार्च भुक्क दऽ बरैत छलैक आ एकटा मौगी नाव लऽ ओइ पार चल जाइत छलैक ।

प्रणवकेँ मोन भेलैक जे भेंट कऽ मधुसँ कहैक–"जिनगी भरि एहिना रहबैँ ? आबो तऽ थम्ह ।"

मुदा ओकर रोकलासँ मधु रुकतैक ? ओ तऽ सभटा बान्ह पहिने तोड़ि चुकल छलैक । जेना माला तोड़ि चुकल छलैक । नहि जानि कोन हालमे हेतैक माला ? नहि जानि किएक बेर-बेर दुनू बहिन मोन पड़ि रहल छलैक ओइदिन ।

आ फेर मोन पड़लैक मामी । ओ तऽ सभ दिन मर्यादामे रहलैक, कहिओ कोनो बान्ह नहि तोड़लकै । मोनक कोनो बात कहिओ बाहर नहि आबऽ देलकै । ओकरा तऽ चिन्हैत छलैक प्रणव । चुन्नूक पुतऽहु चिन्हैत छलैक ओकरा । ओइ आंगनबाली बाबी चिन्हैत छलथिन ओकरा । कहैत छलथिन– अनमन तोरे माय सन छौक ।

प्रणव तऽ नहि देखने छलैक मायकेँ, नहि जनैत छल बापकेँ। ओकर तऽ सभ किछु मामे-मामी छलथिन। मामा गेलथिन, भगवानक यैह फैसला छलनि। मुदा मामी कतऽ चल गेलथिन, कहाँ छलथिन मामी ?

नीक जकाँ भोर भऽ गेल छलैक। प्रणवक दुनू पलक टांगल छलैक। देबालक ओइ कात मुरली अपन स्त्रीकेँ उठा रहल छलैक "उठू, कने चाह बना दियौ प्रणव ले', ओकरा भोरका आदति हेतैक।"

स्त्री-स्वर एकदम खौंझायल आ निन्नसँ भरिआयल छलैक-"आर कै दिन रहता अहाँक ई दोस्त ? रातिकेँ श्मशानसँ ताकि भोजन करैबनि दू बजे आ भोरे पाँच बजे चाह आ दिनमे दोकान बन्न कऽ अहाँ एहन दास बनल रहबनि तऽ भरिसक महीनोमे नहि जयताह। आइ जाउ दोकानपर अहाँ, बहुत भेल दोस्ती।"

सड़कपर जाइत बसक आवाज क्षणे-क्षण कोठलीमे अबैत छलैक। कहियो कहियो बीच-बीचमे बड़का धमाका सेहो भऽ जाइत छलैक। कोनो बेकार नौजवान अपन कारीगरीक जाँच करैत छल, देबालपर फोड़िकऽ छोट-छीन बमकेँ टेस्ट करैत छल। कनेक काल हंगामा होइत छलैक, फेर सभ अपन-अपन काजमे लागि जाइत छल, जेना किछु भेले नहि होइ ! मोड़ परक चाहक केबिनमे जुटान रहैत छलैक। दस पैसाक चाह आ सेहो उधार। बेशी शिक्षित बेकार। पैघ-पैघ गप्प, क्रान्ति आ सृजनक गप्प। पुलक नेता छल अइ गिरोहक- प्रणवकेँ बुझल छलैक। अइ मोहल्लामे कतऽ की होइत छलैक, सभ खबरि रहैत छलैक प्रणवकेँ।

मुदा आइ ई कोठली छुटि जयतैक- सामान सरियबैत प्रणव सोचि रहल छल।

अही कोठलीमे प्रणव छौ सालसँ अधिक बितौने छल। मजदूर सभक बस्तीक बीच एकटा कनेटा कोठली— पाँच हाथ लम्बा, चारि हाथ चौड़ा। ऊपरसँ खपरैल आ बिजलीक लाइन देल। डेढ़ हाथ चौड़ा ओसारा जाहिपर दूटा सँ अधिक कुर्सी नहि राखल जा सकैत छलैक। बीचमे पार्टीशन— ओइ कात एतेबेटा एकटा कोठली आ ओसारा जाहिमे एकटा बंगाली परिवार रहैत छलैक, पाँच गोटेक- माय बाप आ दूटा जवान बेटी आ एकटा जवान बेटा।

आ पार्टीशनक इम्हर, प्रणवे दिस कनेकटा आँगन छलैक, आ आँगनमे

देबाल लागल एकटा कल जाहिसँ सटल एकटा सीमेन्टक हौज सन बनाओल छलैक— नहाय-सुनाय लेल पानि अही हौजमे जमा करऽ पड़ैत छलैक। ओहूसँ बेसी दिक्कति होइत छलैक-पीबऽवला पानि लेल। कलमे दू तरहक पानि अबैत छलैक-मीठ पानि, भोर छौसँ आठ धरि, आ दुपहरिया तीनसँ पाँच धरि। तहिना भोर दू घंटा खारा पानि आ साँझ दू घण्टा खारा पानि। मुदा दू घण्टा कहबाक लेल। पानिमे कनियो धार नहि- टिप-टिप, बुंदे-बुंदे पानि। बगलक चटर्जी महाशयक बेटी-बहु सभ पाइप लगा पानि जमा करैत छलैक। पीबा लेल एक सुराही पानि तँ भोरे लऽ लैत छल प्रणव। मुदा जहिआ कहिओ छुट्टीक दिन डेरामे रहि जाइत छल, पानिक लेल अँगनामे मचल महाभारत देखबा जोगर होइत छलैक। अगल-बगलमे ओहनो टिपटिपाइत कल नहि छलैक। पानि लेल पाँच-सात घरक बाल्टी एतहि लगैत छलैक। जहिया कहियो चटर्जी महाशयक स्त्री-बेटीसँ ककरो खटपट भेलैक की काण्ड शुरू भऽ जाइत छलैक। आ प्रणव मध्यस्थतासँ पड़ायल फिरैत छल, विशेषकऽ बगलबाली झरना आ अंजलिसँ ! दुनू कालेजिया छौंड़ी छलैक, प्रणवक समवयस्क। चटर्जी महाशयक बड़की बेटी मणिका सेहो बतारिये जकाँ छलैक, छोटकी स्कूलमे पढ़ैत छलैक। जहिआ बिगड़िकऽ पानिपर रोक लगबैक मणिका, पहिने खूब चिल्ला-चिल्ली होइ आ अन्तमे झरना आ अंजलि प्रणवकेँ पकड़ैक-"आपना के न्याय करते हवे प्रणव दा। जल केनो नीते देबे ना ? आमरा की मानुष नेइ ?"

प्रणव की जबाब दितैक ? चुप्पे रहैत छल। ओकरा मोन पड़ैत छलैक ओ दिन जहिआ ओकरा ई डेरा भेटल छलैक- कामेश्वर भाइ दौड़-धूप कऽ ठीक कऽ देने छलथिन। चारू कात बंगाली परिवारक बीचमे एकसर प्रणव, परिवार-विहीन। ओकरा लोक बड़ विचित्र दृष्टियेँ देखैक जेना मनुक्ख नहि होअय। महीनो धरि ककरोसँ गप्प नहि भेलैक, चुपचाप कोठली बन्न करय आ बाहर चलि जाय, आ फेर घुरिकऽ रातिमे आबय आ पड़ि रहय। कैक बेर डेरा बदलि लेबाक इच्छा होइ। मुदा अट्ठारह रुपैयामे आर कतऽ एकटा कोठली भेटितैक, तेँ चुप्प रहि जाय।

चुप्प तऽ आरो कतेक बात लेल रहि गेल। आंगनक ओइ कात छोट-छीन घर छलैक— भनसाघर ! दू टा चुल्हि छलैक-दुनू किरायेदारक लेल। प्रणवसँ पहिने जे रहैत छल ओहो खेनाइ बनबैत छल आ एकटा चूल्हिपर चटर्जी महाशयक भानस होइत छलनि। मुदा प्रणवक अबितहि दुनू चूल्हि दफानि लेलथिन चटर्जी महाशय। प्रणव पहिने विचारने छल जे कमसँ कम एक साँझ खेनाइ अपने पका

लेत— मुदा सेहो विचार छोड़ऽ पड़लैक । एकटा स्टोव राखि लेलक कोठलियेमे आ भोर-साँझ चाह बना लिअय ।

मुदा सभ सँ असुविधा होइ पाखानाक लेल । पाखाना बाहर छलैक— दू टा आ परिवार दस । स्त्रिगण-पुरुष सभक लेल वैह दू टा पाखाना । भोरेसँ लाइन लागि जाइ । कतबो भोर चेष्टा करय प्रणव, लाइन लागिये जाइक आ शुरू-शुरूमे मोन बड़ खौंझा जाइक ।

मुदा आस्ते-आस्ते सभ बातक अभ्यास भऽ गेलैक, पाखाना लेल लाइनक-भोरे-भोर पानि लेल आँगनमे चिल्ला-चिल्लीक आ बगलक कोठलीमे हरदम होइत पति-पत्नीक कलहक । चटर्जी महाशय बंगाल पौटरीजमे टाइम आफिसमे छलाह । डेढ़ सय टाका भेटैत छलनि । पाँच गोटेक परिवार । हरदम तंगी । जेठकी मणिका तऽ हाइ स्कूलो पास नहि कऽ सकलनि । छोटकी शिप्रा स्कूले जाइत छलैक मुदा देखलासँ बेश पैघ लगैत छलैक । बेटा पुलक एकदम बेकार भऽ गेलनि । पढ़नाइ-लिखनाइ नहि भऽ सकलैक । नहि जानि कोन संगति मे छल— राति-राति भरि लापता रहैत छलनि, पैघ दाढ़ी आ लाल-लाल आँखि, जेना हरदम नशामे रहय । प्रणवक बतारिये जकाँ छलैक पुलक, शिप्रा किछु छोट छलैक आ मणिका पुलकसँ एक वर्ष पैघ । मुदा से सभ प्रणव बहुत बादमे बुझलैकै ।

सभसँ पहिने बुझलकै ओहि राति । वर्षा भऽ रहल छलैक । बेश अधिक राति भऽ गेल छलैक । क्यो दरबज्जा पिटलकै । खोलिकऽ देखलक— मणिका ठाढ़ छलैक, भीजिकऽ बोदरि भेल । बेधड़क भीतर आबि बजलैक—"आमी एइ खाने सोबो । बाहर बृष्टि पोड़छे ।"

प्रणव सकपका गेल । ई कोना सुततैक ओकरा कोठलीमे ? मुदा मणिका ओकरा किछु सोचबाक मौका नहि देलकै । ओकर एकटा धोती खुटरी परसँ उतारि भीजल साड़ी बदलि लेलकै आ अपन चपता नीचाँ बिछा लेलकै । ओही चपतापर सभ दिन बाहर डेढ़ हाथ चौड़ा बरण्डापर सुतैत छलैक ओ अपन कोठलीक सामने आ प्रणवक कोठलीक सामने पुलक ।

दरबज्जा खूजल रहलासँ कोठलियोमे पानि आबि रहल छलैक । मणिका दरबज्जा बन्न कऽ देलकै आ अपन चपतापर पड़ि रहलैक—"आपनियो सुइयेपडुन । बृष्टि थामबे ना ।"

प्रणव तैयो सकपकायल ठाढ़े रहल । ओकरा ओना ठाढ़ देखि मणिका बजलैक—"आपनी किच्छु चिन्ता कोरबेन ना । पुलक घुरबे ना । माँ-बाबा जाने ।"

प्रणव आर डेरा गेल । ओकर माय-बाप कोना बुझलकै, दरबज्जा तऽ बन्न छलैक । आ मणिका की किछुओ नहि बुझैत छलैक ? जवान छलैक मणिका आ सुन्नरो । ठेहुन धरि छिड़िआयल पैघ-पैघ केश छलैक, मोलायम आ घनगर । पैघ-पैघ आँखिमे एकटा विचित्र मादकता छलैक, कोमल त्वचा आ मांसल देहमे आकर्षण छलैक । सभटा जनैत छलैक प्रणव आ लोको जनैत छलैक । फेर एना रातिकऽ किएक ओकर कोठलीमे आबि गेलैक ? मुदा जवाब के दितैक ? मणिका तऽ निश्चिन्त सूति रहलैक । ओ भोर धरि जगले रहि गेल ।

कनेक आँखि लगलैक आ फेर धड़फड़ा कऽ उठल तऽ मणिका जा चुकल छलैक । क्यो नहि देखलैक । निश्चिन्त भेल ।

मुदा निश्चिन्त नहि भऽ सकल । आरो कतेको राति आबऽ लगलैक मणिका । जहाँ कनेको वर्षा-झक्कड़ होइ, ओ अपन चपता उठा ओकर कोठलीमे चल अबैक ।

मुदा ओइ राति अतत्तह कऽ देलैक मणिका । जाड़क मास छलैक— शीतलहरि सेहो छलैक । मणिका कोठलीमे आबि गेलैक । प्रणवोकेँ अभ्यास भऽ गेल छलैक, सूति रहल । मुदा निन्नमे लगलैक जेना क्यो ओकर तुराइक भीतर सूतल होइ । आँखि खोलि अन्हारेमे लगलैक जेना मणिका ओकरासँ सटल सूतल छलैक । ओकरा उठैत देखि रोकलकै—"चोललेन कोथाय ?"

प्रणव बिगड़ैत बाजल—"नहि, आब हद भऽ गेल । हमहूँ मनुक्खे छी ।

मणिका शान्त स्वरमे बजलैक—"ना, आपनी मानुष नेइ । मानुषेर मोतन कोनो व्यवहार आपनी कोनो दिन कोरेचेन आमार संगे ? मानुष छिलो सेन, मानुष छिलो दासगुप्ता । ओरा सवाइ एइ वेर छिलो । आमी एका ओर काछे गिये छिलाम । ओरा सभ मानुषेर मोतन छिलो.... नेइ मानुश नेइ—पशुर मोतन...

प्रणव स्तब्ध रहि गेल । मणिका ओकरासँ पहिने सेन आ ओहूसँ पहिने दासगुप्ता लग आयल छलैक— अही कोठलीमे । ओहूसँ पहिने क्यो हेतैक । आब ओकर नम्बर छलैक ।

प्रणव कने रुच्छ स्वरमे कहलकै—"आ अहाँकेँ ई सभ नीक लगैत अछि ? अपन इच्छासँ करै छी ई सभ ?"

मणिका ओहिना शान्त छलैक— "आमार इच्छेर प्रश्न कोथाय ? आमाकेँ कोरतेइ हबे । बृष्टि हबे, आमी आपनार रूमे आसबो । अपनी बदि किछु टाका देबेन

बाबा-माँ बेशी खुशी हबे । रोज आस्ते बोलबे । सेन दितो, दासगुप्ता दितो । कतो महीना पाय बाबा, चलबे केमन कोरे ?"

आब प्रणवक क्रोध शान्त भऽ गेलैक । मणिकापर दया भेलैक । तुराइमे सूतल ओ पूर्ण स्वस्थ आ युवा-स्त्री ओकरा निरीह शिशु सन लगलैक । इच्छा भेलैक जे ओकरा थपथपा कऽ सुता दैक । मुदा ओ लगले सूति रहलैक- एकदम निश्चिन्त जेना कोना भय नहि होइ । प्रणव बड़ी काल धरि ओकर सूतल निष्कलंक आकृतिकेँ निहारैत रहल ।

प्रणवक मान मोहल्लामे बढ़ि गेल छलैक । आइ.ए.मे फर्स्ट क्लास भेटलापर झरना दास आ अंजलि बोस सौँसे मोहल्लामे हल्ला कऽ देलकै । ओकरे कॉलेजमे छलैक दुनू । मोहल्लामे सब चीन्हि गेलैक । अधिक काल दुनू ओकर कोठलीमे आबि जाइ, दुनू अंग्रेजीमे कमजोर छलैक, बंगला आनर्स रखने छलैक । अंग्रेजीमे मदति लेल प्रणवकेँ पकड़ि लैक ।

मुदा प्रणवकेँ मणिकाक चिन्ता छलैक । शिप्रा मैट्रिकमे पहुँचि गेल छलैक । मुदा मणिका तऽ पढ़ाइयो-लिखाइ छोड़ने छलैक । ओकर की हेतैक ?

एकदिन प्रणव कहलकै-"हमहूँ टाका देबौ तोरा, लेबैँ ?" मणिका आश्चर्य सँ तकलकै जेना विश्वासे नहि भेल होइ ! ओकर चकित दृष्टिक अर्थ बुझैत प्रणवकेँ हँसी लागि गेलैक-"हमहूँ मँगनीमे नहि देबौक । हमरो खेनाइ बना दे । बाहर बड़ दिक्कति होइत अछि । मुदा एक सयसँ बेशी नहि देबौक । दुनू साँझ जे तोँ सभ खेबैँ, खुआ दिहैँ । माँ-बाबासँ पूछि ले ।"

मणिकाकेँ बड़ खुशी भेलैक । ओही दिनसँ व्यवस्था भऽ गेलैक । प्रणवकेँ चारिटा ट्यूशन छलैक, दू सय भेटि जाइत छलैक । पचास टाका मामीकेँ गाम पठा दैत छलनि आ डेढ़ सयमे अट्ठारह टाका किराया आ बाँकीमे गुजर । किछु स्कालरशिपो भेटऽ लगलैक, फीस माफ भऽ गेलैक तऽ आर सुविधा भऽ गेलैक । सय टाका पहिली तारीख कऽ मणिकाक हाथमे राखि दैक ।

मुदा ताहिसँ निश्चिन्त नहि भेल प्रणव । मणिकाक लेल किछु आर सोचऽ पड़लैक । बहुत सोचि-विचारि एकदिन कहलकै-"तोहूँ पढ़ मणिका ! शिप्राक संग तोहूँ मैट्रिक परीक्षा दऽ दे ।"

मणिका हँसऽ लगलैक जेना कोनो मजाक होइ । मुदा प्रणव गम्भीर होइत कहलकै "हम हँसी नहि करैत छियैक, तोँ पढ़ । स्कूल जयबाक काज नहि

छौक । हमही पढ़ा देबौक । प्राइवेटसँ परीक्षा दिहैं । ई ले हमर कोठलीक चाभी । हम तऽ दिनभरि निपत्ते रहैत छी । दुनू बहिन ओहीमे पढ़ । समय भेटत तऽ हम पढ़ा देबौक ।"

आ मणिका पढ़ऽ लगलैक । कोठलीक एकटा डुप्लीकेट चाभी हरदम ओकरा लग रहैक । परीक्षा देलकै आ पासो भऽ गेलैक मैट्रिक दुनू बहिन । शिप्रा कॉलेज जाय लगलैक मुदा मणिका ओहिना प्रणवसँ पढ़ैत रहल ।

एकदिन प्रणव कहलकै-"हम तोरा एना मँगनीमे नहि पढ़बै छियौक । फीस लगतौ ।"

मणिका हँसी बूझि मुसकिआइत बजलैक-"की लेब ?"

प्रणव कहलकै-"ई शिक्षा, हम तोहर आत्मविश्वास आ सम्मानकेँ जगबै लेल दैत छिऔक । हमर गेलाक बाद फेर कोनो बरसाती रातिमे ककरो कोठलीमे पैर नहि दिहैं, दिनक इजोतमे विश्वासक संग अपन बाट चलिहैं ।" मणिकाक आँखि डबडबायल छलैक-"कथा देबो ? विश्वास कोरबेन ?"

आ जहिआ गामसँ टूटल आ अपमानित मोन लऽ घूरल छल, मणिकाक आँखि ओहिना डबडबायल छलैक । आब रातिक एकान्तमे ओना नहि अबैत छलैक मणिका । मुदा ओइ राति फेर आयल छलैक । चुपचाप तुराइमे सूतल नहि छलैक, सिरमामे बैसि माथपर हाथ फेरऽ लागल छलैक-"की होयेछे ? आमा के बोलबेन ना ?"

आ प्रणव कहलकै । सभटा कहलकै ओकरा । अपन जन्म आ अपन मायक गप्प । माय नहि, मामीक गप्प । मामाक गप्प । मामा-गामक गप्प । मणिका हाथ घुमबैत रहलैक । प्रणव नहि जानि कखन सूति रहल ।

मुदा समय बीति गेलैक । प्रणवकेँ ओ कोठली छोड़ऽ पड़लैक । पटना कॉलेजमे अंग्रेजीमे लेक्चररक बहाली भऽ गेल छलैक । ज्वाइन करबाक छलैक । चौबीस बरखक भऽ गेल प्रणव मुदा सर्टिफिकेटमे बाइसे छलैक । दू वर्ष समय भेटतैक, कम्पीटीशन देत ।

जहिआ चिट्ठी भेटलैक, काण्ड भऽ गेलैक । मणिकाकेँ चिट्ठी देखबैत कहलकै-"परसूसँ ई कोठली तोहर । हमरे नाम रहत । मासे-मास अट्ठारह टाका पठा देबैक । कोठली हमरे नाम रहत । जखन एतऽ आयब, रहब । अही बहाने तोँ सभ मोन रखबैं ?"

मणिका एकदम बिगड़ि गेलैक– "ठीक बोलछेन । आमरा सब किछु टाकार जन्येकरी । आपनी टाका पाठाबेन, एकटी खोली देबेन, ताइ जन्ये आपनाकेँ आमरा मोने राखबो । आर किछु की आमरा जानी ?"

मणिकाक क्रोध वाजिब छलैक । प्रणवक जायब ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक । प्रणव बुझबैत कहलकै– "एक बातक मुदा हमरा अफसोच रहत । आइ.ए. कऽ गेलैँ तोँ । छोटकी बहिन पढ़ब छोड़ि घर बसा लेलकौ ओइ मैकेनिक पालक संग । मुदा तोँ अबस्स पास करिहैं बी.ए. । हमरा लिखिहैं । मधुर लऽकऽ अयबौ । अपन विवाहोमे बजबिहैं, बिसरि नहि जैहैं" मणिका एकदम बिगड़िकऽ बाजि उठलैक–"आमार कतो बिये होये छे, आर कतो हबे, सब लिखबो अपना के...

प्रणव बीचहिमे रोकैत कहलकै–"फेर वैह बात ? तोँ वचन देने छैँ, बिसरि गेलौ ?"

मणिका चुप्प भऽ गेलै मुदा सौसेँ मोहल्ला घोल भऽ गेलैक । पहिल बेर प्रणवकेँ लगलैक जे सभ लोक ओकरा कतेक मानैत छलैक । पानवाला गणेश, बरही घूटर, कण्डक्टर मण्टू...सभ अयलैक बेरा-बेरी । झरना दासक परिवार, अंजलि बोसक परिवार ! मासी माँ जे पाछूमे रहैत छलथिन, खाली देखा-देखी होइत छलैक, सेहो कानऽ लगलथिन । झरना आ अंजलि तऽ बहस शुरू कऽ देलकै । एतऽ किएक नहि ज्वाइन करैत छी ? एतऽ सँ कम्पीटीशन देबामे आर सुविधा हैत, कोचिंग क्लासक सुविधा रहत । बड़ मस्किलसँ दुनूकेँ शान्त कयलक । एकसरमे झरनाकेँ कहलकै– पुलकक ध्यान रखियहिक, छोड़ि नहि दियहिक ।"

झरना पुलककेँ मानैत छलैक आ पुलक झरना लेल पागल छलैक । एक दिन ई बात अनचोकेमे बुझलकै प्रणव । बी.ए.क रिजल्टक बाद जखन सभ ओकरा घेरने रहैक, बधाइ दैत रहैक, एकसरमे पुलक कहलकै– "आपनी खूब भागवान । सब चाय आपनाके, खूब मान करे । झरना...अंजलि...दीदी...सब ।"

प्रणवकेँ आश्चर्य भेलैक । पुलकक स्वरमे सहजता नहि छलैक । ओना बड़ तटस्थ छौँड़ा छलैक– भितरे-भीतर चाहे जेहन ज्वाला होइ । फेर की बात भेलैक ? एक दिन विक्टोरिया मेमोरियलक पार्कमे झरनाक संग बेंचपर बैसल देखलकै–बड़ी राति धरि । फेर सभटा स्पष्ट भेलैक । दोसर दिन झरना ओकरा कोठलीमे अयलैक तऽ प्रणव टोकलकै–"पुलकसँ पुछने आ । एकसर आइ कोठलीमे देखतौक तऽ तामस हेतैक ।

पहिने तऽ भड़कलै झरना । फेर सब मानि लेलकै मुदा कहलकै–"किन्तु

खूब भय होये कखनो । पुलक लिखा-पढ़ा जाने ना । कोनो काजो कोरे ना, किछु आतंकवादी लोकेर संग राखे । माँ–बाबा किछु तेइ राजी हबे ना ।"

मुदा एम.ए.पास छल झरना । अपन प्रेम लेल माय-बापसँ लड़ि सकैत छल, समाजसँ लड़ि सकैत छल । तेँ कहलकै प्रणव–"पुलककेँ छोड़ि नै दियहिक ।"

मुदा जकर ओकालति कऽ रहल छलैक तकर कतहु पते नहि छलैक तीन दिनसँ । प्रणवकेँ विदा करबा लेल टोलक सभ लोक हावड़ा जंक्शनपर जमा भऽ गेलैक– चटर्जी दम्पति, मणिका, शिप्रा आ ओकर वर, झारना आ अंजलि, गणेश, घूटर आ मण्टू । मुदा पुलकक कोनो पता नहि छलैक । मुदा गाड़ी छुटबासँ दू मिनट पहिने नहि जानि किम्हरसँ दौड़ल अयलैक पुलक आ ओकरा एक कात घीचिकऽ लऽ गेलैक– "आपनी चोलेलेन किन्तु आमरा फेर असहाय होय जाबो । आपनी छिलेन, आमी निश्चिन्त छिलाम । बाबा जे पिता होय करते पारलेन ना, आमि जे भाइ होय करते पारी ना, से आपनी कोरेछेन । दीदी आमा केँ सब बोले छे, आमी सब जानी । आमी जानी जे आपनी झरनाकेँ की बोलेछेन । आमि कृतज्ञ चिर-कृतज्ञ थाकबो ।"

मुदा प्रणव टोकलकै–"खाली कृतज्ञ भेने तऽ काज नहि चलतौ । तोँ असहाय रहबैँ तऽ दीदीकेँ के बचौतैक, झरनाकेँ के बचौतैक ? तोरा समर्थ होबऽ पड़तौक, सभकेँ बचाबऽ पड़तौक भाइ !"

प्रणवक हाथ अपन दुनू मुट्ठीमे कसिकऽ दबा लेलकै पुलक–"आमी बाँचाबो, आमी कथा दिच्ची । आमी दीदीके, झरनाकेँ...

गाड़ी ससरऽ लागल छलैक । प्रणव दौड़िकऽ चढ़ि गेल । प्लेटफार्मपर सभ हाथ हिला रहल छलैक– मुदा मणिकाक हाथ खसल छलैक, ओ खाली कानि रहल छलैक । कनिते जा रहल छलैक ।

पटना आबि एतेक तेजीसँ सभ घटित हेतैक, प्रणव कल्पनो नहि कयने छल । सभटा अप्रत्याशित ।

सभसँ पहिने शीलासँ भेँट । अनायासे । प्रोफेसर झाक डेरा लग आबि ओइ दिन प्रणव कहलकनि–– "सभ दिन बाहरसँ विदा कऽ दैत छी अहाँ । आइ चाह अबस्स पीअब अहाँक डेराक । अहाँ तऽ हमरा जकाँ एकसर नहि छी ।"

प्रोफेसर झा ओकरे विभागमे छलथिन । नीक प्रोफेसर । यश छलनि । विचारोमे बेश सोझरायल । प्रणवक संग अधिक काल स्टाफ रूममे गप्प होइत छलनि । बेशी काल अपने गाम-घरक, मिथिला-मैथिलक । प्रोफेसर झा यद्यपि बेशी सम्पर्कमे रहल छलाह अपन माटि-पानिक, मुदा हुनकामे आधुनिकताक आग्रह बेशी छलनि । अधिक काल कहथिन प्रणवकेँ– हमरा-अहाँक गाममे आइयो, आजादीक सत्तरह-अट्ठारह वर्षक बादो, कैकटा पढ़ल-लिखल स्त्रिगण अछि ? बेशी वैह 'परान्नाथ केँ परनाम लिखऽवाली' स्वामीक नाम नहि लेबऽवाली, पर्दावाली पतिव्रता सभ । मैट्रिको पास कतेक गाममे आ कैक टा भेटत ?"

प्रणव टोकने रहनि–"मैट्रिके पास केने लोक शिक्षित आ आधुनिक नहि होइत अछि । हम बंगालमे एतेक दिन छलहुँ । कम्मो पढ़ल-लिखलमे कम्म-बेश वैह संस्कार, वैह शालीनताक संग आधुनिकता छलैक । फेर अपने सभक गाम-घरक स्त्रिगणकेँ लियऽ । कतेक कम्म पढ़ल-लिखल रहैत छथि, मुदा कम पढ़ल-लिखल सभ स्त्रिगण पिछड़ले दृष्टिकोणक रहय से आवश्यक नहि । हमरे मामी छलीह, कहुना घसीटकऽ दस्तखत करैत छलीह, मुदा के कहितनि हुनका अपनढ़ आ पिछड़ल ? अध्यवसायमे, प्रगतिशील विचारमे सबसँ आगू छलीह । जे किछु बनि सकलहुँ हुनके प्रयासेँ ।"

मुदा प्रोफेसर झा सहमत नहि होइत छलथिन–"अपने अपवादक गप्प करैत छी । मुदा शिक्षाक अभावमे ई एकटा अपवाद नगण्य रहि जाइत अछि । ई स्त्रिगण सभ आइयो एकबट्टी कऽ खेबाक थारी लऽ जाइत छथि, आन जातिक हाथमे फेकिकऽ रोटी आ खेनाइ दैत छथिन, स्वामी आ श्वसुरसँ परदा करैत छथि, मुदा मेला-ठेलामे मुँह उघारि टहलैत छथि, गीतक नामपर अश्लील गारि प्रेमसँ गबैत छथि, सार्वजनिक स्थानमे बेपर्द भऽ नहाइत छथि ।"

प्रणव हुनका फेर टोकलकनि–'ई तऽ विवशता भेलैक । आर्थिक विवशता । गामक पचास-पचहत्तरि प्रतिशत घरमे ने शौचालय छैक, ने कल । ओ अन्हारमे बाहर मैदान जाइत अछि आ सार्वजनिक स्थानपर स्नान करैत अछि । ओकरा अहाँ पिछड़ापन कोना कहबैक ? धर्मक नामपर अहाँक तथाकथित आधुनिको लोकनि सार्वजनिक स्थानपर डूब दैत छथि, फैशनक नामपर समुद्र-पोखरिमे स्वीमिंग सूट पहिरि किलोल करैत छथि । ओ किएक नहि अखरैत अछि अहाँकेँ ?"

मुदा प्रोफेसर झा सहमत नहि होइत छलथिन । हुनकर हिसाबे सम्पूर्ण मैथिल समाजे अखनो पछुआयल छल, वर-कनियाँक खरीद-बिक्री, जाति-पाँजिक फड़िछौट आ ऊँच-नीचक हिसाबमे बाझल छल ।

प्रणव हुनकर तर्क सभ अधिक काल काटि दैत छलनि । मुदा हुनकासँ तर्क करब ओकरा नीक लगैत छलैक । कौखन बड़ श्रद्धा होइत छलैक जे प्रोफेसर झा नारी-उत्थान लेल हरदम चिन्तित रहैत छथि । ओकर विकासक बात सोचैत छथि । समाजमे कतेक लोक एना सोचैत अछि ?

मुदा प्रोफेसर झा सभ विषयपर सोचैत छलाह । ओइ दिन मैथिली साहित्यपर गप्प चला देलथिन–"आइ धरि की लिखल गेल अछि मैथिलीमे ? घूमि-फिरि कऽ वैह विद्यापति । खाली एकटा नामक डिगडिगया । आइ की लिखि रहल छथि मैथिलीक साहित्यकार ? वैह अनमेल विवाह आ तिलक-दहेजक खिस्सा । वैह पंचकोशी मैथिलक खिस्सा । कतऽ अछि ओइमे सामान्य लोकक खिस्सा, आदमीक संघर्ष आ नग्नयर्थाथक चित्रण ?"

प्रणव किछुओ नहि बाजल । ओकरा मैथिलीक नव वा पुरान साहित्यक कोनो अध्ययन नहि छलैक । ओ चुपचाप सुनैत रहल ।

प्रोफेसर झा आगू बजलाह–"अइमे दोष मैथिलीक रचनाकारकसँ बेसी मिथिलाक स्थितिक छैक । मिथिलाक लोक आइ कतेको वर्षसँ कोनो तेहन ऐतिहासिक मोड़ नहि देखने अछि— ने युद्ध, ने क्रान्ति । ने कोनो तेहन पैघ राजनीतिक उथल-पुथल, ने कोनो तेहन आकस्मिक सामाजिक परिवर्तन । एकटा वैवाहिक समस्या, आर किछु नहि । एकर विपरीत पश्चिमक छोट-छोट देशकेँ लियौक । नहि जानि की सभ भऽ गेलैक ओइ छोट-छोट भूखण्डमे आ कैकटा अमर साहित्यक रचना भऽ गेलैक । जासूसियो साहित्य लिखलकै तऽ सेहो 'क्लासिक्से' जकाँ ओहदा पाबि गेलैक आ हमरालोकनि सामा-चकेबाक गीत गबैत रहि गेलहुँ ।"

प्रणवकेँ मैथिली साहित्यिक अध्ययन नहि रहलोपर ई कथन अतिरंजित लगलैक । मिथिलामे युद्ध नहि भेलैक मुदा स्वाधीनता संग्राममे मिथिलाक भूमिका ककरोसँ पछुआयल छलैक ? क्रान्ति नहि भेलैक, मुदा आब गाम गाम कहाँ रहलैक ? सभ घरमे बूढ़-बच्चाकेँ छोड़ि बाँकी सभ नौकरिआहा भऽ गेलैक, शहर चल गेलैक । माय-बाप, भाइ-बहिन, स्त्री-पुरुष, मनुक्ख-मनुक्खक सम्बन्ध बदलि गेलैक आ बदलिते आबि रहल छलैक । सम्बन्धक नव कोण, समाजक नव वर्ग, मानवताक नव उत्कर्ष, अइ सभक कोन अभाव छैक मिथिलामे ? की मैथिलीक रचनाकार आइयो अइ सबसँ अपरिचिते छथि ? आइयो वैवाहिके समस्यामे ओझरायल छथि ?

मुदा प्रोफेसर झा आधिकारिक रूपसँ बाजि रहल छलथिन आ प्रणव ओकर खण्डन नहि कऽ सकलनि । मुदा मैथिली साहित्येटा नहि, मिथिला-मैथिल-मैथिलीक

सम्बन्धमे सेहो प्रोफेसर झाक धारणा एहने छलनि, ताही कारणे कालेजमे मैथिल प्रोफेसर आ मैथिलीक प्रोफेसर हुनकासँ बिगड़ल रहैत छलथिन । मुदा प्रणवकेँ नीक पटरी बैसि जाइत छलैक, यद्यपि हुनकर विचारसँ ओहो सहमत नहि होइत छल ।

पटरी बैसबाक एकटा आरो कारण छलैक । दुनू गोटेक डेरा एक्के दिस छलैक । अबैत काल प्रणव रिक्शा लेने अबैत छल दस बजे आ गेटपर प्रोफेसर झा ठाढ़ रहैत छलथिन । घुरैत काल प्रणव हुनका डेरापर उतारि अपन डेरा चल जाइत छल ! मुदा ओइ दिन प्रणवो हुनके डेरापर उतरि गेल–"आइ तऽ अहाँक डेराक चाह पीबियेकऽ जायब ।"

नहि जानि किएक प्रोफेसर झा ओतेक उत्साहित भऽ भीतर नहि लऽ गेलथिन । ड्राइंग रूम साधारण मुदा नीक जकाँ सजायल, सुरुचिपूर्ण । सोफापर पसरि गेल प्रणव ।

प्रोफेसर झा भीतर गेलाह आ फेर आबिकऽ दोसर सोफापर बैसि गेलाह । प्रणव एकटा मैगजीन उनटबैत रहल । ट्रेमे चाह-बिस्कुट लेने श्रीमती झा प्रवेश कयलथिन । हुनका ओतऽ देखि जेना प्रोफेसर झा हड़बड़ा गेलाह–"अहाँ किएक अयलहुँ ? हमरा सोर कऽ लितहुँ ।" आ झट ट्रे हाथसँ छीनि लेलथिन ।

प्रणवकेँ ई हड़बड़ी कोनादन लगलैक । श्रीमती झाकेँ नमस्कार करबा लेल हाथ जोड़ैत ऊपर तकलक तऽ तकिते रहि गेल– ''तों...अहाँ...शीला...''

ओहो अकचका गेलैक– प्रणव ?

आ एकदम अकचकायल प्रोफेसर झाकेँ सहज करबा लेल प्रणव कहलकनि –"अहाँ कोन चिन्तामे पड़ि गेलहुँ ! हद भऽ गेल । एतेक दिनसँ संग छी मुदा भनकियो ने लागय देलहुँ जे जमींदार साहेबक जमाय छिअनि । शीला हमरा संग पढ़ैत छल, संगे पास कयलहुँ मैट्रिक ।"

–"ओ, अच्छा !" कनेक अनमनस्क जकाँ बजलाह प्रोफेसर झा ।

–"आब जाउ अहाँ, घरमे काज हैत ।"

शीला चल गेलैक । जाइत-जाइत ओकर आकृतिपर किछु झलकल छलैक, प्रणव स्पष्ट देखलकै । प्रोफेसर झाक व्यवहार ओकरा विचित्र लगलैक । जानियोकऽ जे दुनू एक्के गामक अछि, संगे पढ़ने अछि, शीलाकेँ भीतर पठा देलथिन । यदि अनचिन्हारो रहितैक तऽ सामान्य शिष्टाचार लेल बैसऽ दितथिन । बड़-बड़ पैघ गप्प करैत छलथिन नारीशिक्षा आ मुक्तिपर ।

प्रणवो जल्दिये उठि गेल । ओकर बड़ इच्छा भऽ रहल छलैक शीलासँ गप्प करबाक, गाम-घरक गप्प सुनबाक । आब तऽ तेसर वर्ष पुरतैक गाम गेना । मुदा ओ दोसर कोठलीमे छलैक आ ड्राइंग रूममे प्रोफेसर झा गुम्म-सुम्म बैसल छलथिन । प्रणवकेँ सभटा बात विचित्र लगलैक । शीला एतेक दिन बाद भेँट भेलोपर कोनो गप्प नहि कयलकै । विदा करऽ बाहरो नहि अयलैक ।

दोबारा प्रोफेसर झाक डेरापर जयबाक इच्छा रहितो ओ जा नहि सकल । ओइ दिनुका बाद भेँट भेलापर प्रोफेसर झा ओतेक उत्साहक संग बहसो आ गप्पो-शप्पमे शामिल नहि भेलथिन । एकदम उखड़ल-उखड़ल । प्रणवकेँ बड़ विचित्र लगलैक ।

ओहूसँ विचित्र घटना ओहिदिन पटनासिटीमे भेलैक । एकटा प्राध्यापक अपन डेरापर भोजन लेल बजौने छलथिन । घुरैत काल राति भऽ गेलैक बेसी । रिक्शा तकैत चौकसँ आगू बढ़ल तऽ बढ़ले गेल । रिक्शा भेटबे नहि कयलैक । ओ पयरे बढ़ैत गेल मुदा लगलैक जेना क्यो पछोड़ धयने होइ । डर भेलैक । ओना आब तऽ लोक तेहन बात नहि सुनैत छलैक, मुदा पहिने तऽ कहाँदन बड़ बदनाम इलाका छलैक । उपरका मकान सभमे अखनो गायिकाक तख्ती लागल छलैक ।

पाछूसँ अबैत लोक एकदम लग आबि गेलैक । विचित्र सन बगय-बाना छलैक । लुंगी आ गोलगला गंजी । नोकगर मोछ आ पैघ-पैघ केश । गलामे रूमाल बान्हल–"चलो बाबू । बाइ बुलाती है ।"

जकर डर छलैक सैह भेलैक । कोनो गुण्डा पछोड़ धयने छलैक । मुदा साहस करैत कहलकै प्रणव–"मुझे नहीं जाना है कहीं ।"

"जाना तो पड़ेगा ही बाबू ! बाइ का हुक्म है, मर्जी से नहीं तो जबर्दस्ती ।"

रंगढंग अधलाह लगलैक मुदा कोनो उपाय नहि छलैक । दोकान सभ बन्न भऽ गेल छलैक आ बाट सुन्न छलैक । फेर एहन ठाम गुण्डा बदमाशक संग भिड़बो ठीक नहि होइतैक । ओ चुपचाप ओकर पाछाँ बिदा भेल । देखी की होइत छैक ? संगमे कोनो तेहन टाका-पैसा नहि छलैक । लेबे की करतैक ?

ओ गुण्डानुमा लोक ओकरा एकटा मकानक पछुआर दने होइत, सीढ़ी दने ऊपर लऽ गेलैक । एकटा छोट-छीन कोठली– जेना हरदम बन्ने रहैत होइ तेहन गन्ध

कोठलीमे । एकटा मामूली सन पलंगपरक मैल बिछौनपर क्यो पड़ल छलैक । सौंसेँ चेहरापर पैघ-पैघ चकता सभ छलैक ओइ स्त्रीक मुँहपर । देखिकऽ घृणा भेलैक प्रणवकेँ ।

ओ स्त्री ओकर चेहराक भाव देखि हँसलैक "घृणा भऽ रहल छौ ! छीहे ताही जोगर हम ।"

एतेक कालपर चिन्हलकै प्रणव । ई तऽ माला छलैक । कोना एहन सन हाल भेल हेतैक से जनैत छलैक प्रणव, मुदा तैयो ओकरा ओहि हालतमे देखि बड़ दुःख भेलैक । किछुओ बाजल नहि गेलैक । माला अपने बजलैक—"साँझे तोरा अइ बाटे जाइत देखने छलियैक । तखनेसँ रहीमकेँ ठाढ़ कऽ देने छलिऐक जे तोरा कहुना अबस्स लाबौ एतऽ । कोनो अपमान तऽ नहि कयलकौ ?"

प्रणव तैयो चुप्पे रहल । आर कोनो बात ओकर दिमागमे नहि घुसि रहल छलैक । ओ खाली बिछौनपर घिनौन चेहरा आ सड़ल देह लेने पड़ल मालाकेँ देखि रहल छलैक आ ओकर बकार बन्द छलैक ।

माला फेर टोकलकै—"माला पापिन अछि, ओकरासँ अबस्स घृणा करक चाही । जिनगी भरि करिहैं । मुदा अखन बाज । तोरा देखि नहि जानि किएक किछु बात करबाक, गाम-घरक सभक बात करबाक बड़ इच्छा भेल । कोना छथि बाबूजी आ शीला ?"

आब प्रवणक बकार फुटलैक—"शीला अही शहरमे छौक । वर हमरे संग प्रोफेसर छैक । बाबूजी गाममे छथुन आ नीकेँ हेबे करथुन । हुनका किछु होबऽवाला नहि छनि ।"

कल्लू चौधरीक स्मरण मात्रसँ ओकर मोन तीत भऽ गेलैक ।

मुदा बाप-बहिनक खबरि सुनि माला उल्लसित भऽ उठल— ''अही शहरमे शीला अछि, तखन तऽ हमहूँ भेंट करबैक ।''

मुदा फेर अपने चुप्प भऽ गेल । जेना अपने बाजल गप्पपर सोचमे पड़ि गेल हो । ओ कोना भेंट करतैक शीलासँ ? कोन मुँहे ?

प्रणव टोकलकै— भेंट कऽ लियहिक । मुदा तोहर ई की हाल देखैत छियौक ? एतऽ कोना पहुँचि गेलैँ ?

माला हँसलैक—"जाहि बाटपर चलल रही से अही सभमे कतहु पहुँचा देत,

से तऽ बुझलै छल । मुदा एतेक जल्दी, से नहि बूझल छल । सोचलहुँ जे सभ दिनुका नर्कसँ छूटि किछु दिन जीबि ली । जिनगीकेँ भोगि ली, फेर नर्को भोगि लेब । मुदा ई कहाँ बुझलियैक जे एक नर्कसँ दोसर नर्कमे जा रहल छी ? जिनगीकेँ भोगबाक लालसा रहिये जायत, संगे जायत । आब तऽ बेरो लगचिआयल अछि ।"

माला जेना कष्टपूर्वक बाजि रहल छलैक ! ई कष्ट खाली मानसिक नहि छलैक, ओइमे ओकर शारीरिक कष्ट सेहो शामिल छलैक । प्रणव ओकरा बोल-भरोस दैत कहलकै— "एना किएक बजैत छेँ ? अखन समय किएक पुरतौक तोहर ? अखन वयसे की भेलौक अछि ?"

माला ओहिना कष्टसँ हँसलैक—"हमर वयस ? लगैत अछि जेना सय वर्ष भेल हो, जेना यातनाक अवधि अनन्त भऽ गेल हो ! आब तऽ कहुना मुक्त होइ जिनगीसँ, सैह कामना अछि ।"

"मुदा तोहर ई हाल कयलकौ के ? ककरा संग गामसँ पड़ायल छलैँ ? के छलौ ? बंकू...?"

"बंकूआ रहैत छल हमर आगू-पाछू । एक दिन ओकरे कोठलीसँ बहराइत ओकर बाप देखि लेलक । बापक डरे बंकूआ पड़ायल आ तखन ओही कोठलीमे ओकर बाप बन्न कऽ लेलक । गामोसँ वैह भगौने छल जे शहरमे नीक ठाम राखि देबौक, चैनसँ रहबैं ? आ फेर दलालक हाथे बेचि निपत्ता भऽ गेल ।"

प्रणवकेँ अपना कानपर विश्वास नहि भेलैक—"तोहर दिमाग खराब भऽ गेल छौ माला ! ककर नाम लऽ रहल छहिक ? रूदल चौधरी— तोहर पित्ती... बंकूआ तऽ आवारा अछिये, पितिऔत छौक तेँ की ? मुदा रूदल चौधरीक एहन करनी ? सत्त बजैत छैँ तों ?"

माला ओहिना कष्टसँ रुकि-रुकिकऽ बजलैक—"करनी तऽ सभटा हमर अपन छल । अइमे अनकर कोन दोष ? सम्बन्ध आ वयसक कोन लेहाज छल हमरा ? मोनमे एकटा ज्वाला छल...प्रतिक्रिया छल ? बाबूजी एकटा बूढ़ असर्ध वर लऽ अनलनि । हमहूँ अपन मनमानी कऽ बदला लेबऽ चाहैत छलियनि । मुदा ककरासँ बदला लेलिऐक ? बेलसँ छूटिकऽ बबूरमे फँसि गेलहुँ ।"

माला चुप्प भऽ गेलैक । प्रणवो चुप्पे रहल । बजबा लेल किछु नहि फुरयलैक । किछु काल बाद उठैत कहलकै—"आब हम जाइ छी । बड़ राति भेलैक ।"

माला हँसलैक–"राति भेलैक तऽ के प्रतीक्षामे बैसल हेतौक ? एकसरे तऽ छैँ अखनो । किछु काल हमरा लग बैसबैँ तऽ दूरि नहि भऽ जयबैँ ?"

प्रणव बैसि गेल । माला कहलकै–"असलमे तोरा एकटा स्वार्थसँ बजौलियैक अछि । एकटा काज करऽ पड़तौक, करबैँ ?"

प्रणव ओकर मुँह तकैत रहलैक । किछु कहलकै नहि । माला हाथक इशारा कोठलीमे दोसर कात एकटा खटोली पर सूतल बच्चा दिस कयलकै–"ओकरा देखैत छहिक ? हमर बेटा अछि अमित । सात वर्षक भेल । मुदा ओ खाली हमर बेटा अछि । ओकर क्यो बाप नहि छैक । ओकर भार तोरा लेबऽ पड़तौक ।"

ओही अधिकारसँ बाजि रहल छलैक माला जाहि अधिकारसँ झक्खा लेल मोंछ आ चटनी लेल तेतरि तोड़बाक अनुरोध करैत छलैक । दुनू बहिन ई बात, ओकर ई कमजोरी जनैत छलैक– प्रणव ओकर बात टारि नहि सकैत छलैक ।

–"चुप्प छैं !" हमर बात नहि मानबैं ? हम आइ नहि कहैत छियौक । मुदा कहिओ यदि हम नहि रही आ क्यो अइ नेनाकेँ तोरा लग पहुँचा दौक तऽ ओकरा अनाथालयमे नहि दियहिक । बाबूजी एकरा नहि रखथिन । शीलोमे हमरा सन्देह अछि । मुदा तोरापर विश्वास अछि हमरा । तोँ राखि सकैत छहिक । तोँ साधारणसँ फराक सभ दिन छलैं, आइयो हैबैँ, हम जनैत छी । तेँ तोरा जबर्दस्ती बजबौने छियौक ।"

प्रणव कोनो जबाब नहि देलकै । मुदा ओकर मौनसँ जेना मालाकेँ स्वीकृति भेटि गेलैक, ओ फेर जिद नहि कयलकै । प्रणव उठिकऽ ठाढ़ भेल आ धड़धड़ाइत सीढ़ीसँ नीचाँ उतरि सड़कपर आबि गेल । रिक्शा दूर जाकऽ भेटलैक आ अपन डेरा आबि गेल ।

मुदा एक्को क्षण लेल पलक नहि खसलैक, भरि राति जगले रहि गेल । भोर होइतहि दौड़ल गेल शीलाक डेरा । प्रोफेसर झा नहि छलथिन । छुट्टीमे गाम गेल छलाह ।

प्रणव बड़ी काल ड्राइंग रूममे बैसल रहल । क्यो बहरयबे नहि करैक । अन्तमे प्रणव जखन भीतर कोठलीमे पैसबा लेल उद्यत भेल तऽ हड़बड़ायल शीला सामने आबि गेलैक–"फेर किएक अयलौं अहाँ ? ओइ दिनक अपमान यथेष्ट नहि छल ?"

प्रणव हँसिकऽ कहलकै–"अपमान ? अहाँ दुनू बहिनिक मामिलामे हम मान-अपमानक हिसाब नहि रखैत छी ।"

शीला कने चौंकैत कहलकै–"आइ फेर दोसर बहिनिक प्रसंग कोना आबि गेल ? ओ प्रकरण तऽ कहिया ने समाप्त भऽ चुकल अछि ।"

–"समाप्त नहि भेल अछि अखन । आब तऽ शुरू हैत । माला अही शहरमे अछि । हमरा भेटल छल ।"

शीला उल्लसित होइत कहलकै— ''कतऽ भेटल अहाँकेँ ? बाजू ने जल्दी, कतऽ अछि माला ?"

प्रणव शान्त स्वरमे कहलकै–"स्थानक नाम जानि अहाँकेँ प्रसन्नता नहि हैत । लाइसेंस आब सैह भेटैत छैक तेँ गायिकाक मोहल्ला कहबैक, रण्डीक नहि ।''

"आ ओही मोहल्लामे अहाँकेँ भेटल माला !'' आइ काल्हि ओहने मोहल्ला सभक चक्कर लगबैत छी अहाँ !"

–"तऽ अइमे हर्ज की ? एकसर छी हम । किम्हरो जाइ, ककरो की फर्क पड़तैक ? के रोकत हमरा ? कथी लेल रोकत ?" प्रणव हँसैत कहलैक ।

मुदा शीला लोहछि गेलैक–"से जतऽ इच्छा होअय जाउ, के रोकत अहाँकेँ ? मुदा अखन एतऽसँ जाउ । ओ नहि छथि । क्यो देखत आ अयलापर हुनका कहतनि तऽ अनर्थ भय जायत । हाथ जोड़ैत छी हम, अहाँ जाउ ।"

प्रणव उठैत कहलकै– ''एना विकल जुनि होउ । हम जाइत छी । मुदा जाइत-जाइत एकटा बात पुछैत छी । प्रोफेसर झा तऽ उदार दृष्टिकोणवला लोक छथि । नारीमुक्तिपर पैघ-पैघ प्रवचन दैत छथि । तखन एतेक बन्हेज किएक ? ई खाली व्यक्ति-विशेष लेल, खाली हमरे लेल, की सबहक लेल ?"

शीला कोनो जबाब नहि देलकै । प्रणव फेर प्रश्न दोहरौलकै तऽ बिगड़ि कऽ बजलैक–"से बूझि अहाँ की करब ? अहाँक लेल एतबा यथेष्ट नहि जे अहाँ एतऽ बिन-चाहल लोक छी, अहाँकेँ नहि अयबाक चाही ।"

–"स्पष्ट कथा लेल धन्यवाद । हमरासँ गलती भेल । आगू ध्यान रहत ।" नहि जानि एतेक कालसँ सहज प्रणव एकाएक बड़ भावुक भऽ गेल आ धड़धड़ाकऽ सीढ़ी उतरि बाहर चल गेल ।

मुदा ओ ध्यान नहि राखि सकल । सातमे दिन रहीम एकटा सात वर्षक छौंड़ाकेँ लऽ उपस्थित छलैक–"कल बाइ चल बसी । ये उनका लौण्डा है । आप तक पहुँचाने की मेरी जिम्मेवारी थी, खुदाहाफिज !"

आ प्रणव ओइ सात वर्षक छौँड़ाकेँ लऽ आफतमे पड़ि गेल । कहाँ रखतैक ? लोककेँ की जवाब देतैक ? माला ओकरासँ वचन लेने छलैक, अनाथालयमे नहि देतैक । मुदा अपना लग कोना रखतैक ? ओ बच्चाकेँ लेने शीलाक डेरा पहुँचल । प्रोफेसर झा अखनो गामसँ नहि घुरल छलाह । शीला ओहिना रुच्छ व्यवहार कयलकै–"अहाँ फेर आबि गेलौँ ?"

–"आबऽ पड़ल शीला ! दोसर कोनो उपाय नहि छल । अहाँ दुनू बहिन हमरा बेर-बेर लाचार कऽ दैत छी ।"

–"फेर दुनू बहिनिक गप्प ! छोड़ू ओकर गप्प आ जाउ अपन डेरा । हमर जीवनकेँ एना नष्ट नहि करू ।"

–"अलबत्त अछि अहाँक जीवन शीला जे एकटा पुरुषसँ बात कयलापर नष्ट भऽ जाइत अछि ! सेहो कोनो आन पुरुष नहि, अपन गामक चिन्हार लोक । मुदा छोड़ू तकर गप्प । अखन अहाँक जिनगीपर गप्प कयलासँ असल बात रहि जायत । आइ अइ छौँड़ाक गप्प करू । ई अमित । एकर की हेतैक ?" प्रणव असल गप्प कहलकै ।

"के अछि ई छौँड़ा ? किएक अनने छियैक एकरा एतऽ ?" शीला डेराइत पुछलकै ।

"एना डेराउ नहि । ई कोनो आन छौँड़ा नहि अछि । अहीँक परिवारक अछि । मालाक बेटा छैक । माला काल्हि मरि गेल ।"

"नीक भेलै, उद्धार भऽ गेलै ।" शीला एकदम कठोर स्वरमे बजलैक । –"आ मालाक कोनो धीया-पुता नहि छलैक, ओ घरसँ एकसरि बहरायल छल ।"

–"से हमरो बूझल अछि शीला ! आ इहो बूझल अछि जे ई मालेक बेटा छैक । ओकरा हम वचन देने छलियैक जे एकरा हम अनाथालयमे नहि देबैक । कतऽ रखियौक एकरा ?"

शीला आरो डेरा गेलैक–"से हम की जानऽ गेलियैक ? हम नहि रखबै एकरा ।"

–"अहाँकेँ हम राखऽ नहि कहैत छी । अहाँ पहिनेसँ डेरायल छी । मुदा चलू, एकरा सही स्थानपर पहुँचा दियैक । अहाँक बाबूजी एकसर छथि, हुनका एकटा खेलौना चाहियनि । कहबनि जे माला एकरा पेटमे लेने घरसँ पड़ायल छल । एकटा अस्पतालमे एकरा जन्म दऽ मरि गेल ।"

शीला बात काटि देलकै–"असंभव गप्प । बाबूजी कहिओ विश्वास नहि करताह ।"

"चलू, चेष्टा तऽ करी । आगू अइ छौँड़ाक भाग्य । नैँ क्यो रखतैक तऽ हम तऽ छीहे, मालाकेँ वचन देने छिऐक । मुदा पहिने एकर उचित स्थानपर तऽ चेष्टा कऽ देखियैक ।"

माला बजलैक–"तऽ जाउ । हम किएक जायब आ कोना जायब ? ओ नहि छथि । बुझताह तऽ दोसरे काण्ड भऽ जायत ।"

प्रणव मनबैत कहलकै–"कोनो काण्ड नहि हैत । आइ जायब आ परसू भोरे चल आयब । क्यो नहि बुझतैक, प्रोफेसर झाओ केँ नहि कहबनि । आ फेर कोनो अनका लेल करबैक ? अपने शोणित थिक, मालाक बेटा । कने मुँह देखियौक ने ? केहन सुन्नर छैक । देखियेकऽ सभ कहि देतैक जे मालाक बेटा छैक ।"

तखन शीला ओइ छौँड़ाक मुँह देखलकै । एतेक काल ओ छौंड़ा सभटा गप्प सुनैत चुप्प छलैक । प्रायः बूझि रहल छलैक जे सभटा झंझट ओकरे लऽ कऽ छलैक । मुदा जखन शीला हाथ धऽ लग घीचि लेलैक आ देहसँ सटा लेलकै तऽ सभटा डर बिला गेलैक आ ओ सहज भऽ अपन मौसीक गरासँ लपटि गेल । शीलो ओकरा बड़ी काल कोरामे लेने रहलैक ।

रतुका स्टीमरसँ शीला आ अमितक संग गाम विदा भऽ गेल प्रणव ।

आ गाममे बड़का काण्ड भऽ गेलैक ।

प्रणवक संग शीलाकेँ देखितहि भड़कि उठलथिन कल्लू चौधरी–"तोँ किएक अयलैँ एकर संग ? लाज-संकोच सब पीबि गेलैँ ? ओझा कतऽ छथुन ?"

हुनकर चीत्कारपर सहमैत मुदा तैयो साहस करैत कहलकनि शीला–"आस्ते बाजू बाबूजी ! लोक सब सुनत तऽ अनेरो भीड़ जमा करत । प्रणव कोनो आन नहि, अपने लोक अछि । ओकर संग गाम अयबामे कोन अनर्थ भऽ गेलैक ?"

कल्लू चौधरी पहिनेसँ बेशी जोरसँ गरजलाह–"बेशी ज्ञान नहि बघार । जो भीतर आ तोँ तुरत निकल अइ ठामसँ निर्लज्ज ! बेर-बेर निकालल जाइत छेँ, तैयो सूगर जकाँ थुथुन उठौने इम्हरे चल अबै छेँ ।"

"यदि ककरोसँ बचनबद्ध नहि रहितहुँ हम तऽ एकर जबाब ककरो थुथुन तोड़ि कऽ दितहुँ । मुदा हम शीलाके पहुँचाबऽ नहि, दोसर काजसँ आयल छी । पहिने ओकरा सुनि लिअऽ ।"

फेर अमितकें आगू करैत कहलकनि–"अइ बच्चाकें देखियौ, चिन्हैत छिऐक ?"

कल्लू चौधरी फेर गरजलाह–"हम किएक चिन्हबैक एकरा ? ककरा उठा अनने छें हमर दरबज्जापर ? निकल एतऽसँ जल्दी ।"

साहस कऽ शीला आगू बढ़ल–"कने ठीकसँ देखियौक बाबूजी ! अपन सन नहि लगैत अछि ई ? माला दीदीक मुँह मोन पाड़ू, ओकरे बेटा छैक ई ।"

अइ बेर जेना ठनका खसलैक–"ककर नाम लेलें तों ? ओ तऽ ओही दिन मरि गेल जहिया घरसँ बाहर पैर देलक ।"

शीला तैयो साहस कऽ ठाढ़ रहल–"माला दीदी सत्ते मरि गेल बाबूजी ! बहुत दिन भेलैक । ओकरे बेटा छैक, गाम छोड़ैत काल पेटमे छलैक । एकरा जन्म दऽ मरि गेलीह, बड़ दुख उठौलनि माला दीदी...।

"चुप्प रह शीला ! बड़ बड़बड़ करै छें तों। घर छोड़ि बाहर डेग देबऽवाली स्त्री दुःख नहि उठाओत तऽ की चैनसँ जिनगी गुजारत ? अपन करनीक फल भोगलक ओ । हँटा अइ पापक मोटरीकें हमरा सामनेसँ ।"

प्रणव बुझयबाक चेष्टा कयलकनि- "ई पापक मोटरी नहि, अहाँक कुलक दीपक जछि, अहाँक नाति अछि, एकरा अपन स्नेहक आश्रय दियौक ।"

शीलो नेहोरा कयलकनि–"हँ, बाबूजी ! एकरा अपन हबेलीक इजोत बनबियौक । हमरा सभक जिनगीक अभाव आ अन्हारकें दूर करत ई ।"

कल्लू चौधरीक क्रोध आब जेना बेसम्हार भऽ गेलनि । चिकरैत बजलाह–"निकल दुनू बेहया अइ पापक मोटरीक संग अइ ठामसँ । दुनू सुरमे सुर मिला बाजि रहल छें । तोहर दुनूक पहिनेसँ साँठ-गाँठ छौक । तोरे लेल एकरा हम अइ हवेलीमे टपबासँ रोकने छलिऐक । मुदा ई अपन बदला सधा कऽ रहल । एकरे संग तों पटनामे बौआयल फिरैत छें, तैं ने ओझाकें तोरापर अविश्वास छनि । हमरा सभ बूझल अछि । मुदा तों एतेक निर्लज्ज भऽ जयबैं जे स्वामीकें छोड़ि अइ लफंगाक संग हमरा ठकऽ अयबैं से नहि सोचने रही कहियो । ई एना करत से तऽ बूझल छल हमरा ! एकरा पुरान कानि छैक । एक दिन एकर मामीकें हम...।

प्रणव छड़पिकऽ कल्लू चौधरीक लग आबि गेल— "की कयलौं हमर मामीकें बाजू, बाजू नहि तऽ नरेटी दबा देब आइ । हमरा पहिनेसँ विश्वास छल, अबस्से अहींक चालि अछि । आइ अपने कबूल कयलहुँ । कहाँ अछि हमर मामी ? बाजू...जवाब दियऽ ?"

कल्लू चौधरीक घेँट झुकि गेलनि । कोनो जवाब नहि देलथिन । क्रोधावेशमे जे बाजि गेल छलाह, तकर बाद बजबा लेल किछु फुरिये नहि रहल छलनि । दलानक चारू कात गामक लोक जमा भऽ गेल छलनि– बड़का भीड़ ।

आ प्रणव कंठपर चढ़ल छलनि–"बाजु, कतऽ अछि हमर मामी ? नहि तऽ आइ काण्ड भऽ जायत ।"

मुदा प्रणवक काण्ड करबासँ पहिने दोसरे काण्ड भेलैक । लगलैक जेना हवेलीक भीतरसँ क्यो दरबज्जा पीटि रहल होइ । फाटकपर बाहरसँ जिंजिर लागल छलैक । मुदा लगातार दरबज्जा पीटि रहल छलैक क्यो आ ओइ दरबज्जा पिटबाक ध्वनिक संग कल्लू चौधरीक झुकल घाड़ आर झुकैत गेलनि, आ आकृति कारी झाम होइत गेलनि ।

मुदा प्रणव ओहिना गरजैत रहल– "बाजू, कतऽ अछि हमर मामी ? जवाब दियऽ ।"

तावत क्यो फाटकक जिंजिर खोलि देलकै आ फाटक खुजैत देरी एकटा स्त्री दौड़िकऽ दलान लग पहुँचि गेलैक, एकदम प्रणवक लग–"जवाब ओ की देताह ? जवाब हम दैत छी, यैह छथि अहाँक मामी– देखथु गाम भरिक लोक ।"

भीड़मे खलबली मचि गेलैक । दलानक ऊपर प्रणवक मामी ठाढ़ि छलैक । उज्जर नूआ, खूजल केश आ विक्षिप्त सन आँखि ।

सभकें बेराबेरी देखैत बजलैक–"सभ क्यो नीक जकाँ देखि लियऽ । हमहीं छी ओ विधवा जे अपन स्वामीक नह-केशक राति अपन घराड़ी बन्धक राखऽ अइ बड़का हवेलीमे आयल रही । जकरासँ भरना रखबाक लेल सादा कागतपर औंठा छाप लेने छलाह । मुदा टाका देबाक बदला की देलनि ई गामक प्रतापी जमींदार ? कने पुछियनु गामक सभ लोक । सभटा लूटि कऽ छौ मास धरि हाथ-पयर-मुँह बान्हि हवेलीमे रखने रहलाह । राति कऽ एक बेर बन्हन खोलि अन्न-जल दैत छलाह । फेर बन्हन खोलि देलनि । मुदा हवेलीक बाहर कतऽ जैतहुँ, ककरा लग जैतहुँ ? ककरा देखबतिऐक ई कारी चेहरा ? अइसँ नीक तऽ यैह जे

लोक बूझय जे अभगली पड़ा गेल, कतहु मरि-खपि गेल । मुदा आइ जखन सभक सामने ई अपने उघारि देलनि ओ बात— तऽ फड़िछाकऽ बूझि लियऽ सभ । गामक एकटा विधवा पुतऽहु, एकटा विधवा बेटी मदति माँगऽ आयल छलनि आ बाप ओकरा कुलटा बना देलथिन ।"

प्रणव मामीकें भरि पाँज पकड़ि लेलकनि—"मुदा बेटा जीबैत छल अहाँकें ? ओकरापर विश्वास करितहुँ । किएक रहलहुँ अइ कालकोठरीमे एतेक दिन ? एतेक पैघ अविश्वास हमरापर ?"

मीना प्रणवक छातीपर मूड़ी पटकैत बाजल—"अविश्वास अहाँपर नहि, अपन भाग्यपर । अहाँक भविष्य बनबऽ अपनासँ दूर पठौने रही आ ई अपमान-कथा, ग्लानि-कथा अहाँक संग जोड़ि दितहुँ तऽ अपने हाथे अहाँक भविष्य अन्हार कऽ दितहुँ । हमरा बुते से पार नहि लागल । हम थोड़े ओइ काल-कोठरीमे रही ! हम तऽ तहिये मरि गेलौं जहिआ अइ हवेलीमे पैर देलहुँ । मुर्दाकें एतऽ राखू वा ओतऽ, कोन फर्क पड़ैत छैक ?"

हवेलीक नाम अबैत देरी प्रणवकें जेना करेण्ट लगलैक । कूदिकऽ कल्लू चौधरीक छातीपर सवार भऽ गेलनि । चारू कातसँ लोक दौड़लैक । पकड़िकऽ दूर हँटौलक ओकरा ।

मुदा कल्लू चौधरी ओहिना घाड़ झुकौने बैसल रहलाह । ने एको बेर कड़कलाह, ने अपन लठैत सभकें सोर पाड़लथिन । एकटा भनसियाक नाति, गामक एकटा ऐरे-गैरे लोक दरबज्जा चढ़ि बेइज्जति कयलकनि, हाथ तक उठा देलकनि, मुदा हुनकर बकार नहि फुटलनि । सम्पूर्ण संज्ञा जेना लुप्त भऽ गेल छलनि !

प्रणवक क्रोध शान्त भेलैक । मामीक हाथ पकड़ैत बाजल—"चलू मामी !"

मीनाकें जेना अविश्वास भेलैक—"हम चलू ? कतऽ ?" प्रणव हुनकर हाथ झिकैत कहलकै—"हमर घर, आर कतऽ ? ककरो देल घर-घड़ारी नहि चाही हमरा । हमरा मामी भेटि गेलीह— बस्स, चलू ।"

अमित सहमल ठाढ़ छलैक । प्रणवकें विदा होइत देखि दौड़िकऽ पैरसँ लपटि गेलैक । प्रणव ओकरा कोरामे लैत कहलकै—"तोँ नहि डेरो । तोँ हमरे लग रहबैं । तोहर मायकें वचन देने छियौक । आ फेर अमितकें मामीक कोरामे ओकरा दैत कहलकनि—"लियऽ मामी ! अहाँक कोरामे फेर एकटा मातृहीन प्रणव । एकरो मनुक्ख बना दियौक ।"

मामीक कोरामे अमित । प्रणवक हाथमे मामीक हाथ । तीनू आगू बढ़ल ।

तखन जेना एतेक कालसँ सन्न ठाढ़ शीलाकें होश भेलैक । कनेक लग आबि आस्तेसँ बापकें कहलकै— हमहूँ जाइ छी बाबूजी ! मुदा जे-किछु आइ देखलहुँ, सुनलहुँ ताहिसँ नीक तऽ यैह होइत जे माला दीदी जकाँ हमरो प्राण छूटि गेल रहैत । भगवानसँ एतबे प्रार्थना रहत जे जिनगीमे फेर कहियो अहाँक सामने नहि लाबथि । कोना देखि सकब अहाँक मुँह ?"

आ दौड़िकऽ प्रणवक संग मिलि गामक बाहरक बाट धयलक ।

पटना पहुँचि जखन प्रणव ओकर संग ओकर डेरा विदा होबऽ लगलैक तऽ रोकि देलकै—"नै, हम एकसरे जायब ।"

मामी अमितक संग डेरामे सभ दिस घूमि रहल छलथिन । शीलाक बातपर प्रणव कहलकै— "नीक होइत जे हमरा चलऽ दितहुँ । से नै तऽ मामियोकें संग कऽ लैत छियनि, अमितो रहत । झा साहब आबि गेल हेताह, तऽ सभटा बात स्पष्ट कऽ देबनि ।"

मुदा शीला नहि मानलकै—"ककरो जयबाक काज नहि । हमरा एकसरे जाय दियऽ ।"

—'अहाँक इच्छा' प्रणव बेशी जिद नहि कयलकै ।

साँझखन शीला घुरि अयलैक । देखियेकऽ प्रणवकें आशंका भेलैक—"की भेल ?"

"वैह जे एकदिन हेबैक छल । आइ सभ दिन लेल ओ घर छोड़ि आयल छी । एना कहू जे निकालि देल गेल छी ।" शीलाक आकृति देखि प्रणवक आशंका बढ़ि भेलैक ।

"कारण ?" ओ पुछलकै ।

"अहूँसँ बड़का कारण आर की चाही जे हम अहाँक संग एकसरि गाम गेल रही, बिना हुनकासँ पुछने । एकटा भ्रष्ट स्त्री लेल हुनका घरमे स्थान नहि छनि ।"

"ई तऽ बड़का अन्याय छनि हुनकर । पढ़ल-लिखल लोक भऽ एहन छोट विचार ! चलू हमरा संग, आइ फड़िछाइये लैत छी ।"

"आइ सभटा फड़िछाकऽ आयल छी हम । आब ककरो जयबाक काज नहि अछि । गेल तऽ हम छलहुँ भोरे । चौखटियेपर ठाढ़ छलाह जेना भीतर जाय नहि देताह । देखितहि गरजलाह–"कतऽ गेल छलहुँ ?''

"हँट्ू, भीतर आबऽ दियऽ पहिने ।" हुनका धकलैत जकाँ हम भीतर पैसि गेल रही । मुदा अपन कोठलीमे जयबा लेल डेग उठौने रही कि ओ फेर गरजलाह– ''ओम्हर कतऽ ? पहिने बातक जवाब देने जाउ । कतऽ गेल रही, आ ककरा संग गेल रही ?"

"गाम लेल रही प्रणवक संग । एकटा जरूरी काज आबि गेल छल ।"

"केहन जरूरी काज ?" ओ ओहिना अड़ल छलाह ।

"से बादमे कहब । पहिने नहाय-सोनाय दियऽ ।"

–"नहि, बादमे नहि ? पहिने कहू । किएक गेलौं ओकरा संग, कोन काज छल ?"

–"यदि जवाब नहि दी तऽ ?"

–"तऽ अखने नंगटिया कऽ घरसँ बाहर कऽ देब । जवाब देब की अहाँ ? हमरा संग ई त्रिया-चरित्र नहि चलत ।" ओ एकदम अभद्रतापर उतरि आयल छलाह । हमरो जिद धऽ लेलक–"तऽ करू बाहर नंगटिया कऽ, हमहूँ देखी ।"

ओ झिक्का-तीरी करऽ लगलाह । सभटा नूआ तीरी-तीरी कऽ देलनि, साया सेहो । देहोपर कोनो वस्त्र नहि रहऽ देलनि । हम हाथ जोड़ैत रहि गेलहुँ मुदा ओ नंगटिया कऽ छोड़लनि ।

हमरा भेल जे आब क्रोध शान्त भऽ जयतनि । मुदा ओ तऽ एकदम प्रचण्ड भऽ गेल छलाह–"आब निकलू, एहिना घरसँ बाहर । जाउ ओकरे संग, जकरा संगे दू दिन मौज कयलहुँ ।"

हम पैरमे मूड़ी गोंति कऽ चुक्की माली बैसि गेलहुँ, मुदा ओ हाथ पकड़ि घिसिआबऽ लगलाह । लागल जेना अखने अहिना नंगटे घरसँ बाहर कऽ देताह आ हमरामे जेना एकटा विचित्र साहस आ शक्ति आबि गेल । एकदम हाथ छोड़ा तनिकऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ–"आब लगाउ तऽ हाथ देखा दैत छी । अहाँ मनुख नहि,

राक्षस छी । अपन स्त्रीकेँ नांगट कऽ घरसँ बाहर कऽ रहल छी । अहाँकेँ भगवान अइ अपमानक बदला देताह । मुदा आइ हमर स्त्रीत्व अखने अहाँकेँ किछु सबक देत । आब बढ़ू तऽ कनियो आगू ।"

ओ क्रोधे आन्हर छलाह । फेर लपकलाह । हमरा हाथमे पर्दाक डण्टा आबि गेल । वैह तानि देलियनि–"खबरदार ! हाथ लगैलहुँ तऽ कपार भाँगि देब ।"

हमर रूप देखि ओ सकपका गेलाह । दाँत कीचैत बाहर चल गेलाह–"देखबैत छी मजा अखने ।"

डर भेल । क्रोधे अन्ध छथि । बाहरसँ लोककेँ लऽ अनताह । नांगट आ हाथमे डण्टा लेने ठाढ़ छी हम । अपन रूपपर अपने लाज आ ग्लानि भेल । डण्टा फेंकि देह झँपलहुँ आ बिछौनपर पड़ि कानऽ लगलहुँ ।

किछु काल बाद मोन शान्त भेल तऽ लागल जे आब एना नहि चलत । ओ फेर औताह । फेर काण्ड करताह । आब बाँकिये की रहि गेल अछि ?

हम घरसँ निकलि गेलहुँ । बड़ी काल धरि गंगा कातमे बैसल रही । साहस नहि भेल प्राण देबाक, आत्महत्या करबाक । अहाँ लग आबि गेल छी, कहब तऽ फेर घुरि जायब ।"

शीला सभटा कहि चुप भऽ गेलैक । प्रणव किछु काल बाद कहलकै– "हम घुरि जयबा लेल नहि कहब अहाँकेँ । निर्णय अहाँ अपने करू । मुदा एकटा बात हम कहब । अहाँक एतऽ रहलासँ प्रोफेसर झाकेँ अपन बात प्रमाणित करबामे सुविधा हेतनि ।"

–"अहाँ ओइसँ भयभीत छी, तऽ हम घुरि जाइ ?" शीला उठऽ लगलैक । ओकरा रोकैत प्रणव कहलकै— "बात हमर भयक नहि, अहाँक निर्णयक अछि । सोचि लियऽ, बादमे पछताय ने पड़य । –"सोचि लेने छी । चाहे जान चलि जाय, आब घुरिकऽ नहि जायब ।"

प्रणव जिद नहि कयलकै । सोचलक जे दुख आ अपमानसँ अखन ओ असंतुलित भऽ गेल छैक । मोन शान्त हेतैक, तखन ओकरासँ गप्प करत ।

मुदा तैयो अपना दिस सँ ओ चेष्टा कयने छल । दोसर दिन स्टाफ रूममे प्रोफेसर झा एकसर भेटल छलथिन । ओकरा देखिकऽ घुरऽ लागल छलथिन । प्रणव रोकलकनि–"हमर बात सुनि लियऽ, तखन जायब । शीला बड़ दुखी अछि । ओकरा घर लऽ अबियौक ।"

प्रोफेसर झा ओकरापर व्यंग्यसँ हँसैत कहलथिन–"सूचना लेल धन्यवाद । मुदा हमरा स्त्री-देह लेल एतेक खगता हैत तऽ शहरमे आर वेश्या नहि छैक की ?"

प्रणव हुनकापर लपकल— "रास्कल !" यदि तत्काल स्टाफरूममे आर प्रोफेसर सब नहि आबि जइतैक तऽ प्रणव हुनकर मुँह फुलाकऽ तुम्मा अबस्स बना दितनि ।

मुदा ई घटना सुनि शीलाक मुँह अबस्स फुलिकऽ तुम्मा भऽ गेलैक–"एतेक भार लगैत छी, तऽ हमरा कहितहुँ, हम अपने चल जैतहुँ । हुनकासँ कहि फेर अपमान किएक कयलौं हमर ?"

"गप्प बोझक नहि छैक शीला, भविष्यक छैक । अहाँ रहब एतऽ, अइसँ बढ़िकऽ प्रसन्नताक गप्प आर की भऽ सकैत अछि ? अहाँ किएक बोझ लागब हमरा ? मुदा अहाँ रहि सकब ? कतेक दिन ?"

–यदि हम कहीं सभदिन, हमेशाक लेल, तऽ अहाँकेँ कोनो आपत्ति हैत ?"

बहुत दिनुका बाद शीलाक ठोरपर हँसी पसरलैक आ ओ एकदम भकरार भऽ प्रणवक चेहरापर छिड़िआ गेलैक ।

पहिने अमित स्कूल जाइत छलैक– साढ़े आठ बजे । ब्लू पैण्ट आ उज्जर हाफशर्टपर लाल टाइ लगा जखन ओ 'टाटा पप्पा, टाटा आण्टी, टाटा ग्रैण्ड माँ' करैत अपन बस दिस दौड़ैत छलैक, सभक आकृतिपर प्रसन्नताक लहरि आबि जाइत छलैक, विशेषकऽ शीलाक । अमित बिन-बापक नहि रहलैक । स्कूलमे बापक नाम लिखल छलैक– प्रणव कुमार चौधरी । माला दीदीक बेटा अनाथ नहि भेलैक । नाना जगह नहि देलकै, मौसी अपने दोसरक आश्रयमे पड़ल छलैक । मुदा ओकरा बाप भेटि गेलैक । एकटा बाबी भेटि गेलैक, भागमन्त अछि अमित ।

मुदा प्रणवकेँ लगैत छलैक जेना वैह भागमन्त अछि । जिनगीसँ मामी चल गेल छलैक, सभटा कोनादन लगैत छलैक । मुदा मामी भेटि गेलैक आ फेर सभटा ओहिना भऽ गेल छलैक ।

ओहूसँ बेशी कहबाक चाही । शीलो आबि गेल छलैक । शीलाकेँ नीक जकाँ ओ कहियो नहि बूझि सकलैक । लगैत छलैक जेना किछु छलैक ओकर मोनमे । मुदा स्पष्ट ने कहिओ किछु ओ बूझि सकल, ने शीले कहलकै ।

मुदा ओइ दिन शीला साफ कहि देलकै– एतहि रहतैक हरदम । आब अइसँ बेशी की कहितैक ओ ? मुदा तैयो प्रणवकेँ साहस नहि होइत छलैक । नहि जानि की बुझैक ?

ओना सभटा तऽ वैह सम्हारने छलैक । घर-गृहस्थी, रुपैया-पैसा । मामीकेँ तऽ बस्स अमित छलनि, ओहीमे लागल रहैत छलीह । दिनभरि ओ स्कूल रहैत छलनि, प्रणवो कालेज चल जाइत छल, तखन नहि जानि की गप्प करैत छलीह दुनू, प्रणवकेँ पतो नहि लगैत छलैक । ओकर सभ-किछु व्यवस्थित ढंगसँ चलि रहल छलैक । भोरे अमित स्कूल जाइत छलैक, दस बजे ओ कालेज जाइत छल । चारि बजे घुरिकऽ अबैत छल तऽ मामी आ शीलाक संग अमितो प्रतीक्षामे रहैत छलैक । भरिसक शीले ओकरा 'पप्पा' कहनाइ सिखा देने छलैक आ मामीकेँ ग्रैण्ड-माँ । मामी पहिने बुझबे नहि करथिन । बुझलथिन तऽ बड़ हँसी लगलनि ।

साँझ कऽ बाहर छोट-छीन लॉनमे सब बैसैत छल । ओतहि चाय लऽ अनैत छलैक शीला । फेर अमितकेँ पढ़बऽ लगैत छलैक अपन कोठलीमे । बगलवाला कोठलीमे प्रणव अपन प्रतियोगिताक तैयारीमे जुटि जाइत छल । मास भरि बाद परीक्षा छलैक, आइ.ए.एस.क । खा-पी कऽ अमित मामीक कोठलीमे सूतऽ लेल चल जाइत छलैक आ प्रणव आ शीला अपन-अपन कोठलीमे । तीनिये कोठलीक डेरा छलैक । ड्राइंगरूमक बदला बरण्डा छलैक आ छोट-छीन लॉन । मुदा प्रणवकेँ लगैत छलैक जेना सभ किछु राजसी ठाठसँ चलि रहल होइ ।

खाली एकटा कमी छलैक । सदिखन प्रणव सोचैत छल । कतेको बेर सोचिकऽ शीलाक कोठली तक गेल छल आ फेर बिनु कहने घुरि आयल छल । कहीँ अपन अपमान ने मानैक ? बड़ स्वामिमानिनी छलैक शीला । आश्रय स्वीकार कयने छलैक तऽ प्रेमो स्वीकार कऽ लेतैक ?

कखनो लगैत छलैक ई ओकर घमंड छलैक । ओ सब-किछु शीलेक मुँहसँ सुनऽ चाहैत छल । आगू बढ़ि हाथ पकड़ि कहैत किएक ने छलैक ? मुदा तखने मोन करैत छलैक– शीला बिआहलि छलैक, स्वामी जीवित छलैक । कानूनी रूपसँ पृथको ने भेल छलैक । ओकरासँ एहन प्रश्न करब अनर्गल आ अपमानजनक नहि हेतैक ? आ कानूनी कारवाइ सँ शीलाकेँ डाइवोर्स यदि भेटियो जाइ, तऽ अपन समाज तलाक आ पुनर्विवाहकेँ स्वीकार करतैक ? सम्पूर्ण समाजमे हंगामा मचि जयतैक ।

मुदा ताहि लेल ओ किएक डेरायत ? एतेक दिन धरि की कयलकै ई समाज ओकरा लेल ? ओकर मामीकेँ, विधवा मामीकेँ, एकटा बूढ़ प्रतिष्ठित लोक

भ्रष्ट कयलकै, की कयलकै समाज ? मालाकेँ ओकर पित्ती बेचि देलकै, कहाँ छलैक समाज ? मधु पलटू मिसर संग राति-बिराति बौआइत छलैक, कहाँ रोकैत छलैक समाज ? शीलाकेँ स्वामी नांगट कऽ घरसँ निकालि रहल छलैक, कहाँ बचौलकै समाज ?

ओ तऽ सभक सामने स्वीकार करतैक ओकरा । फेरसँ जिनगी शुरू करबाक अधिकार पुरुषकेँ भेटि सकैत छैक, तऽ स्त्री किएक वंचित रहत ? शीलाक कोन दोष छलैक ? ओ तऽ सभटा अपमान, लांछन सहि निर्वाह करैत छल । मुदा जखन बेपर्द घरसँ निकालऽ लगलैक, तखन की करैत ?

नहि, ओकरा नहि डेरयबाक चाहिऐक । साहसपूर्वक घोषणा करबाक चाहिऐक ? सभक समक्ष, सम्पूर्ण समाजक समक्ष...

मुदा शीला राजी हेतैक तखन ने ? ओकरा शीलासँ स्पष्ट पुछबाक चाहिऐक । ओइ दिन ओ कहने रहैक—"हम एतहि रहब, सभ दिन, हमेशा ।" आब प्रणव पुछतैक—"अहाँ हमरे लग रहू, हमेशाक लेल । रहब किने ?"

छौ मास ओहिना बीति गेलैक । देरी करब ठीक नहि छलैक । प्रणवकेँ जल्दिये पूछि लेबाक चाहिऐक ।

सुग्गी रानी, सुग्गी रानी, कतऽ जाइ छी ?

सायँ-पूत मारलक-ए रुसल जाइ छी ।

हमरा लग रहब ?

रहब ने किएक !

खाय की देब ?

सुक्खा रोटी !

सूतऽ की देब...?

शीतलपाटी !

मामी खिस्सा कहि रहल छलथिन अमितकेँ । अमित मामीक करेजसँ सटल, दम सधने खिस्सा सुनि रहल छल । बाटमे जे क्यो ठहरबाक आग्रह करैत छलनि, सुग्गी रानी एक्के प्रश्न पुछैत छलथिन— 'खाय की देब ?"

मुदा शीला तऽ जयबाक सूचना मात्र देबऽ आयल छलैक जेना— "हम जा रहल छी । आब आर एतऽ नहि रहि सकब । हमरा जाय दियऽ ।"

ओहि सुतली रातिमे अचानक कोठलीमे आबि गेल छलैक शीला । ओ सुतबाक उपक्रम करैत कान पथने दोसर कोठलीसँ अबैत मामीक स्वर सुनि रहल छल । कतेको बेर सुनल खिस्सा छलैक । सैकड़ो बेर मामी ई खिस्सा सुनौने हेतैक । प्रणवकेँ अपन नेनपन मोन पड़ि रहल छलैक । लागि रहल छलैक जेना मामी बगलमे पड़ल छलैक आ ओ आँखि मुनने खिस्सा सुनि रहल छल । निन्नसँ पपनी भरिआयल जा रहल छलैक ।

तखने लगलैक जेना क्यो बिछौना लग ठाढ़ होइ— एकदम समीप । आँखि खोलितहि अकचकाकऽ उठि बैसल । ओकरा ओना उठैत देखि शीलो दू-एक डेग पाछाँ हँटि ठाढ़ भऽ गेलैक । कोठलीक बीचो-बीच ठाढ़ छलैक शीला, एकदम शान्त, एकटक ओकरापर दृष्टि गाड़ने । प्रणवकेँ किछु असाधारण सन लगलैक । पुछलकै— किछु कहब ? शीला ओहिना शान्त-स्थिर ठाढ़ रहलैक ओकरापर दृष्टि गाड़ने । ओकर प्रश्न जेना सुनबे नहि कयलकै । बिजलीक रोशनीमे ओकर सम्पूर्ण देह एकदम स्थिर लागि रहल छलैक— स्पन्दनहीन । पलक टांगल— एक्को बेर नहि खसैत होइ जेना ! प्रणव डेराकऽ ठाढ़ भऽ गेल आ आर समीप होइत बाजल—"की बात छैक ? किछु कहबाक अछि ?"

शीला चौंकलैक । लगलैक जेना ओकर बात सुनि लेने होइक । देहमे स्पन्दन भेलैक । पपनी खसि पड़लैक आ खसले जकाँ रहलैक । ओहिना निच्चाँ तकैत किछु काल बाद बजलैक—"हम जा रहल छी । आब आर नहि रहि सकब एतऽ । हमरा जाय दियऽ ।"

प्रणव अइ सूचना लेल एकदम अप्रस्तुत छल । भेलैक जेना शीला उद्विग्न होइक, पुरना बात सभ फेर अशान्त कऽ देने होइ । कोमल स्वरमे कहलकै—"एना क्यो सोचय ? आब ई घर छोड़िकऽ आर कहाँ जायब अहाँ ?"

दप्पसँ शीलाक दुनू आँखि बरि उठलैक । फेर ओहिना दुनू आँखि ओकर चेहरापर गाड़ैत अनचिन्हार स्वरमे बाजि उठलैक—"सत्ते कहैत छी । आब ई घर छोड़िकऽ आर कोन आश्रय अछि हमर, हमरा लोकनिक ?"

प्रणवकेँ अइ बदलल स्वरपर आश्चर्य आ दुख भेलैक, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत शान्त स्वरमे बाजल—"ई आश्रय नहि, अधिकार थिक अहाँक शीला ! हाथ बढ़बिते पाबि सकैत छी एकरा ।"

"सैह तऽ हमहूँ कहैत छी जे हाथ बढ़बिते ई आश्रय भेटि सकैत अछि, भेटल अछि । अहाँक दया आ सामर्थ्य असीम अछि । हमरा सन-सन लोकके अहाँ अबस्से आश्रय दऽ सकैत छिऐक । अहाँक अइ सामर्थ्यपर रत्ती भरि अविश्वास नहि अछि हमरा ।"

प्रणवके लगलैक जेना व्यंग्य कऽ रहल होइक शीला । मुदा आकृति एकदम शान्त छलैक, एकटा दृढ़ निश्चयक शान्ति पसरल छलैक चेहरापर । किछु आहत होइत बाजल-"गप्प सामर्थ्यक नहि छैक शीला, स्नेह आ समर्थनक छैक, विश्वास आ प्रेमक छैक । विश्वास आ प्रेमसँ स्वीकार भेल आश्रय सुखद होइत छैक आ मात्र सामर्थ्यक भरोसपर स्वीकार आश्रय बन्धनो लागि सकैत छैक ।"

"सैह तऽ हमहूँ कहैत छी । दयाके प्रेम बूझि ककरो आश्रय देलापर बादमे पछतायलो जा सकैत अछि ।" शीलाक स्वर ओहिना शान्त छलैक ।

"दया !" प्रणवके लगलैक जेना कानमे पघिलल शीशा पड़ि गेल होइ । चोटायल दृष्टि शीलाक चेहरापर गाड़ैत बाजल-"जे किछु हम कयलहुँ अछि से मात्र दयावश, यैह सोचैत छी अहाँ ?"

"अहाँके अधलाह लागि रहल अछि"-शीला बीचहिमे बाजि उठलैक-"मुदा आइ अधलाह लगलासँ जीवन भरि एकटा अनिच्छित बोझ ढोबासँ बाँचि जायब, तेँ हमर बात अधलाहो लगलापर सुनि लियऽ । हम जनैत छी जे अहाँ बहुत-किछु कयलहुँ अछि हमरा लेल, माला दीदी आ अमित लेल । मुदा ताहिसँ हमरा ई भ्रम भऽ जाय जे अहाँ हमरासँ प्रेम करैत छी, ततेक बकलेल आ दुखसँ आन्हर हम आइयो नहि भेल छी । बिआह करबा लेल तऽ अहाँ मालो दीदीसँ तैयार भऽ सकैत छलियनि, एकटा पतिताक उद्धार— अहाँक आदर्श व्यक्तित्वके ई विचार प्रेरित करैत । आइ शीला लांछित अछि, समाज आ परिवार द्वारा तिरस्कृत आ बहिष्कृत अछि, ओकरो उद्धार करब अहाँके नीक लागि रहल अछि, आर अहाँ तैयारो छी । मुदा वस्तुतः अहाँ हमरा दुनू बहिनसँ घृणा करैत छी, अहाँक दया एकटा प्रतिशोधक रूप थीक ।"

शीला एक्के साँसमे बाजि गेलैक । मुदा तैयो शान्त लागि रहल छलैक । प्रणवके सभटा असह्य लागि रहल छलैक । शीलाक आरोप ओकर हृदयके मथि रहल छलैक, एकटा आदर्शवादी हृदयहीन कहि रहल छलैक ओकरा । बड़ मस्किलसँ ओकर मुँहसँ शब्द बहरेलैक-"हम हृदयहीन आदर्शवादी छी । मात्र प्रतिशोध लेबाक हेतु अहाँ सभपर दया-माया देखा रहल छी । आरो किछु कहब बाँकी रहि गेल अछि ?"

"कहबाक तऽ बहुत-किछु अछि आ आइ सभटा कहियेकऽ जायब । फेर दोबारा मौका भेटय वा नहि भेटय । धीया-पूतामे अहाँक गरीबी आ अभाव पर हम दुनू बहिन बड़ हँसैत छलहुँ । कने हाथ छूलापर माला दीदी अहाँके चाट मारि देने छलीह । शनीचरी नहि अनलापर जखन अहाँक उघार देहके गुरुजी खजूरक छड़ीसँ फुला दैत छलाह, हम दुनू बहिन आह्लादित भऽ हँसैत छलहुँ । अहाँके बिसरि गेल हैत ओ सभ ? ओकरा जाय दियऽ । धीयापुताक गप्प छलैक ओ । मुदा ई कोना बिसरल हैत अहाँके जे एकटा किताब माँगऽ आबिकऽ हमर घरमे हमरा सोझाँमे अपमानित भेल रही अहाँ ? तहिया बच्चा नहि रही हम आ किताब देबा लेल हमहीं बजौने रही अहाँके । बकार खूजल हमर ? अहाँके अपमानित करबाक षड्यंत्रमे साझी भेल रही हम । इहो बिसरि गेल हैत ? अहाँक स्थानपर हमहूँ रहितहुँ तऽ किछुओ नहि बिसरैत हमरा । एक-एक बातक गीरह बान्हिकऽ रखितहुँ हम । माला दीदीक बौआइत आत्माके शान्ति देबा लेल हुनकर सन्तानके सही स्थान पहुँचाबऽ गेलियनि, की भेटल अहाँके ? आइ तऽ अहाँके सभ-किछु भेटि सकैत अछि, इच्छा करितहिं अपन अपमान करऽवलासँ बदला लऽ सकैत छी अहाँ । मुदा अहाँ से सभ नहि कयलहुँ, नहि करब, हम जनैत छी । मुदा सभटा बिसरि कोना जायब अहाँ आ अहाँ बिसरियोकऽ संग राखियो लेबैक अमितके, हमरो, तैयो कोना बिसरत हमरा सभटा बात ? अमित बच्चा अछि, ओ रहि सकैत अछि, पैघ भेलापर जखन सभटा सुनत-बुझत तखन चाहे जेहन लगैक । भऽ सकैत अछि जे ओ कहियो किछु नहि जानय । भगवान करथुन नहि जानय । मुदा हम कोना सभटा जानिकऽ, सभटा बिसरिकऽ एतऽ रहि सकब ?"

प्रणव अवाक् भेल सभटा सुनैत रहल । शीलाक आकृतिपर प्रमादक कोनो लक्षण नहि छलैक, नहि तऽ ओकरा सन्देह होइतैक जे बताहि भऽ गेल छैक । मुदा एना किछु काल धरि ओ आर बजैत रहितैक तऽ प्रणव अबस्से बताह भऽ जाइत । शीलाके जयबाक अनुमति चाहियैक, ओकरा देबऽ पड़तैक । नहि, अनुमति देबाक कोनो अधिकार ओकरा नहि छलैक । शीला सूचना देबाक औपचारिकता निबाहऽ आयल छलैक । ओकर स्वीकृति-अस्वीकृति अर्थहीन छलैक । शीलाक निर्णय बदलल नहि जा सकैत छलैक ।

ओकरा चुप्प देखि शीला टोकलकै-"अहाँके अधलाह लागि गेल ? लगले हैत । मुदा कतबो अधलाह लागय तऽ मोन छोट नहि करू । हमरासँ घृणा करू, अपमानित कऽ घरसँ निकालि दियऽ, मुदा एना मोन छोट नहि करू । हमरा जयबाक अनुमति दियऽ, हमरा नहि रोकू"-शीला अनुनय करऽ लगलैक ।

–"कोनो तरहे नहि रुकब अहाँ ?" अपन मुँहसँ निकलल शब्द प्रणवकेँ अपने अनचिन्हार लगलैक जेना अनचोकेमे कण्ठसँ बहरा गेल होइ ।

–"हमर रुकि जयबाक रस्ता अछि, अहाँ चाही तऽ हमरा रोकि सकैत छी । मुदा अहाँ बुते से पार नहि लागत"–शीला जेना चुनौती देलकै ओकरा ।

प्रणव उल्लसित होइत बाजल– "लागत, अलबत्त पार लागत । अहाँ जे कहब, सैह करब हम ।"

ओइ क्षणमे प्रणव एकटा भावुक प्रेमी सन लागि रहल छल– शीलाक स्वीकृतिक आशासँ हुलसल, एकटा एहन प्रेमी जकर मोनक बात वर्षोक संयम तोड़ि बहरा गेल होइ आ ओ समर्पित भावसँ स्वीकृतिक प्रत्याशामे ठाढ़ हो ।

मुदा शीलाक आकृतिपर ने लाजक लालिमा छलैक आ ने उल्लासक । ने स्वीकृतिक सहजता छलैक, ने अस्वीकृतिक कठोरता । एकटा विचित्र सन शान्त आ तटस्थ भाव छलैक । बाइस–तेइस बरखक शीला अनायास बड़ प्रौढ़, बड़ पैघ भऽ गेल छलैक । रातुक एकान्तमे अपन बालसंगीक मुँहे एकटा स्पष्ट स्वीकृति सुनियोकऽ, ओकर विकल आकृति देखियोकऽ ओकर देहमे रोमांच नहि भेलैक, मोनमे सिहरन नहि भेलैक । ओहिना शान्त स्वरमे बजलैक–"तऽ रोकि लियऽ हमरा । रातुक एकान्तमे एकसरि अहाँक कोठलीमे आयल छी हम । हमर नारीत्वकेँ अपमानित आ कलंकित कऽ दियऽ । फेर हम कहियो जयबाक नाम नहि लेब । अहाँक जबर्दस्ती सहि लेब हम, मुदा ई क्षमा सहन नहि हैत । आ अहाँक बदलो सधि जायत । एक दिन अहाँक मामीकेँ हमर बाप...'

''चुप्प भऽ जाउ । अहाँ होशमे नहि छी । चाहे बताहि भऽ गेल छी, चाहे हमरा अपमानित करबा लेल स्वांग धयने छी । अपन अपमान हम सहि लेब, मुदा अहाँक अपमान हम नहि सहि सकब । अहाँ जाउ, अहाँकेँ रोकबाक चेष्टा करब हमर मूर्खता छल ।"

आब शीला हँसलैक– एतेक कालक बाद । आ ओइ हँसीक संग ओ प्रौढ़ आ बड़की टा लगैत शीला बिला गेलैक आ एकटा बाइस वर्षक स्त्री, नहि, कुमारि कन्या सन सामने ठाढ़ भऽ गेलैक– रूपक चमचमाहटि, यौवनक मादकता आ समर्पणक स्निग्धताक संग । एकदम सहज आ चिन्हार शीला । प्रणवक बालसंगी शीला । मुदा आब प्रणव ओकरा नहि देखि रहल छलैक । ओ तमतमायल मुँह घुमौने ठाढ़ छलैक । शीलाक हँसैत आकृति क्षण भरिक लेल म्लान भेलैक । मुदा फेर तुरत सहज होइत बाजि उठलैक–"तामसोमे अहाँ दण्ड नहि दऽ सकैत छिऐक ककरो ।

जबर्दस्ती रोकि नहि सकैत छिऐक ककरो, बल–प्रयोग नहि कऽ सकैत छिऐक । मुदा जयबाक स्वीकृति दैये रहल छी, तऽ एना तमसाकऽ ठाढ़ नहि होउ मुँह घुमाकऽ । सहज भऽकऽ, हँसि कऽ बिदा करू हमरा जे मोन मे साहस रहय जे इच्छा कयलापर फेर एतऽ घुरि सकैत छी । एकटा आश्रय सुरक्षित अछि हमर ।"

एहि बीच प्रणव सहज भऽ गेल छल । शीला दिस तकैत हँसिकऽ बाजल–"आइ सत्ते बड़ चतुर आ तैयार भऽ कऽ आयल छी अहाँ । चित्त–पट दुनू अहाँक । आइ धरि, एतेक दिन धरि देखि सुनि, संग रहियोकऽ जेना चीन्हि नहि सकलहुँ अहाँकेँ । एकदम अपरिचित आ रहस्यमयी भऽ गेल छी अहाँ । पहिने हमर स्नेह अहाँकेँ दया आ आश्रय लागल, आ आब जाइत–जाइत ओ आश्रयो संदिग्ध लागि रहल अछि । हमर आश्वासनो अहाँकेँ दयापूर्ण आ देवत्वभरल लागत–तेँ अहाँकेँ आश्रय सुरक्षित रहबाक आश्वासनो नहि देल जा सकैत अछि ।"

अइ बेर शीला खिलखिलाकऽ हँसलैक, हँसैत–हँसैत घूमिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक, जेना किछु नुका रहल होइक ! फेर ओहिना हँसैत घूमि गेलैक आ बजलैक– ''हम तऽ पहिने कहलहुँ जे अहाँ तमसाओकऽ किछु छीनि नहि सकैत छियैक ककरो, किछु दैये सकैत छियैक । आ अहाँक ई आश्वासन कतेक पैघ सम्बल रहलैक ककरो से प्रायः अहाँ आइ विश्वास नहि करबैक ।" अन्तिम पाँती बजैत–बजैत जेना शब्द कण्ठमे फँसि गेलैक । कने खखसिकऽ कण्ठ साफ करैत आ आँचरसँ आँखि–मुँह पोछैत बजलैक–"एकदम अज्ञात आ अनिश्चित बाटपर नहि जा रहल छी हम । एकटा नौकरी भेटि गेल अछि हमरा । हमर पता..."

"ओकर कोन प्रयोजन ?" प्रणव बीचमे बात कटैत कनेक तीव्रतासँ कहलकै ।

कनेक आहत जकाँ भेलैक शीला, मुदा तुरत सम्हरैत बजलैक–"ठीके कहैत छी अहाँ । हमर पताक प्रयोजन अहाँकेँ नहि हैत ? प्रयोजन हमरा भऽ सकैत अछि आ अहाँक पता हमरा लग अछि, रहबे करत ।''

किछु काल चुप्पी पसरि गेलैक, जेना कहबा लेल किछु नहि रहि गेल होइ वा कहबाक कोनो बहाना नहि रहि गेल होइ । दुनू स्तब्ध ठाढ़ रहल बड़ी काल । फेर प्रणव टोकलकै–"कखन जायब ?"

"तैयार भऽकऽ आयल छी । दिनमे अमित जाय नहि देत । मामियो जिद करतीह । परसू ज्वाइन करबाक अछि । आइये रतुका गाड़ीसँ जा रहल छी । साढ़े एगारह बजे ट्रेन अछि ।" शीला जेना प्रश्नक प्रतीक्षेमे छलैक, सभटा कहि गेलैक ।

—"साढ़े दस बाजि गेल अछि । चलू, पहुँचा दैत छी स्टेशन । अहाँ तैयार होउ, हमहूँ पाँच मिनटमे तैयार भेल अबैत छी ।" प्रणव टेबुलघड़ीमे समय देखैत बजलैक ।

—"नहि, अहाँ स्टेशन नहि जायब । हमरा एकसरे जाय दियऽ । रिक्शा बजबा लेने छी हम, काज जोगर पैसो बहारकऽ राखि लेने छी, बाँकी पैसा आ हिसाब अलमारीमे राखल अछि ।"

"एकदम हिसाब साफ कऽ जा रहल छी अहाँ । बेश जाउ ।" प्रणवकेँ आगू बजबा लेल प्रायः शब्द नहि भेटलैक ।

शीला गेलैक नहि, ओहिना ठाढ़ रहलैक किछु काल । फेर एकदम लग आबि बजलैक–"अहाँक हिसाब साफ करबाक चेष्टा करी, एतेक क्षुद्र आ नीच नहि छी हम । गलती कऽ सकैत छी । भऽ सकैत अछि फेर गलतिये कऽ रहल होइ । मुदा अहाँक हिसाब साफ कऽ जयबाक दावा करबाक नीचता नहि कऽ सकैत छी ।"

शीला ततेक समीप आबि गेल छलैक जे ओकर साँस प्रणवक कण्ठमे लागि रहल छलैक । क्षण भरिक लेल ओकर इच्छा भेलैक जे एहिना, एही क्षण सभटा जड़ भऽ जाइ । मुदा दोसरे क्षण शीला घूमिकऽ कोठलीसँ बाहर जा रहल छलैक । आ ओकर किछु बजबाक पूर्व कोठलीसँ बाहरो जा चुकल छलैक ।

प्रणव जल्दीसँ खिड़की लग आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेल । बाहर गेटपर एकटा रिक्शा ठाढ़ छलैक । रिक्शा विदा भेलैक । शीला घुरिकऽ तकलकै । प्रणवकेँ लगलैक जेना ओकरा खिड़कीपर ठाढ़ देखि लेने होइ । ओ पाछाँ हँटि गेल अपनापर कने खौँझ आ तामस भेलैक जे किएक ऐना ठाढ़ भेल ? सभटा समाप्त भऽ गेलैक आइ, ओकरा फेरसँ शुरू करबाक चेष्टा करब व्यर्थ छलैक ।

मामीक खिस्सो समाप्त भऽ गेल छलनि, सुग्गी रानी घुरि आयल छलीह । लोलसँ खीर लाड़बाक चेष्टामे बक पाकिकऽ मरि गेल छलाह आ मोटरी–चोटरी लेने सुग्गी रानी घुरि आयल छलीह । अमित सूति गेल छल, भरिसक मामियो ।

मुदा प्रणवक आँखिमे निन्न नहि छलैक । शीला जा चुकल छलैक, ओकर घुरबाक कोनो आस नहि छलैक । ओ सुग्गी रानी जकाँ सभसँ आश्रय नहि मँगतैक; इहो नहि पुछतैक जे खाय की देब ? ओ स्वाभिमानिनी छैक आ अप्पन पैरपर ठाढ़ हेबाक क्षमता रखैत छलैक । अइ विशाल संसारमे असहाय निरुद्देश्य बौअयबा लेल नहि, एकटा उद्देश्यक संग, एकटा नौकरी पाबि घरसँ बाहर पैर देने छलैक । ओकर घुरबाक कोनो आशा नहि छलैक ।

मुदा प्रणव किएक चाहि रहल छल जे ओ घुरि अबैक ? एहन छलैक तऽ जबर्दस्ती रोकि किएक ने लेलकै ओकरा ? ओ तऽ ओकर पौरुषकेँ ललकारनो छलैक, किएक ने बढ़ल आगू ?

नहि, ओकरा घुरबाक बात नहि सोचबाक चाहिऐक । ओकर मंगलकामना करबाक चाहिऐक शीलाक लेल जे ओकर यात्रा सफल होइ, ओकर बाट निष्कंटक रहैक । ओ दुखी छैक, दुनियामे एकसरि छैक । एकटा बालसंगीक शुभकामना ओकर बाटक सम्बल रहतैक ।

मुदा ओ तऽ स्वयम् एकसर छल । ओकरा लेल कहाँ सोचलकै शीला ? ओ तऽ ओकर सभटा भावना आ स्नेहक उपहास कऽ, अपमान कऽ चलि गेलैक । ओकरा मोनसँ मंगलकामना कोना बहरयतैक ?

मुदा एकसर कहाँ छल ओ ? ओकरा लग अमित छलैक, मामी छलैक । ओकरा अपना लेल नहि सोचबाक चाहिऐक । आइ एकदम एकसर भऽ गेल छलैक शीला । ओकर मंगलकामनाक ओकरा सभ दिनसँ बेसी आवश्यकता छलैक ।

अनायास प्रणवक दुनू हाथ शून्यमे जुड़ि गेलैक । नहि जानि, ककरासँ की मंगलकै हाथ जोड़िकऽ ? ओकर मोन शान्त नहि भेलैक । ओ चुपचाप बिछौनपर पड़ि रहल । बहुत रास बात सभ मोन पड़लैक ।

पहिने मोन पड़लैक एकटा स्कूल, स्कूलमे माटिपर बैसल चटियासभ आ आसन बिछा बैसल दू टा छौंड़ी । फेर मोन पड़लैक अपन गालपर एकटा समधानल चाट–"हमर देह छूता, सऽख ने देखू ! पहिने मखानक पातसँ मुँह पोछि आ" । एकटा दोसर दृश्यमे वैह स्वर, मुदा बदलल-बदलल–"किताबे अदला-बदलीमे डँटा गेलैं । च्-च्-च् । हमरा छू कऽ देख । आइ नहि मारबौ हम, आ ने !" आ फेर एकटा तेसर दृश्यमे सौंसे मुँहपर घिनौन चकता सभ लेने फेर वैह स्वर– तोँ साधारणसँ फराक सभ 'दिन छलैं, तोँ राखि सकैत छहिक अमितकेँ" । ओही आकृति आ ओही स्वरक संग जुड़ल एकटा दोसर आकृति आ दोसर स्वर–"कने अपन कौपी दियऽ त" । दोसर दृश्यमे वैह स्वर एकदम बदलल–"अहाँ किएक अयलहुँ एतऽ ? अहाँकेँ बूझल नहि अछि जे अहाँ एकटा अन-चाहल लोक छी एतऽ ?''

मुदा एतऽ रहऽ लेल आयल छलैक शीला । ओहो चाहैत छल जे शीला ओकरे लग रहैक । तखन किएक चल गेलैक शीला ?

दोसर भाग

हमरा लग रहब ?

मुनेसर पासवानक जीप सरसराकऽ आगू निकलि गेलैक आ टोलक आखिरमे सड़कक कातमे टिनही बाटी लेने बैसल जलेसरी बुढ़ियाक आँखि-मुँह गर्दासँ तोपा गेलैक । किछु नांगट आ गर्दामे लेटायल छौंड़ा सभ जीपक पाछाँ मोड़ धरि ओही उड़ैत गर्दामे दौड़ि गेल ।

नाक-कान-मुँह झाड़ैत बुढ़िया जलेसरी बड़बड़ायल—"हवागाड़ीमे बैठिके मुनेसराके भुइयाँके लोक सुझबे ने करै हइ, ई भिखमंगनी बुढ़िया कोना सुझतैक ?"

सुकुर भेलैक जे एम.एल.ए. मुनेसर पासवान ओकर गप्प नहि सुनलकै, नहि तऽ जीप रोकि बुढ़ियाकेँ एक घण्टा धरि भाषण पियबितैक—"ई बात तोँ कैसे बोलले काकी ? ई हवागाड़ी ककरा लेल दौड़बै छी दिन राति ? कोनो सऽख है हमरा हवागाड़ीके ? मुदा समय बाँचत तखन ने लोक सभक काजमे लगबै ? हमरा तऽ दिन-राति ओकरे चिन्ता है, तोहर काज, ओकर काज, सभक काज । आर कोनो चीज सुझै है हमरा ।"

ओना नहि सुझबाक वयस जलेसरी बुढ़ियाक छलैक । सुझितो नहि छलैक आ एकटा पयरो लोथ छलैक । जमीनपर घिसटैत चलैत छल बुढ़िया । मुदा सुझबो करितैक, तैयो मुनेसर पासवानक गप्प नहि मानितैक आ कहितैक—"बहुत भेलौ मुनेसरा ! आब चुप्प रह । ककर चिन्ता हऽ तोरा, हमरा खूब बूझल है । जो, अपन हवागाड़ीमे जो, देवीजी बैठल होतौ..."

लोहछिकऽ मुनेसर पासवान विदा भऽ जाइत आ बुढ़िया ओहिना बड़बड़ाइत रहितैक । तखन जीप सरसराइत चल गेल छलैक आ जलेसरी बुढ़िया एकसरि बड़बड़ा रहल छल । मुँह-कान-आँखि झाड़ि रहल छल आ बड़बड़ा रहल छल ।

घरसँ हजरा बहरायल—"की होलौ काकी ? ककरापर बमकल छहिक ?"

जलेसरी ओहिना फुफुआइत बाजलि—"आर के हउ टोलमे रे बौआ ? उहे मुनेसरा रहली । अन्हरी बुढ़ियाक बाटीमे दू गो पाइ तऽ कहियो ने देलकौ, मुदा धूरा सभ दिन दऽ जाइ छौ । ओकरे घोर पीबिकऽ बुढ़ियाक पेट भरि जेतै ।"

हजरा अपन दुख उघारलक—"पेट ककर भरै हइ काकी ? पहिने अढ़ाइ सेर बोनि, चाहे बारह आना कैंचा मिलै छल, सभकेँ पेट भरि लैत छली । आब तीन गो टाका मिलै है । मुदा तीन टाकामे ने कोनो अन्न मिलै है दुइयो सेर, आ ने ककरो पेट भरै है । ई तऽ सभ दिनुका खिस्सा है काकी- ककरा कहबैक ?"

—"कहीक मुनेसराकेँ जकरा भोट दैत छहिक—'अपन जातिवला है ।' पेट किएक ने भरै हउ ? जातिवलाकेँ हवागाड़ी हउ...भरि टोलमे धूरा उड़ा जाइ हउ— फाँकि ले सभ क्यो ?"

"तोँ नहि बुझै छहिक काकी ! खाली मुनेसरा की करतैक ? ओ तऽ अपना सभ लै कोरिशिश करबै करै है । मुदा अकेले ओकरा से की होतैक ? बड़का गो मुलुक हइ ।"

बुढ़िया एकदम तड़पि उठलैक—"सेहे तऽ हमहूँ कहै छियौ बौआ ! बड़का गो मुलुक हइ, आ बहुत रास लोक हइ । एगो मुनेसरा नहि हउ— सभ गाममे एक गो मुनेसरा हउ, ओकरा हवोगाड़ी हइ । मुदा ओ अकेला की करतौक ? कोरिशिश तऽ करै हउ—।

"ठीके कहले काकी !" हजरा क्षणे-क्षणे बदलि रहल छल । कखनो जलेसरी बुढ़िया दिस, कखनो मुनेसरा दिस । "चौधरी सभके बाप-दादाकेँ हाथी-घोड़ा रहलै तऽ हमरो सभकेँ गुजर हो गेलै गाममे । आइ ओकरा सभकेँ हाथी नहि हइ, जमीदारियो नहि हइ । मुदा मुनेसराकेँ तऽ सभ-किछु हइ— कोठा, बखारी, आ हवागाड़ी । एक्को गोटेके रोजगार भेटलौक ? पहिने जहिया काम नहि रहैत छल, हवेली चल जाइत रहली । नै काम रहलै तऽ कोनो सफाइयेमे लगा देलक । गरीबक गुजर हो जाइत रहल । आइयो कहीं कुछ नहि मिलै हैऽ—तऽ के दै है रोजगार ? महीनामे पन्द्रह दिन तऽ हवेलिये सभमे बोनि मिलै है आइयो ।"

गप्प-सप्प सुनि गंगवा अपन घरसँ बहरायल । ओ मुनेसर पासवानक समर्थक छल । चारपर खऽढ़ छलैक, दूटा गाय-महींस छलैक । हजराक गप्प सुनि जोरसँ बमकल–"तोहर सभक इहै चालिपर एतेक दिन जुलुम होइत रहलौ तोरा सभपर । आइयो उहे गप्प करै छैँ तोँ ? मुनेसरा अपन लोक है, अपन जाति-भाइ है । बड़का लोककेँ तरबा सभ दिन चटलैं, फेर उहे चाटै लेल मोन ललचाइ हउ ।"

हजरा शान्ते स्वरमे बाजल–"जखन तरबे चाटै के है भाइ, तऽ ई देखि के की होत जे ककर तरबा हइ–अपन जातिके, की अजातिके । ई तऽ जातियोवला नहि कहै है–"आ भाइ, हमर बराबरीमे बैठ । ऊ तऽ हवागाड़ीमे उड़ि जाइ है आ हमरा सभ धूरा फँकै छी ।"

"आ ऊ हवागाड़ी देखिकेँ तोहर करेजा फटै हउ ! ई नहि देखै छहिक जे ओकरा कहाँ-कहाँ जायके रहैत हइ ? ओकर टैमके कितना कीमत हइ ? खाली बैसल-बैसल अइ बुढ़ियाक संग पैघ-पैघ गप्प हँकै छैँ ।"

हजरा चुप्प भऽ गेल । गंगवा नहि मानतैक । आ ओ गंगवेके किएक दोष देतैक ? भोट देबऽ जखन गेल छल तऽ पक्का नियारने छल जे मुनोसराकेँ नहि देबैक । मुदा जहिना भीतर गेल, मोन डगमगा गेलैक–है तऽ आखिर अपने लोक, अपने जाति-भाइ !

ओना लोक तऽ आन बिरजूओ बाबू नहि छलैक ? छलैक तऽ आन गामक, मुदा लगैत छलैक जेना अही गामक होइ । घरे-घर जाइत छलैक, सभक दुख-सुख सुनैत छलैक । एकदम एकसरुआ लोक । ने बहु, ने बच्चा । एकदम सादा-सादी बगयबाना । मोटका पाजामा-कुरता आ कनहापर झोरा । पैघ-पैघ छितरायल केश । दू बेरसँ जितैत छलैक बिरजू बाबू । मुदा अइ बेर मुनेसरा घरे-घर घुमलैक–"ई बिरजू बाबू तऽ दू बेरसँ जितै है, की कयलकौ तोरा सभ लेल ? स्वतन्त्र उम्मीदवार हउ । कहियो मिनिस्ट्री मिलतै ? हमरा भेज अइबेर, अपन लोकके, छोटका लोक सभक प्रतिनिधिके; फेर देखा देबौ हम । की भेलौ अइ पचीस बरखमे ? आजादीक पचीस बरख पुरलौ, मुदा हमरा सभकेँ ई सभ ओहिना पिसैत रहलौक । आन-आन क्षेत्रमे तऽ खूब काज भेलै । अइ क्षेत्रमे हमरा सभ बेशी छी, मुदा भोट दैत छियै ओही बड़का जातिके । फेर के देखतौक हमरा सभकेँ ? पचीस बरखमे बिजली अयलौ गाममे ? कोनो सड़क बनलौ ? नदीमे पूल बनलौ ? अइ बेर जाय दे हमरा । फेर देखबैत छियौक ।"

मुनेसर पासवान जीतल । पूरा क्षेत्रमे साठि प्रतिशत बैकवर्ड भोट छलैक ।

मुनेसरकेँ सभ भेटलैक । मुदा दुख रहलैक जे स्टेटो मिनिस्टर नहि भऽ सकल । मुख्यमंत्री अंतमे दगा कयलथिन । मुनेसर अबस्स कहतनि हुनका ।

मुदा हजरा ककरा कहतैक जे क्यो ओकरो ठकलकै ? जलेसरी बुढ़िया ककरा कहतैक जे दिन भरि बाटी लेने टोलक बाटपर बैसलोपर दिनक दिन उपास किएक होइ छैक ? कहाँ गेल सिबुआ, ओकरे बहिन तऽ छलैक इमिरती जकरा गाछीमे छूरा देखौलकै बंकू ? आइ पुछौ मुनेसरासँ जे हवागाड़ीमे बैसल देवीजी तोहर के छौक ? कहाँ लेने जाइ छेँ एंकरा ?"

मुदा हजरा चुपे रहल । गंगवाकेँ जबाब नहि देलकै । जलेसरी बुढ़िया बड़बड़ाइते रहलैक ।

सभ दिन एहने नहि छलैक बुढ़िया । कल्लावला छलैक ओकर वर बिलटा । बड़का-बड़काकेँ दबारि दैत छलैक । दू टा बेटा जवान छोड़िकऽ मुइलैक, मुदा जलेसरी बेटा-पुतऽहुक भरोसे नहि रहल कहियो । सिल्लीगुड़ी...जलपाइगुड़ी घूमि-घूमिकऽ कमाइत रहल । वर्ष दू वर्षपर गाम आबि पुतऽहुकेँ गहना देलक आ बेटाक हाथमे नगद । मुदा जखन चलती ट्रेनसँ खसि, टाँग तोड़ि आ आँखि आन्हर कऽ गाम घुरल तऽ बेटा-पुतऽहु हाथमे एकटा सुखायलो रोटी नहि देलकै, एकटा टिनही बाटी थम्हा बाटपर बैसा देलकै ।

आ न्यायी बनलैक मुनेसरा ! जखन कार्ड बँटलैक तऽ लाल कार्ड जलेसरीकेँ नहि भेटलैक । दू-दू टा जवान बेटा छलैक, ओकरा कोना भेटतैक लाल कार्ड ? लाल कार्ड देलकै सुगियाकेँ ! बेचारी एकसरि छलैक । घरवाला नहि, क्यो आगू-पाछू नहि । मुदा सक्कत देह आ हाथ पयर नहि सुझलै ककरो ? नव वयस नहि सुझलैक ? नहि सुझलैक जे बिन-घरवालाकेँ देहपर छीटवला नूआ आ माथमे गमकौआ तेल कहाँसँ अबैत छलैक ? जलेसरी सभ जनैत छलैक, आन्हरो भऽ सभ देखैत छलैक— मुनेसरा न्यायी है...एकटा विधवाक संग न्याय कयलक । सुगिया केहन पतिवरता है, घरवालाकेँ मुइला तीन बरख हो गेलै । ककरो से सम्बन्धो कयलक । मुनेसरा सभ जनै हइ । सम्बन्धोक बात जनैत हइ ।

मुदा देवीजीकेँ के नहि जनैत छलनि ? मुनेसर पासवानक संग हरदम सटल रहैत छलीह देवीजी । आ एम.एल.ए. मुनेसर पासवान, बी.डी.ओ., एस.डी.ओ., मंत्री सभ लग देवीजीकेँ आगू कऽ दैत छलथिन– "अइ इलाकाक एकमात्र समाज-सेविका ।

आ अइ समाज-सेविकाकेँ देखितहि मुनेसर पासवानक घरवाली एकदम

चण्डिका बनि जाइत छलैक । एक दिन अंगनामे झोंटा-झोंटौअलि होबऽ लगलैक । तहियासँ अँगना नहि लबैत छलैक देवीजीकेँ, बाहर जीपमे बैसल रहैत छलैक । मुदा जहिया जीपमे देखि लैत छलैक देवीजीकेँ ओकर घरवाली, टोलमे बड़का काण्ड भऽ जाइत छलैक । पहिने आस्ते-आस्ते बजैत छल दुनू प्राणी, फेर चिकरऽ लगैत छल । फेर एम.एल.ए. लतिआयबऽ लगैत छल घरवालीकेँ आ स्त्री-कण्ठ फाड़ि-फाड़ि कऽ देवीजी आ मुनेसर पासवानक सात पीढ़ीक उद्धार करऽ लगैत छलैक । मुनेसर राति-बिराति जीप लऽ किम्हरो पड़ा जाइत छल ।

ओना गाम तऽ आब कम्मे काल अबैत छल मुनेसर । अधिक काल पटना । एसेम्बली रहैत छलैक, पचास तरहक काज । दरभंगा अयबो कयल तऽ सर्किट हाउसमे ठहरल, एकाध साँझ लेल गाम । घरवाली सदिखन गामे रहैत छलैक आ देवीजी अधिक काल ओकर संगे रहैत छलथिन ।

देवीजी ओकर संग कोना छोड़थिन ? बड़का झंझटिसँ बचौलथिन ओकरा मुनेसरजी । देवीजी हरदम ओकरा 'मुनेसरजी' कहैत छलथिन । हुनका ओकर उपकार बिसरने नहि बिसरैत छलनि । नहि पड़ितनि बीचमे तऽ उद्धार होइतनि ? पलटू मिसर तऽ गराक घेच भऽ गेल छलनि ।

मधुयेक नव नाम छलनि देवीजी । मुनेसर पासवान नाम देलथिन-देवीजी । नव जिनगी देलथिन । पलटू मिसरसँ पिण्ड छोड़ौलथिन ।

मिसरक सभटा स्वाहा भऽ गेल छलनि । दोकानक सभ पूजी साफ, लगानीक सभटा टाका ओसूल भऽ समाप्त । मिसर मधुक आँगनमे पड़ल रहैत छलाह । वर्षो धरि रहलाह । पहिने लोककेँ अखरलैक । टोक-चाल भेलनि । बारल गेलीह मधु । मुदा फेर सभ ठीक-ठाक । आबा-जाही फेर शुरू । मिसर मुँहगर आ दमगर लोक छलाह, सभकेँ उधार दऽ बाट साफ करैत रहलाह । मुदा जखन सभ समाप्त भऽ गेलनि आ दोकान बेचऽ लगलाह, तऽ बेटा गद्दी पर बैसि गेलनि-"खबरदार ! अइ दिस फेर नहि देखब ।"

डेरायल मिसर हँटि गेलाह । आँगन जायब पहिनेसँ बन्न छलनि । कनियाँ मुँह नोचऽ लेल सदिखन तैयार रहैत छलनि । मिसर निश्चिन्त भऽ मधुक आँगनमे पड़ल रहलाह । मधुक दुनू बेटीक विवाह भऽ गेल छलैक । बेटा कालेज पढ़ऽ लागल रहैक । मधुकेँ अखरऽ लगलैक । बुढ़ायल मिसर, टेंटमे टाका नहि, दिनराति आँगनमे पड़ल खों-खों करैत रहैत छलथिन । मधु अकच्छ भऽ गेल ।

आ एक दिन नहि जानि कोना मुनेसर पासवान मधुक आँगन पैसि

गेलथिन । एम.एल.ए. नहि भेल छलाह तहिया । मुखिये रहथि । आँगन पैसि गरजिकऽ बजलाह मुखिया-"अहाँकेँ लाज नै होइ-ए पलटू बाबू ! घर द्वार है, बाल बच्चा है, आ एना एकटा दोसर-आँगनमे पड़ल छी । उठू, अखने उठू, नै तऽ जबर्दस्ती उठबाकऽ आँगन पहुँचबा देब ।"

पलटू मिसर निरीह जकाँ मधु दिस तकलनि । मधु हुनका नहि देखि रहल छलनि । ओ तऽ मुनेसरजी दिस टकटकी लगौने छल । आँखिमे कृतज्ञता छलैक । मधु मरि गेल आ देवीजीक जन्म भेलनि । देवीजी मुनेसर पासवानक छाया जकाँ सभठाम चलैत रहलीह । वयससँ चालीस, कपड़ा-लत्तासँ तीस आ हावभाव आ गप्प-शप्पसँ बीसक लगैत छलीह देवीजी । सादा साड़ी, सादा कसल ब्लाउज, ठोरपर पानक लाली, आँखिपर कारी चश्मा आ पैरमे डिजाइनदार चप्पल । देवीजीकेँ देखि बड़का-बड़का डोलि जाइत छलाह, आ मुनेसर पासवान अपन गोटी स्थिर कऽ लैत छलाह ।

ओहू दिन जीपमे बैसल मुनेसर गोटी बैसा रहल छल । ड्राइवर खूब तेज हाँकि रहल छलैक आ देवीजी बेर-बेर मुनेसरक देहसँ रगड़ा जाइत छलीह, कोरामे ओंघरा जाइत छलीह, ओंघरा जाइत छलीह आ मुसकिया उठैत छलीह । मुदा मुनेसर कोनो चिन्तामे लीन छल । देवीजीकेँ नहि रहल गेलनि । ओकर कनहापर गाल रगड़ैत पुछलथिन-"कोन सोचमे पड़ल छी मुनेसरजी ?"

"अहीँक सोचमे पड़ल छी । ई नवका डी.एम. सुनैत छी जे बड़ कड़ा अछि, ककरो पैरवी नहि सुनैत छैक । अहाँक जमायकेँ राखत की नहि, ताही चिन्तामे छी ।"

देवीजी आरो ओकर देहपर लदैत बजलीह-"अइ लेल अहाँ चिन्ता किएक करै छी ? अहाँक बात नहि मानत तऽ टिकत एक्को दिन अइ जिलामे ? श्रीवास्तवकेँ कोना एक दिनमे ट्रांसफर करबा देलियैक ?"

मुनेसर प्रसन्न होइत बाजल-"से तऽ हिनको एक दिनसँ बेशी नहि लगतनि । मुदा सुनै छी बड़ टेढ़ अछि, आ फेर मुख्यमंत्रीक जाति-भाइ छनि, चुनिकऽ पठौने हेथिन ।"

"तऽ ताहिसँ की ? मुख्येमन्त्रीक जातिक छथिन, तऽ अहाँसँ बैर कऽ टिकि जयताह अइ जिलामे, से संभव छनि ? अहाँ अनेरो चिन्ता कऽ रहल छी । चुकरिकऽ करताह अहाँक काज ।"

मुनेसर पूर्ण आश्वस्त भऽ गेल । देवीजी नीक जकाँ ओकर देहसँ ओठँगि गेलीह । ड्राइवर निर्विकार जीप हँकैत रहल ।

डी.एम.क डेरा शहरक कातमे छलैक । जखन जीप ओकर हातामे पैसलैक, चिराग-बत्ती भऽ गेल छलैक । डी.एम. आफिसेमे छलाह, उठिकऽ भीतर नहि गेल छलाह । चपरासी मुनेसरकेँ देखितहि सलामी दगलक आ देवीजीक संग ओ आफिसक भीतर पैसि गेल ।

डी.एम. फाइलमे व्यस्त छलाह । मूड़ी नीचाँ झुकल छलनि । हिनका लोकनिकेँ भीतर अबैत नहि देखलथिन । मुदा भीतर आबि मुनेसर डी.एम.क मुँह देखिते रहि गेल । रोकितो-रोकितो मुँहसँ बहरा गेलैक—तोँ, अहाँ, प्रणव !

देवीजी सेहो चौँकलीह— सामने प्रणव बैसल छलैक । आँखिपरसँ चश्मा हँटबैत प्रणव सेहो दुनूकेँ देखलकै आ बाजल— "हमहीं छी । एना चौंकलेँ किएक मुनेसर ? एतेक अनचिन्हार सन भऽ गेल छी हम !"

मुनेसर सहज होइत बाजल– ''सत्ते आश्चर्य भेल तोरा देखि । सभदिन नाम देखिते छलिऐक 'पी के चौधरी' मुदा कहियो सन्देह नहि भेल जे तोँ हेबैं- एतेक बड़का हाकिम ।"

प्रणव बीचेमे टोकलकै—"बड़का के भेल अछि भाइ ? यदि क्यो भेलो अछि तऽ तोँ भेल छैँ । आइ एम.एल.ए. छैँ, काल्हि मंत्री हेबैं, मुख्यमंत्री हेबैं ।''

मुनेसर प्रसन्न होइत बाजल—"तोँ छेँ हमर पक्का दोस्त । एक्के मिनटमे मुख्यमंत्री तक बना देलें । मुदा आइ एकटा छोटछीन काज लेल आयल छी, देवीजीकेँ तऽ चिन्हैत छहुन ?"

प्रणव मधुकेँ देखैत बाजल—"हिनका चिन्हैत छियनि, मधु छथि । मुदा ई देवीजी कहिया भेलीह, से नहि बूझल अछि ?"

मुनेसर ओकरा रोकैत बाजल—"से बादमे बूझि लिहैं । पहिने हिनकर काज बूझि लहुन । अही लेल आयल छी हम । हिनकर जमाय तोरा लग इन्टरव्यू देने छथुन, टाइपिस्टक लेल । हुनका राखि लहुन ।"

प्रणव किछु काल चुप रहि बाजल—"ओइमे तऽ विलम्ब भऽ गेलौ । ओ फैसला भऽ चुकल छैक । चिट्ठी दस्तखत भऽ गेलै बहालीक ।' मुनेसरजी अधिकार पूर्वक बजलाह—"तऽ की भेलैक ? बदलि दहिक ओ चिट्ठी । कहुना हिनकर जमायकेँ लऽ लहुन ।"

"से तऽ आब संभव नहि छैक भाइ ! सभ काज भऽ गेल छैक । की नाम छौ तोहर जमायक मधु !"

देवीजी नाम कहलकै । प्रणवकेँ जेना किछु मोन पड़लैक । एम.एल.ए. साहबक पैरबी आनो सूत्रसँ आयल छलैक । कहलकनि- "हुनका तऽ एक्को आखर टाइप करऽ नै अबैत छनि ।"

मुनेसर जोरसँ हँसल—"तोहूँ हद कयलैँ प्रणव ! टाइप यदि अयबे करितनि तऽ हमर अयबाक कोन काज ? टाइप अयलेपर नौकरी हैतनि तऽ तोहर डी.एम. भेलाक कोन फायदा ?"

प्रणव चुप्पे रहल । जबाब नहि देलकै । आब देवीजी बजलीह—"तऽ काज भऽ जयतनि ?"

प्रणव स्पष्ट कहलकै—"नै मधु ! अइ बेर कोनो आशा नहि छनि । टाइपक अभ्यास करऽ कहुन, दोसर कोनो ठाम देखल जयतैक ।"

मुनेसर उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल—"चलू देवीजी ! हम तँ पहिने कहैत छलहुँ । सैह भेल ने !''

प्रणव ओकरा रोकैत कहलकै– ''बैस, खा-पी कऽ जैहैं, । आर गप्प-शप्प सुना ।"

मुदा मुनेसर नहि रुकलैक । देवीजी ओकर पछोड़ धयलथिन । ओकरा देखि प्रणवकेँ बड़ दुख भेलैक– अंतमे मधु एतऽ पहुँचल ?

फेर मुनेसरपर ध्यान गेलैक । रुष्ट भऽ गेलैक ओ ? अभिघात करबाक चेष्टा करतैक, राजनीतिक दबाब दियौतैक । ओ नीक जकाँ बूझि गेल ।

मुदा बड़ आश्चर्य भेलैक । बालसंगी छलैक मुनेसर । ओकरा लेल जान दैत छलैक । ओकर गाम छोड़ैत काल हपसिकऽ कानल रहैक । मुरली ओइ दिन कहैत रहैक "मुनेसराकेँ तोँ नहि चिन्हैत छहिक । सभकेँ तबाह करतौक । एतेक माथपर नहि चढ़बहिक ।"

ठीके, नहि चिन्हलकै मुनेसराकेँ ओ । अइ नेताकेँ ओ चिन्हैत छलैक । एहन-एहन परोपकारी एम.एल.ए. आ देवीजीकेँ ओ चिन्हैत छलैक । मुदा मुनेसराकेँ कहाँ चीन्हि सकलैक ओ ? ओ तऽ बालसंगी छलैक ओकर । आब ओकर खिलाफ प्रचार करतैक, मिनिस्ट्रीमे, विधान सभामे शिकायति करबौतैक ।

ओकरा शिकायतिक चिन्ता नहि छलैक ओकरा आश्चर्य आ दुख छलैक जे मुनेसराकेँ ओ नहि चिन्हलकै ।

प्रणव बड़ी कालधरि ओहिना बैसल रहि गेल । आगूमे राखल फाइलक एक्को आखर आगू पढ़ब पार नहि लगलैक ।

कखन चपरासी पर्दा हँटा भीतर अयलैक– आ सामनेमे कखन पुर्जा राखि चल गेलैक, से प्रणव नहि बुझलकै । बड़ीकाल बाद पुरजापर ध्यान गेलैक– "श्रीमन्त चौधरी, गाम कुसुमपुर ।"

प्रणवक सौँसे दिमाग सनसना उठलैक । ई नाम-गाम ओकर सुनल छलैक, देखल-जानल नहि । मामी कहैत छलैक, मामा कहैत छलैक आ कहैत छलैक ओइ आंगनवाली नानी । ओकरे गामक नाम छलैक कुसुमपुर । बापक नाम छलैक- मदन चौधरी । प्रणव कहियो नहि मानलकै से । ओकर माय छलैक मीना, बाप छलैक मुन्नर झा । मुदा मुन्नर झा कहाँ मानलथिन ? अपनेसँ- नेंगरा गुरुजीक रजिस्टरमे लिखा अयलथिन— नाम- प्रणव चौधरी, बापक नाम- मदन चौधरी, गाम- कुसुमपुर, जन्म 1 जनवरी 1941 ।

आ प्रणव एकदम बिगड़ि गेल छलैक–"बोझ लगै छी तऽ निकालि दियऽ घरसँ । मुदा एहन बात नहि बाजू । हमर गाम घर यैह अछि, अहीं माय छी हमर ।'' आ मामी करेजसँ सटा लेने छलैक । ओकर गाम-घरक चर्चा फेर कहियो नहि कयलकै ।

मुदा आइ सामनेमे एकटा पुर्जा पड़ल छलैक–श्रीमन्त चौधरी, गाम कुसुमपुर । प्रणवक हाथ घण्टीक बटनपर गेलैक । फेर थम्हि गेलैक । किछु सोचिकऽ उठल । पर्दा उठा कोठलीसँ बाहर आयल ।

बाहर कुर्सीपर एकटा वृद्ध बैसल छलाह । प्रणवकेँ बहराइत देखि हड़बड़ाकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह । साठि-सत्तरिक बयस, माथक सभटा केश उज्जर । मुदा चमकैत कप्पार आ विशाल शरीर । लम्बा– प्रणवोसँ एक मुट्ठी ऊँच । बुढ़ारियोमे रंग एकदम उज्जर आ चमकैत । चेहरा-मोहरा अनमन ओहिना जेना प्रणवक सुदूर भविष्यक चिह्न हो । किछु क्षण ओइ आकृतिकेँ निहारलाक बाद प्रणव पैरपर झुकि गेल–"चिन्है छी काका ?"

प्रणवक अइ व्यवहारसँ जेना वृद्ध एकदम भहरि गेलाह–"नहि-नहि, अइ योग्य नहि छी हम ।" कहैत दूनू हाथे प्रणवकेँ पकड़ि उठा देलथिन । बगलमे ठाढ़ चपरासी आ ड्यूटीपर तैनात सिपाही अपन साहबकेँ एना एकटा अपरिचित वृद्धक पैर छुबैत देखि आश्चर्यसँ तकैत रहल ।

आ प्रणव वृद्ध श्रीमन्त चौधरीक थरथराइत शरीरकेँ पकड़ने भीतर आबि गेल । बूढ़ा भीतर अबितहि एकटा कुर्सीपर बैसि गेलाह आ कानऽ लगलाह । प्राय: अइ सत्कारक लेल ओ प्रस्तुत नहि छलाह । प्रणव लगमे ठाढ़ रहलनि । बूढ़ाकेँ स्थिर होबऽ मे दस-पन्द्रह मिनट लागि गेलनि । स्थिर होइतहि एकदम स्पष्ट स्वरमे बजलाह– "अबैत काल भरि बाट आ बाहर बैसल-बैसल हम लज्जासँ गड़ल छलहुँ । कोना तोहर सामने हैब ? की कहबऽ तोरा ? मुदा आब हमरा कोनो अफसोच नहि अछि । तोहर मायकेँ अपमानित कऽ निकालबाक, तोहर जन्मक खबरिकेँ लज्जाक आ अपमानक खबरि मानि तोहर मामाक अपमान करबाक आब हमरा लज्जा वा पश्चात्ताप नहि भऽ रहल अछि । तोहर माय यदि कुसुमपुरे रहि जैतथि, तोँ यदि हमरे सभ लग रहितऽ तऽ तोहर नेनपन भने नीक जकाँ बीति जैतऽ, मुदा की बनितऽ तोँ ? जे हमर सुपुत्र सभ बनल छथि—मूर्ख, शराबी आ भ्रष्ट । से यदि नहियो बनितऽ, किछु आरो बनि जैतऽ । मुदा एतेक पैघ हाकिम, नहि, हाकिम नहि, एतेक पैघ मनुक्ख नहि बनि सकितह ओइ घरमे, किन्नहु नहि बनि सकितह ।"

प्रणव कोनो उत्तर नहि देलकनि । बूढ़ो किछु काल चुप्प रहलाह । तखन प्रणव कहलकनि–"भीतरे चलू काका, राति बेशी भऽ गेलै, भोजन-विश्राम करू ।"

भीतरवला पर्दा उठा श्रीमन्त चौधरीक संग ओ डेरा दिस गेल । पहिल कोठलीमे ड्राइगरूम छलैक । तकर बगलमे ओकर कोठली, सुतऽवला आ ओइ कोठलीसँ सटल अमितक कोठली छलैक । सभसँ अन्तमे छलैक मामीक कोठली आ ड्राइंग रूमसँ सटले दोसर कात छलैक गेस्ट रूम । प्रणव हुनका ओही कोठलीमे पहुँचा देलकनि ।

मामी भीतरेसँ सभटा बात सुनि लेने छलथिन । भानस-भातक ओरियौन करऽ लागल छलथिन । अमित अपन कोठलीमे छल । भोजनक बेरमे एकटा अपरिचित बूढ़ाकेँ देखि प्रणव दिस तकलक । प्रणव कहलकै–"गोड़ लगहुन बाबाकेँ, हमर कक्काजी ।"

आ अमित पैर छूबि बूढ़ाक मुँह गौरसँ देखऽ लगलनि आ फेर एकदम प्रसन्न होइत बाजल–"एकदम डुप्लीकेट । पापा, अहाँ तऽ एकदम बाबाक डुप्लीकेट छी ? केश पकलापर अहूँ अनमन एहने लागब ।"

प्रणव हँसऽ लागल, भनसामे ठाढ़ मामियोकेँ हँसी लगलनि । श्रीमन्त चौधरी अमितकेँ लग बैसा लेलथिन । सत्रह वर्षक अमित कालेजमे पहुँचि गेल छल, इन्टरमीडियट साइंस । स्फूर्ति आ प्रतिभासँ भरल । बोर्डक परीक्षामे जिलामे

प्रथम आयल छल अमित । श्रीमन्त चौधरीकेँ अपन पोता सभ मोन पड़ि रहल छलनि। अमित ताधरि संग रहलनि, जा धरि हुनकर आँखि मुना नहि गेलनि निन्नसँ ।

मुदा भोरे ओ जयबा लेल प्रस्तुत भऽ गेलाह । प्रणव आग्रह कयलकनि, अमित रोकलकनि, मुदा वृद्ध श्रीमन्त चौधरी अविचलित रहलाह । दुनूकेँ मना लेलथिन । मोटरमे बैसा जखन स्टेशन लेल विदा करऽ लगलनि तऽ श्रीमन्त चौधरी एक बेर फेर कानऽ लगलाह । कनिते बजलाह–"तोरा लग बड़ क्षुद्र आ नीच बनल छी हम, तोहर जन्मेसँ । आ आइ अइ नोरकेँ देखि ई नहि बूझि लिहैं जे ओइ अपराधकेँ कम करक लेल आयल रही हम । आयल तऽ हम फेर अपने स्वार्थसँ रही । आर छोट बनऽ लेल आयल रही हम...।

"नहि, छोट किएक हैब अहाँ ? कहू ने, कोन काजे आयल रही ? हमरा प्रसन्नता हैत ओकरा पूरा कयलासँ ।"

–"तोरा कतेक प्रसन्नता हेतौक सुनिकऽ, से हमरा नहि बूझल अछि । मुदा हम यदि बिन कहने गाम घुरि जायब तऽ हमर दुनू सुपुत्र हमर ठोंठ दबा देताह । तेँ कतबो छोट भऽ जाइ हम, जाइत-जाइत कहने जाइत छियौक जे किएक आयल रही। जे किछु छल सभ बेचि बिकिन खा गेलथुन तोहर भैयारी । जे बचलाहा छनि से गुजरो जोगर थोड़ छनि । ताहिपर आबि गेलैक सर्वे । सर्वेवाला सभकेँ गामक लोक कहि देलकै जे हमर एकटा भाइ छलाह । हुनकर एकटा बेटा छनि । पहिने तऽ पाइ ओसूलऽ चाहलक सर्वेवला सभ, मुदा जखन तोहर नाम सुनलकौ, पाइयो पर तैयार नहि भेलनि । बचलाहा बेशी जमीन मदनेक नाम छनि । तोहर भैयारी सभ चिन्तित छलथुन, ठेलिकऽ हमरा पठौने छलाह ।"

श्रीमन्त चौधरीक घेंट झुकल छलनि । प्रणवकेँ सभटा सुनि कऽ दुःख भेलैक । काकाकेँ देखि जे काल्हिसँ एकटा प्रसन्नता भेल छलैक से बिला गेलैक । काका एकटा उद्देश्यसँ आयल छलथिन, उद्देश्य पूरा नहि भेलासँ बेटा सभ नरेटी दबा देतनि । प्रणव हुनका निश्चिन्त करैत कहलकनि–"अहाँ कोनो चिन्ता नहि करू । हुनका सभकेँ कहि देबनि जे कोनो भय नहि । सभटा लिखा दियनु हुनके सभक नाम, क्यो विरोध नहि करतैक, सर्वेवालाकेँ सेहो कहि देबैक । कहि देबैक जे सभ झूठ अछि, मदन चौधरी निस्संतान मुइल छलाह । हुनकर कोनो बेटा नहि छनि ।"

प्रणव इशारा कयलकै । ड्राइवर आगू बढ़ौलक गाड़ी । प्रणव बड़ी काल धरि ठाढ़े रहि गेल । काल्हिसँ लागल छलैक जे ओकर एकटा गाम छलैक, घर छलैक । आइ फेर ओ सभ-किछु छिना गेलैक । एकटा गाम आ घर कल्लू चौधरी

छीनि लेलथिन । घराड़ी जोति अन्न उपजा लेलथिन । दोसर घर आइ टूटि गेलैक । एकटा गाम छैक कुसुमपुर, जे प्रत्येक फार्ममे स्थायी पता लिखैत काल प्रणव भरैत छल, यद्यपि ओइ गाममे कहियो गेल नहि छल, कहिओ देखने नहि छलैक । आब ओइ गाम प्रणव कहियो नहि जायत, कहियो नहि देखत ओ गाम । आइ अपनेसँ ओ स्थायी पता उजाड़ि लेने छल प्रणव । आब जतहि धर, ततहि घर हेतैक । सौंसे संसार आब ओकर घर छलैक । आब सब गाम ओकरे गाम छलैक ।

"दीदी, हमर हिसाब देखू ।"

"दीदी हमर लिखना देखू पहिने ।"

"नहि दीदी, पहिने हमर पाठ सुनू ।"

एक्के संग सभ छौँड़ी घोल मचा देने छलैक । मुदा नवकी दीदी बड़ शान्त आ मधुर स्वभाववाली छलैक । एक्को बेर नहि लोहछैत छलैक । हँसि-हँसिकऽ बेरा-बेरी सभक सिलेट देखैत छलैक, सभक पाठ सुनैत छलैक । ने ककरो मारि, ने ककरोपर गरजब । साते दिनमे स्कूलक छौँड़ीसभ जान देबऽ लागल छलैक ।

पछिला मास्टरनी बड़ चण्ठ रहैक । अबैत छलैक घोड़ी घास ने, मुदा टीम-टाम बड़का । रंगल-ढौरल स्कूल अबै छलैक आ एकटा उपन्यास लऽ बैसि जाइत छलैक । कोनो छौंड़ी किछु पुछैक कि चटाक बगलमे राखल छड़ी बजारि दैक। डरे कोनो छौँड़ी लगमे जयबे नहि करैक । निश्चिन्त भऽ दिनभरि उपन्यास पढ़य आ बीच-बीचमे अधवयसू हेडमास्टर साहबक दिस ताकि मुसकिया दनि । गदगद हेडमास्टर साहब पाँचो क्लासक विद्यार्थीकेँ अपने पढ़बऽमे जुटि जाथि ।

पहिलासँ पाँच वर्ष धरिक गर्ल्सस्कूल छलैक, आ मास्टरक स्वीकृति छलैक तीन । हेडमास्टर आ सेकेन्ड मास्टरक संग एक टा मास्टरनी । सेकेन्ड मास्टरक बदली भेलनि तऽ जाहि मास्टरनीक पोस्टिंग भेलनि, से अयबे नहि कयलीह । रहलै दुइये टा मास्टर— एक टा अधवयसू हेडमास्टर आ टीमटामसँ छौँड़ी बनल एकटा मास्टरनी ।

मुदा मास्टरनी छलैक एकदम फालतू । नहि जानि कोना सर्टिफिकेट उपरा

लेने छलैक, नीक जकाँ ककहरो लिखऽ नहि अबैत छलैक । कोनो बड़का पैरवी छलैक । ककरो किछु बजबाक साहसे नहि होइत छलैक । हेडमास्टर तँ एकटा मुसकियेपर गील भऽ जाइत छलाह । आ सस्त बाजारू उपन्यास पढ़बाक ढंग करैत मास्टरनी बेर-बेर अनेरो मुसकिआइत रहैत छलीह ।

मुदा नहि जानि कोना शिकायति भऽ गेलैक । नौकरी तऽ नहि गेलैक, मुदा कोनो कुडोरिमे पोस्टिंग भऽ गेलैक । जाइत काल रहि-रहि नोर भरि जाइत छलैक आँखिमे आ अधवयसू हेडमास्टर हिचुकि-हिचुकिकऽ कानऽ लागल छलाह ।

मुदा जाइत मास्टरनीकेँ देखि एकोटा छौँड़ीक आँखि नहि नोरैलैक । क्यो दौड़िकऽ देहसँ नहि लपटलैक । मुदा साते दिनमे नवकी दीदीक देहपर सभ छौँड़ी लुधकल रहैत छलैक । वियोगसँ उदास हेडमास्टर एक कात बेंचपर गुमसुम बैसल रहैत छलाह आ सभ कक्षामे पढ़ैबाक भार हँसी-खुशी अपनापर लेने नवकी दीदी व्यस्त रहैत छलीह ।

स्कूलक अपन भवन नहि छलैक । मौसम ठीक रहलैक तऽ मन्दिरक प्रांगणक झमटगर अशोकक गाछक नीचाँमे आ बरखा-बुन्नी रहलैक तऽ मन्दिरक भीतर । एकटा बेंच आ एकटा कुर्सी छलैक, मन्दिरेमे रहैत छलैक, बेरपर गाछ तर चल अबैत छलैक । हाजरीबही आ कागज-पत्तर हेडमास्टर साहबक घरेमे रहैत छलनि ।

मुदा नवकी दीदीक रहबाक समस्या ठाढ़ भऽ गेलैक । पहिलकी मास्टरनी धारक ओइ पार डेरा रखने छलीह— स्टेशन लग । मुदा नवकी दीदीकेँ ओतेक दूर रहब पसिन्न नहि छलनि । मन्दिरेक बगलमे एकटा कोठली भेटि गेलनि– पुजेगरीक कोठलीक बगलमे । खालिए पड़ल रहैत छलैक । हेडमास्टर सिफारिश कयलथिन, पुजेगरीकेँ दया आबि गेलैक आ हवेलीसँ आज्ञा लऽ आयल ।

मुदा जखन नवकी दीदी मन्दिरक ओइ कोठलीमे अयलैक तऽ पुजेगरी अवाक् । तोतराइत बाजल— "अहाँ सरकार, अहाँ शीला दाइ !"

शीला रोकलकै–"नै पुजेगरी जी ! दोबारा ई नाम नहि । नवकी दीदीजी कहू । आब यैह नाम अछि हमर ।"

मुदा पुजेगरी नेहोरा करऽ लगलैक–"नै दाइ, ई पाप हमर माथ नहि चढ़ाउ । भगवानक नामपर दू पुश्तसँ अहाँक नोन खा रहल छी । ई अन्याय हमरासँ नहि कराउ । चलू, अपन आंगन चलू दाइ !"

"नै पुजेगरी जी, आब हमर कोनो घर नहि अछि अइ गाममे । हम अइ

गामक स्कूलक मास्टरनी छी, हमरा वैह रहऽ दियऽ । अहाँ जिद करब तऽ हमरा ई गाम, ई नौकरी छोड़िकऽ जाय पड़त ।" शीला एकदम अड़ल छलैक ।

पुजेगरी मानि गेलैक–"बेश दाइ, रहू । सभटा तऽ अहींक अछि । मुदा हम एकटा बात कहै छी । कहिया धरि छिपत ई बात ? गाममे के नहि चिन्हैत अछि अहाँकेँ ? स्कूलक बच्चा सभक बात जाय दियऽ । ओ सभ अहाँकेँ नहि देखने अछि । हेडमास्टरो अनगौआँ छथि, अहाँक खानदानकेँ चिन्हैत छथि, मुदा अहाँकेँ नहि देखने हैताह कहियो । मुदा गामक लोक ? जैह देखत चीन्हि जायत । दस वर्ष बड़का टा समय होइत छैक, मुदा मनुक्खकेँ एतेक जल्दी देखल चेहरा नहि बिसरैत छैक दाइ !"

तैयो शीला सात दिन निभा गेल । स्कूल दिस जखन कोनो गामक लोक ताकऽ लगैत छलैक, ओ मुँह घुमा लैत छल । मन्दिर ओना शान्त रहैत छलैक । भरि दिनमे गनल-गूथल लोक अबैत छलैक । शीलाकेँ पुरना बात मोन पड़ैत छलैक । अन्हरोखेसँ मन्दिरमे लाइन लागल रहैत छलैक । गामक बेशी स्त्रिगण प्रातःस्नान कऽ, मन्दिरमे दर्शन कऽ, महादेवकेँ जल ढारि सूर्योदयसँ पूर्व घर पहुँचि जाइत छल । बाँकी छूटल-फूटल स्त्रिगण आ बेशी पुरुषसभ दिन उगलापर बागमतीमे स्नान कऽ, मन्दिरमे दर्शन करैत छल राधाकृष्णक, फेर दोसर मन्दिर जा महादेवकेँ जल ढारैत छल, तखन घर जाइत छल । आब तऽ जेना भोरेसँ मन्दिर सुन्न रहैत छलैक । धारक घाट सेहो सुन्न । एकाध टा बुढ़िया झुकल डाँड़ आ झुर्रीभरल चेहरा लेने, बस्स । सात दिनसँ देखि रहल छलैक शीला । पुजेगरी पूजा करैत छलैक, भोग लगबैत छलैक । मुदा गामक लोककेँ जेना मन्दिरक रस्ता बिसरि गेल छलैक !

साँझोखन कऽ यैह बात लगैत छलैक । पहिने साँझ होइतहि भगवानक दर्शनक लेल गामक सभ घरक लोक, वा घरक मुखिया धरि अबस्से अबैत छलैक । आब तऽ जेना अपन बेगरते भगवानोकेँ बिसरल अछि लोक । ओना साँझ-प्रात कतबो धड़फड़ीमे जाइत अछि अइ बाटे लोक, एक बेर ठमकि दुनू दिस हाथ अबस्से जोड़ि लैत अछि । मुदा मन्दिर आबिकऽ दर्शन करबाक पलखति प्रायः लोककेँ नहि रहैत छलैक । शीला सभ दिन देखैत छलैक ।

आ सभ दिन देखैत छल जे ओकर बाप, गामक प्रतापी जमींदार कल्लू चौधरी, एक टा छड़ी लेने, मन्दिर अबैत छलाह । सभ ठाम प्रणाम करैत छलाह– राधाकृष्ण, अन्नपूर्णा, जगद्धात्री, सभ ठाम घूमि जाइत छलाह आ फेर पुजेगरी चरणामृत दैत छलनि, तुलसी पातक संग । सभ दिन एक्केटा प्रश्न करैत छलथिन–"सभटा

ठीक ने श्रीधर !" पुजेगरी ओहिना मूड़ी झुकौने कहैत छलनि–"सभ सरकारक कृपा ।"

आ कल्लू चौथरी चल जाइत छलाह—ओहिना छड़ी टेकैत । ने संगमे नौकर, ने आगू-पाछू लोक । एकसर अबैत छलाह आ एकसर चल जाइत छलाह । शीला सभ दिन नुकाकऽ देखैत छलनि । देखैक आ आँखिसँ नोर बहऽ लगैत छलैक । विशाल काया क्षीण आ जर्जर भऽ गेल छलनि । सोन सन रंग जेना जरिकऽ झामर भऽ गेल छलनि ! कपड़ा-लत्ता मैल— ने ओ साँची, ने ओ कुर्त्ता । मुदा चेहराक गम्भीरता आ दृढ़ता ओहिना अक्षुण्ण छलनि । शीलाकेँ कतेको दिन मोन भेलैक जे दौड़िकऽ पयरपर खसि पड़नि । मुदा ओ ओहिना नुकाकऽ देखैत रहल आ कनैत रहल ।

ओइ दिन कल्लू चौधरी अपने पूछि बैसलथिन— "ओइ कोठलीमे स्कूलक नवकी मास्टरनी रहैत छऽ ने, श्रीधर !"

"जी सरकार !" श्रीधरक झुकल माथ आशंकासँ सनसना उठलैक ।

"ओकरा चिन्हैत छहक– के अछि ?"

श्रीधर चुप्प—बकार नहि फुटलैक । कल्लू चौधरी कने रुच्छ स्वरमे बजलाह–"तोरासँ ई आशा नहि छल श्रीधर ! किछु क्यो करय–तोंहू हमरा संग प्रपंच करबऽ, से आशा नहि छल हमरा । हमरे दान कयल घर-आँगनमे हमरे बेटीकेँ आश्रित बनाकऽ राखि लैत लाज नहि भेलह–''

"क्षमा कयल जाय सरकार ! हम बड़ मना कयलियनि । मुदा शीला दाइ नहि माननलि । सप्पत देबऽ लगलीह, गाम छोड़ि देबाक धमकी देलनि, तऽ चुप्प रहि जाय पड़ल ।"

मुदा गाम तऽ चुप्प नहि रहल श्रीधर ! सौंसे गाममे घोल मचल अछि–"हमर बेटी स्कूलक मास्टरनी भऽ मन्दिरमे आश्रित अछि । यैह टा देखब-सुनब बाँकी रहि गेल छल ।"

आब शीलाकेँ घरमे नहि रहि भेलैक । बाहर आयल, बापक पयर छूलक आ कहलकनि–"पुजेगरीपर तामस नहि करियनु बाबूजी ! ओ निर्दोष छथि । मुदा हम गाममे मास्टरी करी, मन्दिरमे रही— अइमे कोनो लाजक बात नहि छैक बाबूजी ! जे लाजक बात छैक–

"वाह, बेटी ! आइ दस वर्ष बाद अपन बापकेँ ओकर लज्जाक गप्प मोन

पाड़ऽ आयल छैँ ! गाममे ओइ खिस्साक ढोल पीटऽ लेल कम्म लोक अछि जे तोँ ओइमे नाम लिखबऽ आयल छेँ ?"

"नहि बाबूजी, ई मतलब नहि छल हमर । हम तऽ एतबे कहै छी जे नौकरी करै छी, भगवानक शरणमे रहै छी, दुनू इज्जतिक बात छैक । अइमे ककरो हेठी नहि होइत छैक ।"

"ठीके कहैत छैँ बेटी ! आब तऽ कोनो बातमे हमर हेठी नहि होइत अछि । सभक पराकाष्ठा देखि चुकल छी । माला गेल, अपन बापकेँ ओकर कृत्यक सजाय देलक । भरि गामक लोक दरबज्जापर आबि हमर दानवताक खिस्सा सुनलक आ सभक संग तोहूँ हमरा छोड़ि चल गेलैं । आइ दस वर्षपर घुरल छेँ–तोरा बापक सहारा नहि चाहियौक आब ।"

"नै बाबूजी– एना नहि कहू । आइ तऽ सभ दिनसँ बेशी अहाँक आशीर्वाद आ सहाराक आवश्यकता अछि, मुदा हमरा एतहि रहऽ दियऽ । घर-आंगन जायब तऽ नहि जानि की-की मोन पड़त आ बताहि भऽ जायब हम ।"

"ठीके कहै छेँ–आश्चर्य तऽ अहीमे जे हम बताह नहि भेलहुँ ! एतेक घटना भऽ गेल आ हम ओही हवेलीमे एकसर एतेक दिन रहि गेलहुँ । तोँ लोकनि सभ अपन-अपन बाट ताकि लेलैं, नीक-बेजाय । एकटा बेचारी मुक्त भऽ गेल, जिनगीमे जे फाँस ओकर गरामे लगा देलिऐक, तकरासँ मुक्त हेबाक चेष्टामे जिनगियेसँ मुक्त भऽ गेल । तोरा बेरमे बड़ साकांक्ष रही, खूब देखि-सुनिकऽ चुनलहुँ मुदा तोरो की भेटलौक ? लांछन आ अपमान । सभ हमर कर्मक फल थिक । एकटा असहाय, शरणमे आयल स्त्रीक अपमान कयलिऐक हम– आइ ओकरे श्रापसँ...

शीला बीचहिमे रोकलकनि–"ककरो कोनो श्राप नहि छैक बाबू जी ! जे बीति गेलैक, एकटा डेराओन वीभत्स स्वप्न छलैक । ओकरा बिसरिये कऽ हमरा लोकनि नव जिनगी शुरू कऽ सकैत छी ।"

कल्लू चौधरी अप्रत्याशित रूपसँ कोमल स्वरमे कहलथिन–"सैह तऽ हमहूँ कहैत छियौक शीला ! जे भेलैक तकरा वीभत्स स्वप्न मानि बिसरि जो । घर चल, अपन बूढ़, दुखी बापक संग अपन दुःख बाँटि ले । चल, घर चल बेटी, अपन अभागल बापक एकटा इच्छा मानि ले ।'

"मानब बाबूजी, अहाँक सभटा बात मानब, मुदा आइ चलबा लेल जिद नहि करू, हमरा सोचऽ दिय"

"सोचि ले, नीक जकाँ सोचि ले । आइ तोरा अपन आँगनमे जयबाक लेल सोचऽ पड़ि रहल छौक । हम तोरा दोष नहि दैत छियौक । ओइ घरकेँ एहन भयावह आ पतित हमहीं बना देने छिऐक । मुदा हम तऽ ओइ घरकेँ मन्दिर जकाँ पवित्र बनबऽ चाहैत रही बेटी ! तोहर माय जहिया छोड़िकऽ गेलीह, भरि गाम, सर-सम्बन्धी घेरि लेने रहय । मुदा हम तोरा सभक मुँह देखलियौक आ एकबेर जे 'नहि' कहलिऐक तऽ फेर 'हँ' नहि कहलिऐक । तोरा लोकनि पैघ भेलैँ, अपन अपन बाट धयलैं । आ घर एक बेर ओहिना सुन्न भऽ गेल जेना तोहर मायक गेलापर भेल रहय । आ ओइ सुन्न भूतबंगलामे हमर प्रेत एकटा मानवीकेँ चिबा गेल । आ ओइ प्रेतकेँ देखि सभ पड़ा गेल । बंगलामे हम एकटा प्रेत जकाँ बौआइत रहलहुँ दस वर्ष । बाँकियो दिन एहिना बौआइत कटिये जायत ।"

शीला कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलनि । बाबू चल गेलथिन । ओ ओहिना ठाढ़ हुनकर अन्हारमे विलीन होइत कायाकेँ देखैत रहल ।

मुदा पुजेगरी चुप्प नहि रहलैक—'ई नीक काज नहि कयल दाइ अहाँ । सरकार पहिनेसँ बड़ दुखी छथि । आजुक बाद तऽ जिनगी आरो पहाड़ भऽ जयतनि हुनकर । माय-बापक क्रियापर सन्तान यदि एना विचार करऽ लागय तऽ भेलै ! विचार करऽवाला भगवान छथि । सभ हुनके पर छोड़ि दियनु दाइ !

भगवानपर सभटा छोड़िकऽ शीला निश्चिन्त नहि भऽ सकल । प्रात भेने, माने दोसर दिन, साँझमे बाबूजी भगवानक दर्शन करऽ नहि अयलथिन । दिनमे स्कूलोमे बेराबेरी बहुत लोक सभ अयलैक । स्त्रिगण-पुरुष । शीलाक मोन घोर भऽ गेलैक, नीक जकाँ पढ़ाइयो नहि सकलैक । आ साँझखन बाबूक मन्दिर नहि अयलासँ मोन एकदम चिन्तित भऽ उठलैक ।

पुजेगरी कहलकै—"एकदम अजगुत ! एतेक वर्षसँ हम छी, आइ धरि सरकारकेँ एक्को साँझ नागा नहि गेल छलनि गाममे रहैत ।"

शीलाकेँ अपनो बुझल छलैक । बाबूजी किएक ने अयलाह दर्शन करऽ ? ओ चिन्तामे पड़ल गुनधुन करैत रहल ।

मुदा बाबूजी दोसरो दिन नहि अयलथिन, तेसरो दिन नहि । पाँच दिन बीति गेलैक । फेर सातो । आब शीला घबरा गेल । पुजेगरीकेँ कहलकनि—"एक बेर जाउ

पुजेगरी जी ! कने बाबूजीकेँ देखि अबियनु । हमरा चिन्ता भऽ रहल अछि ।"

"हम जाकऽ की करबनि दाइ ! दुखित तऽ सरकार कहियो पड़ले नहि छथि आइ धरि आ यदि पड़लो हेताह तऽ हम जाकऽ की करबनि ? दवाइ तऽ अहाँक लग अछि । अहीं किएक नहि चल जाइत छी ?"

शीलाकेँ कोनो उत्तर नहि फुरेलैक । ओकरा चुप्प देखि पुजेगरी बजलैक—"जिद छोड़ि दियऽ दाइ ! अपन घर जाउ, बापक सेवा करू । ओ बड़ दुखी छथि । अहाँ नहि जनैत छी जे ई दस वर्ष कोना बितौने छथि अहाँक बाप ! अहाँ लोकनि गामसँ विदा भऽ गेलहुँ आ गामक लोक दरबज्जापर चढ़ि अयलनि । अगुआ छलाह अहाँक पित्ती रूदल चौधरी । सभकेँ ललकारलथिन "एहन पतितकेँ समाजसँ बहिष्कृत करऽ पड़त ।" सभक अयनाइ-गेनाइ बन्द भऽ गेलैक । राड़-रोहिआ काज केनाइ बन्न कऽ देलक । खेत-पथार पड़ल रहि गेल । मुदा सरकार अडिग रहलाह । दस वर्षसँ दरबज्जापर क्यो पयर नहि देने छनि, ककरो देबहे नहि दैत छथिन । बहिष्कारक एक सालक बाद लोक सभ फेर सटऽ चाहलकनि, सभकेँ भगा देलथिन । नहि जानि कखन खाइत छथि- की खाइत छथि, गाममे क्यो ने जनैत छनि । दस वर्षसँ हवेलीमे कोनो दोसर प्राणी पैर नहि देलक अछि । सरकार एकदम एकसरे छथि ।"

शीलाक मोन औनाय लगलैक । रूदल चौधरीपर घृणा आ क्रोध भेलैक । बाबूजीक खिलाफ गामक लोककेँ बहकौलक । आ अपन कृत्य ? भतीजी छलैक माला । बजारमे बेचि आयल बेटीकेँ आ गाममे पुरुष बनैत अछि ! ओकर चेहरासँ ई नकली चेहरा नोचऽ पड़तैक । शीला क्रोध आ आवेशसँ थर-थर काँपऽ लागल ।

पुजेगरी फेर टोकलकै—"देरी नहि करू दाइ, जाउ अपन घर, नहि तऽ बड़ अबेर भऽ जायत ।"

'नहि' शीलाकेँ चिचिअयबाक इच्छा भेलैक । ओ अबेर नहि होबऽ देतैक । ओ घर दिस दौड़ल । भोरका बेर छलैक । सभ दरबज्जापरक लोक ओकरा दौड़ल जाइत देखलकै । मुदा ओ बिन किछु देखने अपन घर दिस दौड़ल गेल ।

मुदा घर लग आबिकऽ पयर एकदम थकमका गेलैक । बाहरक दलान ढनमनाकऽ खसल-पड़ल छलैक, नहि जानि कहियासँ ? हवेलीक छहरदेबालीक ईंटा खसल छलैक आ पलस्तर गायब छलैक । ठाम-ठाम घास-पात उगल । फाटक खूजल छलैक । ओ भीतर पैसि गेल । आंगनमे जंगल उगि आयल छलैक, उँच-ऊँच गाछ आ कूड़ाक ढेर । एकटा चौड़ा रस्ता जकाँ साफ छूटल छलैक । ओ ओही बाटे चलि ओसारापर आबि गेल । ओसाराक सभटा सीमेंट उखड़ल छलैक आ छतसँ

झोल लटकल छलैक । कोठली सभक दरबज्जा बन्न छलैक । शीलाक कोठली, मालाक कोठली, सभ दरबज्जापर झोल-झंखार लटकल छलैक । खाली एकटा कोठली खूजल छलैक । शीला हड़बड़ाकऽ ओहीमे पैसि गेलि । ओही पुरना पलंगक मैल आ फाटल चादरिपर बाबूजी आँखि मुनने पड़ल छलथिन । दाढ़ी बढ़ल छलनि, आ आँखि धँसल । अयबाक ध्वनि सुनियोकऽ आँखि नहि खोललथिन । आर चिन्तित होइत शीला सिरमामे बैसि माथपर हाथ राखि देलकनि । माथ बोखारसँ जरि रहल छलनि । हाथक स्पर्श होइते ओ बड़बड़ाय लगलाह–"अहाँ फेर आबि गेलहुँ । माफ करू हमरा । लऽ जाउ अपन घर-घराड़ी । मुक्त करू हमरा । नहि चाही अहाँक किछु । अहाँ घर जाउ, क्षमा करू हमरा ।"

शीला हाथ माथपर रखने कनेक कान लग झुकिकऽ कहलकनि–"हम छी बाबूजी, शीला ।"

आँखि खुजलनि । माथपर झुकल शीलाकेँ देखलथिन । अत्यधिक ज्वर आ प्रायः छौ दिनक उपासक कारणे शरीर कमजोर छलनि । फेर लगले आँखि झँपा गेलनि । शीला आस्ते-आस्ते माथ दबाबऽ लगलनि ।

ज्वरमे बाबूजी फेर बड़बड़ाय लगलथिन–"के ? मालाक माय ? कोना अयलहुँ एतेक दिनपर ? जाइत किएक छी ? ठहरू, हमहूँ संग चलब...।"

फेर घिघिआय लगलथिन— के...के...छैँ रौ नंगटा ? एना दरबज्जापर किएक चढ़ल अबै छैँ ? तोहर एहन मजाल...उतर... उतर नीचाँ ।

बाबूजी ओहिना अनाप-शनाप बड़बड़ाइत रहलथिन आ शीला सिरमामे बैसल रहल ! भोरसँ दुपहरिया भेलैक, आ दुपहरियासँ सँझ । ने घरमे लालटेन, ने डिबिया । एकदम अन्हार घर, अन्हार आँगन आ पलंगपर रोगी पड़ल बाप । अन्हारमे सौँसे घर-आँगन भयावह भऽ उठलैक । शीलाकेँ तकर डर नहि भेलैक । डर भेलैक जे भोरसँ एक्को बेर बाबूजीकेँ नीक जकाँ होश नहि भेलनि । ओहिना डिलीरियममे बड़बड़ाइत छथिन । ने घरमे दबाइ, ने कोनो नोकर-चाकर । डाक्टर गाममे नहि । धारक पार सेन्टरपर होइ से संभव । मुदा के बजा अनतैक ? ककरा कहतैक ? डाक्टर बजयबाक बदला एकटा दोसरे नाटक शुरू भऽ जयतैक ।

माथ छूलासँ लगैत छलैक जेना जवर 104-105 डिग्रीसँ बेशिये होनि । कपारपर राखल तरहत्थी एकदमसँ जरऽ लगैत छलैक । अन्हार द्वारे ठीकसँ ने दरबज्जा सुझैत छलैक, ने घरक वस्तु-जात ! तैयो हथोरिया देबऽ लागल । एकटा

कोनमे एकटा चैल अभरलैक, इजोतेमे देखने छलैक । बुझयलैक जे पानियो छलैक । बिछौनक फाटल चादरिसँ कनेटा टुकड़ी फाड़लक आ पानिमे भिजा-भिजा पट्टी देबऽ लगलनि । आध घण्टा धरि पट्टी देलाक बाद बुझयलैक जेना ज्वर किछु कमि गेल होनि । डिलीरियममे अनर्गल बकनाइ सेहो बन्न भऽ गेलनि ।

किछु काल बाद अन्हारमे एकटा स्वर बहरेलैक– के अछि एहि घरमे ?"

शीला झट कपारपर तरहत्थी रखैत कहलकनि–"हम छी बाबूजी, शीला ।"

किछु काल बाद बाबूजी कहलथिन–"अयलहुँ से नीक कयलहुँ बेटी ! देरी भेल, आब हम भरिसक नहि ठहरि सकब अइ घरमे अहाँकेँ फेरसँ प्रसन्न आ सुखी देखबाक लेल । मुदा अहाँ अपन घर घुरि अयलहुँ से प्रसन्नताक बात । सभटा एना ढनमनायल आ उजड़ल-उपटल देखिकऽ घबरा जुनि जायब । साहसपूर्वक सभटा ठीक कऽ लेब । हम किछुओ नष्ट नहि कयने छी, खाली दस वर्षसँ एहिना सभ उपेक्षित पड़ल अछि । मुदा अहाँ गामवलाक उपेक्षा आ अनादरसँ डेरायब जुनि, एकटा संकल्पक संग अइ घरक इतिहासकेँ फेरसँ लिखब निष्कलंक आ दीप्त आखरसँ । हम थाकि गेल छी बेटी, हम आब जायब ।"

"नहि बाबूजी ! एना नहि बाजू ? सभ ठीक भऽ जायत । अहाँ हमरा छोड़िकऽ एना कोना चल जायब ? अखन तऽ कतेक रास गप्प कहबाक अछि अहाँकेँ । नेनपन बितलाक बाद, मायक मुइलोपर कहियो कहाँ कोनो गप्प अहाँकेँ कहि सकलहुँ ? आब सभटा कहब अहाँकेँ, अपन सभ गप्प आ अहुँक सुनब । अखन जाय नहि देब बाबूजी अहाँकेँ ।"

बाबूजी कोनो जवाब नहि देलखिन । प्रायः एतेक दिनुका रोगी शरीर एक साँसमे एतेक बजलासँ फेर शिथिल भऽ गेलनि वा ज्वर फेर तीव्र भऽ गेलनि आ अर्ध-अचेतावस्थामे लऽ गेलनि । शीला फेर ओइ भयावह अन्हारमे एकसरि बैसल रहल । कखनो आंगनमे किछु खड़खड़ाइ तऽ डर होइ जे क्यो कोठलीमे पैसि रहल छै । कतेको बेर मोन पड़लैक जे हवेलीक फाटक ओहिना खूजल छलैक, क्यो भीतर पैसि सकैत छैक । मुदा अन्हार दने दरबज्जा धरि जा ओकरा बन्न करबाक साहस नहि भेलैक ।

मुदा भरि राति एहिना अन्हारमे बैसलो रहब तऽ संभव नहि छलैक । बाबूजीक चेहरो तक देखि नहि पाबि रहल छल । ओ फेर एक बेर हथोरिया देलक अन्हारमे । दिनक इजोतोमे कोठलीमे डिबिया-लालटेन कतहु अभरल नहि छलैक । तैयो अन्हारमे हथोरिया दऽ चेष्टा कयलक । कतहु किछु नहि अभरलैक । ओ

थाकिकऽ फेर बिछौनपर बाबूजीक सिरमामे बैसि गेलि आ आस्ते-आस्ते बाबूजीक माथ दबावऽ लगलनि ।

ओहिना भोर भऽ गेलैक । जखन चिड़ई-चुनमुन्नी चहचहाय लगलैक आ आंगन-घरमे रौद पसरलैक तऽ ओहिना सिरमामे बैसल शीलाक माथ एकदिस झुकल छलैक आ आँखि झँपल । ओ हड़बड़ाकऽ उठल आ एक बेर फेर बाबूजीक माथ छुलकनि । ज्वर आरो बेशी भऽ गेल छलनि आ बाबूजी बेसुध छलथिन । दिन भरिक भूखल-पियासल आ थाकिकऽ चूर भेल शीलाक मोन आशंकित भऽ उठलैक । आब एना बैसलासँ काज नहि चलतैक, ककरो बजाबहे पड़तैक । ककरा बजबियैक ? शीलाकेँ नहि जानि किएक प्रणव मोन पड़लैक । अखन यदि किम्हरोसँ ओ आबि जयतैक तऽ सभटा जिम्मेदारी ओकरा दऽ ओ निश्चिन्त भऽ सकैत । मुदा ओकर बातपर ओ ओतैक ? बड़का लोक भऽ गेल छलैक । ओकरापर रुष्ट छलैक । ओकर इच्छाक विरुद्ध ओ घर छोड़ने छलि आ तकर नीक जकाँ दण्ड भोगने छलि । मुदा से प्रणव की जानऽ गेलैक ? दस वर्षसँ शीलाक नामो नहि सुनने हेतैक ओ । मुदा ओकरा बजाबऽ पड़तैक । ओकरा लग अमित छलैक । बाबूजी अमितकेँ स्वीकार कऽ सभ किछु ओकरे दऽ जाथुन तऽ नीक । हम की करब ई हबेली आ सम्पत्ति ? जहिना एतेक जिनगी बितल, बाँकियो बीतिये जायत । मुदा प्रणवक अयनाइ आवश्यक छलैक । ओकरा लग अमित छलैक । ओ बुझनुक आ सामर्थ्यवान छलैक, आबिकऽ सभटा सम्हारि सकैत छलैक ।

मुदा ओ ओतैक कोना ? शीला जीवैत अछि की मरि गेल, सेहो नहि जनैत अछि ओ ? ओकरा सभटा जनबऽ पड़तैक, लिखऽ पड़तैक जे अइ दस वर्षमे शीला कतेक बेर मरल आ मरि-मरिकऽ जीयल । आइयो अपन जीवित लाशक संग कोना अपन घरमे अपन मरणासन्न बापक शय्यापर बैसल अछि ।

सभटा लिखऽ पड़तैक ओकरा, किछुओ नुकयबाक काज नहि छलैक । ओकर सभटा लज्जा, ओकर अपमानक गप्प, ओकरा कनियो मलिन आ कलंकित नहि कऽ सकतैक ।

अइ निश्चयक संग शीलामे नवीन स्फूर्त्ति भरि गेलैक । ओ दौड़ल मन्दिर गेल । पुजगरीकेँ डाक्टर बजबऽ धारक ओइ पार स्टेशन बजार पठौलकनि आ अपन कोठलीसँ कागज-कलम लऽ हवेलीमे मरणासन्न बापक कोठलीमे घुरि आयल । ओही कोठलीमे, ओही रोगीक शय्यापर बैसि ओ लिखऽ लागल, सभटा, शुरूसँ आखिर धरि...

—"जाइत काल अहाँ मना कयने रही, नहि मानलहुँ, अहाँक अपमान कऽ चल अयलहुँ । प्राय: से सभ अहाँ बिसरि गेल हैब ।

मुदा हमरा किछु नहि बिसरल अछि । जाहि दिन अहाँक घर छोड़ने रही, तहियो जनैत रही हम जे किछु बिसरब संभव नहि हैत । मुदा अहाँक संग रहबो संभव नहि छल । बेर-बेर प्रश्न उठैत छल जे कोन अधिकारसँ अहाँ लग छी ? सखा, बान्धवी प्रेयसी वा रक्षिता ? कथीक आसमे अहाँ लग छी ? फेरसँ नव जिनगी शुरू करबाक आसमे ? कुमारि, विधवा वा परित्यक्ता, की छी ? स्वामीक संग बहुतो दिन रहल छी । हुनकर घर छोड़लोपर विधिवत तलाक नहि भेल अछि । आ से यदि भैयो जाय तऽ की फेर अहाँ सँ विवाह कऽ लेब ? अहाँ संभवत: मानि जैतहुँ । संभव नहि, अबस्से मानि जैतहुँ । ताहीसँ हमरा डर लागऽ लागल । डेरबुक नहि छी हम । मुदा लागल जे आर बेसी दिन संग रहब तऽ कमजोर भऽ जायब ।

सत्त कहू तऽ ई कमजोरी हमरामे पहिनेसँ छल । जहिया किताब मँगबा लेल हमर दरबज्जापर आबि अहाँ अनेरो अपमानित भेल रही, तहिया हमर बकार नहि फूटल । मुदा एकसरमे बड़ कानल रही । पढ़ब-लिखब छूटि गेल । कहियो देखबो कयलहुँ अहाँकेँ तऽ दोसर दने चल गेलहुँ । मुदा नहि जानि किएक एकसरमे बैसल अधिक काल अहीँक बारेमे सोचैत छलहुँ । फेर अहाँ गाम छोड़िकऽ चल गेलहुँ । माला पहिनहि घर छोड़ि पड़ा गेल छल । ओइ सुन्न हवेलीमे अहाँक जयबाक खबरि सुनि कतेक दिन तक कानल रही हम ।

फेर विवाह भेल । सभटा बिसरि गेल । कहियो अहाँक ध्यान आयल हो हुनका संग रहैत, से मोन नहि पड़ैत अछि । ओ तऽ सभदिन ओहिना छलाह । ककरो सोझाँ देखि लेलापर, ककरोसँ बजैत देखि लेलापर अनेरो गरजऽ लगैत छलाह । मुदा हम सभ सहि जाइत छलहुँ । कहियो कोनो बातक विरोध नहि करैत छलियनि । लगैत छल जेना हुनकर कोनो दोष नहि छनि । विवाहक प्राते गामेक क्यो मालाक खिस्सा हुनका कहि देने छलथिन । विवाहक बात बाबूजी गुप्त रखने छलाह । अइसँ पहिने दू-तीनटा ठीक भेल कथा गामक लोक मालाक भगबाक गप्प सुना बिगाड़ि देने छलनि । हिनका बेरमे बाबूजी एकदम सतर्क छलाह । ककरो भनकियो नहि लागऽ देलथिन । मुदा विवाहेक प्रात हिनका क्यो सभटा कहि देलकनि । चतुर्थिएक प्रात द्विरागमन करौने जे गामसँ अनलनि से फेर घुरिकऽ जाय नहि देलनि । बाबूजीक पत्रपर पत्र अबैत रहलनि आ ओ सभ पत्रकेँ हमरे सोझाँ फाड़ि चूल्हिमे जरबैत रहलाह ।

तैयो हुनका हम कहियो दोष नहि देलियनि । सभ दिन लागल जे जतेक शक करैत छथि, ततबे मानितो छथि । आ स्वामी प्रसन्न रहथु तऽ हमरा कोन काज ककरो सोझाँ जयबाक आ गप्प करबाक ?

मुदा ओइ दिन ड्राइंग रूममे अहाँक बोली सुनि नहि जानि किएक सभटा निश्चय बहि गेल । ओइ दिन चाय लऽकऽ धोखासँ नहि आयल रही ड्राइंगरूम मे, जानि-बूझि कऽ आयल रही । अहाँकेँ देखबाक लोभ भेल छल । छौ बर्षपर बोली सुनने रही अहाँक । जानि-बूझिकऽ सोझाँ चलि आयल रही ।

आ अहाँकेँ मोने हैत जे हमरा देखिते हड़बड़ा कऽ भीतर पठा देने रहथि । अहाँक गेलापर गंजन करऽ लागल रहथि । ओइ दिन नहि जानि किएक बहस करऽ लगलियनि, कथाक जवाब देलियनि । आ हुनकर सन्देह विश्वासमे बदलि गेलनि । ओही दिन ओ निश्चित रूपसँ मानि लेलनि जे विवाहक पूर्व हमरा-अहाँक सम्बन्ध छल । आ बेर-बेर ओकरे ताना देबऽ लागल रहथि ।

तैयो जखन ओइ दिन अहाँ अमितकेँ लऽ आयल रही, हम अहाँक संग गाम जयबामे मात्र नकली विरोध देखौने रही । हुनकर सभटा विचार जानियोकऽ अहाँक संग एकसरि गाम चल गेल रही । हमरा बूझल छल जे ओ ओही दिन घुरि औताह । मुदा नहि जानि किएक मोन विद्रोहपर उतरि आयल छल । हम अहाँक संग गेल रही ।

आ घुरिकऽ जे काण्ड भेल, अहाँ जनैत छी । प्रायः ओहू दिन मोने-मोन विद्रोहपर अड़ल रही । नंगटियाकऽ घरसँ निकालऽ लगलाह तऽ मारऽपर तैयार भऽ गेलियनि । घर छोड़ि पड़ा गेलाह तऽ प्रतीक्षामे नहि रहलियनि । आत्महत्याक विचारे इम्हर-ओम्हर बौआ अहाँक घरमे चल अयलहुँ । भरिसक आत्महत्याक सोचबो हमर मनक प्रपंचे छल । हमर अन्तर्मन हुनकासँ मुक्त भऽ अहाँक लग पहुँचऽ चाहैत छल ।

आ तखन ? एतहि आबिकऽ हमरा लागल जे सभटा उनटा-पुनटा भऽ गेल छल । हम स्कूलमे पढ़ऽबाली कुमारि कन्या नहि रही । ओइ दिन अहाँक अपमानपर घर छोड़ि अहाँक संग बहरा जैतहुँ तऽ संग रहबाक सोचब सार्थक होइत । मुदा हम तऽ विवाहिता रही– स्वेच्छासँ स्वामीक घर छोड़ि आयल रही । अहाँक संग कोन रूपमे रहू ? यैह प्रश्न बेर-बेर मोनमे उठैत छल ।

हम पत्नीक अतिरिक्त आन कोनो रूपमे राखब अहाँ सोचबो नहि करब, जनैत रही । मुदा ई तऽ हमर स्वार्थपरताक पराकाष्ठा होइत । अहाँक आगू उज्ज्वल भविष्य छल । संघर्ष आ अभावक चौबीस-पच्चीस वर्षक बाद जीवनमे एकटा नव

प्रात, एकटा नव बाट खूजऽ जा रहल छल, आ बीचमे हम एकटा अवरोध बनि ठाढ़ भऽ गेल रही । घर छोड़ि फेरसँ किम्हरो निकलि जयबाक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नहि छल । फैसला हमहीँ कयने रही ।

मुदा ई नहि सोचने रही जे जाहि बाटपर जा रहल छी, से कतऽ लऽ जायत ? हमरासँ नीक तऽ माले छल, जे पसिन्न नहि भेलैक, ओकरासँ विद्रोह कयलक । जाहि ठाम पहुँचल ताहि लेल ककरो दोष नहि देलकै ।

मुदा हम तऽ अपन शिक्षा आ आत्मविश्वासक बले अहाँक सुरक्षित आश्रयकेँ छोड़ि स्वतंत्र जीवनमे डेग धयने रही । पहिले डेग खाधिमे पड़ल ।

बड़ छोटछीन शहर छलैक । कहऽ लेल सबडिवीजन शहर, मुदा रंग-ढंग ब्लौको सभसँ बत्तर । ओहीमे एकटा प्राइवेट स्कूल रहैक, लड़की सभक स्कूल, पाँचवाँ क्लास धरि ।

हेडमास्टरनीकेँ देखियेकऽ हम चौंकल रही । चालीससँ अधिक बयस, मुदा टीमटामसँ छौंड़ी बनबाक पूरा चेष्टा । रंगल-ढौरल मुँह । ठोर पर लाली लेभरल, असर्ध सन । सौंसे देहक गुदगर माँउस वीभत्स ढंगे पसरल आ जगजियार कयल । हमरा देखितहि प्रसन्नतासँ तेना हुलसल जेना कोनो शिकार फँसल होइ !

आ गिद्ध सन आँखि गड़ौलक सेक्रेटरी–"ऐहने मास्टरनीक काज छल हमरा । बहाली पत्र पठा तऽ देने रही, मुदा चिन्ता छल जे नहि जानि केहन हैब । मुदा देखिकऽ नयन जुड़ा गेल ।"

हमर भहुँ कने तनल देखि दाँत निपोरैत बाजल–"चेहरासँ लोकक आत्माक झलक भेटि जाइत छैक । अहाँकेँ देखियेकऽ लगैत अछि जे अहाँ धीयापुताक नीक ध्यान रखबैक, ओकरा नीक शिक्षा देबैक, ओकर चरित्र-निर्माणक न्योँ देबैक ।"

मुदा हमरा तखनो नहि बुझायल जे हमर विनाशक नीव पड़ि चुकल अछि । आशंका भेल । लागल जे कोनो गलत स्थानपर आबि गेल छी । मुदा पाछाँ घुरबाक बाट स्वयम् बन्द कऽ आयल रही । जिद छल अपन । विचारलहुँ जे जा धरि कोनो दोसर स्थान ठेकनगर नहि भेटि जाय, एतहि कहुना गुजर कऽ ली ।

मुदा ठेकनगर स्थान भेटबासँ पहिने हमरे स्थान बदलि गेल । रातिमे ठहरबा लेल स्कूलेमे कोठली छल । हेडमास्टरनियो ओही कोठलीमे छलीह । भरोस भेल । दुनू गोटे संगे रहब ।

मुदा पहिले राति लागल जेना दोसर क्यो बिछौनपर हो । कोठलीमे लाइट

ओहिना जरि रहल छल । आँखि खोलितहि देखल जे सेक्रेटरी बगलमे छल । चिचिअयबाक लेल मुँह खोलऽ लगलहुँ तऽ लागल दुनू हाथे क्यो मुँह जँतने अछि। हेडमास्टरनी दुनू हाथे मुँह जँतने सिरमामे बैसल छल ।

थकुचल देह आ मरल आत्माक संग भोरे अपन मोटरी-चोटरी उठा विदा भेलहुँ तऽ हेडमास्टरनी ओहिना कुटिलतासँ मुसकियाइत बाजल–"कतऽ विदा भेलहुँ ? आबो कतहु जाय जोगर रहि गेल छी ?"

हम एकदम सिंहनी जकाँ गरजल रही–"चुप्प शैतान ! आइ हम सभक भण्डाफोड़ कऽकऽ रहबौक ! अखने थाना जाइत छी आ सभकेँ हथकड़ी लगैबाक इन्तजाम करैत छी ।"

ओ कुटनी ओहिना हँसैत रहल–"अबस्स जाउ । मुदा कहबैक की ? सेक्रेटरी साहेब जबर्दस्ती कयलनि ? चिन्है छियनि के छथि ओ ? इलाकाक सर्वेसर्वा, हाकिम-हुक्काम तक डेराइत छनि । मिनिस्टरक सम्बन्धी छथि । भाग खुजि गेल अहाँक ।"

हम पिच्चसँ ओकरा मुँहपर थूकि देलिऐक । ओकर आँखि रंगलैक, मुदा फेर ओहिना हँसऽ लागल "अइ अपमानक बदला हम लऽ सकैत छी । चाही तऽ अखने दिन-देखार स्कूलक मेहतरक संगे कोठलीमे बन्न कऽ दऽ सकैत छी । क्यो मदति लेल नहि औत । मुदा नहि । अखन अहाँ होशमे नहि छी । शान्त भऽ विचारू । हम अहाँक नीके लेल कहैत छी ।"

नहि जानि किएक हम चुप रहि गेलहुँ । ओकर साहस बढ़लैक "सीथ मे सिन्नुर हमरो अछि अहाँ जकाँ । मुदा इज्जति बचेनाइ तऽ अपन हाथ अछि । मासमे एकाध बेर आबि जाइत छथि । एकाध बेर हमहूँ गामसँ भऽ अबैत छी ? अही स्कूलमे पन्द्रह वर्ष बिता देने छी । आयल रही तऽ अहींक वयस रहय । अहीँ जकाँ कानल रही । मुदा आब ककरो कानब देखि मोन नहि पसिझैत अछि । अहाँसँ पहिने जे आयल छल से एकदम छौंड़िये छलैक, बेहोश भऽ गेलैक । कहुना माय-बापकेँ चारि पाँच हजार दऽ सेक्रेटरी साहब झंझटसँ चैन भेलाह ।"

हेडमास्टरनी फेर निर्लज्ज जकाँ हँसऽ लागल । हमरो जेना बकार बन्द भऽ गेल । जेना अपन नियतिकेँ स्वीकार कऽ लेने रही । सेक्रेटरी साहब सभ राति अबैत रहलाह । आब हेडमास्टनी सिरमामे बैसि दुनू हाथे मुँह नहि दबौने रहैत छलीह ।

मुदा एक राति आँखि खूजल तऽ लागल जेना आन क्यो होअय । चेहा कऽ उठऽ लगलहुँ तऽ जोरसँ बिछौनपर दबबैत बजलाह–"डेराउ जुनि । हम छी ।''

डिप्टी साहब छलाह । फेर इन्सपेक्टर साहब, बड़ाबाबू, मुखियाजी, नहि जानि के के ? सभक नामो ध्यानपर नहि अबैत अछि । अलग-अलग नाम, अलग-अलग शरीर । मुदा एक्के टा खिस्सा । मुर्दा देह आ नोचि-नोचि कऽ खाइत गिद्ध । दू साल बाद जखन ओइ स्कूलसँ छूटल रही, सभटा माँउस नोचि-नोचिकऽ गिद्ध सभ खा गेल छल, खाली कंकाले बाँचल छल ।"

आ ओइ कंकालमे आब ककरो रुचि नहि रहि गेल छलैक । तेँ ट्रेनिंगमे नाम लिखबा देबऽ लेल जखन सेक्रेटरी साहबकेँ कहलियनि तऽ मानि गेलाह । आ जहिया स्कूल छोड़ि ट्रेनिंग स्कूल बिदा भेल रही, क्यो रोकबाक चेष्टा नहि कयलक । हँसी-खुशी अरियाति देलक ।

मुदा ट्रेनिंगक किछु मासमे फेर माँउस भरि गेल । चेहरापर लाली आ पानि आबि गेल । ट्रेनिंग पास कऽ जखन ब्लौकक सरकारी स्कूलमे पोस्टिंग भेल, गिद्ध सभ ओहिना मड़राय लागल ।

फेर वैह खिस्सा दोहरौअलि । ब्लौकक डाक्टर, बी.डी.ओ., भी.एल.डब्ल्यू., क्यो नहि छूटल । एकटा सार्वजनिक उपभोगक चीज भऽकऽ रहि गेलहुँ हम । जकरे खगता होइ सैह चल आबय । आत्मा आ शरीरमे जेना विद्रोह करबाक शक्तिये नहि बँचि गेल रहय । भरिसक ओकरे अभ्यस्त भऽ गेल रही हम ।

अहाँ आश्चर्य करब जे दस वर्षक बाद आइ एतेक निर्लज्जतापूर्वक किएक सभ-किछु लिखि रहल छी ? अइ अपमान आ गन्दगीक खिस्साकेँ अपने संग किएक नहि गाड़ि लैत छी ?

मुदा नहि जानि किएक आइ लगैत अछि जे ओ बेर आबि गेल अछि जखन सभ-किछु अहाँकेँ लिखि दी । अहाँकेँ बिना लिखने हमर मोन चैन नहि हैत । अहाँ हमर मान-अपमान, लज्जा-लांछन, लोक-परलोक सभसँ ऊपर छी । आइ आरो बेशी स्पष्ट रूपसँ लागि रहल अछि जे अहाँक संग हमर सम्बन्ध देहक सम्बन्धसँ कतहु उपर अछि । देह तऽ पाँच बरख धरि स्वामियो नोचलनि आ अइ दस बरखमे अनगिनत गिद्ध सभ अपन चांगुर-चोंचसँ ओकरा क्षत-विक्षत कयलक अछि । स्वामीक संग रहैत भ्रम भेल छल जे हुनकासँ प्रेमो कयलियनि । मुदा ओ तऽ मात्र कर्त्तव्यक निर्वाह छल । देहक बँटबारा भेल, ओइमे अहाँक हिस्सा किछुओ नहि रहल । ओ अपवित्र गीजल माँउस अहाँक समक्ष रखबो जोगर ने छल, ने अछि ।

मुदा मोनक बटवारा तऽ कहियो नहि भेल । ओइमे तऽ सभटा अहींक हिस्सा अछि । आइ निर्लज्ज भऽ जेना अपन अपमान, शीलहरणक कथा कहलहुँ, तहिना निसंकोच भऽ अपन मोनोक बात कहैत छी । हमरा ई बूझल अछि जे मोनक ई बात अहाँकेँ प्रायः बूझल हैत । आ नहियो बूझल हैत, तऽ आइ ई बूझि अपन अधिकारसँ हमरा लग उपस्थित नहि हैब । जे अहाँक अछि, तकरो अहाँ जोर दऽकऽ संग नहि रखबैक– हमरा बूझल अछि ।

मुदा आइ तऽ हमहीँ जोर दऽ बजा रहल छी । अहाँ आउ । जल्दी आउ । बगलमे बाबूजी मरणासन्न पड़ल छथि आ चौबीस घण्टा भूखल-पियासल हम अहाँकेँ अपन खिस्सा लिखऽ बैसल छी । गाम भरिमे सभसँ बहिष्कृत बाबूजी प्रायः आब नहि बचताह । आशा कम्मे अछि । मुदा अहाँ आउ । अहाँक रहलासँ हमरा बल भेटत ।

अइ दस वर्षमे अहाँक प्रत्येक ठेकान हमर संग रहल अछि, मुदा किछु लिखबाक, अपन कारी मुँह देखयबाक साहस नहि होइत छल । आइ सभटा लिखि देलहुँ अछि अहाँकेँ आ लगैत अछि जेना बहुत दिनसँ छातीपर राखल पाथर उतरि गेल । आब हम व्यग्रतापूर्वक अहाँक प्रतीक्षामे छी, जल्दी आउ ।

ठीक बूझी तऽ अमितकेँ संग लेने अयबैक । एक बेर ओकरा सही स्थान दिआबय अहाँ अनने छलिऐक आ अपमानित भऽ घुरि गेल रही । अइ बेर संभवतः ओ अपमान कयनिहार अहाँक आबऽ धरि नहि बँचताह । मुदा सौंसे गाम अछि । ओकरा मालाक खिस्सा बूझल छैक । शीलाकेँ ओ सभ स्वीकार कऽ लेतैक गाममे, किएक तऽ ओकर कारी इतिहास लोककेँ बूझल नहि छैक । ओकरा लोक स्वामी द्वारा परित्यक्ता, दुखिया बूझि राखियो लेतैक गाममे । मुदा माला तऽ स्वामी आ घर-द्वार छोड़ि बजारमे बैसल छल । गाममे सभकेँ बूझल छैक ।

तैयो इच्छा होइत अछि जे बाबूजीकेँ अमितक हाथे मुँहमे आगि पड़ितनि । भरिसक मालो दीदीक आत्माकेँ शान्ति भेटितैक । मुदा ताहिमे कहीं अमितक अनिष्ट नहि भऽ जाइ । हम निर्णय अहींपर छोड़ैत छी, जे उचित लागय ।"

शीला आर किछु लिखऽ जा रहल छल कि पुजेगरी डाक्टरक संग दौड़ल अयलथिन । बिछौन लग जा नाड़ी हाथमे लितहि डाक्टरक माथ झुकि गेलैक । आ ओ हाथ छातीपर राखि देलकनि आ चोट्टहि घुरि गेल । पुजेगरी जोरसँ चिचिया उठलाह । मुदा शीला ओहिना शान्त रहल जेना ओकरा पहिनेसँ आभास भेटि गेल होइ । सभटा लिखलाहा कागज पुजेगरीक हाथमे दैत बाजल— भोरके गाड़ी अछि

अखन । दौड़ले चल जाउ । ट्रेन भेटि जायत । दरभंगामे डी.एम.क कोठीपर चल जायब । प्रणवकेँ चिन्हैत छिऐक ने, मुन्नर झाक भागिन । वैह डी.एम. भऽ कऽ आयल अछि । ओकरा ई चिट्ठी दऽ कहबैक जे जा धरि ओ नहि पहुँचत, लाश एहिना पड़ल रहतैक ।"

पुजेगरी अइ आग्रहपर अवाक् रहि गेलाह । मुदा शीलाक आकृति देखि किछु कहबाक साहस नहि भेलनि । सभटा कागज लऽ स्टेशन दिस दौड़लाह ।

किछुए कालमे आंगनमे भीड़ लागि गेलैक । एतेक वर्षसँ जे सभ आँगनमे पैर नहि दैत छलैक, से सभ जुटि गेलैक । अबैत देरी दू गोटे लाशकेँ उठा आंगनमे लऽ अनलकै– हे, कहुना घरमे प्राण नहि जानि । एक गोटे अपन आँगनसँ गंगाजल लऽ आयल दौड़िकऽ आ मुँहमे एक चम्मच देलकनि जेना प्राण अखन अँटकले होनि आ जखन मुँह महक पानि टघरि गेलनि तखन सभ फेर घोल मचौलक– नहि, आब प्राण छूटि गेलनि । झट बाँस कटि आबि गेलैक आन नव कपड़ो कफन लेल । चचरी तैयार भऽ गेलनि आ रूदल चौधरी अपन बेटा बंकूकेँ आगू कयलनि– बंकूये आगि देतनि । भातिज छनि, बेटा दाखिल भेलनि ।" सभ मिलि लाश उठबऽ लेल तैयार भऽ गेल ।

एतेक कालसँ सुन्न पथरायल दृष्टिएँ तकैत शीला दौड़िकऽ आँगनमे आबि गेल–"नहि, अखन लाश नहि उठाउ । पुजेगरीकेँ दरभंगासँ आबऽ दियनु ।"

चचरीकेँ ओहिना आंगनमे राखि सभ अवाक् शीलाक मुँह ताकऽ लागल ।

बारह बजैत-बजैत एकटा मोटर हवेलीक गेटपर ठाढ़ भेलैक । प्रणव उतरिकऽ शीघ्रतासँ हवेलीक फाटक दिस लपकल । पाछाँ-पाछाँ पुजेगरी आ ड्राइवर ।

हवेलीक मुँहथरि लग एक बेर प्रणवक पयर थकमकयलैक । एही ठाम एक बेर कल्लू चौधरी ओकरा टांग तोड़बाक धमकी देने छलथिन । अइ मुँहथरियो पर ओ दोबारा पयर नहि देने छल, भीतर पैसबाक कथे कोन ? मुदा से सोचबाक आइ अवसर नहि छलैक । ओ क्षण भरि थमकि, भीतर पैसि गेल ।

आँगन सुन्न जकाँ भऽ गेल छलैक । दू-तीन गोटे लाश लग बैसल । ओही ठाम शीलो बैसल छलैक । आँगन कनिए दूर छीलिकऽ लाश रखबा लेल लोक सभ चिक्कन कऽ देने छलैक । बाँकी सभ दिस ओहिना घास-पात ।

प्रणवक मोटरक आवाजपर फेर चारूकातसँ लोक जुटलैक । पहिने एकटा साहबकेँ देखि लोक अकचका गेलैक आ फेर सभ हाथ जोड़ऽ लगलैक । प्रणवकेँ आश्चर्य भेलैक जखन रूदल चौधरी आ बंकू सेहो ओकरा हाथ जोड़ि नमस्कार कयलकै ।

शीला ओहिना निश्चल बैसल छलैक । कनेक लग जा प्रणव कहलकै–"आब उठू । भीतर जाउ । लाशकेँ जाय दियौक ।"

अइ साधिकार स्वरपर शीला चौंकलैक । गरदनि घुमा प्रणवकेँ देखलकै आ उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक । एकदम समीप आबि एकटक ओकरा किछु क्षण देखैत रहलैक आ फेर बजलैक–"आगि मुदा अहीं देबनि बाबूजीकेँ ।"

"हम ?" प्रणवकेँ आश्चर्य भेलैक । फेर आस्तेसँ कहलकै–"अमितकेँ हम नहि अनने छियैक शीला, जानि-बूझिकऽ । मुदा हमरा कहैत छी आगि देबा लेल– से ठीक हैत ?"

रूदल चौधरी आगू अबैत बजलाह–"हमहूँ तऽ सैह कहैत छलिऐक शीलाकेँ, सर, बंकू भातिज छनि, यैह आगि देतनि ।"

प्रणवकेँ 'सर' शब्दपर आश्चर्य भेलैक । ई शब्द अप्रिय होइतो ओ नित्य सुनबाक अभ्यासी भऽ गेल छल । मुदा रूदल चौधरीक मुहेँ ? ओकरा अपन कानपर अविश्वास जकाँ भेलैक ?

मुदा बंकूक स्वर तऽ आर स्पष्ट छलैक–"अहाँ चुप्प रहू बाबूजी ! शीला ठीक कहैत अछि । 'सर' सन लोक आगि देथिन तऽ काकाक आत्माकेँ शान्ति भेटतनि ।"

आब अविश्वासक कोनो कारण नहि छलैक आ ने शीलाकेँ मनयबाक कोनो उपाय । ओकर इच्छा पूरा करऽ पड़तैक ।

प्रणव तैयार भऽ गेल । लाश उठलैक आ हवेलीसँ बाहर चललैक । आगू-आगू प्रणव छलैक । भरि गामक लोक संग भऽ गेलैक । श्मशानमे भीड़ लागि गेलैक।

प्रणवकेँ नियतिपर हँसी लगलैक । अही कल्लू चौधरीक चलते ओकर मामक श्राद्ध नहि भऽ सकलैक आ आइ हुनके मुँहमे आगि देबऽ ओ श्मशानमे बैसल छल । अही कल्लू चौधरीक आँगन-दरबज्जा दस वर्ष धरि श्मशान बनल रहलनि आ आइ श्मशानमे गाम उमड़ल छलनि ।

श्मशानसँ घुरैत साँझ भऽ गेलैक । एतबा कालमे पुजेगरी ड्राइवर आ आर लोकक सहायतासँ आँगन-ओसारा साफ करबा लेने छलाह । भनसाघरकेँ ठीक-ठाक कऽ ओइमे ड्राइवर भोजनक व्यवस्था कऽ लेने छल । बाहरक ढनमनायल दलानकेँ सेहो सोझ-साझ कऽ बैसबा जोगर बना देल गेल छलैक ।

प्रणव आँगनमे गेल । बापक कोठलीमे हुनकर बिछौनपर पेटकुनिया देने शीला पड़ल छलैक । लग जा प्रणव कहलकै–"उठू, पहिने किछु खा लियऽ । दू दिन भऽ गेल निराहार ।"

शीला मूड़ी उठौलकै–"ई तऽ बेश उन्टा गप्प ! अहाँकेँ हम की पूछब, सभटा अहींपर लादि देने छी ।"

–"फेर वैह गप्प शीला ! हम एक बेर पहिनो कहने रही, ई भार नहि, सुख थिक हमर । मुदा अहाँ नहि मानलहुँ ।"

"आ आइ फेर अपन नर्कमे अहाँकेँ घीचि लेने छी । अहाँ अपन स्वर्गसँ हमरा दिस हाथ बढ़बैत छी । मुदा अहाँक हाथ पकड़ि ऊपर उठबाक बदला हम अहींकेँ अपन नर्कमे घीचि लैत छी बेर-बेर ।"

"स्वर्ग-नर्कक विवेचन रहऽ दियऽ शीला ! अखन उठू, किछु खा लियऽ । ड्राइवर भनसाघरमे की व्यवस्था कयने अछि, कने जाकऽ देखि लियौ सेहो । एना हारिकऽ बैसलासँ कोना चलत ?"

शीला आज्ञाकारी शिशु जकाँ उठिकऽ भनसाघर चल गेलैक । तहियासँ दस दिन धरि जे कहलकै प्रणव, शीला करैत गेलैक । प्रणव घर-बाहर दुनू ठाम देखैत रहलैक । वस्तु-जातक अम्बार लागि गेलैक । कोनो सम्पत्ति बेचने नहि छलाह कल्लू चौधरी, सभटा परती पड़ल छलनि । घरमे अन्न-पानि सड़ल पड़ल छलैक । सभक व्यवस्था भेलैक आ प्रणवक रहलासँ गामभरि ओहिना मोस्तैद रहलैक चौबीसो घण्टा ।

मुदा एकादशाह दिन भोरे अप्रत्याशित घटना भेलैक । भोरका ट्रेनसँ प्रोफेसर झा पटनासँ आबि गेलथिन । प्रणव दरबज्जेपर छल । एकाएक अपन आँखिपर विश्वासे नहि भेलैक । मुदा प्रोफेसर झा लग आबि कहलथिन–"जखन अवसरोपर अपन लोक नहि बजबैत छैक तऽ मान-अपमानक विचार छोड़ि, बिन बजाओल आबऽ पड़ैत छैक ।"

प्रणव हुनका बैसबाक स्थान दैत ड्राइवरकेँ चाय लेल भीतर दौड़ौलकै । प्रोफेसर झा फेर अपने कहऽ लगलथिन–"जखन सुनलहुँ तऽ रहल नहि गेल । ओना

अहाँ लोकनिकेँ मुँह देखाबऽ जोगर तऽ नहि छी हम, मुदा पुरना सभ बिसरि अहाँ लोकनि हमरा प्रायश्चित्त करबाक अवसर देब, ताही आशामे आयल छी ।"

प्रणव भीतर आयल । शीला सुनितहि भयत्रस्त भऽ गेलैक–"किएक आयल छथि ओ ? घुरा दियनु ।"

प्रणव बिगड़ि गेलैक–"एहनो क्यो बात बजै अछि ! घुरा किएक देबनि ? आयल छथि तऽ देखि लियनु जे की उद्देश्य छनि, सत्ते प्रायश्चित्तक विचारसँ आयल छथि, तऽ निराश किएक घुराओल जाय हुनका ? एक बेर गप्प कऽ देखियनु ।"

हुनकासँ गप्प करबाक बदला तामसे ओकरोसँ गप्प करब छोड़ि देलकै शीला । प्रणवो मोन स्थिर होबऽ लेल छोड़ि देलकै । फेर चर्चा नहि कयलकै ।

एकादशाह-द्वादशाह धूम-धामसँ भेलैक । भरि गाम कचरिकऽ खयलकै । यश सभटा प्रणवकेँ भेटतैक । प्रोफेसर झा कहलथिन–"अपने निश्चय महान व्यक्ति छी । हम अपनेक अपमान कयने रही, तकरो बिसरि गेलहुँ अहाँ । मुदा ओ किछुओ नहि बिसरल छथि । सोझों नहि आबऽ चाहैत छथि । कने बुझा दियनु हुनका ।"

प्रणव हुनका संग लऽ हवेलीक भीतर आयल । दुनूकेँ संग देखि शीला दोसर दिस जाय लगलैक । प्रणव ओकरा रोकलकै– अहींसँ गप्प करऽ आयल रही शीला ! झाजी अहाँकेँ लऽ जाय चाहैत छथि पटना । आब तऽ काजो भऽ गेलैक । हमरो दू हप्ता छुट्टीमे दू दिन रहि गेल अछि । बड़ व्यस्त आ कठिन समय छैक अखन प्रशासनमे । अशान्ति आ उपद्रव । धरना आ हड़ताल । घेराव आ पथराव । हमरो छुट्टी दियऽ आ अपनो अपन घर जाउ ।"

शीला ठाढ़ भऽ गेलैक आ स्पष्ट स्वरमे बजलैक–"अहाँक छुट्टी बीति गेल, अहाँ जाउ । हमर स्वार्थ सिद्ध भऽ गेल । मुदा हम कतऽ जायब ? हमर तऽ घरो यैह अछि आ नौकरियो अही गामक स्कूलमे ।"

प्रोफेसर झा आगू बढ़ैत साहस कऽ बजलाह–'आब तामस छोड़ू । घर चलू अप्पन । दस वर्ष भऽ गेल ।'

"सत्ते घर चलू हम ? राखि लेब अहाँ ?" शीला आब सोझेसोझ प्रश्न कऽ देलकै ।

"ताही लेल तऽ आयल छी । चलू, अपन घर चलू ।"

"मुदा घरमे जे घरवाली बैसल छथि, से मानि जयतीह ? हुनकासँ पूछि लेलियनि ?"

आब प्रोफेसर झा तोतराय लगलाह–"ओ, ओ तऽ हें, हें, हें, पाँच वर्ष धरि अहाँक पता नहि लागल तऽ सुन्न घर काटऽ दौड़ैत छल । कोनो इच्छासँ कयलहुँ ओ विवाह ? मुदा अहाँक स्थान थोड़े ओ लेत ? पहिने अहाँ, आ बादमे ओ ।"

प्रणवक आँखि रँगि गेल छलैक । प्रोफेसर झा फेर धोखा कयने छलथिन । नहि जानि शीला कोना पता लगौलकै ? प्रणव चुपचाप दुनूकेँ तकैत रहल ।

शीला जवाब देलकै–"चलबा लेल तऽ हम प्रस्तुत छी । मुदा बहुत रास बात आइयो अहाँ नहि जनैत छी । से सुनिये लियऽ आइ ।"

प्रोफेसर झा बिना किछु जवाब देने शीलाक मुँह ताकऽ लगलाह । हुनकर आँखिमे सोझ तकैत शीला कहलकनि–"एक दिन अहाँ प्रणवक संग झूठ इलजाम लगा घरसँ निकालऽ लागल रही, नंगटिया कऽ । तहियाक ओ झूठ बादमे सत्त भऽ गेल । प्रणव नहि रहल तेँ की, आर कतेक लोक । ओइ दिन जे घरमे नंगटिऔलहुँ अहाँ, तकर बाद प्रत्येक ऐरू-गैरू हाथ हमर नूआ उनटबैत रहल, एक दिन दू दिन नहि, दस वर्ष धरि ।"

प्रोफेसर झाकेँ शीला दिस ताकल नहि गेलनि । आँखि जमीनपर गड़ि गेलनि । बजलाह–"से तऽ हमरे गलतीसँ भेल । ओकर प्रायश्चित्तो तऽ हमरे करक हैत । फेर अहाँ हमर स्त्री छी । अहाँक गुण-दोष, पाप-पुण्य सभ हमर अछि । अहाँ जेहन छी, हमरा स्वीकार छी ।"

शीला ओहिना प्रोफेसर झापर दृष्टि गड़ौने छलैक । मुदा ओ अपन आँखि जमीनपर गाड़ने छलाह । शीला मुसकिया उठल । प्रणवकेँ कहलकै–"बेश तऽ हम अपन घर जायब । अइ घरमे कागज सभ अछि, सभटा रजिस्ट्रीक कागज लिखा गेल छैक अमितक नाम । काल्हि चलू कमतौल, सम्पन्ने करा दियौक । फेर निश्चिन्त भऽ जायब एतुक्का बखेरासँ..."

अइ बेर प्रोफेसर झा चौंकलाह— के अमित ? ककर नाम रजिस्ट्री करबैक ?"

शीलाक मुसकी जगजियार होबऽ लगलैक । मुदा ओकरा नुकबैत बाजल–"आर के ? वैह अमित ? माला दीदीक बेटा । सभ टा तऽ ओकरे छैक । रजिस्ट्री कऽ परसू निश्चिन्त भऽ पटना चलू ।"

आब प्रोफेसर झा एकदम हड़बड़ा गेलाह–"नहि-नहि, हमरा तऽ आइये जाय पड़त । फेर आबिकऽ लऽ चलब अहाँकेँ । कने ओतहुक व्यवस्था देखि ली..."

प्रोफेसर झा पड़ायले बाहर चल गेलाह । शीलाक दाबल मुसकी जगजियार भऽ गेलैक । फेर भभाकऽ हँसल ! हँसैत-हँसैत आँखिमे नोर आबि गेलैक ।

प्रणव टोकलकै—"कनैत छी ?" नोर पोछैत कहलकै शीला—"आश्चर्य ! नोर कोना आबि गेल आँखिमे ? ओ तऽ कतेक वर्ष पहिने सुखा गेल छल ?" फेर हँसैत पुछलकै—"बड़ पैरबी लऽकऽ आयल छलियनि । घुरिकऽ पाछुओ तकलनि ?"

प्रणव कनेक बिगड़ैत कहलकै—"मुदा ई सभ कहबाक कोन काज छलैक ? सभटा झूठ बात ।"

"की झूठ कहलियनि हम ? सभ दिन नांगट हैबाक गप्प ? ओ झूठ छलैक ?"

"झूठ तऽ छलैक शीला ! अहाँ नांगट भेल नहि रही, क्यो जबर्दस्ती कयने छल । तेँ अहाँक भ्रष्ट हैबाक कथा झूठ अछि, ओकरा फेर नहि दोहरायब ककरो लग । आ फेर अमितक नाम रजिस्ट्रीक गप्प ? ई एकटा दोसर झूठ ।"

—"झूठ एक्को टा नहि । अहाँक नहि मानलासँ शरीरपर पड़ल एक-एकटा दाग तऽ नहि मेटा जायत, ओ तऽ झूठ नहि हैत । आ अमितक नाम रजिस्ट्रीमे कोन झूठ छलैक ? सभटा ओकरे तऽ छैक ।"

"तऽ हमर जे अछि से हमरा दऽ दियऽ । अहीँ लिखने रही ने जे मोनमे कोनो बँटबारा नहि— ओ हमर अछि सौंसे । तऽ हमर चीज हमरा दियऽ । चलू हमर संग....हमरा लग रहू ।"

शीला एकदम पैरपर खसि पड़लैक—"एहन जिद नहि करू । नहि छी ओइ जोगार हम । अहाँ जिद करब तऽ हम कमजोर भऽ जायब । दस वर्ष पहिने हमरामे साहस छल, लड़िकऽ अहाँक इच्छाक विरुद्ध चल गेल रही । आइ अहाँक इच्छाक विरुद्ध किछुओ नहि कऽ हैत । तेँ हाथ जोड़ैत छी जिद नहि करू । हमरा कमजोर नहि बनाउ !"

प्रणव हँसल—एकटा दर्दसँ भरल हँसी—"हमरा देवता बना दियऽ, मनुक्ख नहि छी हम । प्रेम-वासना, इच्छा किछुओ नहि अछि हमरामे । हम तऽ मजगूत चट्टान छी । मनुक्खक कोनो कमजोरी नहि अछि हमरामे ।"

शीलाकेँ ओहिना जमीनपर ओंघरायल छोड़ि प्रणव बाहर चल आयल, नहि जानि कोन उत्तेजनामे ? बाहर आबि ओ उत्तेजना शान्त भऽ गेलैक । किछु ग्लानि भेलैक अपन उत्तेजनापर आ पश्चात्ताप भेलैक जे किएक अनेरो रुष्ट भेलैक

शीलापर । ओ फेर घुरिकऽ भीतर आयल । शीला ओहिना ओंघरायल पड़ल छलैक । लग आबि माथकेँ हल्लुक स्पर्श करैत रहलैक—"उठू शीला ! हमरासँ अन्याय भेल । हमर जिद अनुचित छल । अहाँसँ फेर ओ जिद नहि करब ।"

शीला मूड़ी उठौलकै— दुनू आँखि डबडबायल छलैक—"अहाँसँ कोनो अन्याय नहि भेल । अन्याय अहाँ कैये नहि सकैत छी । हमहीँ अभागल छी, अहाँक इच्छापर जान देबाक साहस रखितो संग रहबाक साहस नहि जुटैत अछि हमरा । अहाँक जिद नहि मानलहुँ, मुदा अहाँक ई अनुरोध हमर बाँकी जिनगी जी लेबाक सम्बल रहत ।"

प्रणवकेँ गाममे बहुत बातक पता लागि गेल छलैक । सतरहम वर्षमे गाम छोड़ने छल । आ तकर चारि वर्ष बाद आयल रहय तऽ ने घर रहैक ने घराड़ी । मामा सर्पदंशसँ मुइल रहथिन आ मामी निपत्ता रहथिन । तकर तीन वर्ष बाद गाम आयल तऽ निपत्ता भेल मामी कल्लू चौधरीक हवेलीसँ प्रेत जकाँ अवतरित भेलथिन आ सौँसे गामक समक्ष मामी, शीला आ अमितक संग गामसँ विदा भऽ गेल छल । आ दस वर्षक बाद शीलाक चिट्ठीपर ओही कल्लू चौधरीक हवेलीमे आबि गेल छल आ श्मशानसँ घुरि उतरी पहिरने दरबज्जापर बैसि गेल छल । गाममे बहरैबाक अवसरे नहि लागल छलैक, एकादशाह-द्वादशाह धरि ।

गाममे बहरैबाक ओकरा लेल बेशी आकर्षण नहि छलैक । दरबज्जे पर बैसल-बैसल ओकरा सूचना भेटि गेल छलैक । ओइ आंगनवाली नानी नहि रहलीह । गाममे हुनका लेल ककरो सुन्न नहि लगैत छलैक । एगारह टा ब्राह्मण खुआ भातिज लोकनि निश्चिन्त भऽ गेल छलथिन— विधवा निःसन्तान नानी । मुदा प्रणवक तऽ ओहो माये छलथिन । मामी जहिआ गाम अयलथिन, पाँच वर्षक रहय प्रणव । मुदा छठिहारोसँ पहिने जखन माय आँखि मूनि लेलकै, ओइ आँगनवाली नानी अपन छातीसँ सटा रखलथिन पाँच वर्ष । ओ नानी आब नहि रहलीह, फेर एक बेर मातृहीन भेल ।

मुदा चुन्नुक पुतऽहु के छलैक ओकर ? ओ तऽ आन जातिक मुरही-कचरी बेचऽबाली मौगी छलैक । सौँसे गाममे क्यो ओकरा आदरक एक शब्द नहि कहैत छलैक— बच्चासँ बूढ़ धरि । ओ नहि रहलैक तऽ की भऽ गेलैक गाममे ?

मुरही-कचरी तऽ ओइसँ नीक आब शिवकान्तक केबिनमे भेटैत छलैक । ऊपर सँ घुघनी, चौप आ चाय । लोककेँ चुन्नूक पुतऽहु किएक मोन रहतैक ? किएक मोन रहतैक जे साठि वर्षसँ बेशी अही गाममे रहल छल चुन्नूक पुतऽहु आ कहियो ककरोसँ कनियों झंझ-मंझ नहि भेल छलैक । क्यो ओकर मुँहसँ कहियो कोनो गारि-सराप वा कठोर शब्द नहि सुनने छलैक । इहो सभ मोन रखबाक गप्प छलैक ? लोककेँ खाली एतबा मोन छलैक जे एक राति भीख माँगिकऽ घुरलापर शिव मन्दिरक चबूतरापर पड़ि रहल चुन्नुक पुतऽहु । भरि राति मुसलाधार वर्षा भेलैक । भोरमे ओही चबूतरापर चुन्नूक पुतऽहु मुर्दा पड़ल छलैक । बेटा सभके दू-तीन समाद गेलैक, मुदा भिखमंगनीक बेटा हैब कोखिक जनमलो नहि गछलकै । गामक लोक मुर्दाकेँ बागमतीक धारमे भसिया देलकै । गामक लोकके एतबे मोन छलैक, प्रणव कतेको गोटेकेँ पुछलकै ।

मुदा अपन बेटा नहि अयलैक । स्वामी रोगी पड़ल रहलैक बीसो वर्ष आ चुन्नुक पुतऽहु कमाकऽ खुअबैत रहलैक । स्वामी मुइलैक तऽ जेना जिनगीक सभटा संघर्ष करबाक शक्तियो समाप्त भऽ गेलैक । भीख माँगऽ लागल । प्रणवकेँ शिव मन्दिरक चबूतरापरक ओ राति मोन पड़लैक ।

आ चुन्नूक पुतऽहुक खिस्सा कहैत रूदल चौधरीकेँ एकटा आर बात मोन पड़लनि-"मौगी छल सुद्धी आ इमानदार । मुदा अन्तमे मति भ्रष्ट भऽ गेलैक । चोरी करऽ लागल । एक दिन पाँच सय टाका खूटमे बन्हने मन्दिरक चबूतरापर पड़ल छल । हमरे घरसँ निपत्ता कयने छल । कतबो मारलिऐक-पिटलिऐक, कबुलबे नहि कयलक । आर कतेक मारितिऐक, टाका छीनि छोड़ि देलिऐक ।

प्रणवकेँ सभकिछु मोन पड़लैक आ दुःख आ क्रोधसँ स्वर बेसम्हार भऽ गेलैक-"ई तऽ बड़ नीक काज कयल अहाँ रूदल बाबू ! एकटा असहाय बुढ़ियाकेँ मारि-पीटिकऽ ओकर पूजी छीनि लेलिऐक । टाका सत्ते अहींक छल ?"

रूदल चौधरी बदलल स्वर आ रंगल आँखि देखि चौंकलाह-"अपने एना किएक बजै छी, हमर नहि तऽ ककर टाका छलैक ओ ? अहाँ तऽ एना बाजि रहल छी जेना सभ बूझल हो अहाँके ।"

-"बुझल अछि तेँ कहै छी । हमहीँ ओ टाका ओकर खूटमे बन्हने रहिऐक । कलकत्तासँ कमा मामा-मामीक लेल अनने रही । मुदा मामा संसारमे नहि छलाह, आ मामीक पते नहि छलनि । राति ओही चबूतरापर हमहूँ रही आ सूतलमे ओकर खूटमे बान्हि देने रहिऐक ।"

दरबज्जापर चारू कात लोक बैसल छलैक । ई गप्प सुनितहि सभक कान ठाढ़ भेलैक । रूदल चौधरीक घेंट झुकि गेलनि । आस्तेसँ बजलाह-"हमरासँ अन्याय भेल, टाका हम अपनेकेँ घुरा देब ।"

प्रणव कठोरतासँ कहलकनि-"अहाँक टाका लऽ हम की करब ? घुरैबाक अछि तऽ घुरा दियौक ओइ असहाय बुढ़ियाकेँ जे भीख माँगि गुजर करैत छल । घुरा सकबै ?"

रूदल चौधरीक घेंट नहि उठलनि । लोक सभ आपसमे कनफुसकी करऽ लागल । प्रणवकेँ जेना कोनो बातक ध्यान नहि रहैक । ओ ओहिना आवेशमे बजैत गेल-"आ घुरा सकबै मालाकेँ-जकरा बजारमे बेचि आयल रहिऐक ? अपन भतीजी छल ।"

"बहुत भऽ गेल, आब चुप्प रहू । हाकिम भऽ गेलहुँ तकर ई मतलब जे, जे मोनमे हैत से लोकके कहि देबैक ।" रूदल चौधरी प्रतिवाद करैत जोरसँ बजलाह ।

"ई हम नहि कहैत छी । माला कहने छल । बजारक गाहक सभसँ तरह-तरहक रोग लऽ जखन मृत्यु-शय्यापर पड़ल छल, तऽ वैह कहने छल हमरा । ओ तऽ छोट छल, अज्ञान छल, वर पसिन्न नहि भेलाक कारणे प्रतिशोधक भावनासँ पागल छल । मुदा अहाँ तऽ बापक स्थानपर छलिऐक, एहन ठाम पहुँचा देलिऐक ओकरा ?"

दरबज्जापर बैसल सभ लोक 'राम-राम' करऽ लागल । रूदल चौधरी अपमानित क्रुद्ध चेहरा लेने उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह आ सभकेँ हिंसक दृष्टिसँ देखैत चल गेलाह ।

तखन प्रणवक उत्तेजना सेहो कम भेलैक । किछु अफसोचो भेलैक । अनेरो ई काण्ड कयलक ? मालाक खिस्सा समाप्त भऽ गेल छलैक । ओकरा फेर उघारिकऽ सिवाय गन्दगी आ घृणाकेँ आर किछु नहि भेटतैक । भेटतैक रूदल चौधरीक दुश्मनी आ षडयंत्र ।

मुदा बात मुँहसँ बहरा गेल छलैक आ रूदल चौधरी हनहनाइत चल गेल छलाह । लोको सभ आपसमे खुसुर-फुसुर करैत विदा भेल ।

प्रणव सेहो उठिकऽ किम्हरो विदा हैबाक सोचि रहल छल कि बंकू आबिकऽ सामने ठाढ़ भऽ गेलैक । प्रणव कने साकांक्ष भेल । बाप अपन अपमानक बदला लेबऽ पठौने हैतैक ?

मुदा बंकू बजलैक–"नीक कयल सर अहाँ । हमर बाप नीच, पापी आ कसाइ अछि । ओकरा सभक सोझाँ नांगट कऽ नीक कयल ।"

बंकूक चेहरापर व्यंग्यक कोनो लक्षण नहि छलैक, ने बोलीमे । भ्रमक कोनो गुंजाइश नहि छलैक । बंकू आगू बजैत गेलैक–"जेठ छी हम घरमे आ हमहीं ढेलमारा गोसांइ भेल छी । ढौए-ढाकी जनमा लेलक, तीन भाइ रही, तैयो मायक मरितहि एकटा नवकी बिआहि कऽ अनलक अछि । छौ सालमे पाँच बेटा । आठ भाइ आ अपन दुनू परानीक हिस्सा लगा, दसमी हमरा दऽ देलक अछि आ बाँकीमे अपने सभ मौज करैत अछि । जमीने कतेक बाँचल छैक आब– मात्र तीस बीघा, घर-घराड़ी छोड़िकऽ । बस तीन बीघा-ताहिमे डबरा, खत्ता, उसराह सभ । चारिटा धीया-पुता आ दुनू परानी हमरा लोकनि । कोना गुजर हैत, अहीं कहू ? इम्हर हमरा सभकेँ उपासक नौबति रहैत अछि आ ओम्हर बुढ़बा अखनो खोआ खा साले-साल बेटा जनमबैत अछि ।"

बंकूक भाषा ओहने छलैक । एक दिन अही हवेली लग टांग तोड़बाक धमकी देने रहैक, मैट्रिक पास करबाक ताना देने रहैक । आइ ओकर हाड़ देखाइत छलैक । गाल चोकटल छलैक आ आँखि धँसल । देहपर मात्र धोती, सेहो फाटल, मुदा आँखिमे ओहिना शिकारीवाला हिंसक भाव छलैक जेना मौका भेटितहि अपन बापोक नरेटी दबा देत ।

"ई सभ हमरा किएक कहि रहल छी अहाँ ? गामक लोककेँ कहियौक, फड़िछा देत बाप-बेटामे ।" प्रणव टारैत कहलकै ।

"गामक लोक की फड़िछाओत ? फड़िछा तऽ हम अपने लेब ओकरासँ आ ओकर नवकी मौगीसँ । एहन-एहन बहुत मौगीकेँ ठेकाना लगा देने छिऐक हम— मलिकाइन बनैत अछि ! मुदा अखन तऽ हम अपने लग आयल छी । हमरो उद्धार कऽ दियऽ ।"

प्रणवकेँ ओकर बातक स्पष्ट अर्थ नहि लगलैक । पुछलकै– ''हम की सहायता कऽ सकैत छी अहाँक ?"

बंकू कनेक आशान्वित होइत बाजल— ''अपने कऽ सकैत छी, खूब कऽ सकैत छी । पढ़ल-लिखल नहि छी बेशी हम, मुदा कोनो हाकिम-हुक्कामक पदवी लेल तऽ नहि कहैत छी । चपरासियोक जगह यदि कतहु भेटि जाय, तऽ धीयापुता अन्न बेतरे बेलल्ल नहि हैत ।"

प्रणवकेँ आश्चर्यक संग दुखो बड़ भेलैक । रूदल चौधरीक बाप मुइलोपर डेढ़ सय बीघा जमीन, कोठा-गाछी, बाड़ी–पोखरि सभ छोड़ि गेल छलथिन– एकसर छलाह भाइमे ओ । आ तिनकर बेटा अन्न लेल बेलल्ल छनि । प्रणवकेँ एक बेर फेर ओ दिन मोन पड़लैक जहिया अन्न नहि रहैक घरमे आ मामी ओकरासँ नुकायल फिरैक ।

प्रणव कहलकै–"हम अबस्स अहाँ लेल चेष्टा करब । ओना अहाँक वयस बेशी भऽ गेल अछि आ सरकारी नौकरी कठिन हैत । मुदा आने कोनो ठाम हम अबस्स प्रयास करब ।"

आश्वस्त भऽ बंकू विदा भेल । किछु डेग आगू गेल । फेर नहि जानि की मोनमे भेलैक ? घुरिकऽ प्रणवक दुनू पयर पकड़ि लेलकै–"धीयापुतामे अपन उदण्डतासँ हम बेर-बेर अहाँक अपमान कयने छी, से मोन नहि राखब भाइ ! मोन राखब जे हम संगतुरिया छी आ हमर धीयापुता अन्न बेतरेक मरैत अछि । बिआह जोग बेटी अछि घरमे । बस्स, एतबे मोन राखब, आर किछु नहि ।"

प्रणव पयर छोड़बैत कहलकै–"एतेक हताश आ विचलित नहि होउ । हमरा मोन अछि जे कहियो अहीं लोकनिक देल भरि गाम खाइत छल । इहो मोन अछि जे ई सौंसे गाम अहीं लोकनिक सम्पत्ति छल । नियम छैक प्रकृतिक । आइ प्रचुर तऽ काल्हि अभाव । जहिना राजपाट नहि रहल, तहिना ई अभावोक दिन नहि रहत । हम पूर्ण चेष्टा करब, अहाँ निश्चिन्त रहू ।"

बंकू चल गेलैक । ई परिवर्त्तन अभावक छलैक, वा समयक संग बंकू बदलि गेल छलैक, प्रणव कोनो निर्णय नहि लऽ सकल । ओकर आँखिमे अखनो वैह हिंसक भाव छलैक आ बोलीमे वैह अहंकार । दीनतासँ गिड़गिड़ाइतो काल बीचमे अहं मूड़ी उठा दैत छलैक । प्रणव स्पष्ट देखलकै ।

मुदा प्रणवकेँ ताहिसँ की ? यदि चपरासियोक काज लेल प्रस्तुत छलैक बंकू, तऽ क्यो राखिये लेतैक ओकर कहलापर । एक बेर ओकरा मौका अबस्स देबाक चाही । भऽ सकैत छैक जे अहीसँ जिनगी बदलि जाइ ।

मुदा मुनेसरा किएक एतेक बदलि गेल छलैक ? एतेक दिनसँ गाममे अछि, मुदा एक्को बेर भेंट करऽ नहि अयलैक । एकटा पैरवी नहि सुनलकै प्रणव, विलम्बसँ आयल छलैक मुनेसरा, उम्मीदवार एकदम कमजोर छलैक, ताही लेल अपन बालसंगीकेँ बिसरि जायत मुनेसरा ? नहि, मुनेसरा नहि, मुनेसर पासवान एम.

एल.ए. । आब ओ मामूली लोक नहि छलैक, सभ अफसर-कर्मचारी ओकरासँ डेराइत छलैक, ओकर खुशामद करैत छलैक । प्रणवोक भेंट ओ ताधरि नहि करतैक जाधरि प्रणव झुकिकऽ ओकर बात नहि मानतैक, पैरवी नहि सुनतैक ।

मुदा से तऽ मुनेसराक गप्प छलैक । ई मुरलियाकेँ की भऽ गेलैक ? आ इमानदार आक्रामक खेलाड़ी कतऽ बिला गेलैक ? एक बेर एकटा रेफरी गलतीसँ भिसिल बजा फौल देने रहैक ओकर, रेफरीक गट्टा उनटा बाँहियेँ तोड़ऽ लगलैक । जाधरि बैमानी गछलकै नहि रेफरी, मुरलिया गट्टा नहि छोड़लकै । मुदा से मुरली आब खादमे नून आ अन्नमे आँकड़-पाथर मिलबैत छलैक । जाहि दिन प्रणव गाम आयल छल, ओकर दोकानमे ओही दिन साँझमे छापा पड़ल रहैक आ जखन लोक कल्लू चौधरीकेँ जरा घुरि रहल छल, मुरलीकेँ पुलिस हथकड़ी पहिरा जीपपर लऽ गेलैक । मुरलीक कनियाँ लाज-धाख छोड़ि दौड़ल आयल छलैक–"कहुना बचा लियनु, हथकड़ी नहि लगनि ।" मुदा पुलिस हथकड़ी लगा लऽ गेल रहैक अपन संग, अबेर भऽ गेल रहैक । प्रणव मुरलीक स्त्रीकेँ शान्त करैत कहलकै–"लऽ गेलैक तऽ जाय दियौक भौजी, कोनो चिन्ताक प्रयोजन नहि ? यदि कोनो सबूत नहि हेतैक, निरपराध हैत, क्यो नहि किछु कऽ सकैत छैक । जमानत हेतैक आ मोकदमोमे किछु नहि हेतैक । साँच के कोन आँच ?"

मुरलीक कनियाँ तामसे चिकरि उठलैक–"बड़का सतबरता भेलाह अछि ! बनिया दू पाइ कमाय लेल कने-मने फेंट-फाट नहि करतैक तऽ कोना काज चलतैक ? आ निरपराधे रहतैक तऽ अहाँक कोन काज ? अपने छोड़ि देतैक । अहाँ बड़का दोस्त बनैत छिऐक, दोस्तकेँ हथकड़ी लागि गेल आ अहाँ न्यायपुराण बाँचि रहल छी !"

प्रणवकेँ अधलाह लगलैक, मुदा सोचलक जे अइ मूर्ख-स्त्रीपर तामस करब व्यर्थ छलैक । किछु बेशिए व्यावहारिक बुद्धिवाली बुझाइत छलैक । निर्भीक-इमानदार खेलाड़ीकेँ फेंट-फाटवला बनिया यैह बनौने हेतैक । एकरासँ बहस करब व्यर्थ छलैक ।

मुरलीक स्त्री बड़बड़ाइत, प्रणवकेँ दस हजार गंजन करैत चल गेलैक ।

आ चुप्पे रहल । मुदा मुरली घुरि आयल । दारोगाकेँ टाका-पैसा देलकै आ प्रात भेने घुरि आयल । प्रणव सुनलकै आ बजा पठोलकै मुदा मुरली नहि अयलैक । प्रणवकेँ आश्चर्य आ दुख भेलैक । ओकर गाममे हैबाक खबरि सुनियोकऽ, ओकर समाद पाबियोकऽ मुरली नहि अयलैक । नहि जानि ओकर स्त्री की की बुझौने हेतैक ? गरामे उतरी छलैक आ स्वयम् कतहु जा नहि सकैत छल ।

आ जखन श्राद्धोमे भोज खाय नहि अयलैक मुरली तऽ ओकरा नहि रहि भेलैक । पहुँचि गेलैक द्वादशाहक प्रात ओकर दरबज्जापर । दरबज्जेपर छलैक, ओकरा देखि भीतर ससरऽ लगलैक । प्रणव बाट छेकि लेलकै–"एना अंगना कतऽ पड़ाइ छैं निर्लज्ज ? एतेक दिनसँ गाममे छी, गरामे उतरी छल, समादो देलियौक, तैयो तोरा भेंट करबाक पलखति नहि भेटलौक ?"

"अहाँक गरामे उतरी छल, तऽ ककरो हाथमे हथकड़ी छलैक, ओकर स्त्री अहाँ लग हाथ-पयर जोड़लक, दोस्तीक नामपर मदति मँगलक, की कयलिऐक अहाँ ?"

"तोरा ठीक खबरि नहि छौक मुरली ! जावत हमरा पता लागल, पुलिस तोरा लऽ जा चुकल छलौक । देरी भऽ गेल रहैक । नहि तऽ अबस्से हम दारोगासँ कहितिऐक आ तोरा छोड़बा दितियौक ।"

"रहऽ दियऽ ई गप्प-शप्प । जीप चल गेल रहैक, तऽ अहाँक गाड़ी नहि रहय ? आगू बढ़िकऽ रोकि नहि सकैत छलिऐक ? जिलाक मालिक छी अहाँ, अहाँक इच्छाक विरुद्ध कोनो मजिस्ट्रेट-दरोगाक मजाल छलैक जे हमरा हथकड़ी लगाकऽ लऽ जाइत ? ओ तऽ धन्न कही मुनेसराकेँ, दोस्तीक लाज तऽ वैह रखलक । सभकेँ टाका-पैसा दऽ मामले साफ करा देलक, कतहु कोनो चीज दर्ज नहि भेल ।"

प्रणवकेँ बहुत-किछु कहबाक छलैक मुरलीसँ । मुदा लगलैक जे बेकार छैक कहब । ओ किछु नहि सुनतैक । सुनबो करतैक तऽ नहि बुझतैक । आब ओ मुनेसराक बोली बुझैत छलैक । एक दिन ताना देने रहैक प्रणवकेँ जे मुनेसराक तोँ मोन बढ़बैत छहिक । आइ मुरली अपने माथपर चढ़ा रहल छलैक ओकरा । आदरणीय बना रहल छलैक । प्रणव बड़ छोट आ बड़ महत्त्वहीन भऽ गेल छल मुरलीक नजरिमे ।

आ रूदल चौधरीक नजरिमे सेहो ओ गड़ि गेल छलैक । सबहक सामने कयल गेल अपमान हुनका नहि पचलनि । स्वार्थ लेल ओ प्रणवक आगाँ-पाछाँ लागल छलाह मुर्दघट्टीसँ श्राद्ध हैबा धरि । मुदा चुन्नूक पुतऽहुक आ मालाक प्रसंग सभटा उनट-फेर कऽ देने छलैक । अपमानित रूदल चौधरी हनहनाइत चल गेलाह आ बंकू बापकेँ गारि-सराप दैत नौकरीक पैरवीमे आयल ।

प्रणव अबस्से कोशिश करतैक ओकरा लेल । मधुक जमायक नहि, देवीजीक जमायक बहाली एम.एल.ए. मुनेसर पासवानक सिफारिशोपर नहि कयने रहैक, मुदा बंकूक नोकरी लेल ओ चेष्टा करतैक । आगू ओकर भाग्य ?

आ केहन भाग्य छलैक झुमकीक ? एकदम स्वतंत्र चिड़इ जहाँ आकाशमे उड़ैत छल । नित्य नव जोड़ा बना लैत छल । जे कहैत छलैक तकरे संग विदा भऽ जाइत छल । प्रणव टोकने रहैक एक बेर तऽ कहलैक–"की फायदा ? मोनसँ नहि जायब तऽ जबर्दस्ती घिसियाकऽ लऽ जैत ।"

आ ठीके घिसियाकऽ लऽ गेलैक ओकरा एक दिन । फजलू मियाँ रहैक नामी गुण्डा । कतेको डकैती केसमे नाम रहैक । दुनू गालपर आ आँखिक नीचाँ चाकूक गहींर निशान रहैक । बड़ भयावह लगैक चेहरा । गामक नेना, चेतन, स्त्री-पुरुष, सभ देखिऐ कऽ डेरा जाइ ।

ओहो एकदिन हाथ पकड़ि लेलकै झुमकीक । डरे त्रस्त भऽ गेल झुमकी । मुदा तैयो हाथ झटकि पड़ाय लागल । नोटक गड्डी देखबैत कहलकै फजलू मियाँ– "ले, सभ तोरे छौक । सभ लग जाइते छैं, फेर हमरा संग एतेक ढोंग किएक ?"

मुदा नोटक गड्डीसँ कनेको नहि लोभायल झुमकी । ओ तऽ फजलूक भयावह आकृतिए देखि डेरा गेल छल । पड़ैबाक चेष्टा करैत बाजल–"नहि, तोरा संग नहि, डर लगैए तोहर चेहरा देखिकऽ ।"

फजलूक भयावह चेहरा आर भयावह भऽ उठलैक । लपकिकऽ धऽ लेलकै आ पैसि गेलैक एकटा मकइक खेतमे । खेतमे धधरा उठऽ लगलैक, सब किछु जरऽ लगलैक ।

ओकर झरकल चेहरा देखि प्रणव सिहरि गेल छल । प्राय: ओकर सिहरब देखि लेलकै झुमकी । कहलकै–"डेरा गेलौं ? चिन्है नहि छी ?"

बोलीसँ चिन्हलकै प्रणव–"तों छें, झुमकी ? तोहर ई हाल ?"

"हम तऽ कहने रही एक दिन जे मोनसँ नहि जायब तऽ घिसियाकऽ लऽ जैत, तें अपने सभक संग चल जाइ छी । मुदा ओइ दिन मोनकें नहि जानि की भऽ गेल ? मानबे ने कयलक । ओकर भयावह चेहरा देखि जयबाक साहसे ने भेल । कहि देलिऐक ओकरा । आ तकर बाद, तकर बाद..."

झुमकिए ई सभ हकलकै प्रणवकें । ओकरा कोरामे उठा मकइक खेतमे पैसि गेलैक फजलू मियाँ । सभ टा कपड़ा देहसँ नोचि देलकै आ पिशाच जकाँ पाशविकताक संग बलात्कार कयलकै । फेर ओकरे नूआसँ ओकर मुँह आ हाथ-पयर बान्हि देलकै आ झोंटामे दियासलाइ लगा देलकै ।

पाकल दानावला मकइक खेत जरऽ लगलैक । चारूकात लहास उठलैक ।

सभ दिससँ लोक दौड़लैक । मुँहमे बान्हल नूआ जरलैक तऽ चीत्कार बहार होबऽ लगलैक । चिकरब सुनि लोक भीतर पैसलैक, ताबत सौंसे मुँह झरकि गेल रहैक । अस्पतालमे छौ मास रहल, कहुना जान बाँचि गेलैक ।

भोजक दिन आँगनमे ऐंठ-कूठ लेबऽ आयल रहैक झुमकी । झरकल चेहरा देखि प्रणव सिहरि गेल । झुमकी टोलककै आ प्रणव चीन्हि गेलैक ।

मुदा झुमकीकें आब क्यो नहि चिन्हैत छलैक । जे सभ कहियो ओकर आगाँ-पाछाँ लागल रहैत छलैक, आब दूरेसँ पड़ा जाइत छलैक । क्यो ओकर चेहरा दिस देखऽ नहि चाहैत छलैक । राड़िन पनिभरनीमे सेहो क्यो राखऽ नहि चाहैत छलैक । भीख मँगैत छल झुमकी । मुदा जाहि गाममे जाइत छल, धीया-पुता डेराकऽ पड़ा जाइत छलैक, लोक दरबज्जा बन्न कऽ लैत छलैक । भोज-भातमे ऐंठ-कूठ भेटि जाइत छलैक तऽ दू-चारि दिन पेटक चिन्ता नहि रहैत छलैक । सुखायलो अन्न गीड़ि लैत छल ।

ओइ दिन ऐंठो नहि उठा सकल झुमकी । प्रणवकें देखलकै आ अपन खिस्सा कहऽ लगलैक । प्रणवक दुनू आँखिमे नोर छलैक । कहलैक– ''हमरा संग आ ।"

झुमकी पाछाँ-पाछाँ अयलैक । भीतर आबि शीलाकें बजौलकै प्रणव । ओहो ओकर झकरल चेहरा देखि डेरा गेलैक– ''चिन्हलियैक ? झुमकी अछि ।"

शीलाक आँखि आश्चर्य आ दुखसँ पसरि गेलैक । प्रणव फेर कहलैक–"एकरा अहाँ लग अनने छिऐक । अपना लग राखि लियौक एकरा । डर तऽ नहि हैत ?"

शीला हँसलैक– "हमरा कोनो बातक डर नहि होइत अछि । भयावह सँ भयावह चेहरा देखियोकऽ देह नहि सिहरैत अछि । अइसँ बेशी झरकल आ वीभत्स चेहरा तऽ हमर अपने अछि । खाली लोक देखैत नहि अछि । आ ई तऽ झुमकी अछि । अइ सुन्न हवेलीमे हमर संग रहत, समय कटि जायत । रहबें ने झुमकी ?"

झुमकी हिचुकि-हिचुकिकऽ कानऽ लगलैक, कनिते रहलैक ।

ओइ दिन शीलो कानऽ लगलैक । ओ तऽ कहने रहैक जे ओकरा आब कोनो बातक डर नहि होइत छैक । मुदा ओइ दिन तेना डेरा गेलैक जे कनिते-कनिते जमीनपर ओंघरा गेलैक–"अहाँ जाउ । बहुत दिन भेल, काजक हर्ज होइत हैत ।"

प्रणवकें कोनो ततेक आश्चर्य नहि भेलैक । अही दिनक प्रतीक्षामे छल ओ एक तरहे । भनकी ओकरा लागल रहैक । सुनिकऽ शीला एहिना कहतैक, से अनुमान ओकरा रहैक । तैयो कहलकै–"हमर काजक बड़ चिन्ता भऽ गेल आइ ! दुइये सप्ताहमे भार लागऽ लगलौं ?"

शीला ओहिना कनैत बजलैक–"सैह बूझि लियऽ । मुदा अहाँ जाउ आब। अइ गाममे रहब आब ठीक नहि अहाँक लेल ।"

प्रणव मोनेमोन हँसल । शीलाकें कथीक चिन्ता छलैक, से ओ जनैत छल । मुदा फेर लगलैक जेना कतेक असहाय भऽ जाइत अछि ओ शीला लग ! एकदिन किताब देबाक लेल घर बजौलकै आ सामनेमे बाप डाँटि देलकै, तऽ सभटा बिसरि निश्चिन्त भऽ गेलैक । बिआह-दान कऽ ओहीमे रमि गेलैक । फेर एकदिन स्वामीकें छोड़ि ओकर घर आबि गेलैक । आ तकर बाद एक दिन मना कयलोपर कोनो अनजान देशमे निपत्ता भऽ गेलैक । दस वर्षक बाद फेर साधिकार एकटा पत्र लिखि बजा लैलकै । आ आइ कहि रहल छलैक–"अहाँ जाउ, काज हर्ज होइत हैत ।"

असल बात कहियो नहि कहतैक शीला । नहि कहतैक जे भरि गाम अपवाद पसारने छलैक रूदल चौधरी । इहो कहने छलैक सभकें जे दस वर्षसँ स्वामीकें छोड़ि ओकरे लग छलैक शीला । आ बापक श्राद्ध भेला दुइयो दिन नहि भेलैक कि फेर एना खुल्लमखुला...गामक इज्जतिक सवाल छलैक ।

रूदल चौधरी चोटायल साँप छलैक । ओकर मुँह नीक जकाँ थूरि देबाक छलैक । एना विष वमन करबाक लेल ओकरा छोड़ि देब ठीक नहि भेलैक ।

मुदा असली साँप छलैक मुनेसरा । सभटा आगि ओकरे लगाओल छलैक। मदतिमे छलैक देवीजी, समाजसेविका, जे घरे-घर घुरि सभकें ई समाचार सुनौलकै, खूब नीक जकाँ नोन-मरचाइ लगाकऽ आ गाममे कनफुसकी शुरू भऽ गेलैक। गामक लोक वा कहू सभ ठामक लोक एक्के रंगक होइत अछि । मधुक स्वामी निपत्ता छलैक, साले-साल धीया-पुता भेलैक, ओहूमे कनफुसकी आ फेर सभ शान्त । पलटू मिसर स्त्री धीयापुताकें छोड़ि मधुक आँगनमे पड़ल रहलाह, ताहूमे कनफुसकी आ फेर सभ शान्त । जमाय, जवान बेटावाली देवीजी आँखिपर कारी चश्मा लगा एम.एल.ए. मुनेसर पासवानक संग पटना-दिल्ली घुमैत छलीह, ताहूमे कनफुसकी आ फेर सभ शान्त ।

आ तेहन इतिहास आ वर्तमानवाली देवीजी सेहो जखन कहैत छलथिन जे

शीला भ्रष्ट अछि, स्वामीकें छोड़ि प्रणवक संग रहैत अछि, तऽ गाममे कनफुसकी होबऽ लागल छलैक–"ठीके कहै छथि देवीजी । एना तऽ कहियो ने देखल ने सुनल ? सभ देयादक अछैत आगि देलकै प्रणव, जेना वैह बेटा-जमाय होनि कल्लू चौधरीक आ आब काजोक बाद कोन लोभमे अँटकल छैक ?"

प्रणवकें लगलैक जेना अइ कनफुसकीकें, अइ पसरैत आगिकें रोकबाक चेष्टा व्यर्थ हेतैक । ओकरा अन्देसा तऽ ओही दिन भेलैक जाहि दिन देवीजी अनेरो ओकर बाट छेकि लेलथिन–"सभपर दया-माया रखैत छिऐक । एक दिन अहू अभगलिक कुटियामे पयर दऽ पवित्र कऽ दियऽ ।"

स्वरमे छिपल व्यंग्य ओ चिन्हलकै, मुदा नहि जानि कोन भूत सवार भऽ गेलैक–"बेश, चलू ।"

मधुक संग ओकरा अंगनामे आबि गेल प्रणव । बड़ आदरभाव कयलकै मधु । लगलैक जेना आत्मा कतहु ने कतहु जीविते रहैत छैक मनुक्खक । एकदम मरैत नहि छैक । मधु पतिता छलैक, मुदा मोनमे कतहु एकटा नारी छलैक, जे ममतामयी छलैक, स्नेहमयी छलैक ।

मुदा अपन भ्रम लगले बूझि गेल प्रणव । प्राते भेने चारूकात खबरि पसरलैक–"देवीजीक नव शिकार...जिलाक हाकिम ।" खबरि प्रणवकें शीले देलकै–"काल्हि मधुक आंगन गेल रही ?"

प्रणव स्वीकृतिमे मूड़ी डोला देलकै । शीला हँसैत कहलकै— "आखिर अहूँकें नहिए छोड़लक मधु । लिस्टमे नाम जोड़िए लेलक ।"

प्रणव तमसाकऽ किछु कहऽ चाहलकै तखने दुष्टतापूर्वक हँसैत ओकर आँखिसँ आँखि मिललैक । ओहो ओहिना दुष्टतापूर्वक कहलकै–"हम तऽ अहूँ कें कहने रही एक दिन जे योगी वा महात्मा नहि छी हम । मनुक्खे रहऽ दियऽ । अहाँ नहि मानलहुँ । मधु मनुक्ख कऽ बुझलक, अपन लिस्टमे नाम जोड़लक से तऽ हमरा लेल भाग्यक बात !"

हँसैत शीला गम्भीर भऽ गेलैक–"मानैत छी, हमहूँ भ्रष्टे छी । बड़का टा सूची हमरो अछि मुदा मधुसँ हमर तुलना कऽ एना अपमान नहि करू ।"

प्रणव हड़बड़ाकऽ बीचमे रोकलकै ओकरा–"आब तऽ अहाँसँ हँसियो करब मस्किल अछि । अहाँक तुलना कखन कयलहुँ हम मधुक संग ?"

मुदा शीला जेना नहि सुनलकै । कहिते गेलैक–"तुलना कयलहुँ तऽ कोनो

अन्याय नहि कयलहुँ । ओकरासँ कोन नीक छी हम ? हमरासँ तऽ नीके अछि । घर छैक, बेटी-जमाय छैक, जे किछु कयलक से लोक बिसरि गेलैक । लोक तऽ देखैत छैक जे एकसरि भऽ समाजमे रहि सकल । बेटाकेँ पढ़ा सकल, बेटीक विवाह-दान कऽ सकल । मुदा हम ककरा लेल पतित भेलहुँ । की कऽ सकलहुँ अपन शील आ चरित्र लेल ? ओकर स्वामी निपत्ता भऽ गेलैक, हमर जीवित भैयोकऽ नहि छथि । आर के अछि जकरा लेल अपन सर्वस्व गमाकऽ अइ सुन्न हबेलीमे घुरल छी ? तेँ अइ तुलनाकेँ हम गलत नहि कहैत छी । हम तऽ एतबे कहै छी जे खाली अहाँ अपना लेल हमरा गलत नहि बुझू । सभटा अहीँक अछि मुदा जे अपन भैयोकऽ अहाँकेँ नहि भेटि सकल, तकरा लेल बेर-बेर ताना दऽ एना कमजोर नहि बनाउ हमरा ।"

प्रणव अवाक् । कहाँक गप्प कहाँ पहुँचि गेलैक ? की-की कहि गेलैक शीला ? ओकरा अखन किछु कहब ठीक नहि हेतैक । ओ चुपचाप ओतऽसँ ससरि गेल ।

बुझबामे आबि गेलैक जे मधुक ओ आदर-सत्कार कोन स्वार्थक लेल छलैक । मुनेसर पासवानसँ लऽकऽ मुरली उर्फ मुरलीधर झा धरि सभ ओइ घटनाक डिगडिगिया पिटलकै आ सभक सोझाँमे मुसकिया-मुसकियाकऽ मधु तेहन सन भ्रम उत्पन्न कऽ देलकै जेना ओइ दिन ओकर आँगनमे विशेष किछु घटित भेल होइ । लोक अनेरो नहि बजैत छलैक ?

मुदा मुनेसर पासवानक सम्बन्धमे भ्रमक कोनो गुंजाइशे नहि रहलैक । ओइ दिन जखन देवीजीक सूचीक सम्बन्धमे शीला सेहो हँसी कयलकै आ प्रणवक हँसीसँ शीला एकदम कातर भऽ उठलैक तऽ प्रणव भागि पड़ायल, शीलासँ दूर, हवेलीसँ दूर।

स्कूल दिस नहि गेल । हेडमास्टर साहब रिटायर भऽ अपन गाम चल गेल छलथिन आ मिर्जा साहबकेँ अपन घर लगक हाइ स्कूलमे बहाली भऽ गेल छलनि। गामेक लोक सभ कहने छलैक । तकर बाद स्कूलमे प्रणवक लेल कोनो विशेष आकर्षण नहि रहि गेल छलैक । हेडमास्टर साहब आ मिर्जा साहब, दुनू प्रणवकेँ स्कूलक संग जोड़ैत छलथिन । मानैत आनो टीचर छलथिन । मुदा ओइमे ओ प्रगाढ़ता नहि छलैक, प्रणव जनैत छल । कैक टा मास्टर तऽ गुरुदक्षिणाक नामपर अपन-अपन धीयापुताक नाम लिखा गेल छलथिन । अपन शिष्यसँ नहि, जिला मजिस्ट्रेटसँ भेट करऽ आयल छलथिन ओ लोकनि ।

प्रणव अनेरो किछु काल धारक कातमे बौआयल । अइ धारक रूप जेना दस वर्षमे एकदम बदलि गेल छलैक । अइ पारक हिस्सा सभ साल बाढ़िमे भथिकऽ ऊँच भेल जाइत छलैक । धारक गहिंरका हिस्सा दक्षिणवारी कात ससरि गेल छलैक

आ ओइ पारक माटि कटि-कटिकऽ ओम्हरुका हिस्साकेँ एकदम खतरा कयने जाइत छलैक । ओना सालमे दुइये तीन मास, बरिसातमे खतरा रहैत छलैक । नहि तऽ पानि सटकिकऽ पेटीमे । हेलाव पानि रहैत छलैक ।

मोनिमे बारहो मास अथाह पानि रहैत छलैक । जाहि ठामसँ धार पूबे-पश्चिमे बहैत उत्तर दिस मुड़ैत छलैक, ओइठाम लहरि रहैत छलैक आ अथाह पानियो । सभटा पैघ-पैघ माछ बाढ़िक पानि घटलापर ओइसँ अगिला मोनिमे रहैत छलैक । ओइ मोनिमे माछ नहि टिकैत छलैक । नहायवला घाटो नहि छलैक ओतऽ । कनेक हँटिकऽ उत्तर दिस छलैक घाट । मुदा कोनो बंसीवलाकेँ कोनो माछ नहि अभरैत छलैक ओइ मोनिमे । ओना बागमतीक ई धार एकदम निरापद छलैक । बाढ़ियोमे गोहि-मगरमच्छ नहि अभरैत छलैक । खाली कहियो-कहियो बहैत धारमे सोंसि उगैत छलैक आ बेश तमाशा बनि जाइत छलैक ।

असली तमाशा लगैत छलैक बाढ़ि घटलापर अगिला मोनिमे । जतऽसँ धार फेर पूब दिस मुड़ैत छलैक, ओइ मोनिमे बाढ़िक पानि घटलापर शिकारी सभ दर्जनो बंसी पाथि दैत छलैक आ घरे-घर दू चारि फड़ी रहु-नैनी पहुँचि जाइत छलैक । तमाशबीन सभ लहरिपर कुदैत, पानिमे बंसी मुँहमे लेने नचैत माछक तमाशा देखैत छल ।

धारक कछेरमे ठाढ़ प्रणवकेँ ई सभ बात मोन पड़ल छलैक । पानि तखनो घटले छलैक । मोनिमे शिकारी सभ हेतैक । मुदा प्रणवकेँ ओम्हर जयबाक इच्छा नहि भेलैक । मन्दिरक पछबारी कात मुर्दघट्टीवला मोनि छलैक । मुर्दघट्टीक बाद धार फेर दक्षिण दिस मुड़ैत छलैक । मन्दिरसँ मुर्दघट्टी धरि आ मन्दिरसँ पहिला मोनि धरि धार पूबे-पश्चिमे बहैत छलैक । अही धारक बालुपर, बालुक उपरका ओही झमटगर गाछ लग आ बड़क गाछक बादक ओही प्राइमरी स्कूलमे प्रणवक नेनपन बितल छलैक । धारक कतबइ आ मन्दिरक प्रांगणमे सभटा पुरना बात मोन पड़लैक ।

आ ओही पुरने बातक संग फेर एकबेर मोन पड़लैक मुरली आ मुनेसर । दुनू कतेक जान दैत छलैक ओकरा लेल ! आइ मुरली ओकर बात सुनऽ नहि चाहैत छलैक आ मुनेसरा रुष्ट छलैक । ओकर पैरवी ओ नहि सुनलकै ।

नहि जानि किएक, ओकर डेग दुसधटोली दिस बढ़ि गेलैक । बाटमे जे देखलकै, नमस्कार कऽ ओकर संग धऽ लेलकै । एतेक टा हाकिम एकसरे पैदल जा रहल छलथिन ! सभकेँ आश्चर्य भेलैक आ दुसधटोलीमे पहुँचिते-पहुँचिते जेना बड़का भीड़ लागि गेलैक ।

टोल अखनो ओहिना छलैक— वैह धूरावला सड़क, ओहिना नंग-धड़ंग

लोक आ नांगट धीयापुता । एकटा बड़की टा कोठी सन बनि गेल छलैक बीचमे आ ओइ दरबज्जा तक पहुँचबाक लेल ईंटा-सुर्खीक पीटल सड़को छलैक— बेस चौरगर । प्रणवकें मुनेसरक घर चिन्हबामे देरी नहि भेलैक । मुदा मुनेसरक बापक तऽ मात्र दस धूरक घराड़ी छलैक, अगल-बगल छलैक बदरा, बिन्देसर आ गोलियाक घर पूबमे आ पश्चिममे तेतरी आ टुनमा । सभक घर कतऽ निपत्ता भऽ गेलैक ! मुनेसरक बास बेश फैलगर बुझाइत छलैक ।

प्रणव सिबुआकें पुछलकै–"मुनेसरक घरक चारूकात घर सभ छलैक, ओ सभ कतऽ गेलैक सिबुआ ?"

सिबुआ झट आगू बढ़ि कहलकै–"मुनेसरकें शिकस्ती रहलैक, सभकें कहलकै आ लोक मानि गेलैक । वैह आगूमे मोड़ लग बसल है सभ ।"

प्रणव आगू देखलक । सामने स्कूलसँ पहिने जे चौराहा छलैक, जाहि ठामसँ पुरना डिस्ट्रिक्ट बोर्डक कच्ची सड़क जाइत छलैक, तकर दुनू कात जे डबरा खत्ता छलैक, सभकें भरिकऽ लोकसभ बसल छलैक, दस-पन्द्रहटा घर । इम्हरेसँ उपटिकऽ गेल छलैक सभ, सरकारी नाला-खत्ता भरि गेल छलैक । मुनेसराकें शिकस्ती होइत छलैक, सिबुआ कहने छलैक । सरकारी जमीन दफानऽमे कोनो असुविधा नहि भेलैक– इलाकाक एम.एल.ए. संग छलैक ।

गंगबा कहलकै–"मुदा खाली घरे बनौले है मुनेसर । पाँचो दिन रहै कहाँ है अइ घरमे ? ने बिजली हइ, ने पंखा । अबितो है तऽ राति कऽ दरभंगे चल जाइ है, ओही ठाम बड़का कोठीमे रहै है । मुदा आइ घरेमे है चलू ने उहें, हम सभ कहाँ बैठायब अहाँकें ?"

गंगबा बड़का भक्त छलैक मुनेसराक । प्रणवकें बूझल छलैक । मुदा रजिन्दरकें नहि सोहेलैक जेना ओकर प्रस्ताव–"से किएक बजै छैं रे गंगबा ? हमरा सभक घरमे टेबुल कुर्सी नहि है मुदा बौआके बैठाबे लेल चट्टकुन्नी तऽ है । आइ बड़का गो हाकिम हो गेल छथि, मुदा हम सभ तऽ अही चट्टकुन्नी पर बैसोने छियनि सभदिन, बैठू बौआ !"

रजिन्दर अपन घरक आगूक चिक्कन माटिपर चट्टकुन्नी बिछा देलकै । प्रणव ओहीपर बैसि गेल । बड़का भीड़ लागि गेलैक । स्त्रिगण-पुरुष-नेना क्यो नहि रहलैक टोलमे । टांग घिसयबैत सभक आगू बढ़ि जलेसरी बुढ़िया बजलैक— "हाकिम बौआ अयली है तऽ पहिने अइ बुढ़ियाक निसाफ करू । सभ दिन कमाकऽ खुऔली घर भरिके आ आइ लोथ अन्हरी हो गेली तऽ बेटाकें दू गो रोटी नहि जुड़ै

हइ मडुओके । बुढ़िया के दाँत नहि हइ मुदा गूड़ियोकऽ तऽ खा लेत । पानी संगे घोंटि लेत । घरभरि खा लै है, दूगो रोटीके कोन कथा, बासियो-तिबासियो एक्को टुकड़ियो ने दै है । आ बड़का नेता है मुनेसरा, देवीजीक संग हवागाड़ीमे फुर्र से उड़ि जाइ है, बुढ़ियाके मुफ्त राशनवला कार्ड नहि दै है । दै है जवान सकलीके । आब तऽ अहींके निसाफ करऽ पड़त हाकिम बौआ !"

भीड़मे ठाढ़ सकली मुँह बिचका लेलकै, प्रणव स्पष्ट देखलकै । जलेसरीक दुनू बेटाक आँखि रंगि गेलैक । दुनू एक्के संग बजलैक— "चुप्प रह तों...।

मुदा जलेसरी नहि मानलकै–"चुप नहि रहबौक हम । लोक सभमे लाज होइ हउ । आ अइमे नहि लाज होइ हउ जे बुढ़िया अन्हरी माय टिनही बाटी लेले सभऽसे भीख मँगै हउ ? से नै देखै हउ टोला आ गामक लोक ?"

दुनू बेटा सिटपिटाकऽ चुप्प भऽ गेलैक । जलेसरी पयर घिसियबैत प्रणव दिस अयलैक–"खाली बोलियेसँ चिन्हब बौआ ! ठीकसे चेहरो ने सुझै है ।"

प्रणव कहलकै— "की कहियौ हम ? एतेक लोक छौक टोलमे— बड़का नामी-नामी मुँहगर लोक सभ । ओकरा सभकें बाजि नहि होइ छैक ?"

तखने भीड़कें ठेलैत मुनेसर पासवान आगू अयलैक–"वाह ! अहाँ तऽ हाकिमे नहि, बड़का नेतो छी । हमरे टोलमे, हमरे खिलाफ बड़का सभा जुटा लेलहुँ एक्के दिनमे !"

"तोहर खिलाफ ?" प्रणव कने आश्चर्यसँ कहलकै–"तोहर खिलाफ किएक सभा हेतौक, हम तऽ तोरे घर दिस अबैत रही । रजिन्दर नहि मानलक, बैसा लेलक । जलेसरी तऽ अपन बेटाक गप्प करैत छल ।"

–"आ अहाँ टोलक नामी आ मुँहगर लोकक गप्प करैत छलिऐक । के अछि नामी आ मुँहगर लोक दोसर टोलमे ?"

प्रणवक बजबासँ पहिने जलेसरी बाजि उठलैक–"सत्ते कहै है हाकिम बौआ ई मुनेसरा । आब एकरा छोड़िकऽ टोलमे की, सौसे गाममे दोसर नामी लोक नहि है । बड़ नाम कयने है ई मुनेसरा । हमरा सभके विसबास नहि हो तऽ एकर घरबालिएके पूछि लियौक ।"

–"चुप्प रह जलेसरी काकी, नहि तऽ बेजाय बात भऽ जेतौक । आइ-काल्हि तों बड़ बड़बड़ करऽ लागल छैं । हमरा सभ खबरि रहैत है । मुदा तोरासँ हम बादमे बूझि लेब । अखन हाकिम टोलमे आयल छथि, हुनकर खातिर करऽ दे ।"

स्वरक व्यंग्य प्रणवसँ छिपल नहि रहलैक । ओकरो स्वर कनेक तीव्र भेलैक–"हम मुनेसरासँ भेंट करऽ आयल रही जे हमर संगी छल । एम.एल.ए. मुनेसर पासवानसँ हमरा किछु लेना-देना नहि अछि । कोनो नेताक नेतागिरीसँ हमर कोनो सरोकार नहि रहैत अछि, अइ जिलामे सभकेँ बूझल छैक ।"

मुनेसर पासवान हँसलैक–"तऽ अहाँकेँ जानिकऽ खुशी हैत जे बात आब जिले धरि नहि, राजधानी धरि पहुँचि गेल अछि । मुख्यमन्त्री आबि रहल छथि अगिला सप्ताह । हुनका पता छनि जे जिलाक सभ टा काज-धाज छोड़ि छुट्टी लऽ अहाँ कोन जरूरी काजमे लागल छी गाममे ।"

प्रणव कठोरतासँ कहलकै–"सूचना लेल धन्यवाद । मुदा एक टा सूचना आरो पहुँचबा दऽ सकैत छियनि अहाँ । छुट्टी लेलाक बाद हम अपन समय कोना बितबैत छी, तकर खबरि मुख्यमन्त्रीसँ सम्बन्ध नहि रखैत अछि । हुनका जनलासँ कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि हमरा लेल ।"

मुनेसर ओहिना हँसैत कहलकै–"से तऽ हुनका अयलेपर बुझायत । मुदा अखन तामस छोड़ू । एतेक दूर चलिकऽ आयल छी तऽ गरीबक कुटियोकेँ पवित्र करू ।"

प्रणव उठैत कहलकै– "निमन्त्रण लेल धन्यवाद । मुदा आब हम चलैत छी । ओहिना सभकेँ देखऽ आबि गेल रही ।"

प्रणव जहिना घुरिकऽ विदा होबऽ लागल, जलेसरी बुढ़िया लोथ पयर घिसियबैत बाट छेकि लेलकै–"हमर निसाफ हाकिम बौआ ?"

प्रणव थकमका गेल । फेर आस्तेसँ कहलकै–"हमरा क्षमा कर । लगैत अछि जेना अइ गाममे हम किछु कऽ नहि सकब । करबाक बड़ इच्छा छल । मुदा गामक पैघ-पैघ लोक बाट छेकने ठाढ़ छथि । तोहर न्याय आब भगवानेक हाथ छनि ।"

पाकिटमे जे किछु टाका छलैक से बाकुटसँ निकालि बुढ़ियाक हाथमे दैत फेर कहलकै–"तोहर न्याय भगवानक हाथ देलियौ, मुदा तोहर हाथमे अपन न्यायक कमाइ ई किछु टाका दैत छियौक, नै नहि कहि दिहैं ।"

जलेसरी आ टोल भरिक लोकके़ँ अवाक् छोड़ि प्रणव शीघ्रतासँ गाम दिस घुरल । मोन ओइसँ बेशी उद्विग्न छलैक, जतेक हवेलीसँ शीलाकेँ छोड़िकऽ जाइत काल छलैक । मुनेसरा अइ सीमाधरि पहुँचि गेलैक, बात एतेक दूरि धरि पहुँचा देलकै !

चिन्तित शीला दरबज्जेपर ठाढ़ छलैक । देखतहि दौड़ल अयलैक–"कहाँ

चल गेल रही ? डरे कोंढ़ धड़-धड़ करैत छल । नहि जानि की सब बजा गेल हमरा झोंकमे ।"

प्रणवकेँ जाय पड़लैक ।

मुदा प्रणवक जयबासँ पहिने अमित आबि गेलैक गाममे । भोरे-भोर कुली सूटकेस लेने ठाढ़ छलैक । संगमे प्रसन्न आ चंचल अमित । प्रणवक कलेजा नहि जानि किएक आशंकासँ काँपि उठलैक ।

पयर छुबैत अमितकेँ उठबैत प्रश्न कयलकै–"हम तऽ विदे भऽ रहल छलहुँ आइ । तोँ किएक अयलेँ ?"

अमित ओहिना प्रसन्नतापूर्वक चारूकात निहारैत कहलकै–"बाबी नहि माननलि । एतेक दिन लागि गेल तऽ एकदम चिन्तित भऽ उठलीह । हम कतबो कहलियनि मुदा नहि माननलि । गाड़ीपर चढ़ाइयेकऽ चैन भेलीह ।"

प्रणव किछु नहि कहि सकलैक आगू । अमित एकदम उत्साहसँ बजलैक–"मुदा नीके कयलनि बाबी । नहि पठबितथि तऽ गाम कोना देखितहुँ ? ओ धार आ मन्दिर, अहाँक स्कूल, सभटा चिन्हारे लागल हमरा । कतेक बेर बाबी कहने हेतीह– कोना अइ गाममे अहाँ रहैत रही, पढ़ैत रही ।''

प्रणव बात कटैत कहलकै– ''एक टा आर चिन्हार लोक छथुन अइ गाममे । तोँ जहिया पाँचे-छौ वर्षक रहैं तऽ देखने रहुन । चल, देखियनि तोरा चिन्हैत छथुन की नहि ?''

प्रणव जल्दीसँ जल्दी अमितकेँ भीतर हवेली लऽ जाय चाहैत छल । ई गाम ओकरा लेल शुभ नहि छैक । पहिल बेर जखन गाममे ओकरा देबय आयल रहैक ओकर नाना लग, तऽ बड़का काण्ड भेल रहैक । नाना आइ नहि छथिन, मुदा लोककेँ घटना बिसरल नहि हेतैक । कहीं क्यो चिन्हिये जाइ ?''

प्रणव ओकरा लऽ जल्दीसँ भीतर हवेलीमे गेल । शीला ओकर संग एकटा अनचिन्हार नवयुवककेँ देखि अकचका गेलैक आ घुरिकऽ भीतर अपन कोठलीमे जाय लगलैक । प्रणव हँसैत कहलकै–"एना पड़ाइ किएक छी ? लग अबियौ, गोड़ लागऽ दियौक । अमितकेँ नहि चिन्हलिऐ ?"

नाम सुनिते शीला दौड़िकऽ लग अयलैक । अमितकेँ प्रणव कहलकै–"अपन शीला मौसीकेँ गोढ़ लगहुन अमित ! नहि चिन्हलहुन ?"

अमित गोड़ लागिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक । किछु बजलैक नहि । मुदा शीला जेना ओकरा देखितहि बताहि भऽ गेलैक । प्रणवोकेँ बिसरि गेलैक आ अमितकेँ संग लऽ ओकरेमे व्यस्त भऽ गेलैक । प्रणव एकसर दरबज्जापर बैसल रहल । बड़ी कालक बाद अमित बाहर अयलैक, दुपहरिया बीति गेल छलैक । प्रणवक लग आबि कहलकै–"कनेक गाम घुमने अबै छी पप्पा ! मौसी छोड़िते नहि छलीह । बड़ मस्किलसँ दू घण्टा लेल छोड़ने छथि ।"

प्रणवकेँ चिन्ता भेलैक । अमितकेँ एकसर गाममे नहि घुमबाक चाहिऐक । नहि जानि के की कहि दैक ? मुदा रोकबाक कोनो उपाय नहि छलैक । बात दोसर तरहेँ कहलकै–"एकसर भुतिया जयबैं, ड्राइवरकेँ संग कऽ ले । ओ सबतरि घूमि आयल अछि, तोरा ठीकसँ देखा देतौक ।"

अमित कूदिकऽ सड़क दिस जाइत बजलैक–"आब हम बच्चा नहि छी पप्पा जे ड्राइवर आ चपरासीक आंगुर पकड़ि गाम घूमब । हम अपने सभटा देखि लेब ।"

अमित चल गेलैक आ प्रणवक चिन्ता बढ़ि गेलैक । ओ जखन भीतर गेल तऽ शीलाकेँ कहलकै–'हमरालोकनि भोरे विदा भऽ जायब ।"

शीला जेना मर्माहत भऽ गेलैक–"आइ-काल्हि बड़ निर्मम भऽ गेल छी अहाँ । हमरे बात हमरेपर बजारि बदला लेबाक कोनो अवसर अहाँ छोड़ऽ नहि चाहैत छी । काल्हि हम कहलहुँ आ आइ अहाँ तैयार । अमितकेँ दुइयो दिन रहऽ नहि देबैक हमरा लग ?"

"नहि शीला ! ओकरा अहाँ लग एक्को दिन छोड़ब ठीक नहि । की परिचय देबैक लोककेँ ? बच्चा नहि अछि अमित । कहीं सभटा कहि नहि दैक क्यो, आ एतेक दिनुका मेहनति आ सतर्कता बेकार चल जाय । ओकरे लेल जाय पड़त शीला, अहाँपर कोनो तामस नहि । हम निर्मम नहि भेल छी । बेर-बेर हमरापर निर्ममताक आरोप लगा कतहु अन्याय कऽ रहल छी हमरा संग अहाँ ।"

शीला झट दऽ बात कटलकै–"अज्ञानी आ अविवेकी सभदिन छी हम, क्षमा कऽ दियऽ । मुदा अमितकेँ भोरे नहि लऽ जइयौक । हम सदिखन संग रहबै, एक्को क्षण नहि छोड़बैक ।"

प्रणव असहमत होइत कहलकै–"से पार नहि लागत अहाँ बुते । ओ गाम

देखबाक लोभमे आयल अछि । कहिओ गाममे रहल नहि अछि । गामक जिनगीक बारेमे खाली हमरासँ आ मामीसँ सुनने अछि । अइ बेर ओ सभक अनुभव करऽ चाहैत अछि । अहाँक बन्हेज ओ नहि मानत आ स्वतंत्रता ओकरा लेल घातक हेतैक ।"

शीला चुप भऽ गेलैक । किछु काल बाद बजलैक– ''तऽ अहाँ निर्णय कऽ चुकल छी । ओकरा नहि रहऽ देबैक हमरा लग किछुओ दिन । मुदा कमसँ कम चौबीस घंटाक समय तऽ दियऽ । जे किछु छैक ओकर, ओ सभ तऽ ओकर नाम कऽ दिऐक, काल्हिए रजिस्ट्री भऽ जाय ।''

प्रणव टोकलकै–"एहन अन्याय नहि करियौक ओकरा संग । एक दिन ओकरा घर चाहैत छलैक, ककरो नाम चाहैत छलैक परिचयक लेल । हमहीं लऽकऽ आयल रहिऐक । मुदा ओ परिचय नहि बनि सकलैक ओकर । आइ ओकरा प्रयोजन नहि छैक । सभ ठाम ओकर परिचय छैक प्रणव चौधरीक बेटा अमित चौधरी । अइसँ बेशी परिचयक ओकरा काज नहि छैक । धन-सम्पत्ति नहि छैक, मुदा शिक्षा भेटि रहल छैक । प्रतिभावान अछि, अपन स्थान बना लेत । अइ धन-सम्पत्तिक संग ओकर नाम जोड़ि ओकर भविष्य अन्धकारमय नहि करियौक । ओ नेना नहि अछि । सभटा लिखबैक तऽ प्रश्न करत–"सभटा हमरे नाम किएक ?" ओकर मोनमे पहिनेसँ शंका छैक । एतेक दिन धरि ओकर बाप काज-धाज छोड़िकऽ कहियो रहल नहि छैक । अइ बेर केहन बात भेलैक ? मामी बुझौने हेथिन । ओकरा बूझल छलैक जे हमर मातृक अछि एतऽ, पढ़ल छी हम अहाँक संग । ओकर माय अहाँक छोट बहिन जकाँ मानैत छल, बस्स । अइसँ आगू नहि । अइसँ आगू किछुओ कहब ओकरा लेल घातक हेतैक ।"

शीला नहि मानलकै–"एना डेराउ नहि हमरा । किछुओ नहि बुझतैक अमित । एकटा अभागलि मौसी छैक–ने सधवा, ने विधवा, निस्सतान । ओ अपन सभ किछु ओकर नाम करतैक, ताहिमे सन्देहक कोन गुंजाइश छैक ? ई बोझ बड़का टा अछि हमरा छातीपर । अहाँ लोकनि सभ चल जायब । एकसर गाममे ई बोझ आन लऽ लेत हमर । सभ-किछु अमितक नाम कऽ देबैक तऽ हल्लुक भऽ जायब ।"

प्रणव तैयो अड़ल रहलैक–"जिद नहि करू शीला ! अहाँक आ अमितक नीकक लेल कहैत छी हम । फेर कखनो, अगुताइ कोन छैक ?"

"अगुताइ तऽ कोनो नहि– सभ-किछु ओकरे छैके । मुदा जिनगीक कोन भरोस ? कहीं अनचोकेमे आँखि मुना गेल तऽ क्यो देतैक ओकर हिस्सा ? अहूँकेँ लग नहि आबऽ देत । सम्बन्धक नामपर सभ नोचि-खसोटि कऽ खा लेत ।"

प्रणवो किछु भावुक भऽ गेल–"सदिखन अनके चिन्ता रहैत अछि अहाँकेँ। अनचोकेमे आँखि मूनि लेब आ सभ वस्तुसँ छुट्टी ! सभटा भोगऽ लेल छोड़ि देब हमरा लोकनिकेँ !"

शीला सेहो किछु कहऽ चाहैत छलैक । तावत अमित घुरि अयलैक । झलफल अन्हार भऽ गेल छलैक । मुदा शीला गप्पक सोहमे लालटेनो नहि बारने छल । अमित अबिते टोकलकै— "घर एहिना अन्हारे रहत मौसी !"

शीला झट लालटेन लेसलक । अमित ओकरे संग बैसि गेलैक भनसाघरमे । प्रणव दलानपर चल गेल । अमित बड़ प्रसन्न लागि रहल छलैक आ शीलाकेँ एक-एक टा सुनलाहा-देखलाहा बातक बारेमे पूछि लेबऽ चाहैत छलैक, जेना एक्के दिनमे गामक सभ गप्प बूझि कऽ रहतैक । शीलो प्रसन्न मोने ओकर जिज्ञासाकेँ शान्त करैत रहलैक ।

मुदा भरि राति प्रणवक मोन अशान्त रहलैक । भोरे जखन प्रणव चलबाक प्रस्ताव रखलकै तऽ अमित राजी नहि भेलैक–"अहाँ जाउ पप्पा ! गाड़ी लेने जाउ, ड्राइवरोकेँ । हम ट्रेनेसँ चल आयब । दू-चारि दिन देखऽ दियऽ । नीक लगैत अछि । छुट्टिये अछि, दरभंगो जाकऽ की करब एखन ?"

प्रणव बड़का असमंजसमे पड़ि गेल । ओकरा लेल आर बेसी रुकब असंभव छलैक । एतेक दिनक छुट्टीपर लोक चकित हेतैक । आइ धरि कहियो कोनो छुट्टी नहि लेने छल ओ । कतेको बेर मामी कहलकै, "चल, कोनो तीर्थसँ घुरि आबी ।" मुदा प्रणव मामीकेँ ककरो संग पठाकऽ अपने काजक बहाने रहि जाइत छल । आश्चर्य हैब स्वाभाविके छलैक ।

मुदा प्रणव लोकक ओइ आश्चर्य लेल चिन्तित नहि छल । ओकर चिन्ता अमित लेल छलैक । ओकरा गाममे एकसर कोना छोड़ि दिऐक ? कोनो काण्ड ने भऽ जाइ ? आ जखन अमित अपन मोनसँ दू-चारि दिन गाममे रहऽ चाहैत छलैक तऽ ओकरा रोकबो ठीक नहि हेतैक ।

ओ निर्णय लेलक जे ओकरा एकसरे विदा भऽ जयबाक चाहिऐक । अमित पाछाँ आबि जयतैक । शीलोक मोन छैक । ओकर निर्णय सुनि गदगद होइत शीला बजलैक–"अहाँक एतेक रास दानक कोन रूपे शोध हैत से पता नहि । खाली एकतरफा लेने जाइत छी हम, देबऽ लेल तऽ किछु अछिये नहि ।"

प्रणवो किछु विह्वल होइत कहलकै– ''जे किछु अहाँ देलहुँ अछि, तकर बाद देबा लेल सत्ते किछु नहि बँचैत छैक । हमरा चाहबो नहि करी । बस्स, जाइत

काल एतबे कहब जे एहिना निसंकोच भऽ जखन आवश्यकता हो, स्मरण कऽ लेब, हम अबस्से आयब । क्यो रोकि नहि सकत हमरा ?"

प्रणव गामसँ विदा भऽ गेल । ओकर मोटर जखन गामसँ बहरेलैक तऽ घरे-घरसँ लोक बाहर दरबज्जापर ठाढ़ भऽ गेलैक आ आश्चर्यसँ ताकऽ लगलैक जेना विश्वासे नहि भऽ रहल होइ जे ओ जा रहल अछि । मुदा क्यो ओकरा विदा करबा लेल आगू नहि बढ़लैक । ओकर मोटर सरसराइत गामसँ बहराइत गेलैक ।

साते दिन बाद प्रणवकेँ एकटा चिठ्ठी भेटलैक शीलाक, पुजेगरीक मार्फत ।

"अहाँ मना कयने रही मुदा हम जिद धऽ लेलहुँ । अहाँ तऽ सभटा संभावनाकेँ स्पष्ट देखि लेने छलिऐक । हमर जिद नहि मानऽ चाहैत छल अहाँकेँ । अमितकेँ गाममे किएक छोड़लिऐक अहाँ ? बड़का काण्ड भऽ गेल ।

अमित प्रसन्न छल गाममे । सभ ठाम बौआइत फिरैत छल । हमहूँ प्रसन्न रही । मुदा एकदिन अमित एकटा विचित्र प्रश्न कऽ देलक–"अहाँ हमर मौसी कोना भेलहुँ ? मायक संगी छलिऐक तेँ ? मुदा असल संगी तऽ अहाँ पप्पाक छियनि, एक्के गामोक छी । तखन तऽ अहाँ पीसी भेलहुँ, मौसी कोना ?"

आशंकासँ हमर कोँढ़ धड़कल, मुदा हम हँसिए कऽ कहलिऐक–"तऽ बेश, पीसिये कहू हमरा । मौसी आ पीसीमे कोन अन्तर छैक ?"

ओइ दिन फेर दोसर प्रश्न नहि कयलक अमित । मुदा हमरा लागल जेना ओकर मोनमे किछु उमड़ि रहल छलैक । मोन भेल जे कहिऐक– तोँ एखने गामसँ चलि जो ।

मुदा होनी किछु आर छलैक । दोसर दिन अमित एकटा आर विचित्र प्रश्न लऽ पहुँचि गेल–"पप्पाक बिआह कतऽ भेल छलनि ?"

हमरा तामस भऽ गेल । डँटलिऐक–"तोँ तऽ आब सत्ते बड़ बुझनुक भेल जाइ छेँ अमित ! बापक विआहक इतिहास पूछै छहिक लोकसँ ।"

हमर तामस देखि ओ चल गेल । मुदा हम स्पष्ट देखलिऐक जे हमर उत्तरसँ ओकरा सन्तोष नहि भेलैक । मोनमे जेना किछु घुमड़ि रहल छलैक, जकरा हमरासँ नुका रहल छल ओ ।

प्राते भेने बिस्फोट भेल । लागल जेना दरबज्जापर गरजा-गरजी भऽ रहल छैक । एकटा स्वर अमितक बुझायल । हम दौड़िकऽ दरबज्जापर अयलहुँ । बहुत रास लोक दरबज्जापर जमा भेल छल । रूदल चौधरी, अहाँक संगी मुरली आ

मुनेसरक संग बहुत रास लोक छल । हमरा देखितहि अमित हमरा दिस पलटल–"हम ककर बेटा छी मौसी ?"

ओकर अइ आकस्मिक प्रश्नपर हम अकबका गेलहुँ । तुरत बोल नहि खूजल । एम.एल.ए. मुनेसर पासवान आगू बढ़ैत बाजल–"हिनकासँ की पुछैत छहुन ? सौंसे गामसँ पूछि ले जे तोँ ककर बेटा छैं ?"

आब हमर चेतना घुरल । कनेक दृढ़तापूर्वक कहलिऐक–"हिनका सभक बात नहि सुन अमित ! तोरा अपन बापक नाम नहि बूझल छौक जे लोक सभसँ पूछि रहल छहिक ?"

रूदल चौधरी जोरसँ हँसलाह–"बापक नाम हमरा-अहाँकेँ कोन कथा, एकर मायोकेँ नहि बूझल छलैक । मुदा एकर मायकेँ सभ चिन्हैत छैक अइ गाममे । रण्डी छलैक ओ ।"

अमित एक्के बेर छड़पिकऽ रूदल चौधरीक कण्ठ धऽ लेलकै आ बजारिकऽ छातीपर चढ़ि गेलैक । लोक सभ दौड़लैक आ घीचिकऽ ओकरा एक दिस ठोँठिआबऽ लगलैक । हम दौड़िकऽ ओकरा अपन दुनू हाथे पकड़ि लेलिऐक । कहीं लोक सभ मारि नहि बैसैक ओकरा ।

मुदा मारियो खाकऽ रूदल चौधरी ओहिना हँसैत ठाढ़ भऽ गेलाह–"तामस आ बहादुरी देखौलासँ माय-बापक इतिहास नहि बदलतौक बाउ ! पूछि ले अपन मौसिएसँ । एकरे तऽ सहोदर छलैक माला, तोहर माय । पुछहिक एकरेसँ जे ककरा संग गामसँ भागल छलौक तोहर माय ? कहाँ-कहाँ बौअयलौक ? कोन बजारमे बैसैत छलौक आ कोना सड़ि-सड़िकऽ मुइलौक ?"

हम अमितकेँ घिचैत कहलिऐक–"चल, अंगना चल ।"

ओ अकड़ल ठाढ़ रहल । आँखिमे लहास उठि रहल छलैक–"हिनकर बातक जबाब दियनु पहिने । कहू जे ई झूठ बजै छथि ।"

–"सभटा झूठ बजै छथि ई सभ । तो प्रणवक बेटा छहिक ।" हम साहस कऽ कहलिऐक ।

रूदल चौधरी बड़ निर्लज्ज हँसी हँसलाह–"आ प्रणव तोहर मौसा सेहो छौक । एकदिन तोहर ई मौसी तोहर बापक संग तोरा अइ गाम पहुँचाबऽ आयल रहौक । तहिया ओ तोहर बाप बनबाक नाटक नहि कयने रहौक । एही गाममे सभक सामने तोरा खाली मालाक बेटा कहने रहौक । मुदा तोहर नाना नहि रखलकौ तोरा ।

तखन ओ तोहर बाप बनि गेलौक आ ई तोहर मौसी, तोहर असली मौसाक घर छोड़ि तोहर बापक घर आबि गेलौक । पूछि ले अपन मौसिएसँ, हम झूठ कहैत छियौक ? ई नहि कहौक तऽ चल जो पटना कालेज, प्रोफेसर झासँ पूछि लियहुन जे के तोहर मौसा छौक ? किएक सभक अछैत एकटा क्यो आन आगि देलकनि तोहर नानाकेँ ? के छलनि ओ तोहर नानाक ?"

रूदल चौधरीक बात काटि मुनेसर बाजल–"हद करै छी अहूँ रूदल बाबू ! छलथिन कोना ने ? अही हवेलीमे तीन वर्ष रखने छलथिन ओकर मामीकेँ । मामीक वर मामा, आ कि नहि...

सभ खिलखिलाकऽ हँसल आ तामसे हमर देहमे आगि लेसि देलक–"चुप्प भऽ जो मुनेसरा ने तऽ बेजाय बात भऽ जेतौक । तोहर ई मजाल जे हमर दरबज्जापर आबि ई सभ बात बाजैं ? तीन पुस्त हवेलीमे बर्तन माजि गुजर कयलकौ, सेहो बिसरि गेलौक ? मुदा ई तऽ मोन हेतौक जे एखन जाहि देवीजीक संग लऽ घुमैत छैं, से सधवा छथि, स्वामी गाम छोड़ि पड़ैलथिन से आइ धरि पता नहि छनि । मुदा बेटा छनि, बेटी-जमाय छनि । आ अहाँ रूदल काका ! अहाँकेँ कक्का कहबो मे लाज होइत अछि । अहाँकेँ अइ नीच मुनेसराक संग मिलिकऽ अपन स्वर्गीय भाइ आ भतीजीपर लांछन लगबैत मिसियो भरि लाज नहि भेल ? निर्लज्ज तऽ अहाँ पुरान छी । से नहि रहितहुँ तऽ अपने भतीजीकेँ, अइ अमितक मायकेँ, अहाँ बजारमे बेचि अबितिऐक ? मुदा आइ नीचताक पराकाष्ठा कऽ देल अहाँ सभ । सभ मिलि एकटा निष्पाप आ निष्कलंक नेनाक मोनमे जहर घोरि रहल छिऐक । निकलू अइ दरबज्जासँ अहाँ सभ क्यो, नै तऽ जन-बनिहारसँ सभहक टाँग तोड़बा देब । हमरा डर नहि अछि आब । जकर डर छल से आइ अहाँ सभ कऽ चुकलौँ । आब हमर क्रोध देखब अहाँ सभ । बाप बहुत छोड़ि गेल छथि हमरा लेल । क्यो आगाँ-पाछाँ खयवला नहि अछि हमरा । अहाँ सभक घर-घराड़ी नीलाम नहि करा दी आ अइ मुनेसराक नेतागिरी नहि घोसाड़ि दिऐक तऽ हम रण्डी, हमर सात खानदान रण्डी ।"

हमर रूप देखि सभ चुपचाप सहटि गेल । मुदा अमित ओहिना ठाढ़ छल । लग आबि कहलिऐक— "आँगन चल अमित !"

"नहि'' हमर स्पर्शसँ जेना दूर हँटैत बाजल अमित । आ एकदिस पड़ायल चल गेल । दू दिन बितल, आइ तेसर दिन अछि, घुरिकऽ नहि आयल । अन्देसासँ मोन बताह भेल अछि ।

अमित पहुँचल की नहि ? पुजेगरी चिट्ठी लऽ जा रहल छथि । हमरा लेल

चिन्ता नहि करब । आब हमरामे ओ बल आबि गेल अछि जे एकसरे अइ गाममे रहि सकी, सभहक बदला लऽ सकी । सहैत ऊबि गेल छी हम । गाममे जे तबाही हेतैक, से लोक देखतैक ।

मुदा चिन्ता अमितक अछि । सभटा सुनि-बूझि स्थिर रहबाक वयस नहि भेल छैक । कतहु टूटिकऽ छिड़िआ ने जाय । अहाँमे असीम धैर्य आ सामर्थ्य अछि । ओकरा समेटि कऽ ओकर रक्षा करियौक । ओकर आर कोनो परिचय नहि छैक, ओ अहींक बेटा अछि ।"

चिट्ठी पढ़ि प्रणव जेना सुन्न भऽ गेल । बड़ी कालधरि चिट्ठी लेने ठाढ़ रहि गेल । मामी लग आबि पुछलथिन-"की भेलौ ? अमित कहिया आओत ?"

प्रणव चिट्ठी हुनका हाथमे दऽ देलकनि । मामी पढ़ैत-पढ़ैत ओही ठाम ओंघरा गेलथिन । भरिसक बेहोश भऽ गेलथिन । मुदा प्रणवक ध्यान ओम्हर नहि छलैक । ओकर चिन्ता अमितपर छलैक । तीन दिन गाम छोड़ना भऽ गेलैक, किम्हर गेलैक ?

फुर्तीसँ बाहर निकलैत प्रणव कहलकै— "कने मामीकेँ देखबनि पुजेगरी ! हम सभठाम सूचना दैत छिऐक, शहरमे हैत तऽ अबस्से भेटि जायत । हमरा आबऽ दियऽ, तखन जायब अहाँ ।"

मुदा श्रीधर पुजेगरी बेशी दिन नहि रुकि सकलैक । सभ दिन भोरे कहैक-"आइ हमरा आब जाय दियऽ बौआ ! शीला दाइ एकसरि बेहाल हेतीह । अमितक चिन्ता आ दुश्मन सौंसे गाम ।"

मुदा प्रणव रोकि लैक-"नहि पुजेगरी ! आइ भरि रुकि जाउ । बिना अमितक समाचार लेने जायब तऽ ओकर हालत आर खराब भऽ जयतैक ।"

मुदा दिन-राति तक्का-हेरी करैत प्रणवक अप्पन हालति खराब भऽ गेलैक । अमितक कोनो पता नहि छलैक । प्रणवक आशंका बढ़ैत गेलैक । शहर ओहिना अशान्त छलैक- हड़ताल तोड़-फोड़ आ अनशन । स्कूल-कालेज बन्द । प्रशासनक लेल चिन्ता आ ताहूसँ ऊपर अमितक लेल । नहि जानि कोन ठाम छैक ? कहीं कोनो उपद्रवकारी वा असामाजिक तत्त्वक चांगुरमे ने चल गेल होइ ! ओकर मानसिक स्थिति ठीक नहि छैक । एखन ओ किछुओ कऽ सकैत अछि ।

एम्हर ओकर नाम पटना धरि पहुँचल छलैक । आन्दोलनकेँ कुचलबाक ओकर प्रयासकेँ कमजोर आ अर्थपूर्ण घोषित कयल जा रहल छलैक । आन्दोलन समर्थकसँ ओकर गुप्त सम्बन्ध आ आन्दोलनक ओकर समर्थनक खबरि सेहो सभ दिन पटना पहुँचि रहल छलैक । ओकर बदलीक खबरि सभ दिन कार्यालयमे पसरैत छलैक । मुनेसर पासवान एम.एल.ए. सक्रिय छलैक ।

ओइ दिन डाकबंगलामे बड़का काण्ड भऽ गेलैक । एकटा मंत्री महोदय तावमे आबि गेलथिन । अमितक चिन्ता आ ओकर तक्काहेरी, ओ हुनकासँ भेंट नहि कऽ सकलनि । मंत्री महोदयकेँ ई अपमान लगलनि । भेंट भेलापर अनेरो नुक्ताचीनी करऽ लगलथिन जिलाक प्रशासनक । प्रणव किछु काल चुप्प रहल, फेर नहि रहल गेलैक । किछु जबाव देलकनि कि मंत्रीजी छड़पलाह-"ठीके कहैत अछि लोक सभ ? एतेक महत्त्वपूर्ण जिलाक प्रशासन अहाँक हाथमे छोड़ब घातक अछि ।"

प्रणवोकेँ क्रोध आबि गेलैक । कहलकनि-"घातक आ नुकसानदेह अहाँ सभक लेल हैत । हमरा सभकेँ की अछि ? ई जिला नहि तऽ दोसर जिला, ओहो जिला नहि तऽ आने ठाम, सेक्रेटरियटेमे । चिन्ता अपने लोकनिकेँ करबाक चाही । आइ सत्तारूढ़, काल्हि किछु नहि ।"

मंत्रीजीकेँ क्रोधसँ फुफकारैत छोड़ि ओ चल आयल छल । बादमे अफसोचो भेलैक । अखन ओहिना मनःस्थिति ठीक नहि छलैक-ऊपरसँ ई दोसर चिन्ता । मंत्रीजी चुप्प किन्नहु नहि बैसथिन । अगिला केबिनेट मीटिंगमे ओकर बदली निश्चित छलैक ।

मुदा अगिला मीटिंग जहिया हेतैक, देखल जयतैक । एखन तऽ पुजेगरी गाम घुरबा लेल अगुतायल बैसल छलथिन आ गाममे शीला अन्देसासँ अधमरू भेल हेतैक । अमितक कोनो पता नहि छलैक ।

आ मामियोकेँ जेना दीन-दुनियाँक कोनो पता नहि छलनि । ओइ दिन शीलाक पत्र पढ़ि जे बेहोश भेलीह से बेहोशे छलीह । बीचमे आँखि खुजैत छलनि मुदा जेना ककरो चिन्हबे नहि करैत छलथिन । गुमसुम पड़ल रहैत छलीह । उठिकऽ क्रिया-कर्म करैत छलीह, नाममात्र लेल किछु आहार पेटमे जाइत छलनि आ फेर ओहिना गुमसुम पड़ल रहैत छलीह । आँखिक टकटकी लागल जेना शून्यमे किछु ताकि रहल होथि !

प्रणव अमितकेँ ताकि-ताकिकऽ हारि गेल । कतहु कोनो सूत्र नहि भेटलैक । आ तखन ओ पुजेगरीकेँ नहि रोकि सकलैक । शीलाक नाम एकटा चिट्ठी देलकै-

"अमित एतऽ नहि आयल अछि । शहरोमे कतहु कोनो खबरि नहि लागल । मुदा अहाँ चिन्ता नहि करब । ओ कतहु नहि जायत । ओ हमर बेटा अछि । लोकक कहलापर ओ हमरा छोड़िकऽ कतहु नहि जायत । आइ ने काल्हि, अबस्से हमरा लग घुरत ।

हमरा बेशी चिन्ता अहाँक लेल अछि । गामक अगुआ लोकनिकेँ ललकारि देने छियनि अहाँ । अपना भरि उपद्रव करऽसँ बाज नहि औताह ओ लोकनि । हमर भगवानसँ प्रार्थना अछि जे अहाँ धैर्य आ साहसपूर्वक ओइ सभक मोकाबिला कऽ सकी ।

बस्स, एतबे धरि । कोनो प्रतिहिंसा व प्रत्याक्रमणक आगिकेँ नहि लहकऽ देबैक बेशी । सभकेँ जरैबाक चेष्टामे अन्ततः फेर अपने फोका पड़त, अपने जरऽ पड़त, तेँ लिखैत छी । हमर ई बात मानि लेब । गाममे रहब, गामसँ लड़ब नहि ।

कायर नहि छी हम । अहाँकेँ पलायनक उपदेश नहि दऽ रहल छी । खाली एकटा यथार्थक संकेत कऽ रहल छी । लड़ल समाजसँ पहिनहु रही अहाँ । स्वामीकेँ छोड़ि स्वतंत्र भऽ अप्पन पयरपर ठाढ़ होबऽ बहार भेल रही । की भेल ? शरीर आ आत्मा पर अगणित दाग लऽ घुरि अयलहुँ । फेर ओही लोकक बीच रहबाक अछि । संग रहबाक आह्वान हम पहिनो कयने रही, आइयो दोहरबैत छी । मुदा हमरा बूझल अछि जे से अहाँ नहि करब । हमरा महान घोषित कऽ अपनाकेँ दण्डित करऽ मे लागल छी । अपनाकेँ दण्ड देबाक अइ चेष्टामे हमरा कतेक दण्ड दऽ रहल छी अहाँ, से प्रायः अहाँ कहियो ने बूझि सकब ।

मुदा हम जतबा बूझि सकल छी, ताहिसँ डर लागि रहल अछि । अपन अपमान करऽबलाक फन थुरबाक लेल अहाँ किछुओ कऽ सकैत छी, हमरा बूझल अछि । मालो सैह कयने छल । अपन सुखक हनन करऽवलाकेँ दण्ड देबा लेल घरसँ बहरा गेल छल आ ओकर दण्ड अपने टा नहि भोगलक, आइ ओकर बेटो भोगि रहल छैक । अहाँ कोनो तेहन काज नहि करब । लोक बिसरि जाइत छैक सभ-किछु, इहो घटना बिसरि जयतैक । अहाँ गाममे चैनसँ रहि सकब ।

मुदा हमरा नहि बिसरब । एतबा मोन राखब जे हम छी । आवश्यकता हो, अबस्स सोर पाड़ब ।"

चिट्ठी लऽ पुजेगरी चल गेलथिन आ प्रणव व्यस्त भऽ गेल । पैघ छुट्टीक बाद आयल छल आ ऊपरसँ मानसिक तनाव । अपनाकेँ सम्हारैत फेरसँ लागि गेल काजमे । ओकरा विश्वास छलैक जे अमित अबस्स घुरतैक एक दिन । ओ ओकरा

छोड़िकऽ नहि रहि सकतैक, मामीक बिना ओकरा नहि रहि हेतैक । अखवारोमे सूचना वा विज्ञापन नहि देलकै । दस टा लोक बुझतैक, पचास तरहक बात पुछतैक । ओ चुपचाप अमितक प्रतीक्षा करऽ लागल ।

मुदा बेसी प्रतीक्षा नहि करऽ पड़लैक । एकदिन एक टा पत्र भेटलैक । अमितक हाथक अक्षर ओ चिन्हलकै आ प्रसन्नतासँ भरि गेल । मुदा चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत मुँह म्लान होइत गेलैक—

"अहाँकेँ की लिखि कऽ सम्बोधन करू ? 'पप्पा' कहि एतेक दिन सम्बोधित करैत छलहुँ, अहीं सिखौने हैब 'पप्पा' कहब । एतेक पैघ झूठ एकटा छोट नेनाकेँ कोना सिखौलिऐक अहाँ ? अहाँ तऽ बड़का आदर्शवादी, आ सत्यक समर्थक छी । सभ दिन हमर आदर्श पुरुष छलहुँ अहाँ । अहीं सन बनबाक सभ दिन स्वप्न देखलहुँ हम । हर क्षण, प्रतिदिन प्रयत्नो करैत रहलहुँ । मुदा अहाँक से मूर्त्ति खण्डित भऽ गेल अछि, चूरचूर भऽ गेल अछि आ अहाँक ओइ भग्न मूर्त्तिक समक्ष ठाढ़ हैबाक हमरा साहस नहि अछि, तेँ नुकायल फिरि रहल छी, पड़ायल फिरि रहल छी ।

एकटा रण्डीक बेटा छी हम । पिता हमर के छल, ककरो जानल नहि छैक । हमर यैह परिचय अहाँ नेन्नेमे कहि दितहुँ हमरा, हम आर साहस, आर विश्वाससँ जीबि सकितहुँ । मुदा हमर असली परिचय बदलि, ओइपर एकटा नकली परिचय चढ़ा अहाँ हमर सभ-किछु छीनि गेलहुँ । हमर साहस, हमर आत्म-विश्वास आ अहाँक प्रति हमर अटूट आस्था आ आदर । यदि सत्य बात कहि अपन संग रखितहुँ अहाँ, तऽ अहुँक प्रति ओ आदर आर बढ़ि गेल रहैत । मुदा झूठपर झूठ । एकटा सत्यकेँ छिपयबाक लेल हजार झूठ । हमर अहाँक पप्पा कहब झूठ । अहाँक मामीकेँ हमर बाबी कहब झूठ । हुनका विश्वक सभसँ आदर्श नारी बूझब झूठ । हुनकर सादगी आ सरलताक प्रदर्शन झूठ । शीला मौसीक खिस्सा झूठ । अखन हम पटनामे छी । प्रोफेसर झासँ भेंट कयलियनि । अहाँ लोकनिक सभ खिस्सा कहलनि ओ । हमर माये रण्डी नहि छलि– हमर मौसियो...

मुदा माय आ मौसी लेल हमरा दुःख नहि अछि । हुनकालोकनिकेँ तऽ नहि जनैत छियनि । माय मोन नहि अछि आ मौसीकेँ मोन राखबाक इच्छा नहि अछि ।

मुदा अहाँ ! अहाँकेँ बिसरब हमरा लेल कठिन भऽ रहल अछि । किएक एतेक भारी अन्याय कयलहुँ हमरा संग ? अहाँक वास्तविक रूप एहन ? हमर सभटा स्वप्न, सभटा सामर्थ्य आ आदर्श अहाँक असली रूपकेँ देखि ध्वस्त भऽ गेल अछि । आब हम आदर्शहीन, विवेकहीन जन्तु छी । एकटा रण्डीक बेटा, एकटा

कामुक अत्याचारीक नाति जे पतिक श्राद्ध लेल मदति माँगऽ आयल स्त्रीक संग बलात्कार करैत अछि। विलक्षण वंशावली अछि हमर। नाना अत्याचारी मदान्ध कामुक, माय रण्डी आ मौसी एकटा अघोषित रण्डी। आ बाप, ओकर कोनो पता नहि...

आर अहाँ के ? बाप, मौसा, पालक ? के छी हमर ? अहाँ कहब 'पिता', पालक। गामक लोक कहैत अछि— मौसा। मुदा हम कहैत छी जे क्यो नहि छी हमर। हमर-अहाँक कोनो सम्बन्ध नहि रहि गेल। अहाँ हमर बापे नहि, हमर आदर्श रही। जखन ओ आदर्श मूर्त्तिए खण्डित भऽ गेल तऽ अहाँ क्यो नहि छी हमर...।"

प्रणव कानऽ लागल, नहि जानि कतेक वर्षक बाद। बहुत-किछु बीति गेलैक, जीवनक कतेक अनमोल वर्ष बीति गेलैक मुदा ओ कानल नहि छल। अपन बेटाक मुँहे, ओकर चिट्ठीमे अपना लेल लिखल गेल शब्द लेल दुखी नहि छल ओ। अइ लेल कानि नहि रहल छल जे अमित ओकरासँ सभटा सम्बन्ध तोड़ि लेने छलैक। ओकरा नोर तँ अमित लेल छलैक। टूटल आदर्श आ आहत मोन लेने ओ ठाम-ठाम बौअयतैक, शान्ति तकतैक। मुदा के देतैक शान्ति ओकरा ? ठाम-ठाम भटकि कोनो बाट लागि जयतैक। ओ नहि घुरतैक आ किछु नहि बनतैक। नहि घुरबाक दुख ओ सहि लेत, मुदा अमितक किछु नहि बनबाक दुःख ओकरा जीबऽ नहि देतैक। ओ तऽ ओकरा की-की ने बनबऽ चाहैत छलैक। जीवनमे ओ सभ-किछु जे अपने नहि भोगि सकल– ओकरा देबऽ चाहैत छलैक।

मुदा अमित ओकरा मौके नहि देलकै किछु कहबाक। ओ तऽ एकतरफे सुनि एतेक बात लिखि गेलैक। ओ ओकर किछु नहि छलैक, मुदा दस वर्ष धरि बेटा कहलकै ओकरा, ताहू नामपर तऽ एक बेर किछु कहबाक मौका दितैक ?

आ सरकार सेहो मौका नहि देलकै– ट्रान्सफरक आर्डर भेटि गेलैक। प्रणव एक तरहेँ प्रतीक्षेमे छल ट्रान्सफर आर्डरक। जयबाक तैयारीमे लागि गेल।

एक दिन मुनेसर फेर अयलैक देवीजीक संग। प्रणव आफिसेमे छल। मुनेसर भीतर आबि कुर्सीपर बैसि टांगपर टांग चढ़ा लेलकै। बगलवला कुर्सी पर मुसकिआइत देवीजी। प्रणव कोनो गप्प नहि कयलकै तऽ मुनेसर टोकलकै–"आर्डर तऽ भेटिये गेल डी.एम. साहेब। अपने जैब कहिया ?"

प्रणव बिन ओकरा दिस तकने कहि देलकै–"चोरा-नुकाकऽ तऽ जायब नहि, जहिया जायब सभ बुझबे करत। अहूँ बूझि लेब।"

"अरे, हमरा तऽ पहिनेसँ बूझल छल। अहीं बूझऽ लेल तैयार नहि भेलहुँ।"

प्रणव ओहिना रुच्छतासँ कहलकै– "अहाँ सन-सन लोकके̐ दोबारा बुझबाक हमरा ने इच्छा होइत अछि, ने प्रयोजन। अहाँके̐ कोनो काज होअय तऽ कहू, अन्यथा एखन हम व्यस्त छी।"

मुनेसर पासवानक चेहरा लाल भऽ गेलनि आ आँखि रँगिकऽ बजलाह–"तऽ एखन धरि अहाँक टेढ़ी नहि गेल अछि। मुनेसर पासवानक परिचय अहाँके̐ अखनो धरि नहि भेटल अछि !"

प्रणव किछु आर रुच्छतासँ कहलकै–"मुनेसर पासवानसँ हमर पुरान परिचय छल। नव लोक छलाह मुनेसर पाससान एम.एल.ए., से हुनका हम ओही दिन चीन्हि गेलियनि जहिया पहिल दिन देवीजीक संग आयल छलाह। बाँकी परिचय गाम जाकऽ भेटि गेल। आब किछुओ जनबाक ने आवश्यकता रहि गेल अछि, ने इच्छा। अहाँ जा सकैत छी।"

तमतमायल मुनेसर पासवान ठाढ़ भऽ गेलाह— "बेश, जाइत छी। मुदा मोन राखि लियऽ, कतहु चैनसँ नहि रहऽ देब।"

"सेहो चेष्टा कऽ देखिए लेब। एकदम गलत आदमीसँ भीड़ि रहल छी अहाँ। अहाँ सन-सन लोकक लेल हमरा मोनमे ने स्नेह-सहानुभूति अछि, ने भय।"

मुनेसर पासवानक संग बाहर जाइत-जाइत देवीजी कनेक ठहरि गेलीह आ घुरिकऽ कहलथिन–"तोँ बड़ बदलि गेल छेँ प्रणव ! गाममे तोँ एहन नहि छलैं कहियो– एतेक कठोर आ रुच्छ।"

देवीजीक स्वर बदलल छलनि। ओ ओकरा फेरसँ नेनपनक सम्बोधनसँ किछु कहने छलथिन। प्रणवक मुद्रा सहज भऽ गेलैक आ ओ कहलकनि–"बदलल हम नहि छी मधु ! समय बदलि गेल छैक, लोक बदलि गेल अछि। ई मुनेसरा बदलि गेल अछि, हमरा धमकी दऽकऽ गेल अछि। एकदिन हमरा लेल जान दैत छल। मुदा तोँ बदल मधु ! लोक तोरा लेल काल्हियो जान देत छलौक, आइयो दैत छौक। मुदा कल्हुका बात आर छलैक, ओ तोहर विवशता छलौक। आइ तोँ समर्थ छैं। बेटा जवान छौक। किछु तेहन कर जे तोरो बेटा सभक बीच मूड़ी उठा चलि सकौ। अपना लेल नहि, ओकरा लेल सोच।"

मुदा देवीजीक किछु उत्तर देबाक पूर्व मुनेसर पासवान फेर भीतर आबि गेलाह– "ई ककर बातमे फँसि गेलहुँ ? ई अनकर बेटाके̐ मूड़ी उठाकऽ चलबाक उपदेश दैत छथिन। अपन बेटा किएक छोड़िकऽ चल गेलनि, से लोकके̐ नहि कहि होइत छनि।"

–"अहाँ जाउ बाहर, हम अबैत छी'' –देवीजीक स्वर अप्रत्याशित रूपे रुच्छ छलनि । मुनेसर पासवान अकचकाइत बाहर चल गेलाह ।

मधु एकदम आस्तेसँ कहलकै–"तोहर बात हमरा मोन रहत । यदि बदलनाइ हमरा पार नहियो लागत तैयो तोहर बात हमरा मोन रहत जे तोँ एकटा नीक बात कहने छलैं । ओना हम तोहर अपराधी छियौक । गाममे जे-जे काण्ड भेलैक तकर प्रचार-प्रसारमे हमरो हाथ छल ।"

"ओ बात बिसरि जो मधु ! खाली एतबा मोन रखिहैं जे शीला गाममे एकसरि अछि । ओकर मदति करियहिक, ओ दुखी अछि । बस्स, आर सभटा बिसरि जैहैं ।"

मधु शीघ्रतासँ बाहर चल गेलैक । प्रणवक छातीपरसँ एकटा भारी बोझ हँटि गेलैक । मधु अबस्से शीलाक मदति करतैक, शीला आब गाममे एकसरि नहि रहतैक । मुनेसर पासवान आ रूदल चौधरी आब ओकर किछु नहि बिगाड़ि सकतैक । ओ निश्चिन्त भऽ एतऽसँ जा सकत ।

मुदा प्रात भेने एकटा नव आघात लगलैक प्रणवकेँ । चलबाक तैयारी करैत काल मामी कहलथिन–"हमर सामान फराक बान्हि दे, हम काशी जायब ।"

"एना एकाएक ? कतेक दिन रहब ?" –प्रणव किछु आश्चर्यसँ पुछलकै ।

"कतेक दिन नहि, आब बाँकी दिन बाबा विश्वनाथक शरणमे काटि लेबऽ दे । एकसरि एहि घरमे आब रहि नहि होइत अछि । पाँच बरखक रहैं तोँ तऽ हमर कोरामे देलकौ लोक । सतरहक भेलैं तऽ गाम छोड़ि देलैं, हमरालोकनि नष्ट भऽ गेलहुँ । फेर तोँ दोबारा अयलैं आ संग छलौ अमित । ओकरा संग गाम छोड़ैत काल लागल जे तोँ फेरसँ कोरामे घुरि आयल छैं । ओकरेमे लागि गेलहुँ । तोँ अपन काजमे व्यस्त रहैत छलैं आ हम ओकरेमे । आब ओ नहि अछि तऽ लगैत अछि जे कोनो काजे नहि अछि हमर अइ घरमे । हमरा आब जाय दे बाबाक शरणमे ।"

प्रणवक दुनू आँखि डबडबा गेल छलैक–"तऽ अन्तमे आब अहूँ हमरा छोड़ि रहल छी मामी ! एक-एक कऽ सभ छोड़ि देलक, तैयो टूटल नहि रही हम । मुदा आइ अहाँ चल जायब तऽ कोना ठाढ़ रहि सकब हम ?"

–रहबैं ठाढ़ तोँ, सगर्व ठाढ़ रहबैं । तोरा के हिला सकैत छौ ? मुदा हमरा माफ कऽ दे आब । जिनगीक गाड़ी बड़ झिकलहुँ एना । आब नहि झिकाइत अछि । अमित घुरि आबय ताहि लेल भगवानसँ प्रार्थनो करैत छी आ डरो होइत अछि जे घुरि

आओत तऽ कोन मुँह लऽकऽ ठाढ़ हैब ओकरा सोझाँ ? ई कलंकित मुँह...

"खबरदार मामी ! एहन बात फेर दोबारा नहि बाजब । हमर मामी कलंकित नहि छथि । यदि ओ कलंकित छथि तऽ दुनियाँमे किछुओ पवित्र नहि अछि, भगवानक नामो नहि ।"

"एना नहि बाजी प्रणव ! भगवानक संग मनुक्खक कोन मोकाबिला—सेहो हमरा सन पतित प्राणीक । हुनके शरणमे जाय दे, बाट नहि रोक हमर ।"

प्रणव बड़ दयनीय हँसी हँसल–"हमर जिनगीमे क्यो पूछिकऽ नहि आयल आ जयबाकाल जयबाक निर्णय लऽ सभ पुछैत अछि— "हम जाउ ? हमर स्वीकृति-अस्वीकृति सभदिन अर्थहीन रहल अछि अइ संदर्भमे । सभ अपन इच्छासँ आयल-गेल अछि । आइ अहूँ जाउ, हम एकसरो रहि लेब ।"

"तोँ एना करबैं तऽ हम जा नहि सकब । एतऽ वा तोरा संग कतहु आर आब रहब तँ सुन्न घर काटऽ दौड़त । अमितक प्रतीक्षा रहत आ ओकर घुरबाक डरो रहत । हमरा बचा ले प्रणव, जाय दे बाबा विश्वनाथक शरणमे ।"

आ ओही राति गाड़ीमे बैसा देलकनि मामीकेँ । संग जाय चाहैत छल प्रणव, मुदा मामी कहुना तैयार नहि भेलथिन–"एकसरे जाय दे । तो संग रहबेँ तऽ फेर मोन डोलि जायत । तोरे संग घुरि ने आबी कहीं ।"

मुदा जेना-जेना ट्रेन खुजबाक बेर नजदीक अबैत गेलैक, मामी विह्वल होइत गेलथिन । अन्तमे हिचुकि-हिचुकिऽ कानऽ लगलथिन । प्रणवो संग कनैत कहलकनि– "घुरि चलू मामी, एकसरि नहि रहि सकब अहाँ, हमरा बूझल अछि ।"

मुदा मामी ट्रेनसँ नहि उतरलथिन । खिड़की लग बैसल-बैसल कनैत रहलथिन । प्रणव कनैत लगमे ठाढ़ रहल । आ गाड़ी जखन खुजलैक तऽ पयर छूबा लेल खिड़कीसँ बढ़ल प्रणवक दुनू हाथकेँ अपन ठोरसँ छुआ छोड़ि देलथिन । जा धरि गाड़ी देखाइत रहलैक, प्रणव प्लेटफार्मपर ठाढ़ रहल । प्लेटफार्मपर अन्तमे वैह टा रहि गेल, आर कतहु क्यो नहि । ओकरा लगलैक जे ओकर जिनगियो ओही प्लेटफार्म जकाँ भऽ गेल छलैक । गाड़ी अबैत छलैक, भीड़-भड़क्का आ फेर सुन्न । ओकर जिनगीमे भीड़-भड़क्का कहियो नहि भेलैक । गनल-गूथल लोक, मुदा लगैत छलैक जेना जिनगी एकदम भरल-पूरल होइ । एक-एक कऽ सभ चल गेल छलैक, आ बाँकी बाटपर ओ एकसर अछि—नितान्त एकाकी ।

दोसरे दिन ओ अपन नव कार्यभार सम्हारऽ चल गेल ।

बदली-पर-बदली । सालमे दू-दू बेर आ अन्तमे प्रणव सचिवालयमे आबि गेल ।

एकदिन मुनेसरा आफिसमे आयल रहैक । प्रणव बेस औपचारिक ढंगसँ गप्प शुरू कयलकै । दूइये चारि टा इम्हर-ओम्हरक गप्प भेलैक कि मुनेसर पासवान एम.एल.ए.क धैर्य समाप्त भऽ गेलेक । कहलकै-"आबो सोचू, नहि तऽ एहिना एक ठामसँ दोसर ठाम फेंकाइत रहब, सचिवालयक कोनो बिना काजक विभागमे शंटिंगमे पड़ल रहब । हमर दोस्तीक हाथ बढ़ल अछि, एकबेर पकड़िकऽ देखू जे कोना चानी कटैत छैक ।"

प्रणव ओहिना औपचारिक रुच्छतासँ कहलकै-"सुझाव आ मैत्रीक निमंत्रण लेल धन्यवाद । मुदा जाइत-जाइत एकटा हमरो बात सुनने जाउ । चानी कटबा लेल गलत ठाम हाथ बढ़ा रहल छी अहाँ आ शंटिंग कयनाइ सेहो अहींलोकनिक काज अछि । हम तऽ जैह काल्हि छलहुँ, सैह आइयो छी आ काल्हियो रहब, चाहे जतऽ रही । कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि हमरा, जतबा जोर लगैबाबाक हो, लगाकऽ देखि लियऽ ।"

मुनेसर पासवान लोहछिकऽ चल गेलैक । ई मुनेसरा अनेरो पिण्ड धयने छलैक ओकर । अपन समय बर्बाद कऽ रहल छलैक । नेनपनसँ चिन्हैत छलैक प्रणवकेँ तैयो जेना अनचिन्हारे रहि गेलैक ।

ओना आब तऽ लगैत छलैक कखनो-कखनो जेना सभ अनचिन्हारे रहि गेलैक ओकरा । गनि-गूथिकऽ लोक छलैक ओकर जीवनमे आ सभ लग होइत-होइत दूर चल गेल छलैक । माला कहिओ बड़ लग नहि छलैक जिनगीमे । जतबा दिन संग छलैक, ओकरासँ डरे होइत छलैक । मुदा एक दिन फेर ओकर जिनगीमे अयलैक आ अधिकारपूर्वक अपन नेनाक संरक्षण ओकरा सौंपि- बहुत दूर चल गेलैक, फेर कहिओ घूमिकऽ नहि औतैक । ओइ मालाकेँ कहियो चीन्हि नहि सकलैक ओ । शीला घूमिकऽ अयलैक । एक बेर ओकर जिनगीसँ निकलि पतिक घर छोड़िकऽ ओकर जिनगीमे फेर अयलैक । फेर एक दिन निष्ठुरतापूर्वक संग छोड़ि कतहु चल गेलैक । दस वर्ष धरि निपत्ता रहलैक । आ एक दिन फेर अधिकारपूर्वक

बजा लेलकै अपन जिनगीमे, तैयो अनचिन्हारे रहलैक शीला । आब आरो बेशी अनचिन्हार भेल जाइत छलैक ।

पहिल चिट्ठी पहिले बदलीक बाद भेटल रहैक-

-"अमित घुरल की नहि ? हमर हृदयमे सदिखन आगि धधकैत रहैत अछि । अहाँ कतबो उपदेश लिखि पठायब, ई ज्वाला शान्त नहि हैत । हमरे कारण अमित घर छोड़िकऽ गेल । अहाँ गाममे छोड़ऽ नहि चाहैत छलिऐक, हम जिद कयलहुँ । मुदा हमहूँ नहि छोड़बैक ककरो । ई रूदल चौधरी (कक्का कहैत ग्लानि होइत अछि तेँ नामेसँ सम्बोधित करैत छियनि आब), ई मुरली आ मुनेसरा ककरो नहि छोड़बैक हम । हमर सुख-शान्ति, माला दीदीक जिनगी, सभ नष्ट भऽ गेल छल, तैयो हम सभटा बिसरि गेल रही । बापक अपमान, हुनकर दसो वर्षक एकान्त-पीड़ा, सभकेँ बिसरि गेल रही हम । मुदा ई अपराध हम माफ नहि करबै ककरो । अमितक रूपमे सभ-किछु भेटि गेल छल । हमर माला दीदीक नष्ट जीवनक मूल्य, अपन निरर्थक कलंकित आ अपवाद बनल जिनगीक मूल्य आ जीवनमे अप्राप्त अहाँक प्रेमक मूर्तरूप— सभ टा अमितमे भेटि गेल छल हमरा । तकरा जे सभ छीनि लेलक तकर कोन हालति करबैक हम से लोक देखतैक ? अहाँ क्षमा करू हमरा, अहाँक ई बात नहि राखि सकब हम । ओकरा सभकेँ माफ नहि कऽ सकबै । भले अइ आगिमे अपनो जरि जाइ हम । मुदा हम ओकरा सभकेँ डाहिकऽ छोड़बैक । मोनसँ उठैत धधरा शान्त नहि हैत ता धरि ।"

प्रणव एक बेर फेर चिट्ठी लिखि बुझयबाक चेष्टा कयलकै । मुदा किछु दिन तक कोनो उत्तर नहि अयलैक । प्रणवक अन्देसा बढ़ैत गेलैक । अमितक कोनो पता नहि छलैक । सभटा संभव-सूत्रसँ तक्का-हेरी करबा चुकल प्रणव । मुदा ओकर कोनो पता नहि चललैक । पता भेटबो कोना करितैक ? हेरायल लोक ने ताकल जाइत छैक ? अमित हेरायल नहि छलैक । ओ तऽ बिगड़िकऽ घर छोड़ने छलैक, प्रणवक सामने नहि आबऽ चाहैत छलैक । ओकरा लग नहि रहऽ चाहैत छलैक ।

प्रणव लग कहाँ क्यो रहऽ चाहैत छलैक ? सभसँ पहिने गेलथिन मामा, सर्पदंश हुनका जीवन-यंत्रणासँ मुक्त कऽ देलकनि । पालि-पोसि कऽ पैघ करऽवाली मामी काशीमे बैसल छथिन, किन्नहु ओकरा लग नहि आबऽ चाहैत छथिन । पहिल बेर प्रणव गेल छल काशी, छबे मासक बाद । बड़ नेहोरा कयलकनि मुदा मामी

अडिग रहलथिन । कनैत गेलथिन आ घुरबैत गेलथिन । जतेक बेर प्रणव गेल, घुरि-घुरि आयल ।

एकसर दिन कटैत गेलैक । कौखन लगैक जेना वैह अनेरो मोह पसारैत रहल अछि । ओ तऽ एकसरे रहबा ले' आयले अछि धरतीपर । पेटमे छल तऽ बाप बिदा भऽ गेलथिन । धरतीपर आयल तऽ माय बिदा भऽ गेलैक । पढ़ऽ कलकत्ता गेल तऽ मामा-मामी हेरा गेलथिन आ मामी घुरिकऽ अयबो कयलथिन तऽ फेर छोड़िकऽ चल गेलथिन । प्रणव एकसरे रहि गेल ।

मुदा एकसरे रहबाक छलैक तऽ किएक अयलैक घुरि-घुरिकऽ ओ सभ ओकर जिनगीमे ? किएक अयलैक माला ? किएक दऽ गेलैक अमितकेँ ? किएक अयलैक शीला ? किएक ओकर मोनक तहमे नुकायल बातकेँ देखार कऽ देलकै । जखन किछु लेबऽ चाहलक प्रणव, एकटा अयाचित देवत्व बीचमे ठाढ़ भऽ गेलैक आ अपन बात अपने संग लऽ ओ फेर एकसरे रहि गेल । जखन ललकारैत रहैक क्यो, ओ पड़ा जाइत छल । मधु कहैत छलैक– "हमरासँ डर होइत छौक, खा जेबौ ? चुमकी कहने रहैक "अहाँ जबर्दस्तियो लऽ जायब तऽ हल्ला नहि करब हम ।" माला कहने छलैक– "आ, छू कऽ देख ने ! हल्लो नहि करबौक हम ।" मुदा प्रणव पड़ा गेल छल । आ जखन ओ कहलकै शीलाकेँ जे हमरे लग रहू, तऽ पड़ा गेलैक शीला, दस वर्ष धरि पड़ायले रहलैक । दस वर्षपर घुरबो कयलैक तऽ मात्र फेर ओही बातक पुनरावृत्तिक लेल । कानिकऽ कहि देलकै- "हमरा तऽ सभटा अहींक अछि । आब बाँचले की अछि जे अहाँकेँ देब ? ई देह ? ई असर्ध आ अपवित्र देह ? एकरा तऽ अनेको राक्षस गीजि चुकल अछि, ई अहाँकेँ कोना देब हम ?"

ओ कहलकै– हमरा लग रहू आ शीला बुझलकै खाली देह । लग रहबाक अर्थ खाली देह । देहक संग तऽ ओ पतियो संगे छल, कहाँ भेल हुनकर ? देह तऽ आनो-आनो पौने छलैक । ओ तऽ शीलाकेँ बजौने छलैक अपना लग रहबा लेल, अपना संग रहबा लेल । मुदा शीला फेर नकारि गेलैक ।

आ नकारि गेलैक अमित । ओकरा पप्पा कहब, ओकरा पिता हैब, सभटा नकारि गेलैक । कहलकै सभटा झूठ आ पाप भरल प्रपंच छलैक । तखन सत्य की छलैक ? सत्य छलैक ओकर माला-पेटसँ जन्म लेब आ बाँकी सभ मिथ्या ? दस वर्ष धरि जे ओकर संग रहलैक अमित, ओकर स्नेहक छाहरि तर पैघ भेलैक आ शिक्षा लेलकैक, से सभ मिथ्या । कल्लू चौधरीक नाति हैब सत्य, मायाक पापक

सन्तान हैब सत्य आ प्रणवक बेटा हैब सत्य नहि ! मामीक हवेलीमे दू वर्ष बन्न रहब सत्य आ प्रणवकेँ आ अमितकेँ मनुक्ख बनायब सत्य नहि । बेसी बुझनुक भऽ गेल छलैक अमित आ नहि जानि आर कोन नव-नव सत्यक तलाशमे निपत्ता छलैक ।

प्रणवक चिन्ता बढ़ले जाइत छलैक । समयक संग शीलाक प्रतिशोधक ज्वाला शान्त हैबाक बदला भड़कले जा रहल छलैक । अमितक गायब भेलाक छौ मास बाद पत्र आयल छलैक—

'अमित आबो घुरल की नहि ? अहाँ ओकरा नीक जकाँ ताकि रहल छिऐक की नहि ? जा धरि ओ नहि भेटत हमर मोनक धधकैत आगि लोककेँ जरबैत रहतैक । रूदल चौधरी झरकि गेल छथि, कनियो कसरि बाँकी नहि छनि । टाका-पैसा दऽ आ मधुर बोलीसँ बंकूआकेँ सनका देने छिऐक । तेसरा दिनपर दुनू परानीक माथ-कपार फोड़ि दैत छनि । खेत-पथार दफानि लेने छनि आ पाँच कित्ता मोकदमा चलि रहल छनि–फौजदारी आ सिविल दुनू । अधिक काल पुलिस दरबज्जेपर रहैत छनि । टाका, लोक आ गवाही, तीनू जुटा दैत छिऐक बंकूकेँ । ओ निफिकिर भऽ बापकेँ तबाह करऽमे लागल अछि ।

मुदा हमरा चैन नहि अछि । आब मुरलीकेँ सुनगा रहल छिऐक । अनेरो राति-बिराति बजा लैत छिऐक । आ भोरे खबासिनसँ चुपचाप ओकर बहु लग समाद पहुँचबा दैत छिऐक । अगिला दृश्यमे विस्फोट हेतैक । सभटा तैयारी भऽ गेल छैक ।"

ओइ विस्फोटक धमाका प्रणव सुनलकै । मुरली तबाह भऽ गेल छलैक । दोकानक सभटा पूजी समाप्त भऽ गेलैक । जमीनो सभ भरना पड़ि गेलैक आ कनियाँ जहर खा मरि गेलैक । सभ टा शीला अपने लिखने छलैक । आ तमसाकऽ प्रणव ओकरा लिखलकै—

–"बड़ पैघ काज कयलहुँ अहाँ । अमितकेँ चल जयबाक, हमर अपमानक ठीके बड़ पैघ बदला लेलिऐक अहाँ । मुदा ककरासँ ? एकटा कमजोर आ निरपराध स्त्रीसँ । ओकर हत्या कऽ देलिऐक अहाँ । हमरा लग सबूत अछि, मुरलीक स्त्रीक हत्या अहीं कयलिऐक अछि । मुरलीक संग नाटक तऽ बड़ कयलिऐक । आब ओकर स्त्री नहि रहलैक, आब नाटक छोड़ि ओकरे संग रहि जाउ । अहाँक बदलो सधि गेल । बेशी असुविधो नहि हैत । पुरुषक एहन अदला-बदली तऽ कतेक बेर कऽ चुकल छी अहाँ ।"

बहुत दिन तक उत्तर नहि अयलैक । प्रणवकेँ प्रतीक्षो नहि छलैक । ओकरा अफसोच भेलैक ओहन चिट्ठी लिखबाक । क्रोधमे शीलाक अपमान कऽ देने छलैक । दोसर-दोसर चिन्ता सेहो छलैक । तावत सचिवालयमे नहि आयल छल, जिलाक प्रशासन हाथमे छलैक । आन्दोलनक नामपर बहुत रास असामाजिक तत्व सेहो सक्रिय छलैक । आ आन्दोलन तीव्रतर छलैक– महगीक खिलाफ, भ्रष्टाचारक खिलाफ । विधान सभा भंग करबाक माँग सेहो जोर पकड़ने छलैक, घेराव आ पथराव सभठाम भऽ रहल छलैक । प्रणवकेँ साँस लेबाक फुरसति नहि छलैक । संदिग्ध प्रशासकक सूचीमे नाम छलैक, आन्दोलनक प्रति समर्थक रुखि रखनिहार प्रशासकमे नाम छलैक । ओकर जिलामे गोली नहि चलल छलैक, भीड़पर लाठी नहि बरसल छलैक–अनधुन ।

प्रणव अधिक काल सोचैत छल जे कोना एकटा मासूम आ निर्दोष नेना गोली-बन्दूकक आगू ठाढ़ भऽ जाइत छैक ? एकबेर ओ सभ ठाढ़ भेल रहैक देश भरिमे सभ ठाम आ विदेशीक बन्दूक-तोपकेँ अपन बलिदानसँ शान्त कऽ देने रहैक । अपन राज आ अपन देशमे आब ककर खिलाफ ठाढ़ भेल छैक ई सभ ? निरंकुशता आ आत्याचारक खिलाफ ? भ्रष्टाचार आ अव्यवस्थाक खिलाफ ? मुदा ई जन-आन्दोलन छात्र-आन्दोलन बनिकऽ कोना रहि गेल छलैक ? आ छात्रक नामपर के-के अइ भीड़मे शामिल भऽ जाइत छलैक, एकटा सही बातक समर्थनमे केहन-केहन गलत लोक आ तत्व शामिल भऽ जाइत छलैक, से प्रणव नित्य देखैत छलैक । छात्रक भीड़मे हिंसा करयबा लेल असामाजिक तत्व । नामधारी छात्र । भ्रष्ट नेता आ अधिकारीक घेरावमे लागल ओहूसँ बेशी भ्रष्ट लोक । लोकनायकक आन्दोलन गुजरात बिहारमे जोर पकड़ने छलनि । मुदा बाँकी देश ? ओतुक्का जनता ? भ्रष्टाचार आ महगी, अव्यवस्था आ भ्रष्ट शासन मात्र दुइये प्रान्त धरि छलैक ? ई आन्दोलन जनआन्दोलन कोना बनतैक ? कहिया धरि जनआन्दोलनक नामपर मात्र छात्रकेँ बन्बूकक आगूमे देल जाइत रहतैक आ बाँकी जनता तमाशबीन बनल रहत ? गाँधी मैदानमे लोकनायकक भाषणमे लाखक लाख जमा हैत आ जखन संगीन आ बन्दूकक बीच जुलूस निकलतैक तऽ अपन-अपन आफिस आ घरसँ तमाशा देखैत रहत आ गोली चलतैक वा कर्फ्यू लगतैक तऽ अपन-अपन घरक दरबज्जो-खिड़की बन्द कऽ लेत । बन्द कोठलीमे, दफ्तरक टेबुलपर काज छोड़ि क्रान्ति आ परिवर्त्तनक जाप करत आ सभटा तमाशा देखैत अपन बाट चलत ।

जहिया आपातकालक घोषणा भेलैक, सभटा स्पष्ट भऽ गेलैक । जनआन्दोलनक दावा करऽवला देश मौन रहलैक । लोकनायक समेत आरो पैघ-पैघ

आन्दोलन समर्थक विरोधी नेताकेँ जहलमे दऽ देल गेलैक आ सभ ठाम शान्ति रहलैक, जेना किछु भेले नहि होइ । मुट्ठी भरि लोक जहलक भीतर छलैक आ सम्पूर्ण देशक जनता बाहर । कतहु कोनो सुगबुगी नहि भेलैक । एकटा जनआन्दोलन भेल रहैक, विदेशीक बन्दूकक आगाँ अजस्र जन-समूहक बाढ़ि आबि गेल छलैक । बन्दूकक गोली हारि गेल रहैक । मुदा एक टा आपातकालीन घोषणा सभ-किछुकेँ शान्त कऽ देलकै, परिवर्त्तनक माँग, महगी आ भ्रष्टाचारक खिलाफ आन्दोलन शान्त भऽ गेलैक । सम्पूर्ण देशमे शान्ति छलैक ।

परिवर्त्तन भेलैक । शुरूमे बेश तीव्रताक संग— व्यवस्थामे परिवर्त्तन भेलैक, दफ्तर, फैक्टरी सभ ठाम काज होबऽ लगलैक । घेराव, आन्दोलन, पथराव बन्द भऽ गेलैक । स्कूल-कालेजमे पढ़ाइ होबऽ लगलैक, हिंसा आ उपद्रव बन्द भऽ गेलैक । आ लगलैक जेना यैह तऽ माँग छलैक आन्दोलनक । आब सभ टा भेटि जयतैक देशकेँ । आपातकालीन घोषणाक तीव्रतम विरोधियो सभ प्रारम्भिक प्रगति आ चमत्कारसँ मौन भऽ गेलैक ।

फेर सभ टा सुस्त पड़ऽ लगलैक । काजक रफ्तार, उत्पादन आ सुधारात्मक कार्य आ भ्रष्टाचार-उन्मूलन । फेर सब-किछु पूर्ववत होबऽ लगलैक जेना आन्दोलनक पूर्व होइत रहैक आ तकर बाद भेलैक ओ अप्रत्याशित घटना । सौंसे संसार चकित रहि गेलैक । जनतन्त्रक पराकाष्ठा एवं उपलब्धिक नाम देलकै ।

मुदा से सभ बादमे भेलैक । ओइसँ पहिने आरो बहुत रास घटित भेलैक, देशमे आ प्रणवक जिनगीमे सेहो ।

एक बेर कलकत्ता गेल प्रणव । बाहर वर्षक बाद । चौंसठिमे छोड़ने छल कलकत्ता आ छिहत्तरिमे दोबारा गेल । टेंगरा रोडक मजदूर सभक ओइ मोहल्लामे ओकर नाम एकटा छोटछीन कोठली सभदिन छलैक । मासे-मास किराया मनीआर्डर करैत छलैक । रसीद सब जमा छलैक । एक बेर मकान-मालिकक पत्र आयल छलैक दू वर्षक बाद । डेरा छोड़ि देबाक अनुरोध छलैक । प्रणव बुझलकै आ किराया पच्चीस टाका कऽ देलकै । फेर चारि वर्ष कोनो चिट्ठी नहि अयलैक । दोबारा तगादा अयलैक तऽ किराया पैंतीस टाका कऽ देलकै प्रणव । चारि वर्ष फेर

शान्त रहलैक । तेसर तगादामे किराया पचास टाका कऽ देलकै प्रणव, तहियासँ डेरा छोड़बाक कोनो पत्र नहि आयल छलैक ।

मुदा ओइ दिन प्रणवकेँ लगलैक जेना मणिका ठीके कहने रहैक जे खाली टाका लेल मोन रखतैक ओकरा । से सत्ते, टाका पठैबाक अतिरिक्त आर कोनो खबरि नहि लेलकै प्रणव । पटना आबि पहुँचबाक पत्र धरि नहि देलकै । स्टेशनपर कनैत ठाढ़ छलैक मणिका । विदा करबा लेल हाथो नहि उठा सकल रहैक । भरि बाट आ तकर बादो कतेको दिन धरि ओ दृश्य मोन पड़ैक आ कनैत मणिकाक आकृति सभ ठाम, सदिखन ओकर पछोड़ धयने रहैक । फेर सभ टा धूमिल होइत गेलैक ।

एकर ई अर्थ नहि जे बारह वर्षमे कहियो मोने नहि पड़लैक मणिका । बेर-बेर मोन पड़लैक । खाली मणिके टा नहि, ओइ टोलक सभ लोक । की भेलैक मणिकाक ? बी.ए. पास कऽ सकलैक वा नहि ? झरना पुलककेँ अपना सकलैक वा नहि ? मणिकाकेँ कोनो नीक जीवनसंगी भेटलैक कि नहि ? मुदा सभटा खाली मोन पड़िकऽ रहि गेलैक । कोनो खोज-खबरि नहि लऽ सकलैक । पत्रो नहि लिखि सकलैक । कोना लिखितैक आ ककरा लिखितैक ?

मुदा ओइदिन अपन मोटर लऽ विदा भेल तऽ कलकत्तेक बाट धऽ लेलक । एक सप्ताहक छुट्टी लेने छल, एकसर रहैत तंग आबि गेल छल । किम्हरो बाहर घूमि आबऽ लेल मोन औना रहल छलैक । मोटर लऽ विदा भेल तऽ सभ टा पुरना बात मोन पड़लैक आ कलकत्ता दिस विदा भऽ गेल ।

बाटमे रुकैत जखन ओ दोसर दिन दुपहरियामे टेंगरा रोडक ओइ मोहल्लामे पहुँचल तऽ ओकरा क्यो नहि चिन्हलकै । बरही घूटर आ पानवाला गणेश बाहरेमे ठाढ़ छलैक । मोटरसँ उतरैत प्रणवकेँ अजनबी दृष्टिसँ तकैत रहलैक । नाम लऽ टोकलकै तऽ दुनू चिन्हि गेलैक आ संगे डेरा धरि अयलैक । मुदा डेरामे दुनू कोठलीमे ताला बन्न छलैक । प्रणव आशंकासँ दुनू गोटे दिस तकलकै । घूटर बजलैक–"मणिका आफिस गेल अछि, छौ बजे धरि आबि जायत ।"

आशंकाक स्थान प्रसन्नता लऽ लेलकै । मणिका अपन पयरपर ठाढ़ भऽ गेल छलैक, अपन वादा निभौने छलैक । मुदा आर लोक सभ ? एना ताला किएक बन्न छैक ?

फेर घुटरे जबाब देलकै । कलकत्तामे बसि गेल छल, मुदा ओकर घर

पण्डौल लग छलैक, मैथिली बजैत छल । कहलकै–"ओ दुनू तऽ कहिया ने मरि गेलैक । पहिने बाप मुइलैक । ट्रामसँ उतरैत काल खसि पड़लैक । छातीमे चोट लगलैक । किछुए दिन जीलैक तकर बाद । मायकेँ टी.बी. भऽ गेलैक । ऊपरसँ बेटाक मृत्युक धक्का । ओहो मरि गेलैक । आब तऽ ओकरो पाँच साल भेलैक ।"

प्रणव टोकैत बीचमे पुछलकै–"मुदा पुलककेँ की भेलैक ? ओ कोना मरि गेलैक ?"

घूटरक स्वर भीजि गेलैक बजैत काल–"ओ दृश्य नहि बिसरैत अछि आइयो । सुतली रातिमे डेरा घेरि लेने छलैक । मायक दुखित हैबाक बात सुनि आयल रहैक भेंट करऽ । बहुत दिनसँ लापता छलैक, पुलिस पाछाँ लागल छलैक, सरकारकेँ पलटबाक योजना करैत छलैक कहाँदन । हथियार रखैत छलैक, बड़का-बड़का पूजीपतिकेँ दिनदेखारे मारि दैत छलैक । मुदा ओइ दिन अपने मारल गेल । पुलिस घेरिकऽ लाउडस्पीकरसँ घोषणा कयलकै बाहर आबऽ लेल, ने तऽ घरेमे गोली बरसा देतैक । घरमे दुखिताहि माय छलैक, बहिन छलैक । पुलक बाहर आबि गेलैक, हाथ उठौने । लगलैक जेना समर्पण कऽ देतैक । मुदा बाहर अबैत देरी, चुमकीसँ पिस्तौल बाहर कऽ फायर करऽ लगलैक । एकटा इन्सपेक्टर आ चारि टा पुलिस मारल गेलैक । मुदा ओकरो देह भुजबी-भुजबी आ शोणिते-शोणिताम भऽ ओहीठाम सड़कपर खसि पड़लैक ।

प्रणवक मोन कोनादन करऽ लगलैक । आर किछु पुछबाक इच्छा नहि भेलैक । घूटरसँ आफिसक पता पूछि बिदा भऽ गेल । मुदा आफिसमे छुट्टीक समय होबऽमे तीन घण्टा देरी छलैक । प्रणव गाड़ी लेने सौंसे शहरमे बौआइत रहल । शहरक संग बारह वर्ष पुरान परिचयकेँ नव करैत रहल ।

आफिसक सामने फुटपाथपर गाड़ी ठाढ़ रखने छल प्रणव । मणिका बहरयलैक, प्रणव लगले चिन्हि गेलैक । कनियो नहि बदलल छलैक अइ बारह वर्षमे, जेना समय एकदम ठहरि गेल होइ ! देहपर किछु कीमती साड़ी, हाथमे बैग आ पैरमे डिजाइनदार चप्पल छलैक । मुदा सम्पूर्ण व्यक्तित्व ओहिना छलैक । ओहिना सौम्य आ शान्त । आकृति ओहिना आकर्षक आ देह ओहिना मांसल आ लचकदार । प्रणव गाड़ी ओकर पाछाँ लगा देलकै । किछु दूर आबि, अपेक्षाकृत जनशून्य देखि गाड़ी लग सटा कहलकै–"मैडम, घुमा लाऊँ ? मणिका बिगड़िकऽ तकलकै आ स्टीयरिंगपर हाथ देने खिड़कीसँ मूड़ी निकालने मुसकिआइत प्रणवकेँ देखि एकदम हुलसि उठलैक– तुम...आपनी ।

प्रणव नीचाँ उतरैत कहलकै–"सुकुर चिन्हि गेलैं ? नै तऽ बीच सड़क पर ठोकाइ करा दितैं तेना बिगड़िक घुड़कल छलैं । आ, बैस, तखन चैनसँ गप्प करब ।"

प्रसन्नतासँ आर आकर्षक आ स्निग्ध भेल मणिका गाड़ीमे बैसि गेलैक । गाड़ी स्टार्ट करैत प्रणव पुछलकै–"किम्हर लऽ चलू मैडम !"

मणिकाकेँ हँसी लगलैक– "कोनो दिस, कोथाउ, जेखाने आपनी चान ।"

प्रणव नकली गम्भीरतासँ कहलकै–"आ यदि भगा लऽ जैयौ ?"

मणिका ओहिना हँसैत कहलैक–"साहस आछे ? बारो बछोर होलो, एकटी चिट्ठी लिखते पारलेन ना, किडनैप कोरबार साहस कोथाय पाबेन ?"

प्रणव गम्भीर भऽ गेल । सत्ते बड़ पैघ अपराध भऽ गेल छलैक ओकरासँ । एतेक दिन धरि घुरियोकऽ पुछारी नहि कयलकै जे कोन हालमे छैक । मणिकाक उलहन वाजिब छैक ।

ओकरा गम्भीर होइत देखि मणिका बाँहिपर स्पर्श करैत कहलकै– "राग कोरेछेन ? खमा करून आमाकेँ । सुधु ठट्ठा कोरे छी आमी, किछु मोने कोरबेन ना ।"

प्रणव ओकरा बीचेमे रोकि देलैकै–"कथीक क्षमा ? तोँ कोनो झूठ नहि कहलैं । हमरासँ ठीके अपराध भेल । तोँ माफ कर हमरा । एतेक किछु बीति गेलैक आ हमरा पतो नहि लागल । मुदा तोहूँ तऽ आने बुझलैं हमरा ! किछुओ तऽ नहि लिखलैं ।"

"आमी दोषी स्वीकार कोरछी । किन्तु आपनाकैं सब लिखते चाइछी, अनेक बार लिखे छी । किन्तु पाठाते पारलाम ना, केनो जाने भय होयेछे । किन्तु छाड़ुन से कथा । आज से सब मोन राखबो ना । अपनी ऐसेचेन, एतो बड़ो आनन्देर दिन आर किछु मोने राखबो ना ।"

प्रणव ओकरा लेक दिस लऽ गेलैक । ओइ ठाम झीलक कातमे, बड़ी काल बैसल दुनू गोटे । बहुत रास गप्प कहलकै मणिका । सभसँ पहिने पुलकक गप्प । झरना अपन प्रेम लेल लड़ि नहि सकलैक । पुछलक छोड़ि देलकै । दोसरक संग चल गेलैक अपन इच्छासँ आ पुलक देखैत ठाढ़ रहलैक । झरना चल गेलैक आ पुलक आर बदलि गेलैक । पहिनहुँ लापता रहैत छलैक, आब बेसी गायब रहऽ

लगलैक– मासक मास । मणिकाकेँ डर होइक । बाप पहिने मरि गेल छलैक आ भाइक कोनो पता नहि । घरमे ने अन्न–पानि, ने एक्को टा टाका । उधारो-पैंच भेटब मस्किल भऽ गेलैक । शिप्रा छलैक तऽ किछु-किछु मदति करैत छलैक, मुदा ओहो अपन पति पालसँ लड़ि-झगड़ि ककरो संग चल गेलैक बर्दवान । आब ओतहि रहैत छलैक । मणिका एकदम एकसरि पड़ि गेल छल ।

मुदा असहाय नहि भेल छल । प्रणव किताब सब दऽ गेल छलैक, बापक जीविते बी.ए. पास कऽ गेल छल । घरसँ बाहर आयल, दू-चारि ठाम निराश भेल, मुदा अन्तमे एकटा नीक प्राइवेट फर्ममे रिसेप्सनिस्टक नौकरी भेटि गेलैक । नीक पाइ भेटऽ लगलैक आ मायक दवाइ-दारू तथा अन्न-पानिक चिन्ता नहि रहलैक ।

मुदा पुलकक चिन्ता बढ़िते गेलैक । दू चारि टा उद्योगपतिक खून भेलैक आ आतंकवादी दलक अगुआक रूपमे पुलकक नाम आबि गेलैक । पहिने मासक मास निपत्ता रहैत छलैक, फेर अयनाइयो बन्ने भऽ गेलैक । कोनो ने कोनो सी.आइ. डी.क लोक सड़कपर, घरक सामने तैनात रहैत छलैक ।

तैयो ओइ राति आयल रहैक पुलक । दलक कोनो लोक मायक हालति खराब हैबाक गप्प पहुँचा देने छलैक । खतरा मोल लऽ आयल छलैक आ जल्दी घुरियो नहि सकलैक । माय पकड़ि लेलकै । आ जखन छोड़लकै, देरी भऽ गेल छलैक । टोलेक कोनो लोक लोभमे सूचना कऽ देने छलैक । दुनू दिससँ अनधुन गोली चललैक आ पुलकक देह गोली सभसँ छेदाकऽ शोणिते-शोणिताम भेल सड़कपर खसि पड़लैक ।

मुदा मणिका ओकरा लेल नहि कनलैक ओइ दिन । लगलैक जेना मुक्त भऽ गेलैक । झरनाक विवाहे दिनसँ जाहि पीड़ासँ बताह भेल बौआयल फिरैत छलैक, ताहिसँ मुक्त भऽ गेलैक । एतबे बुझलकै ओ । आर कोन ज्वाला छलैक ओकर मोनमे, आर की करऽ चाहैत छल ओ, से मणिका कहिओ नहि बुझलकै । ई सभटा प्रणवकेँ कहैत काल कानऽ लगलैक मणिका, कनिते रहलैक ।

राति बितलापर दुनू होटलमे गेल । खा-पीकऽ फेर विदा भेल । प्रणव पुछलकै–"आब किम्हर चलू ।"

मणिकाक जबाब देबासँ पूर्व फेर अपने बाजल— "डेरे चल आब, राति भेल । तोरा पहुँचा दियौक, फेर कोनो होटलमे ठहरि जायब ।"

मणिका आश्चर्यसँ बजलैक–"होटले केनो ? बाड़ी तेइ थाकबेन । आपनार निजेर रूम । केनो एतो दिन भाड़ा दियेछेन ? एक रात थाकतेउ पारवेन ना !"

प्रणव बुझबैत कहलकै–"तोँ एकसर रहैत छैं, हमरा रखबैं, तऽ अनेरो दस तरहक बात कहतौक । राति होटलमे ठहरब आ फेर दिनभरि घूमब । काल्हि छुट्टी लऽ लिहैं, बोटैनिकल गार्डन चलब ।"

मणिका बजलैक–"ना, से किछु तेइ होते पारवे ना । आपनाकेँ बाड़ी तेइ थाकते हबे । आमाकेँ बोलबे तो लोक, आमी जाबाब देबो ।"

बहस करब बेकार छलैक । मणिका मानऽवाली नहि छलैक । संगे डेरा आयल । अपन कोठलीमे, जकरा बारह वर्ष पूर्व छोड़ि गेल छल, पैर दितहि फेर बहुत रास बात मोन पड़लैक । ओ वर्षा-झक्कड़क राति आ मणिकाक पहिल रातुक आगमन । तकर बाद आ तकरो बादक गप्प सभ मोन पड़लैक । मणिका कपड़ा बदलऽ दोसर कोठलीमे गेलैक । कोठलीक नकशा बदलि गेल छलैक । ओइमे नव पलंग आ ताहिपर गुलगुल बिछौन लागि गेल छलैक । खिड़की दरबज्जापर नीक परदा लटकल छलैक । कोठलीक फर्शकेँ उखड़बाकऽ फेरसँ सीमेन्ट करबा देल गेल छलैक आ देबाल सभ डिसटेम्पर कराओल छलैक । कोठलीमे एकटा स्टीलक आलमारी, एकटा सिलाइ मशीन आ एकटा पैघ सन रेडियो सेहो छलैक । टेबुलपर किछु किताबक संग एकटा सुन्दर टेबुल घड़ी राखल छलैक । देबालसँ एकटा पैघ सन अयना टांगल छलैक आ ताखपर किछु प्रसाधनक सामान सेहो पड़ल छलैक। प्रणव सभटा निहारैत बैसल रहल । मणिका दोसर कोठलीसँ अयलैक तऽ प्रणव पुछलकै–तोँ कहाँ सुतबै ?"

मणिका दुष्टतापूर्वक हँसलैक–कोनो, ऐइ घरे सुइते पारबोना ? अनेके बार सुइये छी । भय किसेर ?'

प्रणवो ओहिना जबाब देलकै–"भय तोरा नहि, मुदा हमरा तऽ हैत । एहन ऋषि-मुनिकेँ डोला देबऽवला रूप आ देह छौक, हमहूँ तऽ मनुक्खे छी ।"

मणिका गम्भीर भऽ गेलैक–"आमार से सौभाग्य कोथाय ? आर केउ जाने वा ना जाने, आमी भालो कोरे जानी । स्त्रीर देह आपनाकेँ कोनो दिन च्युत कोरते पारबे ना....

फेर वैह विराट देवत्व । शीलो कहने छलैक । आइ मणिका कहि रहल छलैक । ई मणिका एकटा बरसाती रातिमे भीजल देह लेने ओकर घरमे एकसरि आयल छलैक, शीतलहरिमे ओकर तुराइमे सन्हिया गेल रहैक । ओ सभटा जनैत

छलैक । मुदा अही देवत्वसँ पड़ायल छल प्रणव । मनुक्ख जकाँ जीबऽ चाहैत छल । मुदा से ककरा कहतैक ?

मणिकाकेँ सभटा खिस्सा कहलकै । मामीक भेटबाक खिस्सा, मालाक मृत्युक खिस्सा, शीलाक परित्याग आ अमितक घर छोड़ि जयबाक खिस्सा, किछुओ बाँकी नहि रहलैक । मणिका भरि राति ओही कोठलीमे ओकर सिरमामे बैसल रहलैक आ प्रणव कहैत गेलैक । भोर तक कहिते रहलैक । भोरक इजोत कोठलीमे आबऽ लगलैक तऽ आँखि लागि गेलैक ।

जागल तऽ सौंसे कोठलीमे रौद पसरि गेल छलैक । मणिका चाय लऽ कऽ अयलैक । नहा चुकल छलैक मणिका । भीजल खूजल केश सौंसे पीठ पर छिड़िआयल छलैक । जागरणक बादो आँखिमे अतिरिक्त प्रसन्नता आ स्फूर्त्ति छलैक, जागरणक कोनो चिन्ह नहि छलैक । आँचर डाँड़मे नीक जकाँ कसिकऽ बान्हल छलैक, साड़ी कने ऊपर उठा खोंसल जेना कोनो काजमे व्यस्त छल होइ !

चाय पिबैत प्रणव पुछलकै– ''आफिस कखन जयबैं ?'' मणिका जोरसँ हँसलैक– ''कतो बेजे छे, किछु जानेन ?"

प्रणव हड़बड़ा कऽ हाथक घड़ी देखलक । एगारह बाजि रहल छलैक । धड़फड़ा कऽ उठि बैसल–"जल्दी तैयार हो, गाड़ीसँ पहुँचा दैत छियौक ।"

मणिका हँसलैक– ना, आजके जाबो ना । किन्तु सकाल थेके मण्टू, घूटर, मासीमाँ सबाय ऐसे जिज्ञिस कोरे छै । आमी लज्जाय किछु बोलते पारलाम ना । की बोलताम, ओराकी भाववे मोने...

प्रणव हँसी कयलकै–"ठीके तऽ सोचै छौ । राति भरि जागले छलैँ हमर संग ।" फेर गम्भीर होइत कहलकै–"तेँ तऽ कहैत छलियौक होटलमे रहऽ दे हमरा, आब सभ तंग करतौक ।"

मणिका जवाब नहि देलकै । ओकरा बिछौनपर फेर सूतहो नहि देलकै । नहैबाक व्यवस्था कयलकै–गरम पानि । जाड़ मास रहैक– दिसम्बर । नहयलाक बाद जलखइ । फेर भोजनक इन्तजाममे लागि गेलैक । प्रणव पड़ल-पड़ल मैगजीन आ अखबार उनटबैत रहल । एक-दू बेर सोरो पाड़लकै–"छोड़ ने झंझट, होटलमे खा लेब ।" मुदा मणिका नहि मानलकै । सभटा अपने हाथे बना, लग बैसि आग्रह कऽकऽ खुऔलकै । खाइत काल प्रणवकेँ अपन ओ डेरा मोन पड़लैक जाहिमे ओकर संग शीला छलैक, मामी छलैक आ अमित छलैक ।

खा-पीकऽ लग बैसलैक मणिका तऽ पुछलकै–"तों एहिना रहबै सभ दिन, एकसरे ? बिआह कऽ ले ।"

मणिका हँसलैक–"आमी सब दिन राजी । किन्तु काउके पेलाम ना । केउ राजी होलो ना बीयेर खातिर ।"

प्रणव गम्भीरतासँ कहलकै–"हम हँसी नहि करैत छियैक । कऽ लेल आब बिआह । वर हम ताकि दैत छियैक ।"

मणिका ओकर स्वरक गम्भीरता आ आकृतिक भाव देखि टकटकी लगा देखिते रहि गेलैक ।

प्रणव ओहिना गम्भीरतासँ कहलकै–"हमरा संगे चल मणिका ! बड़ एकसर छी हम । सम्हारि ले सभटा । हमरे लग रह । क्यो नहि अछि हमरा लग, तोँ चल ।"

मणिकाक आँखिसँ भटभट नोर खसऽ लगलैक ।

किछु बजलैक नहि, खाली कनैत रहलैक । प्रणव फेर अपन बात दोहरौलकै ।

अइबेर कनिते बजलैक मणिका–"आपनी कतो मान दियेछेन आमाके । किन्तु से की आमी कोरते पारी । आमी के, आमी जानी । आमार दायित्वो आमी जानी । आमी जानी जे आपनी का के भालोबासेन ? शीलाकेँ आमी कोनो दिन देखी नेइ, किन्तु जानी जे ओ आपनाके कतो भालोबासे । आपनार अशेष दया...

आर नहि सुनि सकल प्रणव । फेर वैह देवत्व बीचमे ठाढ़ छलैक । मणिका ओकरा लग नहि रहतैक, ओकर प्रेमकेँ मात्र ओकर दया आ महानता मानतैक । शीला एक दिन ओकरा प्रतिशोधक रूप कहने छलैक, संग रहबाक ओकर प्रस्तावकेँ अस्वीकृत कऽ कोनो अनजान बाटपर जा अपन सब-किछु लुटा आयल छलैक । मणिका सब-किछु गमाकऽ अपन बाट धयने छलैक, आब ओ अपन पयरपर ठाढ़ आत्म-विश्वाससँ भरल स्त्री छलैक । मुदा ओकर प्रेमकेँ ओहो स्वीकार नहि करतैक । स्वीकार करतैक ओकर देवत्व । मनुक्ख रूपमे ओकरा स्वीकार नहि करतैक, मणिको नहि ।

प्रणव हँसिकऽ बजबाक चेष्टा कयलक मुदा स्वर नहि जानि किएक फँसि गेलैक । रुकि-रुकिकऽ बड़ कष्टसँ बहरयलैक–"तोरा लोकनि स्पष्ट किएक नहि कहैत छैं जे हमर प्रेम अस्वीकार छौक । एकटा झूठ-मूठ आदर्शक अढ़ किएक ? तोरा सन्देह छौक जे हम खाली शीलासँ प्रेम करैत छिऐक । तोरापर खाली हमर दया अछि । शीलाकेँ सन्देह छलैक जे हम दुनू बहिनसँ घृणा करैत छिऐक, हमर प्रेम प्रतिशोधक एकटा बदलल रूप अछि । मुदा कहैत छैं दुनू जे तोरालोकनि हमरा जोगर नहि छैं । साफ-साफ किएक ने कहैत छैँ ?"

मणिका बीचहिमे टोकैत कहलकै– की बोलबो ? की सुनते चान आपनी ? आपनी की जानेन ना जे....

आगू बाजि नहि सकलैक ओ । फेर भटभट नोर खसऽ लगलैक आ कण्ठ बाझि गेलैक । प्रणवकेँ अपनापर तामस भेलैक । एना किएक भेल जाइत छल ओ ? सभपर आघात कऽ रहल छलैक, ओकरा सभपर जे अप्पन छलैक । मुरलीक स्त्री मुइलैक आ ओ शीलाकेँ एहन बात लिखि आयल छलैक । स्वाभामिनी छैक शीला, जवाबो नहि देलकै । फेर चिट्ठियो नहि लिखतैक भरिसक । आब मणिका कानि रहल छलैक । ओ ओकर पीठपर हाथ रखैत कहलकै–"नहि कानू मणिका, हमरासँ अन्याय भेल, अनुचित प्रस्ताव कयलहुँ हम ।"

आर जोरसँ कानि उठलैक मणिका, जेना आरो अनुचित बात कहा गेल होइ । ओहिना कनैत ओकर कोरामे पड़ि रहलैक । देह ओइ क्रन्दनकेँ रोकबाक प्रयासमे कँपैत रहलैक । पीठपर हाथ फेरैत प्रणव किछु काल बाद कहलकै–"उठिकऽ बैसू मणि, लोक सब अबैत अछि ।"

दोसरो राति मणिका ओकर सिरमामे बैसल रहलैक, ओकर कोरामे मूड़ी राखि कनैत रहलैक । भोर होइत काल रहलकै–"आपनी आमाके जे पथ देखालेन सेइ आमार सम्बल । ई घर जे खाने आमी थाकी, आपनार । ई शिक्खा जे आमाकेँ चाकरी दिये छे, आत्मसम्मान दिये छे, आपनार दान । आमाकेँ तो कोनो दिन लागलो ना जे आपनी आमार काछे नेइ । चिरदिन आपनार संगे आची आमी, सभ दिन आपनार काछेइ थाकबो, आर केउके आसते देबो ना जीवने, आपनी विश्वास करुन ।"

प्रणव एकटक देखलकै ओकरा– शरतक नारी । ओहिना महान, ओहिना स्नेह-भरल । अविश्वासक कोनो प्रश्ने नहि छलैक । स्वयं विश्वास आ प्रेमक मूर्त्ति बनल बैसल छलैक मणिका ।

सातम दिन विदा होइत काल प्रणव कहलकै– "लिखिहैं मणि, कोनो प्रयोजन भेलापर बजा लिहैं । तोँ एकसर नहि छैं, बस एतबे मोन रखिहैं ।"

मणिका, नहि, मणिक ठोरपर हँसी छलैक आ आँखिमे नोर ।

बहुत दिनुका बाद शीलाक एकटा पत्र भेटलैक । मुदा ताहिसँ पहिने भारी परिवर्त्तन भऽ गेल छलैक । चुनावक घोषणा आ परिणाम दुनू आश्चर्यजनक छलैक । जनता अपन आजादीक लेल, अधिकारक लेल फेर एक बेर निर्णायक डेग उठौलक आ जनता राज स्थापित भऽ गेलैक केन्द्रमे । तानाशाही आ जुलुमक खिलाफ सभ एकजुट भऽ लड़लैक । जाति, दल, प्रान्तीयताक सभटा छोट-छोट विचार एकटा पैघ आदर्श लेल त्यागि देलकै सम्पूर्ण देश ।

मुदा एसेम्बली निर्वाचन तक अबैत-अबैत फेर सभटा पुरना प्रवृत्ति घेंट अलगा लेलकै । फेर वैह जातिवाद, फेर वैह दलगत दाव-पेंच । टिकट लेल वैह मारा-मारी । पटनामे कोनो होटल, कोनो डेरामे जगह नहि बँचलैक । टिकटक प्रत्याशीक भीड़ लागि गेलैक ।

ताही भीड़क संग मुनेसर पटना आयल छल आ प्रणवोकेँ भेँट भेल रहैक । कहलकै– हमरा कोनो फर्क नहि पड़त । दल बदलि लेने छी हम । अखबारमे वक्तव्य दऽ देलिऐक, आब हमहूँ जनता । टिकट भेटबे करत, कोनो बैकवर्डकेँ हमरा खिलाफ ठाढ़ कराओत से मजाल छैक जनता पार्टीक ? जमानत जप्त करबा देबैक ।"

मुदा जमानत अपने जप्त भऽ गेलैक मुनेसराक । जनता पार्टी टिकट नहि देलकै । कांग्रेस छोड़िए देने छल जनता टिकटक लोभमे । मुदा तैयो ठाढ़ भेल स्वतंत्र उम्मीदवार बनिकऽ । आ जमानत जप्त भऽ गेलैक । अखबारमे देखने छलैक, मुदा असली खबरि शीलाक पत्रसँ भेटलैक । अइबेर एकटा मोटका रजिस्ट्री लिफाफ छलैक । बहुत रास कागजक संग एकटा पत्र—

"ई भरिसक अन्तिम पत्र अछि । अहाँक पत्रक जवाब तखन नहि दऽ सकल रही, आब दैत छी ।

पुरुषक अदला-बदली जिनगीमे बड़ कयने छी हम, अहाँ असत्य नहि लिखलहुँ । ओ हमरा अधलाह नहि लागल । मुदा जाहि स्थानपर अहाँकेँ रखने छी, ओतऽ दोसरकेँ राखि लेबाक बात अहाँ लिखलहुँ– तकर दुःख भेल । जनैत छी, खाली तामसमे ओहन बात लिखलहुँ । मुदा तामसोमे ओहन बात अहाँ सोचलहुँ, से

बड़ तकलीफ देलक । देहक बँटबारा कयलहुँ हम, मोनक कोनो बँटबारा नहि, से अहाँकेँ बूझल छल, बूझल अछि, तैयो ओहन बात लिखलहुँ । जवाब देल पार नहि लागल तत्काल ।

हमर काज भऽ गेल गाममे । रूदल चौधरी तबाह भऽ गेलाह– कर्ज आ मोकदमामे ओझरायल छथि, भुखमरीक नौबति छनि । मुरलियाक घर तबाह भेलैक, बाल-बच्चा बिलटि गेलैक । आ अपने पागल हैबामे बेशी कसरि नहि छैक । बाँचल छल मुनेसरा । ओकरो ब्योंत भऽ गेलैक । अइ चुनावमे सात ठाम मारि खयलक, जीप जरा देलकै लोक आ जमानत जप्त भऽ गेलैक । मधुकेँ नहि जानि की कहि देलिऐक अहाँ । एकदम बदलि गेल अछि । हमरा ऊपर सदिखन जेठ बहिन जकाँ छाया कयने रहैत अछि, ककरो कोनो कुचक्र नहि चलऽ दैत छनि । आ मुनेसराक जड़ि सेहो वैह खोदलकै । गामे-गाम घुमलैक वोटमे । सभकेँ मुनेसराक खिलाफ भड़कौलकै आ जमानत जप्त करा देलकै ।

गाममे हमर सभ काज भऽ गेल, सबहक प्रतिशोध पूरा भेल । मुदा मोनमे आरो बेशी अशान्ति अछि । ठीके लिखने रही अहाँ । अइ आगिमे हम अपने जरि जायब । से सत्ते जरि रहल छी । सदिखन ज्वाला धधकैत रहैत अछि । कर्ज आ मोकदमामे ओझरायल रूदल चौधरी आ ओकर अन्न बेतरे बेहाल धीया-पुता आ स्त्रीकेँ देखि कोनो सुख नहि होइ-ए । राति-विराति, सूतल-जागलमे मुरलीक मुइल स्त्री आ ओकर टूगर जकाँ बौआइत धीयापुताक आकृति मोन पड़ैत अछि आ मोनक बचलो-खूचल शांति हेरा जाइत अछि । अहाँ मोन पड़ैत छी, अहाँक बात मोन पड़ैत अछि । अहाँकेँ बेघर कयने छलाह अहाँक पित्ती मदन चौधरी आ सभटा सम्पत्ति हुनके धीया-पुताक नाम कऽ देलियनि अहाँ । हमरा बूझल अछि । हमर बाप अहाँक मामक घराड़ी जोति लेलनि, मामीकेँ अपन हवेलीमे बन्न रखलनि आ हुनकर अन्तिम संस्कार कयलियनि अहाँ ।

हम हारि गेलहुँ अहाँसँ । अहींक बात मानि लेलहुँ । अहाँ लिखने रही, ओकर स्त्री नहि रहलैक, ओकरे घर बसा दहिक । सैह कऽ देलिऐक हम । ओकर उजड़ल घर बसा देलिऐक । ओकर भरना घर-घराड़ी छोड़बा देलिऐक आ दस बीघा जमीन ओकर धीया-पुताक नाम कऽ देलिऐक । ओकर उजड़ल घर बसि जेतैक । रूदल चौधरीकेँ माफ करब सम्भव नहि भेल, मुदा हुनको स्त्रीक नाम दस बीघा लिखि देलियनि । धीया-पुता अन्न बेतरे बेलल्ल नहि हेतनि । केहन काज कयलहुँ हम ? अहाँकेँ नीक लागल ?

नीक लागले हैत, हम जनैत छी। हमरासँ बेशी आर के ई बात जानत ? मुदा आब हमर कोनो काज नहि अछि गाममे। बाँकी दिन कतहु ईश्वरक शरणमे कटि जाय, सैह इच्छा अछि। तेँ गाम छोड़ि रहल छी। जहिया ई पत्र अहाँकेँ भेटत, हम गाम छोड़ि जा चुकल रहब। अहाँकेँ एकटा भार देने जाइत छी। अइ अन्तिमो पत्रमे एकटा भारे दऽ रहल छी अहाँकेँ, आर कहिओ किछु दऽ नहि सकलहुँ। देबा जोगर आ किछु छलो नहि हमरा लग।

सभटा सम्पत्ति आ हवेली अमितक नाम कऽ देलिऐक, सभटा कागज पठा रहल छी। सभटा ओकरे छलैक, ओकरा भेटि जाइ। अहाँ बताहि नहि बूझू। ओ घुरत, अबस्से घुरिकऽ आओत अहाँ लग। हमरा पूरा विश्वास अछि जे अहाँसँ दूर ओ बेशी दिन रहि नहि सकत। ओकरा अहाँ लग घुरहे पड़तैक। हमर अमानत अहाँ लग रहल, जहिया अमित भेटय, दऽ देबैक।

आइ फेर जा रहल छी। एक बेर गेल रही जहिया विवाह भेल छल हमर आ हमरा अपनो नहि बूझल छल जे अहाँ कतऽ छी हमर मोनमे। दोबारा छोड़िकऽ गेलहुँ तऽ बूझल छल जे खाली अहीं टा छी हमर जिनगीमे, दोसर क्यो नहि अछि। तैयो छोड़िकऽ चल गेल रही– अपने भयसँ। आइयो खाली अपनेसँ डर अछि। ईश्वरक शरणमे जा रहल छी। मुदा तैयो डर अछि जे जाहि मोनमे खाली अहीं रहैत छी, ओइमे ईश्वरक स्थान हेतनि ? अहाँ प्रार्थना करब हमरा लेल जे हुनकेमे हमर मोन रमय।"

प्रणव सभ दिन प्रार्थना कयलकै शीला लेल।

मुनेसरा फेर भेटलैक पटनामे। बड़ अन्तर भेटल छलैक। अपन विभागक मन्त्री लग भेंट भेल रहैक– प्रणवोक बजाहटि रहैक। मन्त्रीसँ सटल बैसल मुनेसर अप्पन बड़प्पन देखैबाक खूब चेष्टा कयलकै। मुदा प्रणव लेखे धनसन। ओ मन्त्रीजीसँ काजक गप्प कऽ जाय लागल तऽ मुनेसरक धैर्य समाप्त भऽ गेलैक। टोकैत कहलकै– ''मन्त्रीजी खास दोस्त छथि हमर आ तोँ हमर बालसंगी। कहि देलियनि अछि, आब तोँ कोनो चिन्ता नहि कर। जे हैबाक छलैक से भऽ गेलैक। आब तोरा क्यो निरर्थक हरान नहि करतौक। हमरा लोकनि आइयो शक्तिहीन नहि भेल छी।"

प्रणवकेँ हँसी लागि गेलैक। पैतरा बदलि रहल छलैक मुनेसर। फेरसँ दोस्त बनिकऽ आयल छलैक, ओकरा बिन-माँगल आश्वासन दऽ रहल छलैक। प्रणव कोनो जवाब नहि दऽ चल आयल। मुदा बाहर अबैत काल लगलैक जेना मुनेसर ठीके कहि रहल छलैक–ओ सभ अखनो शक्तिहीन नहि भेल छलैक। अहू राज्यमे वैह नेता, वैह मुँहगर लोक सभ शक्तिवान रहतैक। जनताक अमोघ अस्त्र छलैक वोट। से ओ व्यवहार कऽ चुकल। आब फेर पाँच बरख लेल निश्चिन्त छैक नेतासभ। प्रशासन कतहु एक दिनमे सुधरलैक अछि ? दाम कोना लगले कमि जायत, व्यापारीसँ अनुरोध जारी छैक, सबूर करू। जे तीस वर्षमे नहि भेल, से तीन मासमे कोना हैत ?

चलती ओकरे रहतैक जकर छलैक। नाम-धाम कतहु बदललैक, कतहु नहि बदललैक। मुदा बाँकी सभ वैह। वैह चेहरा, वैह लोक, खाली नाम दोसर। वैह करनी, मुदा दावा दोसर। जनताक राज ? सुनऽमे नीक लगैत छलैक।

ओइ दिन आफिससँ बहरायले छल कि ओकर दृष्टि अमितपर गेलैक। सड़कक कातमे एकटा ठेला लेने ठाढ़ छलैक। ठेलापर फल सभ छलैक। प्रणव दौड़िकऽ लग गेलैक–"चल अमित, घर चल।"

अमित ओकरा दिस तकलकै आ अपरिचित स्वरमे बजलैक–"कोन घर ? कतऽ अछि हमर घर ?"

प्रणवकेँ दुख भेलैक, आघात लगलैक। पत्रमे लिखने छलैक, मुदा एना मुहामुहीं जबाब देतैक से आशा नहि छलैक ओकरा। बड़ स्नेह आ महत्त्वाकांक्षासँ पोसने छलैक ओकरा। अपन मोनक बात दबबैत कहलकै–"तोहर घर छौक तोहर बापक घर। चल आब।"

"मुदा हमर बाप अछि के ? माय तऽ....

"तोहर माय नहि छौक, ओकर बारेमे गप्प नहि कर। तोहर बापो हमहीं छियौक आ मायो। चल अपन घर।"

"नै, अहाँ हमर क्यो नहि छी। हमर बापक पता हमर मायोकेँ नहि छलैक। अहाँ जाउ, हमरा अपन काज करऽ दियऽ।"

"नहि, अमित ! ई काज तोँ छोड़। पढ़-लिख। तोरा लेल कोन-कोन सपना अछि हमर मोनमे !"

"ओ आब सपने रहत । हम सभदिन अही ठाम फल बेचब ठेलापर । देखिकऽ लाज हैत अहाँकेँ ।"

प्रणव हँसलैक– "तोँ नहि चिन्हलैं हमरा अमित ! हमर माम महींस चरबैत छलाह आ मामी कुटाओन-पिसाओन करैत छलीह । सभदिन हम अपने महींस चरबैत रही । कहिओ लाज नहि भेल । अभिमानपूर्वक सभदिन कहलिऐक–यैह छथि हमर मामा-मामी, हमर माय-बाप । आइयो कहैत छिऐक । तोँ ठेला चलबैत छैँ, ताहिमे कोनो लाजक बात नहि छैक । मुदा अइमे तोहर आत्मविश्वास नहि, तोहर मोनक ग्रन्थि झलकैत छौक । मोनमे ई ग्रंथि राखि कहियो आगू नहि बढ़ि सकबैं । अपन पयरपर ठाढ़ हैबा लेल ठेला चला, हमरा अभिमान हैत । मुदा हमरा दुख देबा लेल एतऽ ठेला लऽ ठाढ़ हैबैँ तऽ ई तोहर मोनक ग्रंथि छौक । ई ग्रंथि जिनगीमे आगू नहि बढ़ऽ देतौक ।"

अमित कोनो जवाब नहि देलकै । प्रणव फेर कहलकै–"हम जाइ छी अखन । मुदा हमर एकटा बात मोन रखिहैं । तोँ हमर बेटा छैँ, अइसँ बेशी सत्य तोहर मालाक कोखिसँ जन्म लेनाइ नहि छौक । जहिया ई सत्य स्वीकार होउ, चल अबिहैं ।"

प्रणव चल आयल । अमित नहि अयलैक । मासो बीति गेलैक मुदा अमित नहि अयलैक । ओहिना ठेला लऽ सड़कपर फल बेचैत रहलैक ।

बेशी प्रतीक्षा नहि कऽ सकलैक प्रणव । फेर किछुए दिन बाद बदली भऽ गेलैक । नवका मुख्यमन्त्रीक कार्यभार लेबाक एवं मन्त्रिमंडलक संगठनक तीनिए मासक बाद बड़का सूची बहार भेलैक बदलीक । प्रणवो ओइ सूचीमे छल । कार्यभार देबा दिन सोचलक जे एकबेर फेर अमितकेँ कहैक । फेर निरर्थक लगैलक । अमित जिद धयने छलैक आ ओकर घुरबाक आशा कम छलैक ।

एकसर रहबाक अपन नियतिकेँ ओ स्वीकार कऽ लेने छल । जिनगीक बाँकियो दिन एकसर बीति जयतैक । अमित लेल ओकरा चिन्ता छलैक । मुदा आब ओकरो भाग्यक भरोसे छोड़ि देबाक अतिरिक्त आर कोनो रस्ता नहि छलैक ।

कार्यभार लेबासँ पहिने एक बेर बनारस गेल– मामी मानिकऽ यदि घुरि अबैक !

मुदा डेरामे पैर दितहि प्रणव थकमका गेल । मामी लग एकटा आर स्त्री बैसल छलैक । प्रणवकेँ देखि माथपर आँचर घीचि लेलकै । मामी हुलसिकऽ उठलैक— "आ ने, क्यो आन नहि छौक ।"

प्रणव गोड़ लगलकनि । मामिए लग प्रणवो बैसि गेल । ओ स्त्री ओहिना माथपर आँचर लेने मूड़ी झुकौने बैसल छलैक ।

प्रणव बदलीक गप्प कहलकै । अमितक गप्प कहलकै आ अन्तमे अपन गप्प कहलकै–"अहाँ घुरि चलू मामी ! अपन बेटाकेँ एना एकसर छोड़ि कोना रहैत छी अहाँ ?"

मामी माथपर हाथ फेरैत कहलकै–"अपन बेटाकेँ कोना छोड़ब हम ? मुदा बाबा विश्वनाथ नहि छोड़ैत छथि हमरा ? आ आब तऽ एकटा दोसरो चिन्ता अछि । अपन अइ बेटीकेँ ककरा लग छोड़ि जयबैक ? एकर भार के लेतैक ?"

–"हम लेब मामी ! अहाँ हिनको लेने चलियनु अपना संग, यदि हिनका आपत्ति नहि होनि ।" प्रणव नेहोरा कयलकनि ।

मामी हँसलैक–"तोँ अपने पूछि लहिक ने ! रहतौक तोरा लग ?"

ओ स्त्री सेहो हँसलैक । माथपरसँ आँचर ससरि गेलैक । प्रणव आश्चर्यसँ बाजल–"अहाँ ?"

मूड़ी झुकौने शीला हँसि रहल छलैक । ओकर बातक कोनो जवाब नहि देलकै । मामी उठिकऽ भीतर चल गेलैक–"आब तोँही दुनू गोटे फैसला कर ।"

किछु काल बाद प्रणव पुछलकै–"की जवाब दियनु मामीकेँ ?"

शीला सहज ढंगसँ हँसैत कहलकै–"जवाब मामीकेँ बूझल छनि । एतऽ रही वा ओतऽ, आश्रय तऽ अहींक अछि । तीर्थ रही वा गाम– आसरा तऽ अहींक अछि ।"

प्रणव चौंकि कऽ देखलकै । व्यंग्य नहि कऽ रहल छलैक शीला । चेहरा स्निग्ध आ तनावहीन छलैक । मामिए जकाँ निराभरण आ सादा-सादी पहिरन-ओढ़न । आकृतिपर व्रत-उपवाससँ उपजल एकटा पवित्र भाव । प्रणव एकटक ओकरा देखैत रहल ।

–"एना की देखैत छी ?" शीला पुछलकै । ठोरपर स्निग्ध हँसी छलैक ।

–"देखै छी जे अहाँ कतेक बेर हमर प्रस्ताव एना अस्वीकार करैत रहब ।"

—"अस्वीकार नहि, ई तऽ सम्पूर्ण समर्पण थिक । एकर बादो किछु रहि गेल अछि हमरा लग ?" शीला आर स्निग्ध आ कोमल स्वरमे कहलकै ।

प्रणवक स्वर थरथरायल छलैक—"मुदा हमरा लग रहि गेल अछि अहाँक अमानत । ओकरा आब अहींकेँ पठा देब । जकर छैक, से आब कहियो नहि घुरत । हम एकसरे रहब सभदिन ।"

शीला कनेक अधिकारपूर्ण दुलारसँ बजलैक—"एकसर किएक रहब अहाँ ? सभ तऽ अहींक लग अछि— मामी आ हमहूँ । आ अमितो अबस्स घुरत । ओ कतऽ जायत अहाँकेँ छोड़िकऽ ? हमर अमानत अपने लग राखू । जकर छैक तकरे दऽ देबैक । ओ घुरत, फेर अहाँकेँ चिन्हत, हम जनैत छी ।"

प्रणव शीलाक हाथ अपन मुट्ठीमे लैत कहलकै—"सैह होअय शीला ! प्रार्थना करब जे अहाँक विश्वास सत्य बनि सकय ।"

दूर मन्दिरमे शंख-ध्वनि भऽ रहल छलैक ।

●

नवारम्भ